ज्योतिष तथा कर्मकांड सम्बन्धी अन्य प्रकाशन

ज्योतिष सर्व संग्रह

विवाह पद्धति

यज्ञोपवीत पद्धति

व्यापार चमत्कार

एकादशिसपिण्डी

ज्योतिष विज्ञान

व्यापार रुख

हनुमान ज्योतिष

शीघ्रबोध

नारायण बलि

हवन पद्धति

शाखाचार समूह

भृगु संहिता सम्पूर्ण ग्रन्थ

हस्त सामुद्रिक शास्त्र

दुर्गा सप्तशती भाषा टीका

दुर्गा सप्तशती केवल भाषा

पंचक शान्ति

मूक गुप्त प्रश्नावली

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष

[हस्त-रेखा-विज्ञान पर लिखे गये संस्कृत, अंग्रेजी,
फ्रेंच और जरमनी भाषा के लगभग ५००
(पाँच सौ) प्रामाणिक ग्रन्थों
का निचोड़]

——:o:——

लेखकः—

रामेश्वर 'अशान्त'

भूमिका लेखकः—
राजगुरु परमानन्द मुद्गल
ज्योतिष अनुसन्धानाध्यक्ष
सूर्योदय अभेय समाज, देहली।

चित्र संख्या ६४ पृष्ठ संख्या ६३६

प्राप्तिस्थान

राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल
चावड़ी बाजार देहली

मूल्य ६) सं० २०१० छै रुपया

भूमिका

हिन्दी में विभिन्न दिशाओं के सुप्रसिद्ध लेखक परम विद्वान् श्री रामेश्वर 'अशान्त' ने जिस अध्ययन खोज और परिश्रम से यह ग्रंथ लिखा है, अत्यन्त प्रशंसनीय है। हस्त-सामुद्रिक शास्त्र समस्त संसार को भारत के प्राचीन मनीषियों की एक अपूर्व देन है।

विद्वान् लेखक ने हाथ की प्रायः प्रत्येक रेखा को पृथक्-पृथक् रूप में, भिन्न-भिन्न चित्रों के द्वारा समझाने का कार्य अति उत्तमता से सम्पादित किया है।

जितनी सामग्री इस ग्रन्थ में संगृहीत है उतनी सामग्री संस्कृत ग्रन्थों को छोड़ संसार की अन्य किसी भी भाषा के अकेले ग्रन्थ में प्राप्त नहीं है।

निस्संदेह हिन्दी संसार में प्रस्तुत विषय के ऐसे ग्रंथ की कमी ही थी, जिसे इस ग्रंथ ने पूरा कर दिया है।

मैं, श्री 'अशान्त' को इस ग्रन्थ को लिखने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

राजगुरु परमानन्द मुद्गल

गुरु तेग बहादुर बलिदान-दिवस, १९५३ } ज्योतिष अनुसन्धानाध्यक्ष सर्वोदय अभय समाज, दिल्ली।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

विषय	पृष्ठ

(ढ)

विषय	पृष्ठ
ग्रह-क्षेत्रों का नामकरण	२०२
ग्रहों का स्वरूप	२०३
ग्रहों का स्वभाव	२०५
ग्रहों के मित्रादि सम्बन्ध	२०७
ग्रहों के मित्र-शत्रु-बोधक चक्र	२०८
ग्रहों के प्रबल मित्रता-शत्रुता-बोधक चक्र	२०९
ग्रहों के प्रभाव की अवधि	२०९
ग्रह-प्रभाव-अवधि-बोधक-चक्र	२१०
ग्रह-प्रभाव के सम्बन्ध में विशेष विचार	२११
ग्रहों के रंग	२११
ग्रह-रंग-बोधक चक्र	२११
ग्रहों के द्रव्य	२१२
ग्रह-द्रव्य-बोधक चक्र	२१३
ग्रहों के रत्न	२१३
ग्रह-रत्न-बोधक-चक्र	२१४
विशेष सूचना	२१४
ग्रहों के विशिष्ट-स्थान का रहस्य	२१७
सूर्य क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२१९
चन्द्र-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२२०
मंगल क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२२१
बुध क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२२३
बृहस्पति-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२२४
शुक्र-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२२५
शनि-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य	२२६

विषय | पृष्ठ

१०—ग्रह-क्षेत्रों का विवेचन

विषय | पृष्ठ

विषय	पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

ज्योतिष

प्रथम परिच्छेद

हस्त-विवेचन

अध्ययन की दृष्टि से हस्त-विवेचन-विज्ञान मुख्यतः दो खण्डों में विभक्त है—

प्रथम खण्ड में हाथ का स्वरूप, उसकी आकृति आकार-प्रकार अंगुलीय, अंगुष्ठा आदि का वृहद् विवेचन रहता है।

दूसरे खण्ड में हाथ पर पड़ी हुई रेखाओं तथा विचित्र प्रकार के चिह्नों का परिचय प्राप्त होता है।

हमारे देश में पशु-विशेषज्ञ पशुओं की मुखाकृति, सींग, कान नथुने, पूंछ, पैर आदि को देखकर अनायास ही उसके सम्बन्ध में समस्त बातें बता देते हैं और उसके शुभाशुभ लक्षण भी खोलकर रख देते हैं। ठीक इसी प्रकार हस्त-विज्ञान-विशारद के हाथ की परीक्षा करके ही मानव-जीवन का सारा हाल जान लेता है। इसके द्वारा मनोविकार, शारीरिक क्रियायें, चेष्टायें और शुभाशुभ भविष्य का ज्ञान सहज ही में हो जाता है। इतना ही

नहीं हस्त-परीक्षा के द्वारा मनुष्य के आचरण, भावना, संगति आदि का भी स्पष्ट परिचय मिल जाता है।

मानव-जीवन में हाथ का अपना विशिष्ट स्थान है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य को हाथों पर निर्भर रहना पड़ता है। अपने प्रत्येक विचार, प्रत्येक भावना तथा प्रत्येक आवेश को कार्य-रूप में परिणत करने के लिए मनुष्य को हाथों की सहायता लेनी पड़ती है। यदि सच पूछा जाय तो हाथ मानव-जीवन के सतर्क प्रहरी, स्वामि-भक्त सेवक तथा आज्ञानुवर्ती सहचर हैं। यही हाथ सामुद्रिक-विज्ञान की कसौटी पर परखे जाने पर मानव-जीवन का मान-चित्र बन जाता है और इसके द्वारा मानव-जीवन की प्रत्येक घटना और उसका प्रभाव, स्वभाव मनोवृत्ति आदि का स्पष्ट परिचय मिल जाता है।

भौगोलिक दृष्टि से संसार के मनुष्य अनेकों वर्गों में विभाजित हैं। रूप-रंग, आकृति, धर्म आदि के आधार पर संसार मे मनुष्य सैकड़ों जातियों तथा उप-जातियों में बंट गया है। किन्तु सामुद्रिक विज्ञान के अनुसार इन भौगोलिक, धार्मिक सामाजिक आदि भेदों का कोई सम्बन्ध नहीं है। अखिल भूमण्डल पर किसी भी स्थान का निवासी क्यों न हो सामुद्रिक शास्त्र की कसौटी पर उसके हाथ की परीक्षा करने पर उसके जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म घटनाओं का, उसके स्वभाव का, उसकी मनोवृत्ति का, उसकी भावनाओं का, उसके विचारों का, उसके क्रिया-कलाप का, उसके आचरण का, उसकी संगति का, पूरा-पूरा वृत्तान्त ज्ञात हो जायगा।

हस्त-दर्शन

चित्र नं० १
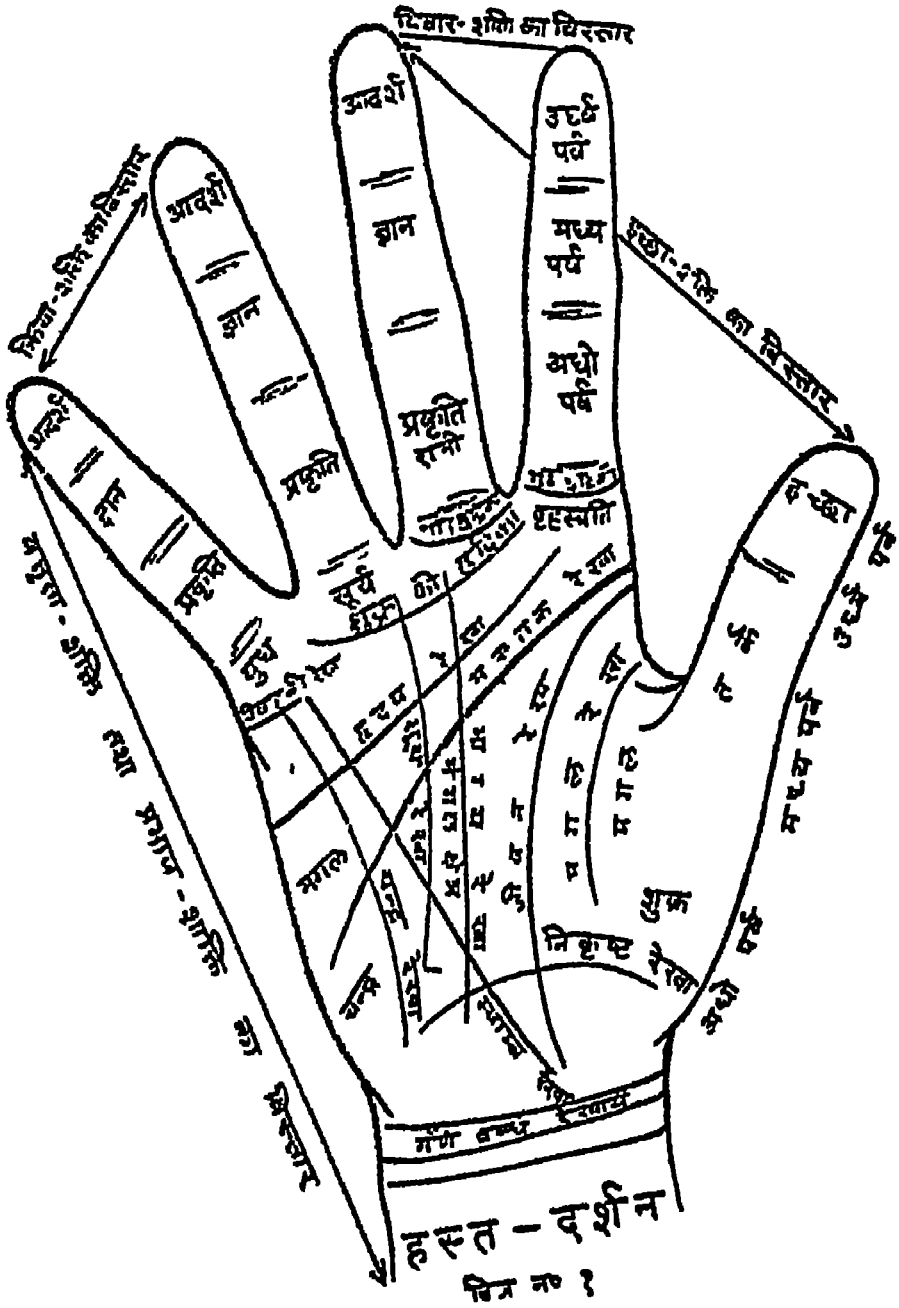
स्मरण रहे कि—स्वास्थ्य सम्बन्धी नियम विशेषों अथवा व्यायाम विशेषों के द्वारा अथवा किसी भी अन्य कारण से हाथ लम्बा या चौड़ा हो सकता है; किन्तु उसकी मौलिक आकृति, स्वरूप तथा आकार-प्रकार में कभी भी कोई भी अन्तर नहीं आयेगा।

मानव-जीवन के सूक्ष्मतम एवं विस्तृत अध्ययन के विचार से सामुद्रिक शास्त्र मे मनुष्य के प्रधान-प्रधान सात भेद किये गये हैं--

साधारण, निकृष्ट, दार्शनिक, व्यवसायी अथवा कलाकार, विषम अथवा आदर्शवादी, उद्यमी तथा मिश्रित।

मनुष्य के ये सात भेद वास्तव मे उनके हाथ के स्वरूप, आकृति, बनावट, अँगुलीय, अंगुष्ठ आदि के आधार पर ही किए गये हैं। इसके अनुसार मनुष्य के हाथ के स्वतः ही सात भेद हो जाते हैं। ये सात प्रकार के हाथ निम्न लिखित हैं--

१—समकोण (Square or the useful)

२—निकृष्ट (Elementry or the lowest)

३—दार्शनिक (Philosophic or the knotty)

४—व्यवसायी अथवा कला-प्रिय (Conic or the artistic)

५—विषम अथवा आदर्शवादी (Psychic or the idealistic)

६--उद्यमी (Spatulete or the active)

७--मिश्रित (Mixed)

द्वितीय परिच्छेद

हाथ के भेदों का परिचय

हाथों के विभिन्न भेदों का विस्तृत परिचय लिखने से पूर्व हम पाठकों के लाभ की दृष्टि से पहले हस्त परीक्षा करने की विधि पर विचार करेंगे। क्योंकि ज्ञान चाहे कितना ही गम्भीर एवं विस्तृत क्यों न हो यदि उसके प्रयोग में असावधानी की गई अथवा उसका प्रयोग उचित रीति से नहीं किया गया तो सफलता में सन्देह ही रहता है जिसका परिणाम यह होता है कि उसकी ओर से मन खिंच-सा जाता है अथवा वह ज्ञान कोरी कल्पना-सा प्रतीत होता है।

हस्त परीक्षा करते समय आरम्भ में हाथ का स्पर्श नहीं करना चाहिए, क्योंकि हाथ का स्पर्श करने से उसकी स्वाभाविक आकृति में कुछ रूपान्तर हो जाता है। फलत' उसके सम्बन्ध में वास्तविकता मालूम करने में भ्रम हो जाता है। अतः हस्त परीक्षा आरम्भ करते समय पहले हाथ को कदापि स्पर्श नहीं करने का ध्यान रखना चाहिये।

हस्त परीक्षा करते समय सब से पहले यह निश्चय करना चाहिए कि हाथ किस प्रकार का है। पिछले परिच्छेद में दिये गये समकोण, दार्शनिक, व्यवसायी आदि में से कौन सा हाथ है।

यह ज्ञात करने के लिए जिज्ञासू (प्रश्न कर्ता) से ही हाथ को उल्टा करने के लिए कहना चाहिए। कर-पृष्ठ को ध्यान-पूर्वक देखना चाहिए। हाथ के वास्तविक आकार का एक ही दृष्टि मे सटीक निर्णय करने के हेतु परीक्षक को करतल की अपेक्षा कर-पृष्ठ के अवलोकन से विशेष सुविधा रहती है क्योंकि कर पृष्ठ की अपेक्षा करतल की ओर हाथ के सभी भागों का फैलाव साधारणतः अधिक रहता है। अतः हाथ के प्रकार किंवा भेद का निश्चय सदैव कर पृष्ठ की परीक्षा करके ही करना चाहिये।

हाथ के भेदों का परिचय इस प्रकार है—

साधारण दृष्टि से हाथ प्रायः तीन आकृति के पाये जाते हैं। १—तुकीला (इस हाथ की अंगुलियां साधारणतः पतली, लम्बी और नोकदार होती है) इस प्रकार का हाथ अन्य हाथों से उत्तम श्रेणी का होता है। २—समकोण (इस हाथ की अंगुलियां साधारणतः लम्बी किन्तु मोटी और चौकोर अग्र-भाग वाली होती हैं) यह हाथ मध्य श्रेणी का होता है। ३—वृताकार अथवा गोल (इस हाथ की अंगुलियां छोटी होती हैं, किन्तु मोटी न होकर पतली होती हैं और इनके अग्र भाग चपटे होते हैं) यह हाथ कनिष्ठ श्रेणी का होता है।

हाथ के भेदों का निचोड़ निकालने पर भी उपरोक्त तीन भेद तो रह ही जाते हैं। किन्तु ये भेद भी केवल प्रतीक-मात्र हैं। वास्तव में भेदो के अनुसार सटीक शुद्ध प्रकार का हाथ तो विरला ही मिलता है। किन्तु हां, उपरोक्त तीन भेदों में से किसी एक का

कर पृष्ठ
उत्तम श्रेणी
चित्र नं० २
कर पृष्ठ
मध्यम श्रेणी
चित्र नं० ३
कर पृष्ठ
कनिष्ठ श्रेणी
चित्र नं० ४
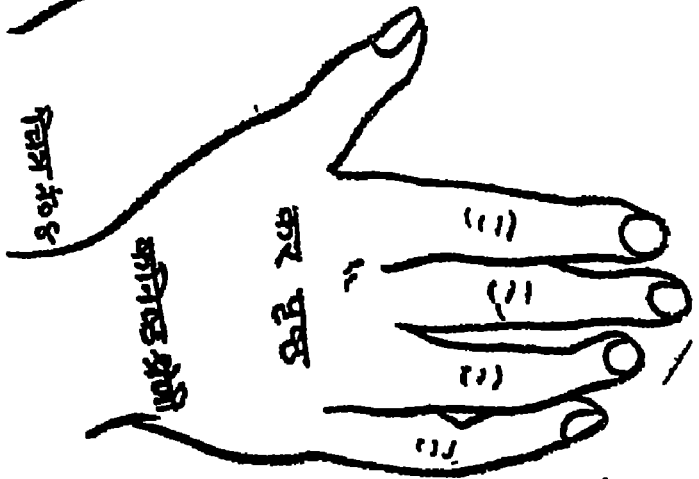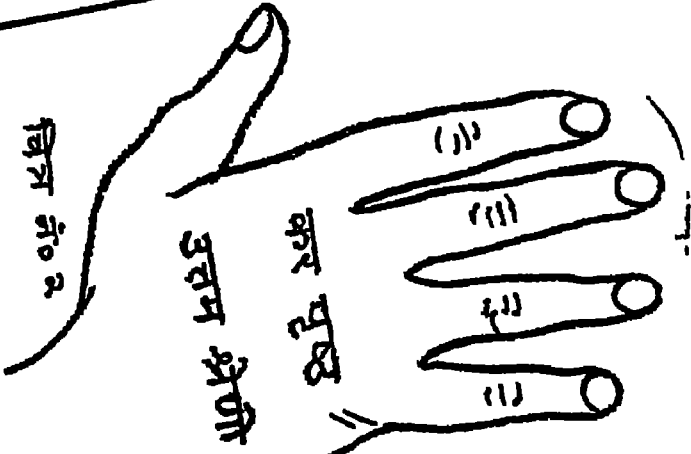
सामञ्जस्य अवश्य ही अधिकांश मे रहता है और उसी के आधार पर परीक्षक हाथ की श्रेणी का निश्चय करता है। इसके पश्चात् हाथ के अन्य लक्षण, चिह्नादि हाथ की जिस श्रेणी की पुष्टि करते हैं परीक्षक भी उसी प्रकार के भेद का निर्णय कर लेता है।

नुकीला (उत्तम श्रेणी) का हाथ

नुकीले हाथ की हथेली साधारणतः ऊंची, चिकनी, चमकदार, मोटी, सुन्दर, पुष्ट (मांस-युक्त) होती है तथा कुछ लम्बी आकृति की होती है। इसकी अंगुलियां लम्बी, नुकीली तथा पुष्ट होती है उनके पर्वत-स्थान दर्शनीय होते हैं तथा नख रंग आरक्त एवं दोष रहित होता है। हाथ कोमल, पुष्ट तथा लाल वर्ण का होता है।

नुकीले हाथ का प्रभाव

नुकीले हाथ वाला व्यक्ति कल्पज्ञ बुद्धिमान, विचारवान, कातर, शान्त, स्त्री के वश में रहने वाला, सुन्दरता-प्रिय, सम्माननीय, ऐश्वर्य सम्पन्न तथा सज्जन होता है। इस हाथ वाले व्यक्ति की कल्पना शक्ति किंवा विचार शक्ति तीव्र होती है, जिसके फल-स्वरुप उसके मस्तिष्क में अनेक विचार घूमते रहते हैं, किन्तु वह अपने विचारों को कार्यान्वित प्रायः नहीं ही करता है। यद्यपि वह विचारों (किंवा योजनाओं) का स्वयं ही निर्माता होता है किन्तु उन पर रचनात्मक प्रयोग करने का अवसर वह प्रायः दूसरों को ही देता रहता है।

चित्र नं० ५

समकोण (मध्यम श्रेणी का) हाथ

समकोण हाथ की अंगुलियां साधारणतः लम्बी होती हैं, उनके अग्र भाग चौकोर होते हैं। इसकी अंगुलियों को सावधानता पूर्वक सीधी (लम्बी) करके एक-दूसरे से मिलाकर देखा जाय तो अंगुलियो की सन्धि में प्रकाश देख पडता है। अंगुलियों मे पर्वत-स्थान साधारणतः ऊंचे उठे हुए और स्पष्ट होते हैं। अगुलियां मोटी होती हैं। इस हाथ की करतलस्थ रेखायें कुछ पीली-सी तथा चौड़ी-सी (फैली हुई) होती हैं वैसे साधारणत सारा हाथ ही कुछ पीला-सा होता है और उसपर उत्तम रेखायें उठी रहती हैं। स्पर्श करने पर यह हाथ कुछ कठोर सा प्रतीत होता है।

समकोण हाथ का प्रभाव

समकोण हाथ वाला व्यक्ति जिज्ञासु, परिश्रम से बुद्धि बढ़ाने वाला, दृढ़ निश्चयी, सदा काम में तत्पर, निष्कपट, लोक-प्रिय, परोपकारी, नीति निपुण, वाद-विवाद मे कुशल, तथा अनुसन्धान-प्रिय होता है। इस हाथ वाले व्यक्ति की कल्पना शक्ति प्रबल नहीं होती है। इस प्रकार के व्यक्ति किसी भी बात को स्वीकार करने से पहले उसके सिद्धांत को तर्क की तीक्ष्ण-तम कसौटी पर परख कर पूर्ण रूपेण कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त समकोण हाथ वाला व्यक्ति उत्तेजना-जनक विचारों को स्वप्न मे भी स्वीकार नहीं करता। जब तक प्रत्येक प्रकार से पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट न हो जाय तब तक इस हाथ वाले व्यक्ति के हृदय पर किसी भी बात का प्रभाव नहीं होता।
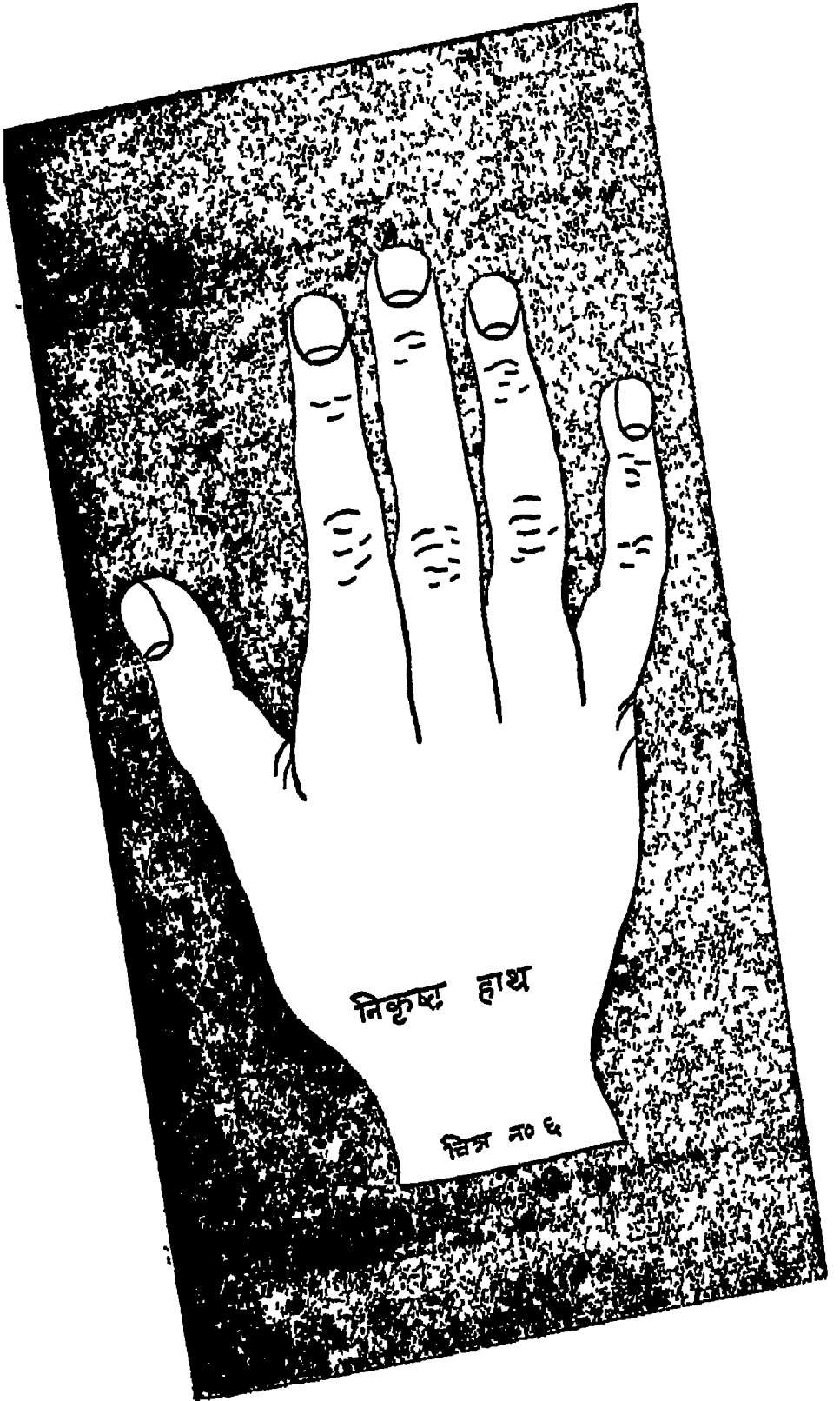
निकृष्ट हाथ
चित्र नं० ६

वृताकार अथवा गोल (कनिष्ट श्रेणी का) हाथ

वृताकार हाथ में उपरोक्त दोनों हाथों का अद्भुत समानता रहता है। इसके कर तल का मध्य भाग नीचा धंसा हुआ गढ्ढा जैसा प्रतीत होता है। रेखायें चौड़ी तथा टूटी-फूटी-सी रहती हैं। अगुलियों के पर्वत-स्थान अस्पष्ट होते हैं। अंगुलिया छोटी और टेढ़ी होती है तथा अंगूठा भी छोटा ही होता है। साधारणतः इस हाथ मे धन-रेखा नहीं होती। इसके अतिरिक्त इसके करतल मे छोटी-छोटी आडी-टेढ़ी, विकृताकृति अथवा फेली हुई (चौड़ी) तीन चार रेखायें होती हैं। स्पर्श करने पर यह बहुत कठोर होता है। इसकी अंगुलियों मोटी होती हैं। इसकी करतल का रंग काला-सा होता है।

वृताकार अथवा गोल हाथ का प्रभाव

वृताकार अथवा गोल हाथ वाला व्यक्ति परिश्रमी, निर्धन, मन्द-बुद्धि तथा विशेष आहारी (होता) है। इसका मन काम करने में बहुत अच्छा रहता है काम से इसको स्वभाविक प्रेम होता है अथवा यों कहिये कि यह सदैव कुछ कहते रहने की वृतिवाला होता है। आलस्य में पड़े रहना इसको तनिक भी नहीं रुचता इस हाथ वाले को सदा बदलता हुआ जीवन अधिक पसन्द है। अपने जीवन में विभिन्न परिस्थितियां किंवा श्रेणियों के जीवन यापन का रसास्वादन करने की इस हाथ वाले की बड़ी लालसा रहती है।

जिस व्यक्ति का हाथ लम्बा भी हो और चौड़ा भी हो वह शारीरिक शक्ति से सम्पन्न होता है। जिस हाथ की करतल और अंगुलियों की लम्बाई समान होती है उस हाथ वाला व्यक्ति सुबुद्धि-सम्पन्न होता है तथा उसकी मस्तिष्क-शक्ति विशेपरूप से प्रबल होती है।

हाथों के दस प्रमुख लक्षण

सामुद्रिक-शास्त्र के भारतीय आचार्यों ने परीक्षक की सुविधा तथा सुज्ञान के हेतु उत्तम हाथ वालों के दस प्रमुख लक्षण निर्धारित किये हैं। ये दस लक्षण निम्नलिखित हैं—

१—स्पर्श करने पर ऊष्ण प्रतीत होने वाला।

२—ताँबे के रंग के समान लाल रंग वाला।

३—जिस हाथ से पसीना नहीं निकलता।

४—जिस हाथ की अंगुलियों को सीधा फैला करके एक दूसरे से मिलाने पर बीच की सन्धियों में छिद्र दिखाई न पड़े।

५—चिकना और चमक वाला।

६—मांस-युक्त।

७—जो हाथ बहुत बड़ा न हो।

८—जिस हाथ की अंगुलियों के नसों का रंग ताँबे के सामान लाल हो।

९—जिस हाथ की अंगुलियां लम्बी हों।

१०—जो हाथ प्रशस्त (फैला हुआ हो)

उपरोक्त लक्षणों मे हाथ के भी दो स्वाभाविक भेद हैं—
१-कोमल, और २-कठोर।

कोमल और कठोर हाथ के लक्षण

कोमल हाथ वाला व्यक्ति आलस्य-प्रिय, अकर्मण्य तथा भीरु होता है। साधारण-सी कठिनाई आते ही इस प्रकार का व्यक्ति असहाय सा होता है और बुरी तरह व्याकुल हो जाता है। इसके विपरीत कठोर हाथ वाला व्यक्ति उत्साही, साहसी, धैर्यशाली, विचारवान तथा वीर होता है। इस प्रकार का व्यक्ति स्वभावतः ही निडर होता है और अवसर पड़ने पर मौत से ताल ठोंक कर जूझ जाता है।

बांयां हाथ दाहिने हाथ का पूरक होता है।

बायां हाथ दाहिने हाथ का पूरक होता है। दाहिने हाथ की रेखाओं के सही निर्णय का प्रमाण बाये मे मिलता है। बायें हाथ में भी प्रायः वही रेखाये और चिह्नादि होते हैं जो दाहिने हाथ मे होते हैं, किन्तु बायें हाथ में ये उतनी संख्या में नहीं होते जितने दाहिने हाथ में। साधारणतः मुख्य-मुख्य रेखाये ही बायें हाथ मे होती हैं। अतः संख्या मे कम होने के कारण बायें हाथ की रेखाये अधिक स्पष्ट और निर्णायक-सी होती हैं। बायें हाथ में जन्मजात विशेषताओं का जितना स्पष्ट अध्ययन होता है उतना दाहिने हाथ में कदापि नहीं हो सकता। इन्हीं कारणों से बायें हाथ को अकर्ता (Passive) हाथ कहा जाता है।

अधिकांश हाथों में उपरोक्त प्रकारों में से कोई एक अथवा अधिक (मिश्रित) होते हैं। मिश्रित में भी किसी एक को ही

विशेष स्थान प्राप्त होगा। अतः उसी भेद को भली प्रकार निश्चित करके परीक्षक को हस्त-सामुद्रिक फल पर विचार करना चाहिए। एक से अधिक भेद एक ही हाथ में मिलने पर जिस भेद के लक्षण अधिक मिलते हों उसे प्रधानता प्रदान करे और शेष को मन से रूपान्तर मान कर उनके मिश्रण के परिमाण में लक्षणों पर विचार करके फल का निर्णय करना चाहिये।

अब हम हाथ के अन्य भेदों का परिचय लिखेंगे। गत परिच्छेद मे हमने हाथ के प्रधान सात भेद लिखे हैं। पाठकों के परिचयार्थ अब उनका विस्तृत वर्णन लिखते हैं।

समकोण हाथ (Sguare Hand)

इस प्रकार के हाथ को समकोण हाथ इसलिए कहते हैं कि यह हाथ मणि बन्ध पर वर्गाकार-सा लगा रहता है। इसकी करतल पूर्ण रूपेण वर्गाकार-सी होती है और इसकी अंगुलियां भी सीधी करके परस्पर मिलाने पर वर्गाकार ही प्रतीत होती हैं। इस प्रकार के हाथ मे मणि-बन्ध से अंगुलियों के नखों छोरों तक करतल और अंगुलियां पृथक-पृथक रूप से समकोण-सी किंवा वर्गाकार होती हैं। इस हाथ की अंगुलियां सरल, कोमल और करतल के पास सुडौल होकर मिली रहती है। इस हाथ का अंगूठा साधारणतः बड़ा होता है। और मद पया अगुली की बीच को गांठ (Knot of Philosofhy) आकार में कुछ बड़ी होती है। इस प्रकार के हाथों के नख प्रायः छोटे और चौकोर होते हैं।

समकोण हाथ (Square Hand) का प्रभाव

समकोण हाथ को उपयोगी हाथ भी कहते हैं। साधारणतः यह हाथ श्रेष्ठ ही होता है। सभी प्रकार के हाथों मे समकोण हाथ अधिक वास्तविक और सिद्धान्तानुमोदित है। इस हाथ वाले व्यक्ति नियमित और व्यवहारिक होते हैं। उनका यह नियमितता और व्यवहारिकता का आचरण केवल किंवा अधिकाँश में परिपाटी और स्वभाव के कारण ही होता है, वास्तविकता से प्रभावित होकर अथवा विचारपूर्ण निर्णय के आधार पर उनकी यह नियमितता और व्यवहारिकता नहीं टिकी है। यह व्यक्ति कोमल-स्वभाव, मिलनसार उत्साही, नम्र, सज्जन तथा सभ्य होता है। इस हाथ वाले व्यक्ति को असभ्य व्यवहार तनिक भी सह्य नहीं होता किसी भी व्यक्ति को अनाधिकार चेष्टा भी इसे सर्वथा असाह्य होती है और यह स्वयं भी अनाधिकार चेष्टा कभी नहीं करता। इसे सदैव स्वभाव से ही शान्ति और सहचारिता में रुचि होती है। किसी भी प्रकार का झगड़ा करने की इसकी कभी इच्छा नहीं होती। समकोण हाथ वाला व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है। और सदैव उच्चपद पाने का अभिलाषी रहता है। अभिमान से यह व्यक्ति कोसों दूर रहता है। अपने लक्ष्य प्राप्ति के हेतु यह व्यक्ति अत्यधिक उत्साह तथा एकाग्रता से प्रयत्नशील होता है। फलतः उसे प्रायः सभी कामों में सफलता प्राप्त होती है। यह व्यक्ति अपने वचन निभाने वाला होता है, निश्चय का दृढ़ होता है, व्यापार के भेदों में निपुण होता है तथा सच्च

होता है। इस व्यक्ति में कल्पना शक्ति का प्राय अभाव-सा होता है। वैसे यह व्यक्ति तर्क-पटु और पार्थिव होते हैं। राष्ट्र में अनुशासन और शान्ति के ये व्यक्ति पक्के हिमायती होते हैं और इनकी कार्यप्रणाली वस्तुतः नियमबद्ध होती है। इस प्रकार के हाथवाले व्यक्ति प्रायः वकील, डाक्टर, वैज्ञानिक और व्यापारी होते हैं।

समकोण हाथ वाले व्यक्ति की अंगुलियाँ यदि गठीली और समकोण के आकार की हों तो वे सत्यभाषी और शान्ति-प्रिय होते हैं। और यदि अंगुलियां नुकीली और मस्तक रेखा झुकी हुई हो तो वह व्यक्ति वेष-भूसा के प्रति सतर्क रहने वाले होते हैं। प्रायः सुन्दर वस्त्र पहनते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्वच्छता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

निकृष्ट हाथ (Elementry Hand)

निकृष्ट हाथ आवश्यकता से अधिक छोटा, भारी और देखने में भद्दा होता है। इस प्रकार के हाथ अटपटी-सी आकृति के खुरदरे और भोंडे-से होते हैं। इनके अंगूठे भी असाधारण रूप से छोटे होते हैं और प्रायः तर्जनी अंगुली के मूल तक भी कठिनता से पहुंचते हैं। इस प्रकार के हाथ में रेखायें बहुत ही कम होती हैं। हृदय-रेखा, मस्तक रेखा और जीवन-रेखा के अतिरिक्त अन्य रेखायें निकृष्ट हाथ में कदाचित् ही मिलती हैं। इस प्रकार के हाथ में अगुलियों और नख भी छोटे होते हैं। यह कठोर भी आवश्यकता से अधिक होता है। यह हाथ सबसे अधिक असभ्य और निकृष्ट श्रेणी का माना जाता है।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति किसी न किसी रूप मे दार्शनिक ही होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे लोग अपने असाधारण व्यक्तित्व से परिचित हों, क्योंकि यद्यपि वे सभी के साथ मित्रवत् व्यवहार रखते हैं तथपि उनके अन्तरंग मित्र किंवा साथी नहीं के बराबर ही होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को अर्थ-संचय मे कदाचित् ही सफलता मिलती है और यदि वे धनाढ्य हो जाते हैं तो अपना अधिकांश धन परोपकार में ही व्यय कर देते है। वे दूसरों को, जो कि पीडित हों, घर बना देते हैं, गरीबों के लिए स्कूल बना देते है। चाहे उनके विचार विचित्र हों किन्तु उनकी मनोवृत्ति उदार होती है।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति प्रायः मानवता का अध्ययन करते पाये जाते हैं और प्रायः मानवचरित्र के बड़े-बड़े विद्यार्थी दार्शनिक हाथ वालों के पास मिलते हैं। दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति विस्तृत वर्णन, स्पष्टता, स्वच्छता, और नियमबद्धता के प्रेमी होते हैं। दार्शनिक हाथ वाले किसी भी पुरुष अथवा स्त्री से कृपा प्राप्त करने के लिए वस्त्रों अथवा वेशभूषा के सम्बन्ध में विशेष रूप से सतर्क रहना चाहिये।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति शान्त-स्वभाव, गम्भीर और छिद्रान्वेषी होते हैं। इनके छिद्रान्वेषण की सीमा इतनी विस्तृत होती है कि एक-एक शब्द के उच्चारण तक में ये लोग बहुत ही सतर्क होते हैं। इनको अन्य व्यक्तियों से स्वयं के भिन्न होने का गर्व-सा होता है। अपने व्यक्तित्व में अत्यधिक विश्वास होने के कारण ये लोग प्रायः स्वाभिमानी होते हैं।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति चाहे सामाजिक प्रतिबन्धों की ओर से उदासीन हो जायें किन्तु धर्म की ओर उनका झुकाव अवश्य होगा। इस हाथ वाले व्यक्ति अधिकांश मे उपदेशक, कवि और लेखक होते हैं। यदि सच पूछा जाय तो उनकी भावनायें धर्म-प्रधान अधिक नहीं होती बल्कि वे कर्तव्यपरायण अधिक होते हैं। इस प्रकार का व्यक्ति प्राय: बिखरे हुए गुणों का संचय करने में अधिक व्यस्त रहता है।

माया, ममता और मोह तो इस प्रकार के व्यक्ति को छूता तक नहीं है। उसके विचार अत्यन्त पवित्र तथा उच्च होते हैं। विचार स्वातन्त्र्य भी इनका प्रधान स्वभाव है जब तक सांगोपांग प्रमाण नहीं मिलता है ये किसी भी बात को स्वीकार नहीं करते कोरे तर्क के सहारे ये अपनी धारणा कभी नहीं बदलते। योगी और मुमुक्षु प्रायः इसी प्रकार के व्यक्ति होते हैं। अधिकांशतः ऐसे हाथ वाले व्यक्ति किसी एक विषय के एकान्त विद्यार्थी होते हैं और अपनी धुन में इतने मस्त रहते हैं कि अपने आपको दूसरों से सर्वथा पृथक् रखना इन्हें विशेष रुचिकर होता है।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति शान्ति-प्रिय, उदार, तत्त्वदर्शी, भावुक, विवेकी, आध्यात्मिक, दार्शनिक कर्तव्य-परायण, सत्यान्वेषी, अहिंसक, संगोपन शील, विश्वस्त, ज्ञानी, योगी, भक्त आत्म-चिन्तक और सावधान होते हैं। वैज्ञानिक, रासायनिक, चिकित्सक, शिक्षक, और नेताओं में भी इस प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति रहस्यवादी भी
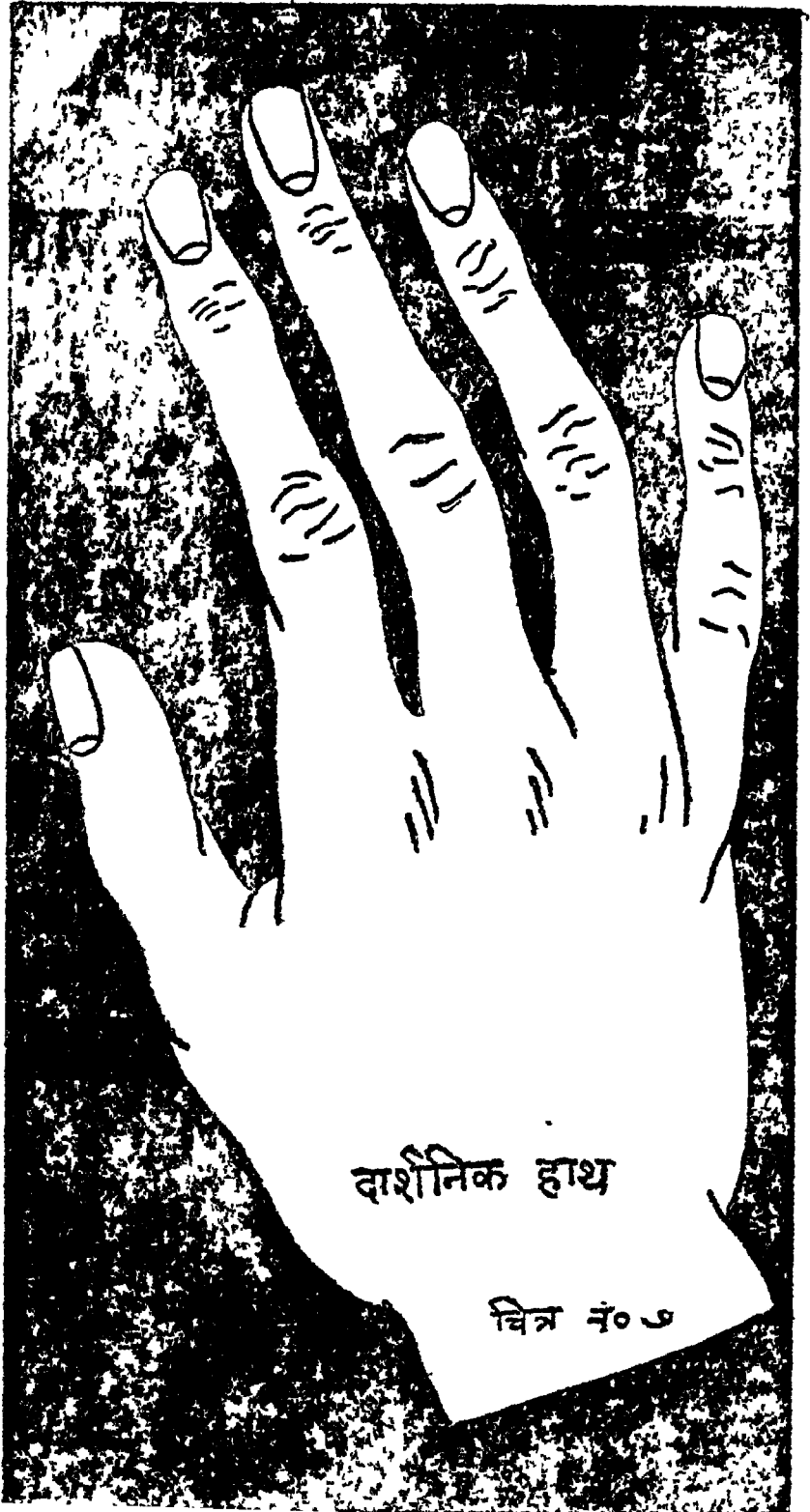
चित्र नं० ७

भारी होती हैं और उनके सन्धि-स्थान अपेक्षाकृत उभरे हुए होते हैं। सामुद्रिक-शास्त्र के अनुसार हाथों का अध्ययन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस किसी भी व्यक्ति की अंगुलियों के सन्धि-स्थान उभरे हुए होंगे वह विचारशील और दार्शनिक होगा इसके विपरीत सपाट नुकीली अंगुलियों वाला व्यक्ति विचार-शीलता और दार्शनिकता—दोनों से कोसों दूर होगा। अंगुलियों के सन्धिस्थान उभरे हुए होने पर व्यक्ति को तत्व-विचार से प्रेम होता है, किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि हाथ का स्वरूप, उसकी आकृति, उसकी बनावट और मस्तकरेखा की स्थिति ही इस बात का निर्णय करती है कि अमुक व्यक्ति को रसायन तत्वों के विश्लेषण से प्रेम होगा अथवा मानवीय-तत्वों के विश्लेषण से।

दार्शनिक हाथ की हथेली बीच में झुकी हुई रहती है, अंगु-लियां लम्बी, सुडौल किन्तु कुछ टेढ़ी होती हैं। दार्शनिक हाथ की अंगुलियों के सिरे (छोर) नोकीले, वर्गाकार, या चमसाकार भी हो सकते हैं। ऐसी दशा में सम्बन्धित व्यक्ति के विचारों तथा क्रियाशक्ति पर उनके अनुसार प्रभाव बहुत अधिक रहेगा।

दार्शनिक हाथ (Philosophic Hand) का प्रभाव

दार्शनिक हाथवाले व्यक्ति का व्यक्तित्व असाधारण होता है और अन्य प्रकार के हाथ वालों की अपेक्षा सर्वथा स्पष्ट एवं भिन्न होता है। उनके विचार, कार्य और स्वभाव न्यूनाधिक रूप में विचित्र-सा होता है।

निकृष्ट हाथ (Elementry Hand) का प्रभाव

निकृष्ट हाथ इस बात का द्योतक है कि यह व्यक्ति पूर्ण रूपेण निम्नतम विचारों वाला है। इस हाथ वाला व्यक्ति पशु और मनुष्य के मध्य का स्वभाव वाला होता है। इस व्यक्ति में मानसिक शक्ति दिया लेकर खोजने पर भी नहीं मिलती। ये लोग प्रायः बुद्धिहीन और दुष्ट प्रकृति के होते हैं। उनकी विचारधारा सदैव पाशविकता की ओर प्रभावित रहती है। ये व्यक्ति सदैव ऐसे कार्य करते हैं जिनमें बुद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती। इनका व्यवसाय अथवा जीविकोपार्जन का साधन भी प्रायः इसी प्रकार का होता है। ये क्रोधी तो बहुत ज्यादा होते हैं, किन्तु इनमें साहस नाम-मात्र को भी नहीं होता। अपनी वासनाओं पर इन्हें तनिक भी अधिकार नहीं होता और उन्हें पूर्ण करने मे ये प्रत्यक्षतः जंगली और पशु बन जाते है। इस हाथ वाले व्यक्ति जन्म से ही दुराचारी, कुमार्गी, धूर्त और नीच होते है। प्राय, पराये धन, पराई स्त्री आदि के अपहरण में यह व्यक्ति अधिक संलग्न तथा संतुष्ट रहता है। इस हाथ वाले में यदि कोई गुण है तो वह इतना ही है कि वह धोखा बहुत कम खाता है और सदैव दूसरों के माल पर मौज उड़ाता है।

निकृष्ट हाथ वाले की हथेली जितनी बड़ी होगी वह उतना ही अधिक पशुत्व के निकट होगा। इस प्रकार का व्यक्ति खाना, पीना, सोना और मरना ही जानता है। किसी प्रकार की अच्छी भावना या अच्छे विचार उसमें मूल से भी उत्पन्न नहीं होते।

निकृष्ट हाथ की अंगूठियां यदि मोटी हों तथा हथेली सुदृढ़ और कठोर हो तो यह चंचल-चित्त का लक्षण है । ऐसा व्यक्ति बात-बात में उत्तेजित हो जाता है । वह आत्मनिर्भर, स्वतंत्रताप्रिय स्वावलम्बी, दृढ़संकल्प, कल्पक, सुदृढ़, शारीरिक और मानसिक कार्य में प्रवीण, कार्यतत्पर, गाने-बजाने में कुशल, चतुर, बुद्धिमान्, परिश्रमी, व्यायाम-प्रिय, कल-कारखाने और वाणिज्य के काम में कुशल, व्यवसायी, निष्कपट, सत्यवादी, तथा प्रतिज्ञा-पालक होता है। वह किसी का मोहताज नहीं रहता। किंतु इन गुणों के होते हुए भी उसके विचार नीच ही होते हैं और अधिकांशतः वह पाशविक-वृत्ति में ही संलग्न रहता है । इस प्रकार का हाथ यदि कोमल या ढीला हो तो वह व्यक्ति चंचल, क्रोधी, आलसी और पराये काम की देख-भाल करने वाला होता है ।

अपवाद

निकृष्ट हाथ वाले व्यक्ति कभी-कभी असाधारण धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न भी पाये जाते हैं। किन्तु उनकी प्रकृति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। ऐसे धनाढ्य व्यक्ति भी दुराचारी, कुमार्गी, लम्पट, धूर्त, कामुक, नशेबाज, क्रूर, कपटी, दुष्टप्रकृति और नीच मनोवृत्ति वाले ही होते हैं।

दार्शनिक हाथ (Philosophic Hand)

दर्शनिक हाथ अन्य सभी प्रकार के हाथों की अपेक्षा सरलता और सहज बुद्धि से पहिचाना जा सकता है। यह हाथ साधारणतः लम्बा और कोणाकार होता है। इसकी अंगुलियों की हड्डियां

होते हैं। विद्वानों के सत्संग में इस प्रकार के व्यक्ति स्वयं ही पहुंच जाते हैं, क्योंकि अपने विचारों को सुयोग्य व्यक्तियों पर प्रकट करने की इनकी उत्कट अभिलाषा रहती है। ये लोग दृढ़ निश्चयी भी परले सिरे के होते हैं।

व्यवसायी या कलाप्रिय हाथ (Conic or Artistic Hand)

व्यवसायी अथवा कलाप्रिय हाथ के नाम से ही प्रायः परीक्षक भूल भूलैया में फंस जाते हैं। वास्तव में इस नाम से बड़ा धोखा होता है। इस नाम के कारण प्रायः लोग ऐसा समझने लगते हैं कि इस प्रकार का हाथ वाला व्यक्ति अवश्य ही कलाकार होगा। चित्रकार, संगीतज्ञ आदि को लोग इसी प्रकार का हाथ वाला समझते हैं। किन्तु ऐसी धारणा वस्तुतः कोरा भ्रम है। वास्तव में ऐसे हाथ का होना यह प्रगट करता है कि इस हाथ वाला व्यक्ति प्रत्येक दशा में कला-प्रेमी और सौन्दर्योपासक है। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति अपने कला-सम्बन्धी विचारों को कदाचित् ही कार्यरूप में परिणत करते हैं। इस का मुख्य कारण यह है कि इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति दृढ़-निश्चयी विरले ही होते हैं।

व्यवसायी अथवा कला-प्रिय हाथ को वास्तव में चंचल-मति हाथ कहना अधिक युक्तियुक्त होगा, क्योंकि इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति किसी भी बात पर विचार-विनिमय अथवा मनन नहीं करते और न किसी बात पर अपना निर्णय ही काम में लेते हैं। ये लोग तो समय के साथ बहने वाले होते हैं। ये लोग वास्तव में कलात्मक और प्रभावशाली स्वभाव का प्रदर्शन-मात्र
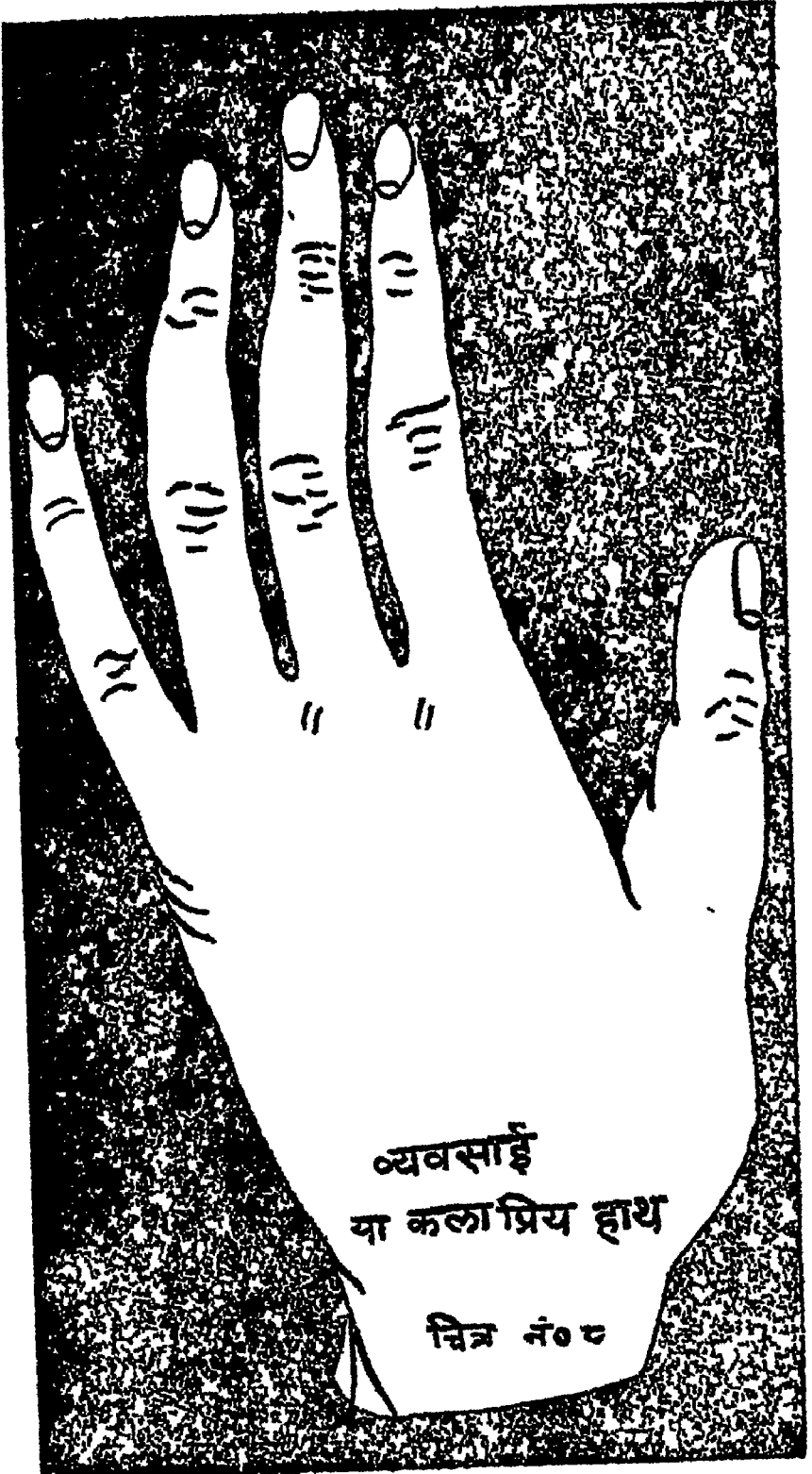
व्यवसाई
या कलाप्रिय हाथ

चित्र नं० ८

विषम अथवा आदर्शवादी हाथ आकार में छोटा किन्तु लम्बा होता है। इसकी अंगुलियां छोरों पर अधिक पतली, उभरी, नोकीली और कोमल होती हैं। इसके नख बादाम की आकृति के होते हैं। अंगुलियां मूल स्थान पर मोटी होती हैं। यह हाथ कोमल और चिकना होता है। इसका रंग सदैव लाल रहता है। अंगूठा अंगुलियों के उद्गम-स्थान की ओर झुका हुआ रहता है। यह हाथ स्वयं भी कुछ दृढ़ होता है। संक्षेप में यह हाथ देखने में अतीव मनोहर होता है।

विषम अथवा आदर्शवादी हाथ का प्रभाव

इस हाथ वाले व्यक्ति जीविकार्जन की झंझटों अथवा रोटी की लड़ाई में पूर्ण रूपेण असमर्थ होते हैं। यह व्यक्ति सर्वथा काल्पनिक और आदर्शवादी होते हैं। वे अपने जीवन का आधा भाग तो किसी विचार के अनवेषण में ही खो देते हैं और शेष जीवन को जीवन फ दाने बाने को ठीक करने में समाप्त कर देते हैं।

इस प्रकार के व्यक्ति को व्यावहारिक, व्यवटारिक या तार्किक होने का स्वप्न तक नहीं आता। अनुशासन, और नियमितता तो उन्हें छूभी नही जाती। रंग का उनपर सटीक प्रभाव होता है, अतः वे प्रायः चित्रकला सम्बन्धी कार्यों में ही सफल होते हैं, शेष सभी कामों उन्हें प्रायः असफलता ही पल्ले पड़ती है।

ऐसा व्यक्ति व्यावहारिक व्यक्ति के साथ कभी भूल कर भी नहीं निभता। ऐसे व्यक्ति की प्रकृति बच्चों जैसी होती है। वह

कोरा स्वप्नदृष्टा, और कल्पना का पुजारी होता है। उससे दैनिक जीवन की व्यावहारिक चर्य्या और तत्सम्बन्धी नियमितता की आशा रखना पागलपन है। प्रबन्ध करने की योग्यता का इनमें एकान्त अभाव होता है और समय का सदुपयोग करना तो उनके लिए पाप है। यही कारण है कि विषम या आदर्श वाले व्यक्ति उत्तम श्रेणी के व्यापारी और उद्योगपति नहीं बन पाते।

आलसी होने के कारण वे किसी परिश्रमी और साहसी व्यक्ति के साथ काम करने को प्रस्तुत नहीं होते। ऐसे व्यक्ति प्राय. कट्टर धार्मिक और अपने इष्ट देव को प्रत्यक्ष रूप में देखने के सदैव अभिलाषी रहते हैं। अपने इष्ट देव में इस प्रकार के व्यक्ति की अनन्य श्रद्धा रहती है और प्रत्येक परिस्थिति में वे उसकी भक्ति और आराधना में तल्लीन रहते हैं।

विषम अथवा आदर्शवादी हाथ वाले व्यक्ति को धार्मिक रूढ़ियों मे अन्धविश्वास होता है। उनका यह अन्धविश्वास इस सीमा तक बढ़ा हुआ होता है कि वे अपनी समस्त श्रद्धा और भक्ति को अपने इष्ट देव से साक्षात् करने में लगा देते है और उसके अनन्य उपासक बन जाते हैं। संक्षेप में उनका मार्ग विचित्र सा होता है। हाँ, मस्तकरेखा शुभ होने पर ऐसे व्यक्ति की मानसिक चेष्टाओं पर कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है; किन्तु यह तो रेखाओं का प्रभाव है। विषम अथवा आदर्शवादी हाथ के वर्णन के प्रभाव से उसका क्या प्रयोजन है।

को सीमान्त कर देते हैं। वे तुनक-मिजाजी भी बहुत ज्यादा होते हैं। किन्तु उनकी तुनक-मिजाजी केवल कुछ क्षणों के लिए ही होती है। क्रोधावेश में ये व्यक्ति आपे से बाहर हो जाते हैं और उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं रहता है कि उनके मुँह से क्या और कैसे शब्द निकल रहे हैं।

वे उदार और सहानुभूति रखने वाले होते हैं। किन्तु स्वार्थ से टकराने पर उनकी उदारता और सहानुभूति हवा हो जाती है। किन्तु वे प्रेमी जीव अधिक होते हैं, अतः अन्त में उनकी सहानुभूति और उदारवृत्ति की ही विजय होती है।

इस प्रकार हाथ दृढ़ और कोमल हो तो अच्छा है। यदि इस प्रकार का हाथ गदेला और ढीला होगा तो वह व्यक्ति स्वार्थी होगा, उसे अपने ही सुख का ख्याल रहेगा और अपनी विलासप्रियता, स्वार्थ तथा आराम पर सब कुछ निछावर कर देगा।

विषम अथवा आदर्शवादी हाथ

(Psychic or the Idealistic Hand)

विषम अथवा आदर्शवादी हाथ सबसे अधिक सुन्दर होता है; किन्तु यदि सांसारिक प्रगति की दृष्टि से विचार किया जाये तो यह हाथ सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण होता है। इस प्रकार का शुद्ध हाथ मिलना बहुत ही कठिन है, क्योंकि हमारी वर्तमान सभ्यता इस प्रकार के तत्वों के पुनर्जन्म या जिन भावनाओं का का वह द्योतक है उन भावनाओं को भूल कर भी प्रोत्साहन नहीं देती है।

विषम अथवा
आदर्शवादी हाथ
चित्र नं० ९

करते हैं जिसमे आमोद-प्रमोद और आलस्य और विलासप्रियता की भावना का ही प्राधान्य होता।

व्यावसायिक अथवा कलाप्रिय हाथ की अंगुलियाँ उद्गम-स्थान पर भारी और सिरे पर पतली होती हैं और इस हाथ की लम्बाई-चौड़ाई मध्यम होती है।

व्यवसायी या कलाप्रिय (Conic or Artistic) हाथ का प्रभाव

इस प्रकार के हाथ वाला व्यक्ति कलाप्रेमी होता है। उसे गायन, वादन, नृत्य, चित्रकला आदि सभी ललितकलाओं से अत्यधिक प्रेम होता है। वह ललितकलाओं को सीखने की अभिलाषा भी करता है, किन्तु उसका स्वभाव चंचल किंवा तरंगित होता है। अतः उसे सफलता नहीं मिलती। वह प्रत्येक काम में उतावला रहता है, हमेशा हथेली पर सरसो जमाना चाहता है। दूसरों के बताए हुए मार्ग पर चलने के लिए उतावला हो जाता है, किसी भी काम को आरम्भ करने से पूर्व तो बहुत दृढ़ता और साहस का परिचय देता है किन्तु बाद में शीघ्र ही अधीर हो जाता है और साहस खो बैठता है। ऐसा व्यक्ति यद्यपि कभी भी सफल नहीं होता, किन्तु अपने मन में सदैव अपने-आपको सफल ही अनुभव करता है। परिणाम को बिना सोचे-विचारे ही किसी भी काम को आरम्भ करने में ऐसा व्यक्ति अपना गौरव समझता है।

इस प्रकार के हाथ वाला व्यक्ति अपने विचार और भावनाओं में चाहे कितना ही तीव्र और चतुर क्यों न हो किन्तु किसी भी

काम को आरम्भ करते ही उसे थकावट अनुभव होने लगती है फलत: अपने संकल्प और विचारों को कदाचित् ही सफल कर पाता है।

इस प्रकार के व्यक्ति किसी सीमा तक असाधारण वाचाल, होते हैं। यह व्यक्ति बात के तत्त्व को बड़ी जल्दी पकड़ लेता है, किन्तु यह मानना पड़ेगा कि व्यक्ति होता थोथा है। यद्यपि यह व्यक्ति प्रत्येक बात को बड़ी शीघ्रता से ही सीख सकता है, किन्तु धैर्य का अभाव और तरंगित मनोवृत्ति के कारण वह कुछ भी नहीं सीख पाता।

इस प्रकार के व्यक्ति छोटी-छोटी बातों पर असन्तुष्ट हो जाते हैं, घबड़ा जाते हैं और मैदान छोड़ भागते हैं। जो व्यक्ति इनके सम्पर्क में आता है उस पर और इनके सम्बन्धित वातावरण में इनका न्यूनाधिक प्रभाव अवश्य रहता है।

इस प्रकार के हाथ वाली स्त्री अपने जातिगत स्वभाव की अपेक्षा बहुत अधिक अपनी प्रशंसा की भूखी होती है। हृदय के व्यवहार में वे बहुत ज्यादा भावुक होती हैं। प्रेम के बिना उनका जीवन दूभर हो जाता है किन्तु इस सम्बन्ध में उनकी भावनायें और चेष्टायें बच्चों के सदृश होती हैं। चाहे किसी को उनके प्रेम की यथार्थता किंवा स्थायित्व का विश्वास हो अथवा न हो किन्तु वे तो अत्यधिक प्रगाढ़ प्रेम करने लग जाती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति प्रथम दृष्टि में ही अनुकूल अथवा प्रतिकूल धारणा बना लेते हैं, और फिर अपनी इस धारणा

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति साधारणतः शक्तिशाली, परिश्रमी, स्वावलम्बी, कठोर, अल्पबुद्धि, मूर्ख, अविवेकी हिताहित-ज्ञान-शून्य, पाशविक-प्रकृति वाले विकराल, क्रोधी, आशुतोष और क्रूर कर्मा होते है। किसान, मजदूर, कारीगर, श्रमशिल्पी, भार-वाही (बोझा ढोने वाले) फेरी वाले, तथा निम्न श्रेणी के व्यक्तियों के प्रायः इसी प्रकार के हाथ मिलते है। इन व्यक्तियों धारणाशक्ति अत्यन्त न्यून होती है। यदि यह कहा जाय कि इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति में धारणा-शक्ति का सर्वथा अभाव होता है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति को यदि किसी स्थान से आवश्यक सहायता न मिले और उसकी अपनी आर्थिक स्थिति भी विषम हो तो उसका जीवन दुःखान्त हो जाता है और वह सरलता से जीविकाभाव की चोट से मर्माहत होकर एक ओर सटक जाता है या अत्यधिक असहाय होकर जीवन का बोझा ढोता रहता है। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति वास्तव में सांसारिक जीवन-क्षेत्र के लिए सर्वथा अनुपयुक्त होता है और यदि भाग्य-वश उसकी आर्थिक स्थिति दृढ़ हुई अथवा अन्य किसी आधार पर उसको जीवन-यापन की आवश्यकताओं के प्रबन्ध की चिन्ता से मुक्ति मिल गई तो वह इनने उच्चतम आदर्शों तथा आध्यात्म की झलक का रसास्वादन करता है जो अनिर्वचनीय है।

(उद्यमी-हाथ Spatulate or the Active Hand)

उद्यमी हाथ साधारणतः मुड़ा हुआ होता और विकृताकृतिका होता है। यह हाथ प्रायः लम्बा होता है। हथेली भी लम्बी होती

चित्र नं० १०

है। इस हाथ की हथेली का मणि बन्ध के पास वाला भाग उभरा हुआ होता है और अंगुलियों के पास वाला भाग उसकी अपेक्षा कम उभरा हुआ होता है। अंगूठे के नीचे का भाग प्रायः गठीला होता है। इस हाथ की अंगुलियां प्रायः भ्रष्ट-आकृति की होती हैं। टेढ़ी-सीधी-सी, मुड़ी-तुड़ी-सी अंगुलियां होती हैं। हथेली की चौड़ाई भी मणि बन्ध के पास की चौड़ाई की अपेक्षा अंगुलियां पास अधिक होती है। किसी-किसी हाथ में इसके विपरीत भी होता है। उद्यमी हाथ की हथेली मणिबन्ध अथवा अंगुलियों की ओर ढालू रहती है। यह हाथ ठोस और कठोर भी हो सकता है तथा ढलथला और कोमल भी हो सकता है। संक्षेप मे देखने में यह हाथ अच्छा मालूम नहीं देता। भद्दा और अटपटा-सा लगता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी नौसिखिये कारीगर ने बेडौल-सा ठोक पीट कर तैयार किया हो।

उद्यमी (Spatu'ate or the Active Hand) का प्रभाव

उद्यमी हाथ यदि ठोस और कठोर हो तो इस हाथ वाला व्यक्ति अशान्त, उत्तेजक-प्रकृति वाला होगा। यदि ऐसा ही हाथ हो तो इस प्रकार का हाथ होना सौभाग्य का लक्षण है। ऐसे हाथ वाला कर्त्तव्य परायण, शक्ति सम्पन्न, और स्वतन्त्रता-प्रेमी होता है। उसे आविष्कार, खोज और मौलिकता से स्वभाविक स्नेह होता है। इस प्रकार के हाथ अधिकांशतः महान सामुद्रिक यात्रियों, अनुसन्धान कर्ताओं, भूगर्भ-वेत्ताओं आदि से मिलते हैं इंजीनीयरों और मशीन शास्त्रियों के भी ऐसे ही हाथ होते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाला व्यक्ति जीवन की किसी भी परिस्थिति में क्यों न रहे, किन्तु उसकी स्वातन्त्र्य भावना श्लाघनीय होती है। उसका व्यक्तित्व, और शिष्टाचार सम्बन्धी उसके नये-नये विचार बड़े सुन्दर होते हैं। ऐसे हाथ वाले पुरुष और स्त्री को लोकाचार में प्रायः अनगढ़ के नाम से स्मरण करते हैं, क्योंकि वे शती और परम्परा की अपेक्षा नहीं रखते।

हथेली की आकृति में ढलान यदि मणि बन्ध की ओर हो तो वह अधिक श्रेष्ठ है। यह विशेष रूप से व्यवहारिक होता है। मणिबन्ध की ओर ढलानवाली हथेली वाला व्यक्ति यदि अनु-सन्धान-कर्ता किंवा आविष्कर्ता हो तो वह अपनी शक्ति जीवन के लिए अधिकतम उपयोगी वस्तुओं के हेतु व्यय करेगा और यदि हथेली का ढलान अंगुलियों की ओर होगा तो उसके अनु-सन्धान की पृष्ठ भूमि आदर्शवाद होगी और उसके आविष्कार जीवनोपयोगी तथा व्यवहारिक नहीं होंगे।

उद्यमी हाथ यदि कोमल और थलथला हो तो वह व्यक्ति अत्यधिक अशान्त और अस्त-व्यस्त भावना वाला होगा। ऐसे व्यक्ति किसी भी विषय में स्थिर नहीं होते। वे कोरे अवसरवादी होते हैं और प्रायः उनका जीवन असन्तुष्ट, अरुचिकर और अटपटा-सा होता है।

उद्यमी हाथ यदि सुदृढ़ और कठोर हो तथा उसकी अंगु-लियां गठीली हों तो व्यक्ति परिश्रमी और उद्यमी होता है। वह भूल कर आलस्य में जीवन नहीं बिताता; सदैव कुछ न कुछ करता है। यदि शारीरिक अवकाश में रहेंगे तो मानसिक चिन्तन

में ही संलग्न रहेंगे – कोई न कोई गम्भीर विषय पर वे विचार मग्न रहेंगे। एक क्षण भी व्यर्थ सोना उनके लिए पाप है। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति साहसी और प्रयत्नशील प्रकृति के होते हैं। उनमें स्वतन्त्र कार्य करने की क्षमता होती है अपनी स्वतन्त्रा क्षमता ही उनको दूसरों का विरोध करने को विवश कर देती है।

सरल हाथ वाले व्यक्ति शासनेच्छुक होते हैं। किसी के आधीन रहना उनको कदापि रुचिकर नहीं है। ऐसे व्यक्ति प्रायः झगड़ालू, साहसी, परिश्रमी और विप्लवी होते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से ही दूसरों के पास जाकर कोई ऐसे सगूफे छोड़ेंगे कि जिस किसी स्थान पर वह बात पहुंचेगी, खलबली मच जायगी। कुछ भी हो यह मानना ही होगा कि ऐसे व्यक्ति नवीन विचारों के सृष्टा और नव-जीवन के दूत होते हैं।

उद्यमी हाथ अंगुलियां यदि गठीली न हों और चिकनी हों तो वह व्यक्ति कलाकार होता है। वह दूसरों को भी कला सीखने और कलाकार बनने की ही प्रेरणा देता है। यों स्वयं कोई कुशल कलाकर भी नहीं होता है किन्तु जिज्ञासु अवश्य होता है। यदि अंगुलियां चिकनी होने के साथ-साथ लम्बी भी हों उस व्यक्ति को वनस्पति-शास्त्र में अधिक रुचि होती है।

अंगुलियाँ गठीली होने पर व्यक्ति परिश्रमी सरल-स्वभाव, अल्प-क्रोधी और विनम्र होता है। ऐसे व्यक्ति का शरीर चपल होता है। अश्वारोहण, आखेट, लक्ष्य-भेदन आदि कार्यों में उसकी विशेष रुचि रहती है।

उद्यमी हाथ के अन्तर्गत ही सूच्याग्र हाथ भी होता है। इस हाथ वाले व्यक्ति दिव्य ज्ञानी, परोपकारी, धैर्यशील, उदार, दयालु, शान्ति प्रिय, उच्चादर्शी, संगीत-प्रेमी, कल्पक, रसज्ञ और सबको उच्च दृष्टि से देखनेवाला होता है। ऐसे व्यक्ति किसी अंश में मानसिक-शक्ति में दुर्बल होते हैं। अतः प्रत्येक प्रकार के कार्य में ऐसे व्यक्ति असमर्थ रहते हैं। वाणिज्य-व्यवसाय में ऐसे व्यक्ति अपेक्षाकृत न्यून-बुद्धि होते हैं। किन्तु ऐसे व्यक्ति पतित कभी नहीं होते। इस हाथ का अंगूठा छोटा न होकर बड़ा हो तो वह अधिक शुभ है।

उद्यमी हाथ वाला व्यक्ति यद्यपि श्रमशील होता है किन्तु माँ शारदा की सेवा करने में उसे कभी भी रुचि नहीं होती। यों वह शिक्षित अवश्य होता है।

मिश्रित हाथ (Mixed-Hand)

हाथ का यह अन्तिम भेद परिचय के नाते सबसे कठिन है। इसकी व्याख्या में कठिनाई का कारण यह है कि यह मिश्रित हाथ है। इस प्रकार के हाथ को उपरोक्त प्रकार से वर्गाकार, उपयोगी दार्शनिक आदि—वर्ग विशेष के अन्तर्गत निश्चित करना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है—यही कारण है कि इसे मिश्रित हाथ की संज्ञा दी गई है।

मिश्रित हाथ को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसके निर्माण में प्रायः सभी प्रकार के हाथों ने सहयोग प्रदान किया है। जिस प्रकार शुम्भ-निशुम्भ दैत्यों के आतंक से त्रसित देवताओं ने

मिश्रित हाथ

चित्र नं० ११

उसे नष्ट करने के लिए अपनी-अपनी शक्ति और वाहनों को एक ही शक्ति में आश्रित करके जगन्माता महामाया चामुण्डा का आविर्भाव किया था। उसी प्रकार सभी प्रकार के हाथों के लक्षण एक मिश्रित हाथ में दृष्टिगोचर होते हैं। इसे यदि हाथों का चित्रालय कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मिश्रित हाथ की कोई अंगुली नोकीली होती है तो दूसरी वर्गाकार और तीसरी चमसाकार इसी प्रकार इसकी प्राय: सभी अंगुलियां भिन्न-भिन्न आकृति और स्वरूप की होती हैं। यही दशा इस हाथ के अन्य अंगों की भी होती है। इसके सभी अंगों में प्राय: विभिन्न प्रकार के हाथों के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

मिश्रित हाथ (M.xed Hand) का प्रभाव

मिश्रित हाथ वाला व्यक्ति बहुमुखी प्रकृति का होता है। इसकी भावनायें तथा विचार समुद्र-तलकी रेत के समान अस्थिर होते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति में प्रायः सभी प्रकार की भावनायें, विचार गुण आदि पाये जाते हैं, किन्तु वह अपनी मनोवृत्ति का उपयोग किंवा प्रयोग करने में अनिश्चित और अस्त-व्यस्त होता है। इस प्रकार का व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा सभी काम जानता है, किन्तु किसी भी विषय में पारंगत नहीं होता। हां यदि इस प्रकार के हाथ में मस्तक रेखा शुभ हो तो उस व्यक्ति को उसके विशेष प्रिय किसी एक विषय में अच्छी योग्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है और वह उस विषय में स्वेच्छा से ही लगनशील रहता भी है। किन्तु ऐसा सुयोग्य कदा-

चित ही होता है; अन्यथा मिश्रित हाथ वाला व्यक्ति स्वभाव से ही अस्थिर प्रकृति का होता है जो कि किसी भी काम मे सफलता की सीमा तक धैर्य के साथ लगा नहीं रहता है। यही कारण है कि सफलता इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति की परछाई से भी दूर ही भागती है।

मिश्रित हाथ की अंगुलियां आदि समकोण होकर छोरों पर नुकीली हों तो वह व्यक्ति विश्वासघाती और आँखों में धून झोंक कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने मे सिद्ध हस्त होता है। निकृष्ट और व्यवसायी हाथ के लक्षणों से युक्त मिश्रित हाथ वाले व्यक्ति निश्चिन्त प्रवृत्ति के तथा दूसरों के आश्रय पर काम करने वाले होते हैं। उनमे विभिन्न विषयों पर भाषण देने की शक्ति होती है, किन्तु उनका भाषण अनर्गल प्रलाप के समान प्रभाव हीन होता है। ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति अनेक विषयों की खोज रखते हैं और सभी परिस्थितियों में सभी विषयों का सामञ्जस्य स्थापित करके बड़ी सतर्कता से काम करते हैं। ऐसे व्यक्ति यद्यपि कभी-कभी आरब्ध कार्य को पूरा नहीं कर पाते, किन्तु प्रबल इच्छा शक्ति और धैर्य के बल पर इन्हें सफलता और ख्याति— दोनों ही प्राप्त हो जाती हैं। ऐसे व्यक्तियों की दृष्टि मे धन से अधिक मूल्य मान का किंवा ख्याति का होता है और वे मोहक तथा जन प्रिय होते हैं। उनकी मनोवृति यद्यपि अस्थिर होती है तथापि वे बुद्धिमान, प्रतिभा सम्पन्न और मेधावी होते हैं तथा दूसरों को किसी भी विषय में सन्तुष्ट करने में कुशल होते हैं।

मिश्रित हाथ में यदि समकोण और चमसाकार हाथ के लक्षणों का मिश्रण होता है तो उसके गुणों में विशेषता आ जाती है। वह परिश्रमी होता है और नियम पालन की श्रेष्ठता समझने लगता है।

मिश्रित हाथ वाला व्यक्ति सदैव प्रतीक्षाप्रिय होता है और अपने प्रेमी जनों से सदैव चुहल करना उसे रुचिकर होता है। यह व्यक्ति सदैव सन्देह करने वाला होता है और उसे कभी भी किसी भी व्यक्ति का विश्वास नहीं होता।

विशेष ज्ञातव्य

यों प्रधानतः हाथ के सात ही भेद होते हैं जिनका परिचय और प्रभाव ऊपर लिखा जा चुका है। किन्तु जर्मन और ब्रिटिश शास्त्र वेताओं ने एक भेद और स्थिर किया है। हस्त-विज्ञान की दृष्टि से हाथ का यह आठवां भेद उपयोगी है। अतः आगामी पंक्तियों में हम उसका परिचय और प्रभाव पाठकों के लाभार्थ लिखते हैं।

अति विदग्ध हाथ (Clverest Hand)

अति विदग्ध हाथ का स्वरुप और आकृति बहुत ही विचित्र होती है। यह प्रायः लम्बा और चौड़ा होता है और इसकी करतल में बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें होती हैं। इस हाथ में होने वाली रेखायें कुछ इतनी विचित्र-सी होती हैं कि परीक्षक उसे देखकर उस हाथ वाले व्यक्ति को अत्यन्त दरिद्री समझ बैठता है
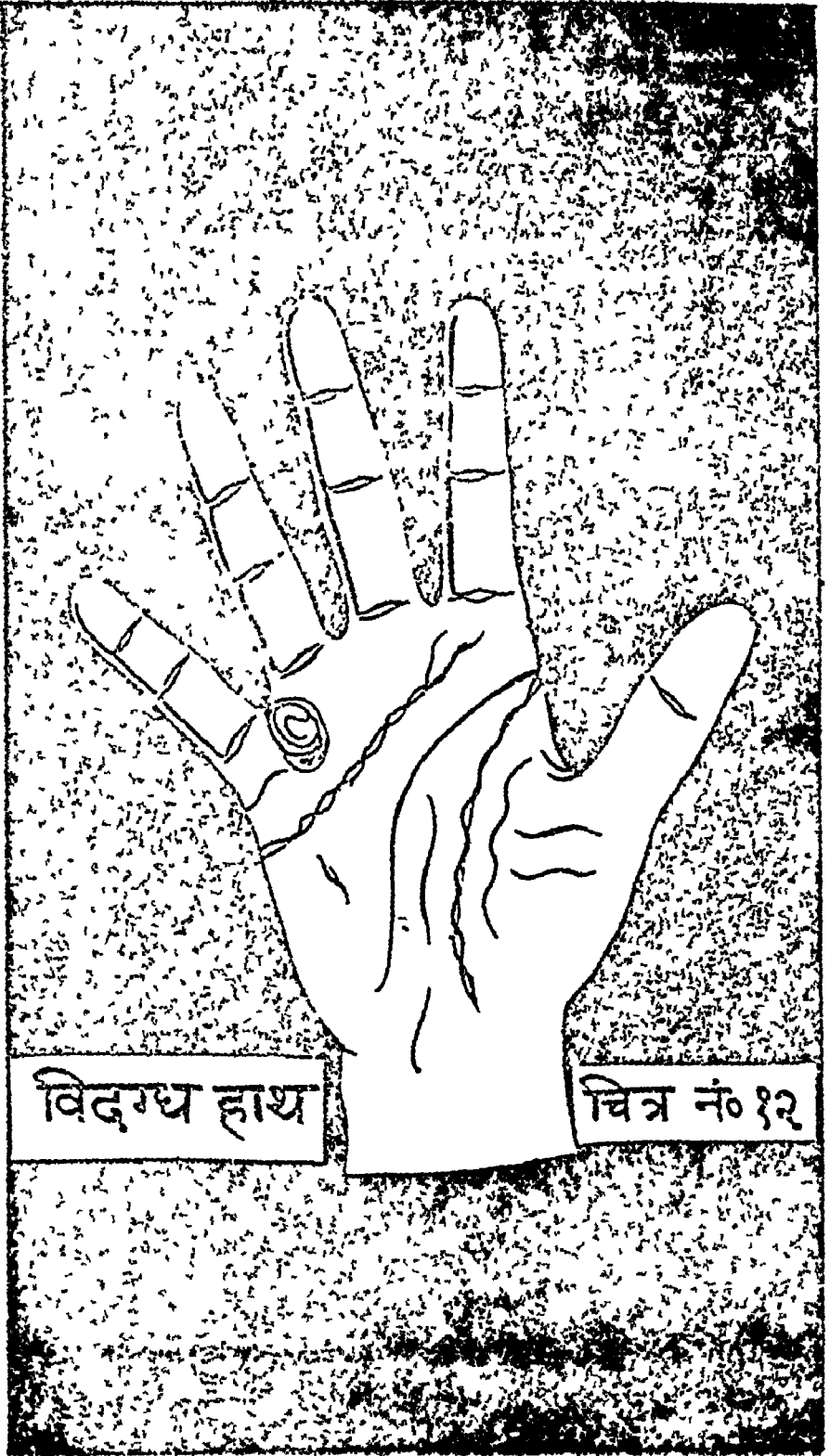
विदग्ध हाथ

चित्र नं० १२

किन्तु जर्मन सामुद्रिक शास्त्र वेत्ताओं का ऐसा मत नहीं है। उनकी सम्मति में इस प्रकार के हाथ वाला व्यक्ति नवीनतम आविष्कारों का अनुसन्धान-कर्ता या युग-पुरुष होता है।

अति विदग्ध हाथ (Cleverest Hand) का प्रभाव

इस हाथ वाला व्यक्ति किसी भी व्यक्ति की बनावटी बातों का भेद ताड़ लेने में अत्यधिक सिद्ध-हस्त होता है। उसे अपने शत्रु और मित्र की पूरी-पूरी पहिचान होती है। इस हाथ वाला व्यक्ति विना स्वार्थ के किसी के दुःख मे भी सम्मिलित नहीं होता उसकी स्वार्थी मनोवृत्ति इतनी प्रवल होती है कि देश हित की बात भी उसके मस्तिष्क मे दूसरी श्रेणी में ही स्थान पाती है। लोक-प्रियता प्राप्त करना उसके बांये हाथ का खेल होता है। अतः जनता-जनार्दन के द्वारा सम्मान उसें खूब मिलता है। इस हाथ वाले व्यक्ति मे यह विशेषता होती है कि किसी का पक्ष ले लेने पर उससे पीछे हटना नहीं जानता, चाहे इसके लिए उसे प्राणों का मूल्य ही क्यों न चुकाना पड़े। इस हाथ की अंगुलियां सीधी होती हैं।

ज्ञातव्य सूचना

पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिये कि अन्तर्जातीय तथा अन्तराष्ट्रीय विवाहों के कारण शुद्ध और निश्चित प्रकार का हाथ विरला ही मिलता है। अधिकांश हाथों में दो या तीन प्रकार के हाथों का मिश्रण रहता है उदाहरणार्थ—हथेली वर्गाकार हो

सकती है और अंगुलियां नुकीली या दार्शनिक हाथ जैसी हो सकती हैं। अथवा तीन प्रकार के हाथों का मिश्रण हो सकता है जैसे—करतल वर्गाकार, अंगुलियां करतल के पास वाले भाग दार्शनिक हाथ जैसे और अंगुलियों के छोर नुकीले या चमसाकार हाथ जैसे अतः हाथ की परीक्षा के समय इस बात का ध्यान रखा जायगा तो हाथ का फल निश्चित करने में सुविधा रहेगी और अधिक सही फल निश्चित किया जा सकेगा। इस बात का ध्यान रखने से बहुत से ऐसे रहस्यों का भेद खुल जायगा जिनको साधारणतः हाथ देखकर या रेखाओं के आधार पर बता सकना सर्वथा असम्भव है। इसका परिणाम यह होगा कि हाथ वाले व्यक्ति के जीवन की वास्तविकताओं का अत्यधिक प्रकाश प्राप्त हो सकेगा।

तृतीय परिच्छेद

मणि-बन्ध-परिचय

संसार में आदरहीन कोई भी वस्तु अपना अस्तित्व रखने में समर्थ नहीं है। क्या जड़, क्या चेतन भौतिक संसार की प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ आधार अवश्य है। यद्यपि अमरबेलि की मूल नहीं होती, तथापि उसे भी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए वृक्ष, पौदे, झाड़, घास आदि का आधार लेना ही पड़ता है और आधार के बल पर ही वह पनपती और प्रसारित होती है। पंच-भूत-निर्मित संसार में प्रत्येक वस्तु को पोषण की आवश्यकता है। इस न्याय के अनुरूप हाथ को भी पोषण मिलना ही चाहिए। हाथ का पोषण है मानव-शरीर। अत. यही इसका आधार है किन्तु वास्तविक आधार वही है जो अत्यधिक निकट होकर प्रत्यक्षत: पोषण के साधन उपलब्ध करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार हाथ का प्रमुख एवं नैसर्गिक आधार पर मानव-शरीर का बना भाग किंवा प्रत्यंग है जो हाथ और मानव-शरीर के मध्य सन्धि-स्थान है। इस स्थान को शरीर-शास्त्र में कलाई कहते हैं और हस्त-सामुद्रिक विज्ञानवेत्ताओं तथा आचार्यों ने इसे 'मणि-बन्ध' की संज्ञा प्रदान की है।

'मणिबन्ध' को कोई-कोई विद्वान 'मणिबन्धन' कह कर भी स्मरण करते हैं। सम्भव है 'मणि-बन्धन' संज्ञा से उनका संकेत
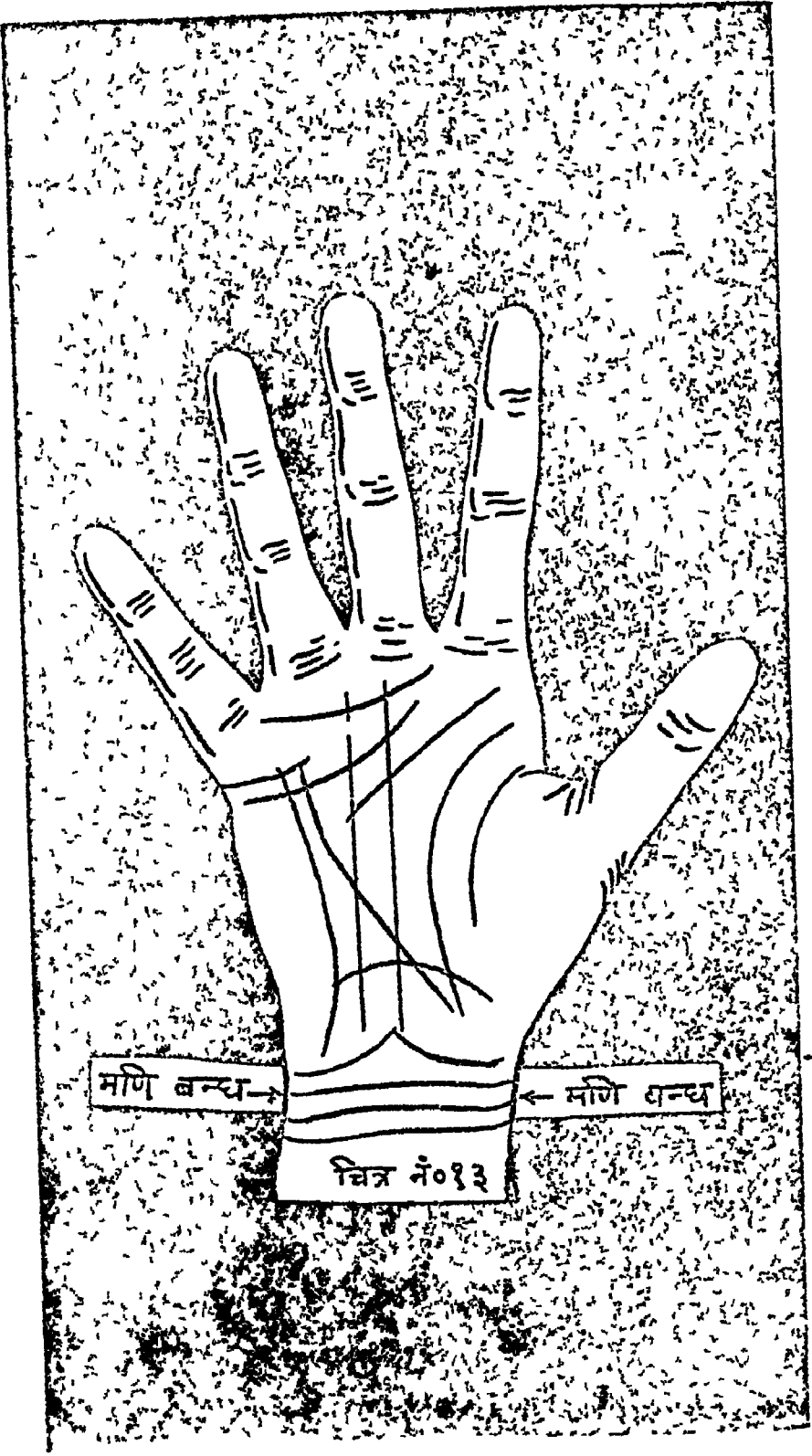
चित्र नं० १३

'मणिबन्ध' गत वलम-रेखाओं की ओर ही है। हमारी सम्मति में 'मणिबन्ध' और 'मणिबन्धन' दो पृथक-पृथक वस्तु हैं। जिस स्थान को 'मणि-बन्धन' संज्ञा दी गई है वह हाथ का मानव-शरीर से संधि होने का स्थान है। इसमें हड्डी-मांस-मज्जा-रक्त-त्वचा आदि सब सम्मिलित हैं। सामुद्रिक-विज्ञान के अनुसार इसके आकार प्रकार, आकृति, गठन, स्वरूप तथा बनावट पर विचार किया जाता है और तदनुसार ही इसका मानव जीवन पर प्रभाव भी होता है। इसके अतिरिक्त इस स्थान की त्वचा पर हाथ के अन्य विभागों की भाँति रेखायें भी होती हैं। ये रेखायें 'मणिबन्ध' पर प्रायः ऐसी प्रतीत होती हैं मानो शरीर-निर्माता ने हाथ को शरीर से सम्बद्ध करने के हेतु इन रेखाओं का बन्धन डाला हो! हमारी सम्मति में यह रेखायें ही वास्तव में 'मणि बन्धन' हैं।

'मणि-बन्धन' वास्तव में रेखाओं का विषय है और पुस्तक के प्रस्तुत भाग में हम हाथ के विभिन्न विभागों के केवल आकार-प्रकार, स्वरूप, गठन, आकृति तथा बनावट पर ही विचार करेंगे। अतः मणि-बन्धन का विस्तृत विवेचन पुस्तक के दूसरे भाग में 'हस्त रेखा' के अन्तर्गत किया जायगा। यहां हम केवल मणि-बन्ध के सम्बन्ध में विवेचन करेंगे।

मानव-शरीर में हाथ का प्रभाव नैसर्गिक विभाग 'मणिबन्ध' है। चार अंगुली अंगुष्ट तथा करतल के सम्मेलन से हाथ का जो स्वरूप बनता है उसका उद्गम-स्थान यह 'मणिबन्ध' ही है। व्यवहारिक भाषा मे इसे कलाई कहते हैं। इसे केतुग्रह का स्थान

भी कहते हैं। वस्तुतः हाथ मे मणिबन्ध ही मूल स्थान है जो दो, तीन अथवा तीन से अधिक रेखाओं से सुशोभित है।

मणिबन्ध के भेद

आकार-प्रकार, आकृति, स्वरूप बनावट तथा गठन के आधार पर हमारे महर्षियों ने मणिबन्ध के छः भेद किये हैं। मणिबन्ध के ये छः भेद इस सत्य के ज्वलन्त प्रमाण हैं कि जगद्‌गुरु भारत सन्तानों ने सामुद्रिक-विज्ञान के गुप्ततम रहस्यों का सफलता के साथ उद्‌घाटन किया था। सूक्ष्म-दृष्टि, तत्वज्ञानीयों भारती के सपूतों ने मणिबन्ध के जो छः विभिन्न भेद किये हैं वे इस प्रकार हैं—

स्पष्ट या निगूढ़ मणिबन्ध

जिस व्यक्ति का मणिबन्ध स्पष्ट या निगूढ़ होता है, उस मणि-बन्ध की सन्धि (अथवा जोड़) दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है मानो इस स्थान पर कोई सन्धि हुई ही नहीं है। इसका कारण यह है कि इस स्थान पर मांस समुचित परिमाण में होता है और वह इस स्थान को करतल (या हथेली) से निम्न [नीचा-धंसा हुआ] नहीं होने देता, बल्कि समधरातल में ले आता है।

दृढ़ मणिबन्ध

जिस व्यक्ति का मणिबन्ध दृढ़ होता है उस मणिबन्ध की आकृति अथवा गठन पुष्ट होती है। आकार-प्रकार में वह सुडौल होता है तथा देखने में सुन्दर लगता है।

सुश्लिष्ट-संधि-मणिबन्ध

जिस व्यक्ति का मणिबन्ध सुश्लिष्ट-सन्धि होता है, उसका मणिबन्ध उत्तम रीति से मिला हुआ होता है।

हीन-मणिबन्ध

जिस व्यक्ति का मणिबन्ध हीन-मणिबन्ध होता है, उसके हाथ में वास्तव में मणिबन्ध होता ही नहीं। इसके स्वरुप को यथार्थत: समझने के लिये यदि इसे 'मणिबन्ध-हीन-हस्त' कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा।

शिथिल-मणिबन्ध

जिस व्यक्ति का मणिबन्ध शिथिल हो, उसका मणिबन्ध अत्यन्त कोमल (नाजुक) होता है। तनिक से झटके में अथवा कठिन काम पड़ने पर ऐसा मणिबन्ध व्यर्थ-सिद्ध होता है।

सशब्द मणिबन्ध

जिस व्यक्ति का मणि सशब्द हो, वह व्यक्ति जब हाथ को ऊंचा नीचा करता है तब हाथ की गति पर मणिबन्ध में 'कटा-कट' शब्द होता है।

अब हम पाठकों के लाभार्थ मणिबन्ध के उपरोक्त भेदों का भिन्न-भिन्न प्रभाव प्रदर्शित करने के लिए मणिबन्ध भेद फल बोधक चक्र अंकित करते हैं—

मणिबन्ध भेद फल बोधक चक्र

मणिबन्ध भेद	फलादेश
१—निगूढ़-मणिबन्ध	शुभ, सौख्य, सम्मान
२—दृढ़-मणिबन्ध	उद्योगी, सुखी धन-ऐश्वर्य सम्पन्न
३—सुश्लिष्ट-मणिबन्ध	पराक्रमी, विद्वान, नीतिज्ञ, राजभोग
४—हीन-मणिबन्ध	इस व्यक्ति का हाथ काटा जाता है
५—शिथिल	अशुभ, दुःखकारक
६—सशब्द	दुर्भाग्य पूर्ण, दरिद्रता-जनक

चतुर्थ-परिच्छेद

अंगुष्ठ-परिचय

मानव चरित्र का अध्ययन करने के लिए हस्त परीक्षा में अंगुष्ठ का अपना विशेष स्थान है। इसके द्वारा मनुष्य की स्वभाविक मनोवृत्तियों, शक्ति और उनकी निर्बलता का विशेष-रूप से ज्ञान प्राप्त होता है। हस्त-परीक्षा के अन्तर्गत मानव-चरित्र, स्वभाव, भावनायें किंवा मनोवृति का अधिकांश परिचय केवल मात्र अंगुष्ठ का गम्भीर अध्ययन करने से ही प्राप्त हो जाता है। अंगुष्ठ को संसार की विचित्र सभ्यताओं में भी विशिष्ट स्थान प्राप्त है। हमारे इस कथन की सत्यता का प्रमाण आज भी सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

अंगुष्ठ का अध्ययन यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि अंगुष्ठ और मस्तिष्क में आश्चर्य जनक नाड़ी सम्बन्ध है। सभी नाड़ी विशेषज्ञ इस सत्य को डंके की चोट स्वीकार करते हैं कि मानव-मस्तिष्क में एक विशिष्ट स्थान है जिसे अंगुष्ठ-स्थान (Thumb Contre) कहते हैं और मस्तिष्क के अंगुष्ठ-स्थान पर यदि अनावश्यक भार पड़ता है तो उसके प्रभाव से एक विशेष प्रकार का कम्पन अथवा हलचल उत्पन्न हो जाती है और अंगूठे के नख से सम्बन्ध रखने वाली एक छोटी
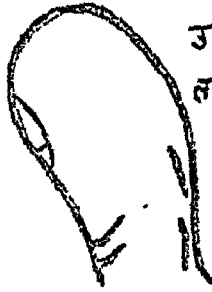
चित्र नं० १८
उर्ध्व भाग अत्यन्त स्थूल
तथा वृत्ताकार अंगुष्ठ
आकृति
संख्या १
आकृति
संख्या ३
आकृति
संख्या २
कोमल तथा लचीला अंगुष्ठ
सुदृढ़ तथा सीधा अंगुष्ठ
आकृति संख्या ४
आकृति संख्या ५
आकृति संख्या ६
अत्यन्त नोकीला
अंगुष्ठ
वर्गाकार
अंगुष्ठ
छोटा-मोटा तथा भद्दा
अंगुष्ठ
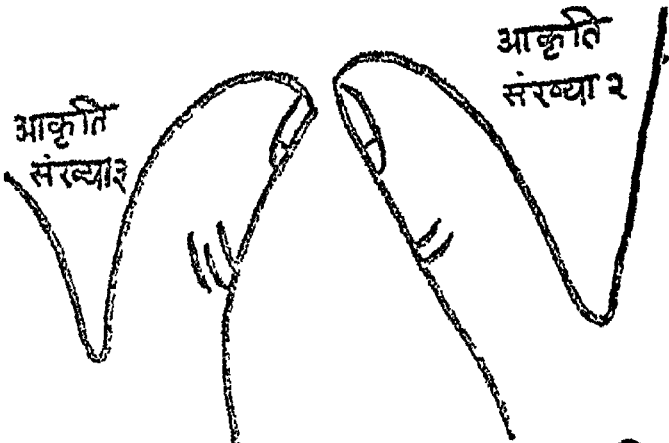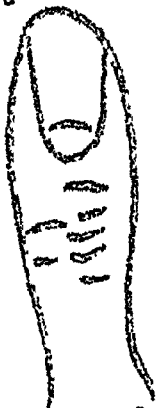
हड्डी बढ़ने लगती है। अंगुष्ठ की इस हड्डी में वृद्धि होने का अर्थ, सम्बन्धित व्यक्ति के शरीर में रोग विशेष की भयानक सूचना है। यह सूचना मिथ्या कभी नहीं होती है। यह यथार्थ और विश्वसनीय सूचना है। हां, मस्तिष्क के अंगुष्ठ-स्थान पर भार के अनुसार इस रोग के उत्पन्न होने में समय की अपेक्षा होना सम्भव है। इसमें कभी-कभी वर्षों का विलम्ब भी हो सकता है, किन्तु रोग का होना और उसकी भयानकता निश्चित है। सामुद्रिक-शास्त्र के मानव-शरीर-विज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण, ठोस, मौलिक, उपयोगी और प्रत्यक्ष अङ्ग होने का इतना ज्वलन्त प्रमाण होने पर भी चिकित्सक वर्ग (Medical Practitioners) हाथ के वैज्ञानिक तथा सार्थक अध्ययन को शेखचिल्ली की कल्पना की उड़ान ही समझते हैं इसका एक मात्र कारण उनका यह भय है कि उनके द्वारा स्थापित मानव-विज्ञान के इस महत्व पूर्ण और अत्यन्त गूढ़ रहस्य को यदि अणु- मात्र भी सहारा मिल जायगा तो यह मानव-विज्ञान का एक प्रधान अङ्ग होने के नाते चिकित्सा विज्ञान का एक विशिष्ट विषय बन जायगा और इस प्रकार नवागन्तुक चिकित्सक-वर्ग के मार्ग में एक मंजिल और बढ़ जायगी तथा इस विज्ञान के लोक-प्रिय होने के कारण उनके छक्के-पंजों का दिवाला पिट जायगा।

अंगुष्ठ के दो स्पष्ट भेद

अंगुष्ठा-अध्ययन को दो स्पष्ट वर्गों में विभाजित किया जा सकता है क्योंकि प्रधानतः अंगुष्ठ दो स्पष्ट प्रकार का होता है।

एक प्रकार का अंगुष्ठ सीधा और सुदृढ़ होगा। चित्र संख्या १४ आकृति संख्या २) इसकी आकृति सुडौल और दर्शनीय होगी। दूसरे प्रकार का अंगुष्ठ कोमल और झुका हुआ होगा (देखो चित्र संख्या १४, आकृति संख्या ३) मनुष्य के स्वभाव, भावना तथा मनोवृति का रहस्य अंगूठे के द्वारा अधिक सरलता से ज्ञात हो जाता है। अतः किसी भी व्यक्ति के स्वभाव भावना तथा मनोवृति की दशा और शक्ति अंगुष्ठ द्वारा प्रमाणित हो जाने पर भी मस्तक रेखा द्वारा पुष्ट कर लेना चाहिए, क्योंकि मानव-स्वभाव, भावना तथा मनोवृति पर मस्तक रेखा का अकाट्य प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति के उत्थान और पतन का निर्णय मस्तक-रेखा ही करती है।

हस्त-विज्ञान में साधारणतः हाथ और अंगुलियों का स्वरूप उनकी आकृति, उनकी बनावट तथा उनका डील डौल पैतृक स्वभाव, चरित्र तथा आचरण का द्योतक है। और रेखाओं का विकाश व्यक्तिगत स्वभाव, चरित्र, आचरण जीवन-घटनाओं तथा परिस्थितियों पर प्रकाश डालती है। इस प्रकार यह देखा जाता है कि अंगुष्ठ व्यक्ति में पैतृक स्वभाव किंवा प्रकृति की अनुकूलता प्रकट करता है। आगामी विकाश के सम्बन्ध में कतिपय परिवर्तन करने वाले कारण चाहे उपस्थित हो जायं, किन्तु यदि किसी व्यक्ति का अंगुष्ठ अपने पिता के अंगुष्ठ के अनुकूल हो तो यह निश्चित है कि उसकी प्रकृति अथवा स्वभाव निश्चित रूप से पैतृक आधार पर उसके पिता के तुल्य ही होगा।

कोई कोई अंगुष्ठ मांसल होते हैं, कोई-कोई वर्तुलाकृति के होते हैं, कोई-कोई टेढ़े होते हैं, कोई-कोई छोटे होते हैं, कोई-कोई चपटे होते हैं, कोई-कोई लम्बे होते हैं, कोई कठोर होते हैं और कोई २ कोमल भी होते हैं। किसी २ व्यक्ति के हाथ में लचीले अंगुष्ठ भी पाये जाते हैं। किसी २ व्यक्ति के अंगुष्ठ की आकृति किंवा स्वरूप कमर की आकृति जैसा भी होता है। इसके अतिरिक्त गद्दादार अंगुष्ठ भी देखने में आते हैं। संक्षेप में अंगुष्ठ का भेद पहिचानने के लिए निम्न प्रकार की आकृतियों अथवा स्वरूपों का ध्यान रखना चाहिये—

१—लम्बा सामान्य आकृति या स्वरूप वाला।

२—सीधा और सुदृढ़ (चित्र संख्या १४, आकृति २)

३—छोटा, मोटा और कुरूप (चित्र संख्या १४, आकृति ६)

४—नुकीला (चित्र संख्या १४, आकृति ४)।

५—कोमल और झुका हुआ (चित्र संख्या १४, आकृति ३)

६—छोर पर वर्गाकार और मोटा।

७—कमर के सदृश्य आकृति वाला।

८—मध्य में मोटा और बेडौल।

९—छोर पर गद्दादार (चित्र संख्या १४, आकृति संख्या १)

१०—वर्तुल आकृतिवाला।

अंगुष्ठ का प्रभाव

अंगुष्ठ के सम्बन्ध में सामुद्रिक विज्ञान के अधार पर विचार करते समय निम्नलिखित नियमों पर ध्यान केन्द्रित करना परमावश्यक है—

सीधा, सुदृढ़ और सुडौल अंगुष्ठ [चित्र संख्या १४, आकृति संख्या २] वाला व्यक्ति कोमल और झुके हुए अंगुष्ठ वाले व्यक्ति की अपेक्षा विशेष स्वेच्छाचारी, निरंकुश तथा हठी होता है। इस प्रकार का व्यक्ति साधारणतः सरलता से प्रभावित नहीं होता और प्राय गम्भीर रहना इसकी प्रधान मनोवृत्ति होती है। इसका स्वभाव दृढ़ होता है। वाद-विवाद में फंस जाने पर इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला व्यक्ति आत्म समर्पण करना जानता ही नहीं। वैसे भी अपरिचितों के मध्य यदि बोलना पड़ ही जाय तो ऐसा व्यक्ति प्रायः वाद-विवाद के रूप में ही अपना वार्तालाप आरम्भ करता है। जब तक किसी बात पर आक्षेप किंवा किसी बात की पुष्टि करने का सुयोग उन्हें प्राप्त नहीं होता अपरिचितों के मध्य, सर्वथा शान्त रहना उनका स्वभाव होता है। इस प्रकार के अंगुष्ठ का नख जितना लम्बा होगा, इच्छा शक्ति उतनी ही प्रबल एवं दृढ़ होगी। यह व्यक्ति जिस काम की ओर झुक जाता है उसमें पूर्ण-रूपेण सफलता प्राप्त करने के हेतु तन-मन-धन से संलग्न हो जाता है और जब तक उसे सफलता नहीं प्राप्त होती तब तक उसे नहीं छोड़ता। इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला व्यक्ति जीवन संग्राम की विषम-परिस्थितियों से टक्कर लेने में दृढ़ होता है। इस प्रकार के व्यक्ति के जीवन का यदि ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि इस प्रकार व्यक्तियों का जीवन-संग्राम की विषम परिस्थितियों से टक्कर लेने का अन्य सभी प्रकार के व्यक्तियों की अपेक्षा भिन्न मार्ग होता है। वे अपने एक व्यक्तिगत मार्ग से जीवन-यात्रा पर अग्रसर होते हैं।

ढीले-ढाले, कोमल और झुके हुए [चित्र संख्या १४, आकृति संख्या ३] अंगुष्ठ वाला व्यक्ति अधिकांशतः अस्थिर प्रकृति अथवा स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति की मस्तक-रेखा यदि असाधारण रूप से सीधी न हो तो वह प्रकृति का इतना निर्बल होता है कि सहज ही में दूसरों के प्रभाव मे आ जाता है और उसके अपने सभी विचार समाप्त हो जाते हैं। मस्तक-रेखा के असाधारण रूप से सीधी होने पर इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला व्यक्ति विकसित मनोवृति और विचार वाला होता है। असाधारणरूप से सीधी मस्तक-रेखा अनेक प्रकार से स्वभावगत पैतृक अस्थिरता का शमन करती है।

अंगुष्ठ का यह ढीलापन दोनों स्थानों में न होकर किसी एक स्थान पर भी हो सकता है। कभी-कभी यह ढीलापन अगुष्ठ के नख वाले भाग में होता है और कभी २ उसके नीचे वाले भाग मे होता है। यह भिन्नता स्वयं एक विशिष्ट-स्थान रखती है। यदि अंगुष्ठ के नखवाले भाग में ढीलापन होता है तो वह व्यक्ति अनायास ही दूसरों से प्रभावित हो जाता है और उनके कामनानुसार ही काम करने को तत्पर हो जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति की प्रवृति अथवा स्वभाव नितान्त दुर्बल और अस्थिर होता है। इसके विपरीत दूसरे स्थान पर ऐसी स्थिति होने पर व्यक्ति समय और परिस्थितियों का दास होता है। वह दूसरों के प्रभाव में आकर अपना विचार नहीं बदलता, किन्तु समय और परिस्थिति के अनुकूल विचार-परिवर्तन करने में उसे कोई हिचकिचाहट नहीं होती है।

जिस व्यक्ति के अंगुष्ठ का ऊर्ध्व पर्व कोमल होता है वह सीधे और सुदृढ़ अंगुष्ठ वाले व्यक्ति की अपेक्षा विचारों और भावनाओं में दृढ़ कम होते हैं। हां, इस प्रकार के व्यक्ति अत्यधिक उदार, अतिशयोक्ति पूर्ण, अपव्ययी और प्रायः अनावश्यक कार्यों में द्रव्य व्यय करने वाले होते हैं। स्मरण रखना चाहिए कि इस प्रकार के व्यक्ति की उदारता का मूलाधार दूसरों का प्रभाव ही होता है। केवल-मात्र परोपकार इनकी उदारता का स्रोत कभी नहीं होता। इस प्रकार के व्यक्ति ही ठगे जा सकते हैं और कोरी कल्पना के आधार पर ही उन्हें मन चाहा धोखा दिया जा सकता है। इसके विपरीत—

जिन व्यक्ति के अंगुष्ठ का अधो-पर्व कोमल और झुका हुआ होता है वह स्वभावतः विशाल हृदय होते हैं; किन्तु अपनी स्वतन्त्रता का उपयोग करने में वे विशेषरूप से व्यवहारिक होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को अनायास ही धोखा नहीं दिया जा सकता न इसे सहज ही में प्रभावित ही किया जा सकता है और आर्थिक विपदों में वह अधिक सावधान और स्पष्ट होता है।

अंगुष्ठ-परीक्षा द्वारा साधारणतः तीन प्रमुख बातों का परिचय स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है। प्रेम, तर्कशक्ति और इच्छा-शक्ति।

किसी भी व्यक्ति के जीवन में प्रेम-विषयक परीक्षा अंगुष्ठ के मूल में मंगल के उभार स्थान पर से की जाती है; तर्क शक्ति का विचार अंगुष्ठ के मध्य भाग से होता है और इच्छा शक्ति का विवेचन अंगुष्ठ का ऊर्ध्वभाग प्रदर्शित करता है। अंगुष्ठ के

ये भाग जिस प्रकार लम्बे होंगे, उस व्यक्ति में उसी प्रकार प्रेम, तर्क-शक्ति और विचार-शक्ति की प्रधानता होगी और ये भाग जितने छोटे होंगे उतनी ही इन विषयों की न्यूनता होती है। छोटे अंगुष्ठ वाले व्यक्तियों के जीवन मे विशेषता बहुत ही कम देखने को मिलती है।

अंगुष्ठ के [illegible] भाग का स्वामी [illegible] है। यह प्रेम का स्थान है। इस भाग को शुक्र क्षेत्र अथवा शुक्र का पर्वत (Mount of Venus) कहते हैं। मानव-स्वभाव अथवा प्रकृति पर साधारणतः अन्य ग्रहों की अपेक्षा, शुक्र का प्रभाव अधिक पड़ता है। शुक्र के प्रभाव से मनुष्य प्रकृति से संगीत तथा अन्य ललित कलाओं की अपेक्षा संगीत की ओर वह अधिक आकर्षित होता है। उसको सदैव प्रत्येक व्यक्ति के प्रेम-पात्र बनने के उत्कट लालसा बनी रहती है। अपनी इस लालसा से इतना प्रभावित होता है कि इसके कारण ही सदैव व्याकुल बना रहता है और सर्वदा असन्तुष्ट रहता है अतः अंगुष्ठ के मूल भाग अथवा अधोभाग (Mount of Venus) के आकार-प्रकार का मनुष्य के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है। मानव-स्वभाव की समता या विषमता प्रधानतः इस भाग के छोटे और बड़े होने पर ही निर्भर रहती है।

अंगुष्ठ का मूल भाग बड़ा होने पर भी यदि उसके शेष दो मध्य भाग और उर्ध्व भाग छोटे हों तो उनका इस भाग के प्रभाव पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है मध्य भाग के छोटे होने से वह प्रेमी-

जीव तो अवश्य होता है किन्तु उसकी प्रबलता में न्यूनता आ आ जाती है और वह आवश्यकता पड़ने पर अपने लाभ के लिए अथवा अपना पक्ष प्रबल रखने के हेतु बाल की खाल निकालने लगता है। नगण्य की बातों पर नुक्ता-चीनी करने लगता है और अपनी तर्क-शक्ति का स्पष्ट रूप से प्रेम-सम्बन्धी विषयों पर प्रयोग करता है इसी प्रकार उर्ध्व भाग छोटा होने से उसके प्रेम मे स्वच्छन्दता और निरंकुशता अधिक होती है। वह अपने प्रेमियों तथा प्रेमिकाओं और प्रेम-पन्त्रों से सदैव अपने मनोनुकूल काम कराना अधिक चाहता है और इस प्रकार उसका प्रेम वास्तव मे प्रेम न रह कर निरी वासना अथवा लोलुपता मात्र रह जाता है।

यदि कहीं भाग्यवश मध्य भाग और उर्ध्व भाग दोनों ही मूल-भाग से छोटे हों तो बस उसकी तो लीला ही विचित्र होगी। प्रेम के साम्राज्य मे उसका दौर-दौरा तो खूब होगा, किन्तु उसका प्रेम स्थिर किंवा दृढ कभी नही होगा। उसका प्रेम केवल मात्र उसके स्वार्थ और आमोद-प्रमोद तक ही सीमित रहेगा, संक्षेप में वह प्रेम का पुजारी न होकर प्रेम प्राङ्गण का रंगीला खिलाड़ी होगा।

जिस अंगुष्ठ का मध्य भाग और उर्ध्व भाग समान लम्बाई के होते है, वह व्यक्ति साधारणतः अच्छा होता है। ऐसा अंगुष्ठा इस बात का द्योतक है कि यह व्यक्ति स्वच्छन्द प्रकृति का होने के साथ ही साथ विचार शील भी उसी सीमा का है जिस सीमा

की उसमें स्वेच्छाचारिता है अर्थात् उसकी स्वच्छन्दता और विचार शीलता सन्तुलित परिमाण में होती है। इस प्रकार का मनुष्य यदि किसी के प्रेम में पागल न हो तो अपनी इच्छा शक्ति किंवा विचार शक्ति की प्रबलता के कारण प्रायः सभी कामों में सफल हो जाते हैं।

जिस अंगुष्ठ का मध्य भाग उर्ध्व भाग से अधिक लम्बा होता है उसकी विचार-शक्ति इच्छा-शक्ति से अधिक प्रबल होती है। इसका परिमाण यह होता है कि इच्छाशक्ति की प्रबलता के कारण जब वह किसी कार्य मे अग्रसर होता है तो उसकी विचार शक्ति उस पर ब्रेक लगा देती है। इस प्रकार का व्यक्ति किसी भी काम मे सफल नहीं होता।

अंगुष्ठ का उर्ध्व भाग इच्छा शक्ति का केन्द्र है। इसके द्वारा मनुष्य की इच्छाशक्ति के सम्बन्ध में प्रत्येक रहस्य का ज्ञान होता है यह भाग जितना बड़ा होगा। मनुष्य उतना ही स्वच्छन्द और निरंकुश होगा। मानव-जीवन के हित की दृष्टि अंगुष्ठ का उर्ध्वभाग मध्य भाग के समान ही होना चाहिए। क्योंकि यदि यह भाग मध्य भाग से छोटा होगा तो—जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है—उस मनुष्य का जीवन असफलताओं का बण्डल मात्र होगा और यदि यह भाग मध्यभाग से अधिक बड़ा होगा तो यह मध्य भाग की शक्ति को असाधारणरूप से प्रभावित कर देगा और वह व्यक्ति नितान्त स्वेच्छाचारी और निरंकुश हो जायेगा। अनर्गल वाद-विवाद, अर्थहीन हठ, निर्दयता और अनावश्यक लड़ाई झगड़े—उसके स्वभाव के प्रधान अंग बन जायेंगे।

अंगुष्ठ के ऊर्ध्व भाग के छोटे होने पर मनुष्य साधारणतः निर्बल विचार का बन जाता है और उसे अपनी शक्ति पर स्वयं ही विश्वास नहीं रहता। उसके स्वभाव में चंचलता आ जाती है; फलतः वह दृढ़ प्रतिज्ञ भी नहीं रहता। संक्षेप में ऊर्ध्वभाग जितना छोटा होगा—मानव प्रवृति में उतनी ही अधिक अस्थिरता, अविश्वास और चंचलता का समावेश होगा।

अंगुष्ठ का ऊर्ध्व भाग साधारणतः सुन्दर और सम होना ही श्रेष्ठ एवं शुभ है। अंगुष्ठ के ऊर्ध्व भाग का नोकीला अथवा वर्गाकार, चपटा होना भी अशुभ है।

अंगुष्ठ-विचार में हथेली और अंगुष्ठ के सन्धि स्थान पर बनने वाले कोण भी विशिष्ठ विचार की अपेक्षा रखते हैं। इस सम्बन्ध में दो अत्यन्त साधारण भेद है। यह भेद इस प्रकार हैं—

हथेली और अंगुष्ठ के सन्धि स्थान का कोण जितना अधिक विस्तृत होगा व्यक्ति के जीवन में उतनी ही अधिक विचार-स्वतन्त्रता, स्वेच्छाचारिता और उदारता परिलक्षित होगी। किन्तु इनमें से अतिशयोक्ति किसी में भी नहीं होगी। यदि अंगुष्ठ हाथ से बाहर पड़ता हो अथवा हथेली के साथ समकोण बनाता हो तो व्यक्ति नितान्त स्वेच्छाचारी और निरंकुश होता है और परम स्वार्थी होता है। ऐसे व्यक्ति को अनुशासन और नियम में रखना लगभग असम्भव ही होता है। ऐसे व्यक्ति सदैव नियम, शिष्टाचार, रीति रिवाज आदि का उलंघन करने में ही अपनी श्रेष्ठता समझते है; फलत. वे सदैव आपत्तियों से घिरे रहते हैं।

यदि अंगुष्ठ और करतल की संधि का यह कोण विषम अर्थात् कम चौड़ा होता है—दूसरे शब्दों में यदि अंगुष्ठ हाथ के अधिक निकट होता है तो व्यक्ति उत्साहहीन निबलात्मा, भीरु हृदय, निश्चेष्ट, कायर और पराधीन मनोवृति का होता है। वह आवश्यकता से अधिक सतर्क रहता है; किन्तु उसके स्वभाव किंवा आचरण मे स्वतन्त्रता का नाम तक नहीं होता।

व्यवसायिक क्षेत्र में जीवन की गम्भीरता परिस्थितियों सुदृढ़ और सुडौल अंगुष्ठ वाला व्यक्ति अपने उत्तम स्वभाव, परमार्जित मनोवृति, विशाल अनुभव, प्रौढ़ विचार और उन्नत भावनाओं का अति श्रेष्ठ उदाहरण उपस्थित करता है। वकील, बैरिस्टर, न्यायाधीश, वैज्ञानिक, व्यापारी आदि में उच्च श्रेणी के व्यक्ति इसी प्रकार के अंगुष्ठ के पाए जाते हैं। इसके विपरीत—

कोमल और झुके हुए अंगुठे वाले व्यक्ति स्वभावतः ही आमोद-प्रमोद और सौन्दर्य मे रुचि रखते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः अभिनयकला अथवा वक्तृता आदि के क्षेत्र में पाये जाते हैं।

अंगुष्ठ का छोर मोटा किन्तु गोल और चौड़ा होने से व्यक्ति मे पाशविक उग्रता और अमानुषिक हठ का प्राबल्य होता है। वह क्षुद्र बातों पर ही आवेश में आ जाते हैं और इतने क्रोधान्ध हो जाते हैं कि जीवन की बाजी तक लगा डालते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों से सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए।

अंगुष्ठ का मध्य भाग पतला होने से व्यक्ति बुद्धिमान, शीघ्रता-प्रिय और चतुर होता है। ऐसा व्यक्ति सोच-विचार में

समय का अपव्यय नहीं करता और प्राप्त अवसर को भूल कर भी हाथ से नहीं खोता।

अंगुष्ठ का लचीला होना व्यक्ति के मधुर संगीत में गायन की शक्ति को प्रदर्शित करता है।

नुकीले अंगुष्ठवाला व्यक्ति खुशामदी और दूसरों की हां में हां मिलाने वाला होगा।

अंगुष्ठ से यव का चिह्न होने पर व्यक्ति धनी होता है। यदि यह यव चिह्न अंगुष्ठ के मूल में हो तो वह पुत्रवान होता है।

दाहिने हाथ के अंगुठा के मध्य में यव का चिह्न होना व्यक्ति का जन्म शुक्ल पक्ष में तथा दिन मे होना प्रकट करता है। इसके विपरीत यदि यव चिह्न बांये हाथ के अंगुठा के मध्य में हो तो व्यक्ति का जन्म कृष्ण पक्ष से तथा रात्रि में हुआ होता है। इनके अतिरिक्त यदि यव चिह्न दोनों हाथों में हो तो व्यक्ति का जन्म कृष्ण पक्ष में तथा दिन में हुआ होता है।

हाथ के अंगुष्ठ में यव चिह्न हो तो जननेन्द्रिय के दाहिनी ओर और बांये हाथ के अंगुष्ठ में यव चिह्न हो तो जननेन्द्रिय के बायीं ओर तिल का चिह्न होता है।

दाहिने हाथ के अंगुठा के मूल मे जितने यव-चिह्न होंगे व्यक्ति के उतने ही पुत्र होते हैं और बांये हाथ के अंगुष्ठ के मूल में जितने यव-चिह्न होते हैं उतनी ही पुत्रियां होती हैं।

अंगुष्ठ जितना छोटा होता है उसी के अनुरुप इच्छा शक्ति न्यून होती है और इस लक्षण वाला व्यक्ति अक्षर अस्पष्ट लिखता है।

अंगुष्ठ के हाथ की ओर अधिक झुके होने पर अथवा हथेली के नीचे की ओर बंधा सा होने पर व्यक्ति ग्रहण तथा संग्रह करने की प्रवृति का होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वभाव से ही कंजूस होता है।

सुदृढ़ अंगुष्ठ की अपेक्षा लचीले अंगुष्ठ वाला व्यक्ति अपनी सम्मति देने के लिये विशेष रूप से लालायित रहता है। इसके विपरीत सुदृढ़ अंगुष्ठ वाला व्यक्ति अपनी सम्मत्ति देने से पूर्व विचार करता है।

लचीले अंगुष्ठ वाले व्यक्ति को प्रभावित करके अपने अनुकूल बनाने से पूव यह ध्यान रखना चाहिये कि ऐसा व्यक्ति अधिकांशतः भावुक होता है अतः उसे जितना शीघ्र हो अपना विचार स्पष्ट रूप से बता देना चाहिये। अन्यथा वह प्रतिज्ञा करके भी पीछे हट जाता है। इसके विपरीत सुदृढ अंगुष्ठ वाला व्यक्ति किसी के काम के लिए पहले तो मना कर देता है, किन्तु सोच-विचार कर उसके लिये सहमत हो जाता है। साथ ही यह विशेषता है कि एक वार सहमत हो जाने के बाद वह किसी भी स्थिति अथवा प्रभाव से अपना विचार परिवर्तन नहीं करता।

गद्देदार अंगुष्ठ इच्छा शक्ति के सम्बन्ध में साधारण श्रेणी के होते हैं। साधारणतः इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला व्यक्ति

निर्दयी होता है और विवेचना शक्ति के विषय में वह पशुओं के समान दृढ़ होता है। विरोध किंवा विरोधी वातावरण उपस्थित होने पर इस प्रकार का व्यक्ति क्रोधान्ध हो जाता है। क्रोधावेश में वह इतना विक्षिप्त हो जाता है कि उसे भले-बुरे का तनिक भी ज्ञान नहीं रहता और भीषणतम अपराध तक कर बैठता है। गदेदार अंगुष्ठ वास्तव में 'खूनी अंगुष्ठ' होता है। खूनियों के अंगुष्ठ प्रायः इसी प्रकार के पाये जाते हैं। इस प्रकार के अंगुष्ठ वाले व्यक्ति किसी भी अपराध अथवा पाप को पूर्व योजना के आधार पर नहीं करते। वास्तव में उनमें विचार शक्ति नहीं के समान होती है। वे तो क्रोधावेश में आकर ही इस प्रकार के दुष्कर्म में प्रवृत्त हो जाते हैं।

कमर के समान तथा सीधे अंगुष्ठ वाले व्यक्ति एक-दूसरे से सर्वथा विपरीत मनोवृत्ति, धारणा एवं विचार के होते हैं। किन्तु इनके इस विरोधाभास की सीमा तर्क और विवेचना तक ही अधिकांश से विस्तृत होती है। कमर के समान अंगुष्ठ वाला व्यक्ति तर्क और विवेचना पर ही निर्भर नहीं रहता। अपने लक्ष्य प्राप्ति के हेतु वह कूट नीति को अपनाता है। इसके विपरीत सीधे अंगुष्ठ वाला व्यक्ति कूट नीति के पास तक नहीं फटकता वह तो सर्वथा तर्क और विवेचना पर ही आश्रित रहता है।

कमर के समान अंगुष्ठ वाला व्यक्ति प्रायः जल्दबाज होता है। उसका स्वभाव साधारण होता है। फलतः वह अपना काम भली प्रकार सोच-विचार कर करता है। वह समझदार भी

होता है और वाद विवाद कम करता है। इस प्रकार के अंगुष्ठ में यदि शुभ-स्थान बड़ा हो तो वह अपने वयो वृद्धों की प्रेरणा से अपने सभी प्रकार के विचार त्याग देता है। किन्तु साधारण, प्रेम रहित और विरोधियों की बात वह कभी भी स्वीकार नहीं करता। यदि किसी कारण वश वह अपने पक्ष में निर्बल हो जाता है तो उसका क्षोभ इस सीमा तक बढ़ जाता है कि वह अपशब्दों तक का प्रयोग कर बैठता है।

जिस व्यक्ति का अंगुष्ठ छोर पर बड़ा मोटा और चौड़ा हो वह व्यक्ति हठी असभ्य क्रोधी और निर्दयी होता है, किन्तु हाथ में कोई ग्रह-स्थान उच्च हो तो उसके ये दोष अधिक उग्र न रह कर कुछ शान्त हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति का शुभ-स्थान उच्च होने पर वह अत्यधिक कामी और इन्द्रिय-लोलुप तथा विषयी हो जाता है। यदि शुक्र स्थान के साथ-साथ चन्द्र स्थान भी उच्च हो तो उसमें किसी अंश में समता विशेष होती है।

स्मरण रहे कि हाथ में ग्रह-क्षेत्र का साधारण आकार में होना सर्वोत्तम होता है। इस प्रकार का ग्रह-क्षेत्र प्रत्येक दशा में श्रेष्ठ होता है, किन्तु उसमे प्रेम अधिक उत्कृष्ट रूप में होता है। ऐसा व्यक्ति कभी भूलकर भी उग्र (Boiling) नहीं होता यदि वह बहुत ही छोटा अथवा सर्वथा लुप्त हो तो व्यक्ति प्रेमशून्य हृदयहीन एवं स्वार्थी होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः गम्भीर रहता है। साधारणतः भाई-बन्धु, परिजन, सगे सम्बन्धी और मित्रों के साथ भी उसे प्रेम और सहानुभूति नहीं होती।

अंगुष्ठ का ऊर्ध्व भाग यदि अधिक मोटा, गोल और चौड़ा होता है (चित्र संख्या १४, आकृति संख्या १) तो वह व्यक्ति इतना उग्र होता है कि उसे स्वयं अपने पर भी नियन्त्रण नहीं रहता ऐसे अंगुष्ठ वाले व्यक्ति प्रायः उन्मत्त हत्याकारी होते हैं क्रोधावेश के अत्यन्त निरंकुश हो जाने पर ऐसे व्यक्ति कभी-कभी आत्म-हत्या तक कर बैठते हैं। हां किसी रेखा-ग्रह-क्षेत्र अथवा अन्य किसी प्रकार के चिह्न का शुभ प्रभाव पड़ने पर ऐसे अंगुष्ठ के प्रभाव में कतिपय परिवर्तन सम्भाव्य है।

अंगुष्ठ के ऊर्ध्व भाग के निर्बल और पतले होने पर व्यक्ति प्रेम करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति की रुचि कामवासना की ओर अधिक आकृष्ट रहेगी।

अंगुष्ठ का ऊर्ध्व भाग छोटा पतला और सर्पाकार जैसा होगा तो व्यक्ति विश्वासघाती होगा और वह स्वयं भी धोखा खाने वाला होगा। इस प्रकार का व्यक्ति अपनी भूलों को कभी भी स्वीकार नहीं करता, किन्तु अपने विरोधियों को दबाने का षड्यन्त्र रचता है। अपनी स्वार्थ हानि देखकर वह लड बैठता है कभी-कभी भूले भटके ऐसा व्यक्ति अपनी भूलों का अनुभव भी करता है और उनके परिणाम स्वरूप हुई हानि पर पश्चाताप भी करता है।

अंगुष्ठ का नीचे का भाग अधिक प्रबल होने पर व्यक्ति किसी को प्रेम करने पर उसे प्रकट कर देता है। अपने वयोवृद्धों को भी वह अपने प्रेम के सम्बन्ध में बतला देता है, साथ

ही वह प्रेम सम्बन्ध में अत्यन्त हठधर्मी होता है। अपने विरोधियों को प्रत्येक प्रकार से अपमानित करने का प्रयत्न करता है यहाँ तक कि अपशब्दों का प्रयोग भी कर बैठता है।

हस्त-परीक्षा में अंगुष्ठ के सम्बन्ध में जितना भी लिखा जाय उतना ही कम है। अतः अब हम पाठकों के लाभार्थ अंगुष्ठ-परीक्षा के सार रूप में एक मान-चित्र देते हैं। इस मान चित्र का ध्यान-पूर्वक मनन करने से पाठकों को अंगुष्ठ परीक्षा में अधिक सुविधा और विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा।

अंगुष्ठ-प्रभाव-बोधक-चक्र

अंगुष्ठ-भेद	प्रभाव
१—लंबा, सुडौल तथा समान आकृति वाला।	इस प्रकार का व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर, मेधावी, शान्ति प्रिय और कार्य-कुशल होता है। उसके पूर्व पुरुष अनेक पीढ़ियों से बुद्धिवादी होते आये होते हैं।
२—छोटा, मोटा तथा कुरूप आकृति वाला।	इस प्रकार का व्यक्ति उग्र स्वभाव अत्यन्त क्रोधी, नितान्त मूर्ख और प्रत्येक कार्य का विनाश करने वाला होता है।
३—अधिक नोकदार आकृति वाला।	इस प्रकार का व्यक्ति अस्थिर विचार वाला, तीक्ष्ण स्वभाववाला और चंचल मनोवृत्ति वाला होता है। इसका स्वयं अपने पर भी अनुशासन नहीं होता।

अंगुष्ठ-भेद	प्रभाव
४—वर्गाकार तथा छोर पर मोटी आकृति वाला।	इस प्रकार का व्यक्ति स्वच्छन्द प्रकृति, निरंकुश स्वभाव और स्वेच्छाचारी मनोवृत्ति वाला होता है। वह हठी भी पक्का होता है; किन्तु लगनशील अवश्य होता है।
५—कमर की आकृति वाला।	इस प्रकार के व्यक्ति की विचार शक्ति तथा वाद-विवाद-शक्ति नहीं के बराबर होती है, किन्तु यह चतुर और नीति कुशल होता है। दूर दर्शिता इसका विशेष गुण है। यह कूट-नीतिज्ञ भी होता है।
६—कुरूप जोड़ युक्त मोटे मध्य भाग वाला।	इस प्रकार का व्यक्ति अदूरदर्शी, अविवेकी बुद्धिहीन, मूर्ख, नीति-हीन तथा ज्ञान-शून्य होगा। यह हठधर्मी भी अवश्य होगा।
७—अधिक पतले ऊर्ध्व भाग वाला।	इस प्रकार के व्यक्ति की इच्छा-शक्ति अत्यन्त निर्बल होगी, विचार सर्वथा अस्थिर होंगे तथा मनोवृति नितान्त शिथिल रोगी।
८—अधिक मोटे ऊर्ध्व-भाग वाला।	इस प्रकार का व्यक्ति असभ्य, उग्र, हठी, धूर्त, निर्दयी, झगड़ालू और नीच प्रकृति का होता है। यह निकृष्ट श्रेणी का व्यक्ति होता है

अंगुष्ठ-भेद	प्रभाव
९—गोल और चौड़े छोर से युक्त बहुत मोटे उर्ध्व भाग वाला	इस प्रकार के व्यक्ति का स्वभाव नितान्त नियन्त्रण हीन होता है। यह असभ्य, उग्र-प्रकृति, अकारण ही उत्तेजित होने वाला, विचार-हीन, मूर्ख और नीचतम मनोवृति का होता है। साधारण-सी बात पर क्रोधान्ध हो जाना है।
१०—बहुत चपटे उर्ध्व-भाग वाला।	इस प्रकार के व्यक्ति अधिकांशतः हत्यारे होते हैं। इस प्रकार का व्यक्ति सर्वदा दूसरों के आश्रित रह कर ही जीवन-यापन करता है। स्वयं कभी काम नहीं करता।

विशेष स्मरणीय सूचना

अंगुष्ठ-परीक्षा करते समय परीक्षक को अंगुष्ठ के साथ-साथ हस्तान्तर्गत सभी ग्रहों तथा उनके क्षेत्रों और रेखाओं का प्रभाव भी ध्यान पूर्वक विचार लेना चाहिए। अन्यथा फलादेश में भूल रह जाना साधारण सी बात है और ऐसी दशा में 'रेख में मेख' वाली कहावत चरितार्थ होती है। ऐसा करने पर ही परीक्षक अपने प्रयत्न में सफल-मनोरथ हो पायगा। पूर्ण रूपेण मनन पूर्वक विचार करके ही परीक्षा करनी चाहिए तथा इसके पश्चात् सभी प्रकार से दृढ़-निश्चय करके फल कहना चाहिए।

पंचम परिच्छेद

अंगुलियों का परिचय

अतीत काल में हमारे महर्षियों ने इस रहस्य का उद्घाटन कर लिया था कि अंगुलियों के ऊर्ध्व-भाग में देवताओं का निवास है। हमारे महर्षियों द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धान्त की सत्यता को सिद्ध करने के हेतु वर्तमान सभ्यता को लगभग उन्नीस शताब्दी का समय लग गया। आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि अंगुलियों के ऊर्ध्व-भाग (Tips) अधिकांश में मस्तिष्क की नाड़ियों की अन्तिम सीमा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मस्तिष्क का अंगुलियों से सीधा और गहरा सम्बन्ध है। फलतः अंगुलियों का अच्छा और बुरा प्रभाव मस्तिष्क पर अवश्य पड़ता है।

अंगुलियों के इस महत्व का स्पष्टीकरण उस समय अनायास ही हो जाता है जब कि यह विचार सामने उपस्थित होता है कि प्रत्येक अंगुली अपनी स्पष्ट और विशेष अहमता रखती है फलतः यदि हस्त-परीक्षा का वास्तविक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाय तो प्रत्येक अंगुली को अत्यधिक विचार शीलता एवं मनन पूर्वक परीक्षा की कसौटी पर कसना चाहिये।

मस्तिष्क क्रिया का मानव जीवन के भविष्य के साथ कितना रहस्यमय सम्बन्ध है यह इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि इच्छा

शक्ति पर एक-मात्र मस्तिष्क का ही नियन्त्रण होता है और किसी भी विषय के सम्बन्ध में कुछ भी निर्णय करने की आवश्यकता पड़े किन्तु इसका विचार और निश्चय मस्तिष्क ही करेगा और मस्तिष्क के इस निर्णय का परिणाम—जो कि साधारणतः मानव जीवन के भविष्य पर प्रभावित होता है—मानव जीवन पर ही पड़ता है, चाहे वह अच्छा हो अथवा बुरा। वैसे भी वर्तमान के अच्छे और बुरे कर्मों (Actions) का प्रभाव ही भविष्य का निर्माण करता है। क्योंकि मानव वही कर्म करेगा जो उसके विचारों के अनुकूल होगा और विचार उसी प्रकार के होंगे जिस प्रकार उसके मस्तिष्क की स्थिति होगी इधर मस्तिष्क का रहस्यमय सम्बन्ध अंगुलियों से है अतः अंगुलियों की जैसी स्थिति होगी वैसी ही स्थिति मस्तिष्क की भी होगी और उसका स्पष्ट प्रभाव मस्तिष्क क्रिया पर होता है। इस प्रकार यह सरलता से सिद्ध हो जाता है कि मनुष्य के वर्तमान समय के कार्यों का प्रभाव ही उसका भविष्य बनता है और मानव के प्रत्येक कार्य में उसके हाथों का प्रमुख भाग रहता है। अतः अंगुलियां ही मानव जीवन की निर्मातृ हैं।

अंगुलियों में देवताओं का निवास

हाथ को यदि फैला दिया जाय और वह अपनी वास्तविक स्थिति में हो तो उसकी चारों अंगुलियों में से कोई एक ऐसी स्थिति में होती है कि उससे सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन का रहस्य इतने विशाल परिमाण में दृष्टि-गोचर होता है कि उसकी

अंगुलियों का परिचय
चित्र नं० १६
कनिष्ठका
अनामिका
मध्यमा
तर्जनी
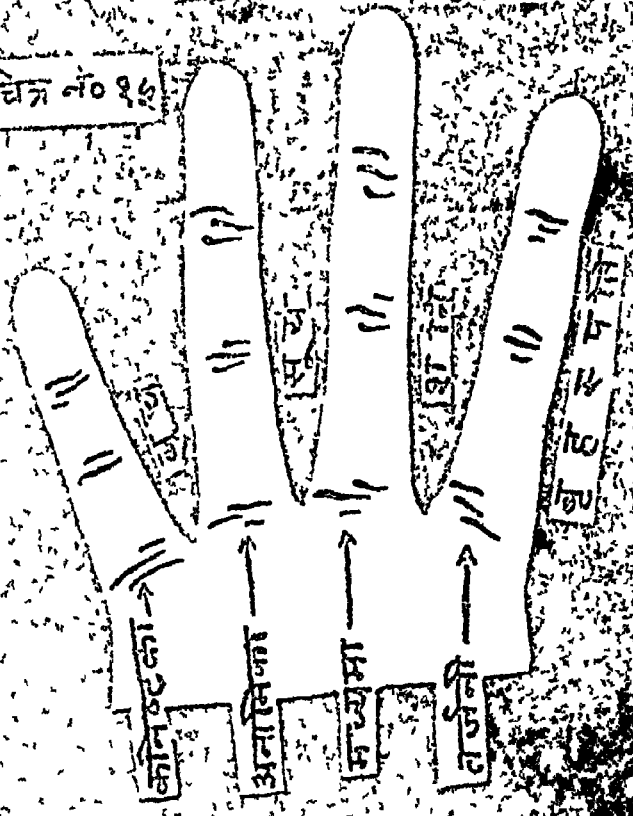
ओर से आंखें बन्द नहीं की जा सकती। मानव हस्ताङ्गुलियों के इस तात्विक भेद को आर्य-सभ्यता के पश्चात् संसार में सर्व पथम ग्रीस निवासियों के शास्त्रज्ञों तथा तत्व-वेत्ताओं ने अनुभव किया और उन्होंने हमारे महर्षियों के इस सिद्धान्त को—अंगुलियों के उर्ध्व भाग में देवताओं का निवास है—स्वीकार किया। अंगुलियों में देवताओं का निवास नम्न प्रकार से है--

१—तर्जनी (First Finger) के उर्ध्व भाग में बृहस्पति (Jupiter)

२—मध्यमा (Second Finger) „ „ „ „ शनि (Saturn)

३—अनामिका (Third Finger) „ „ „ „ सूर्य (Sun or Apollo)

४—कनिष्ट का (Fourth Finger) „ „ भाग में बुध (Mercury)

अंगुलियों के सम्बन्ध अन्य विवेचन करने से पूर्व हम यहां अपने पाठकों की सुविधा एवं लाभ के लिये अंगुली-निवासी इन देवताओं का सूक्ष्म परिचय लिख देते हैं। अंगुलियों के अधिपति अथवा स्वामी होने के नाते इन देवताओं के स्वभाव, मनोवृति और आचरण के अनुरूप ही अंगुलियों का प्रभाव भी होता है। अतः इनका परिचय अंगुलियों के प्रभाव को स्पष्ट करने में विशेष सुविधा जनक रहेगा। अंगुली-निवासी इन देवताओं का परिचय इस प्रकार है—

तर्जनी के स्वामी बृहस्पति

आर्य सभ्यता किंवा भारतीय संस्कृति में बृहस्पति को बुद्धि का देवता स्वीकार किया गया है। वैदिक-कालीन इतिहास के पर्यावलोकन से ज्ञात होता है कि बृहस्पति देवताओं के गुरु थे और घोर आपत्ति काल में देवताओं को इन्होंने अपने बुद्धि-चातुर्य की शक्ति से ही आपत्ति-मुक्त किया था। अतः हस्त-परीक्षा में—विशेषतः अंगुलियों की परीक्षा में बुद्धि-चातुर्य, विचार, शीलता, विद्या आदि गुणों का विवेचन तर्जनी अंगुली द्वारा ही होता है।

मध्यमा के स्वामी शनी

शनी प्रधानतः उग्र देवता है। यद्यपि अनुकूल होने पर शनी भी लाभदायक ही होता है, किन्तु साधारणतः इसका प्रभाव हानिप्रद ही रहता है। अतः मानव मनोवृति के विश्लेषण में विशेषतः मध्यमा अंगुली का विचार करना चाहिये।

अनामिका का स्वामी सूर्य

सूर्य प्रकाश का स्वामी है। प्रकाश, तेज, यश, कीर्ति, भाग्योदय आदि की परीक्षा करते समय अनामिका अंगुली को भूल कर भी विस्मरण नहीं करना चाहिए मनुष्य की प्रतिभा का स्पष्ट ज्ञान जितनी सरलता से अनामिका का अध्ययन करने से प्राप्त होता है उतना हाथ के अन्य किसी भाग के द्वारा प्राप्त नहीं होता।

कनिष्ठका का स्वामी बुध

बुध साधारणतः विद्या के देवता के रूप में स्मरण किया जाता है। अतः कनिष्ठका अंगुली के द्वारा मानसिक-शक्ति इच्छा शक्ति, विचार-धारा, कल्पना शक्ति आदि का ज्ञान होता है। अतः हस्त-परीक्षा के समय मानसिक-शक्ति और इच्छा शक्ति के सम्बन्ध में गूढ़ विचार करते समय कनिष्ठका अंगुली की स्थिति आकृति, स्वरूप आदि का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये, अन्यथा इस सम्बन्ध में भूल हो जाना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है।

ग्रीस के धार्मिक विश्वासो किंवा रूढियों का साधारण सा अध्ययन ही स्पष्ट कर देता है कि इनके देवता साधारणतः मानव की महत्वाकांक्षाओं, विषयाशक्ति, प्रतिभा और दुर्गुणों के प्रतिनिधि-स्वरूप ही थे। अतः जब हाथ को फैला दिया जाय और वह अपनी प्राकृतिक स्थिति में हो तो जो अंगुली विशिष्ट प्रतीत होगी वह मानव-चरित्र के सम्बन्ध में निर्णायक कुञ्जी सिद्ध होगी।

अंगुलियों के साधारण दो भेद

अंगुलियां साधारणतः दो प्रकार की होती हैं—गठीली और चिकनी—

जिस अंगुली के सन्धि-स्थानों पर की गाठें अंगुली के आकार से विशेष मोटी और बड़ी-भड़ी तथा उभरी हुई होती हैं, वह अंगुली गठीली होती है। गठीली अंगुलियों वाला व्यक्ति बुद्धिमान, मेधावी, चतुर और दूरदर्शी होता है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक अंगुली में दो सन्धि स्थान होते हैं और उनमें से प्रत्येक सन्धि-स्थान की गांठ का प्रभाव व्यक्ति के जीवन किंवा स्वभाव तथा आचरण पर भिन्न प्रकार का होता है। ऊर्ध्व गांठ का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। पाठकों को स्मरण होगा कि अंगुलियों का ऊर्ध्व भाग मस्तिष्क की नाड़ियों की अन्तिम सीमा है और इसी कारण से अंगुलियों के ऊर्ध्व भाग का मस्तिष्क से गूढ़ सम्बन्ध होता है। इधर अंगुली की ऊर्ध्व गांठ उसके ऊर्ध्व भाग से सम्बन्धित होती है, अतः उसका सम्बन्ध भी मस्तिष्क से होना प्राकृतिक ही है। फलतः ऊर्ध्व गांठ से व्यक्ति की बुद्धि, ज्ञान, गरिमा, चातुर्य, मेधा आदि का ज्ञान होता है। इस गांठ का प्रभाव व्यक्ति की इच्छा-शक्ति और विचार-शक्ति पर भी सटीक होता है। अधो (नीचे की) गांठ का सम्बन्ध भौतिकता से होता है। फलतः इस का प्रभाव प्राकृतिक प्रेम, ललित-कला, वस्त्राभूषण आदि भौतिक भावनाओं पर होता है। कदाचित् दोनों ही गांठ बड़ी और उभरी हुई हों तो व्यक्ति में उन दोनों की पारस्परिक स्थिति अथवा दशा किंवा आकृति के अनुपात से प्रभाव समझना चाहिए।

अंगुलियों की गांठों के प्रभाव

केवल ऊर्ध्व गांठ बड़ी होने से व्यक्ति बुद्धिमान, विचारशील, ज्ञान-सम्पन्न, गुणवान, चतुर, मेधावी, तथा कुशल कलाकार होता है।

केवल अधो (नीचे की) गांठ बड़ी होने से व्यक्ति प्रकृति-प्रेमी, ललित-कलाओं का प्रेमी, उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण का प्रेमी, सुन्दर तथा विशाल अट्टालिकाओं का प्रेमी तथा भौतिक पदार्थों मे विशेष रुचि रखने वाला होता है।

कदाचित दोनों ही गांठें समान रूप से उभरी हुई हों तो व्यक्ति केवल साधारण दस्तकार होता है। उपरोक्त दोनों प्रकार के गुणों का उसमें अभाव रहता है।

अंगुलिलों के विभिन्न प्रभाव

अंगुलियों का हथेली के अनुरूप ही छोटा या बड़ा होना शुभ-सूचक है। यदि अंगुलियां हथेली से अनुपात मे छोटी होती हैं तो व्यक्ति आदर्शवाद का विरोधी, उसका आलोचक और धार्मिक भावनाओं में नास्तिक होता है। इसके विपरीत यदि अगुलियां हथेली के अनुपात मे लम्बी होती है तो व्यक्ति पक्का आदर्शवादी और धार्मिक भावनाओं मे पूर्ण श्रद्धा तथा लगनशील एवं आस्तिक होता है। इसके अतिरिक्त यदि दैवयोग से हथेली और अंगुलियां—दोनों ही विशेष रूप से लम्बी हों तो व्यक्ति अपने में ही खोया रहता है और भ्रमशील मनोवृत्ति किंवा स्वभाव का होता है।

लम्बी अंगुलियों वाला व्यक्ति प्रत्येक काम को खूब सोच-विचार कर अपना निर्णय स्थिर करके ही करता है। यदि उसे कोई काम उपयुक्त प्रतीत न हो अथवा किसी भी कारण से उसे उसकी उपयोगिता में सन्देह हो तो वह उसे कभी नहीं करता।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार का व्यक्ति किसी पर भी—जब तक कि उसके सम्बन्ध में उसे पूर्ण-रूपेण सन्तोष न हो जाय—विश्वास नहीं करता साधारण सी आपत्ति में व्याकुल हो जाना इस प्रकार के व्यक्ति का सामान्य गुण है।

अंगुलियों की ऊर्ध्व गांठ मोटी और उभरी हुई हो तो व्यक्ति तत्वज्ञानी होती है और तत्व मय विषयों के अनुसन्धान में व्यस्त रहने वाला होता है।

कदाचित केवल तर्जनी अंगुली की ऊर्ध्व गांठ मोटी और उभरी हुई हो तो व्यक्ति की धार्मिक भावनाओं में घोर नास्तिकता और धार्मिक विचारों में पूर्ण स्वतन्त्रता का होना प्रकट होता है। इस प्रकार का व्यक्ति किसी भी धर्म में आबद्ध न होकर अपना स्वयं का नूतन धर्म निर्माण करता है।

अंगुष्ठ की ऊर्ध्वगाँठ उभरी हुई, पुष्ट और मोटी हो और अंगुष्ठ का ऊर्ध्व भाग लम्बा हो तो व्यक्ति अत्यन्त कुशाग्र-बुद्धि का होता है। किन्तु यदि यह भाग छोटा हो तो अन्ध-विश्वासी, बुद्धिहीन, तर्क-शक्ति में खोखला, मूर्ख, विचारहीन तथा ज्ञान-शून्य होता है। इसके साथ ही यदि मस्तक रेखा चन्द्र-पर्वत पर से होकर जाती हो तो उपरोक्त फल का प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा। ऐसी स्थिति में यदि केवल गुरु (बृहस्पति)-पर्वत उभरा हुआ हो तो व्यक्ति आत्म-प्रशंसी होता है।

यदि अधो (नीचे की) गांठ पुष्ट, मोटी तथा उभरी हुई हो तो व्यक्ति नियम बद्ध, कार्यशील, स्वार्थी, अवसरवादी, समानता

के महत्व को जानने वाला व्यपारी तथा सांसारिक व्यवहार में कुशल होता है।

किसी-किसी हस्त-विज्ञान-वेत्ता का यह मत है कि यदि अंगुली और हाथ की सन्धि वाली गांठ उभरी हुई, पुष्ट और मोटी होती है तो वह व्यक्ति गृह कार्य में दक्ष, नियमबद्ध और कार्यशील होता है।

केवल उर्ध्व गांठें उभरी हुई और पुष्ट होने वाला व्यक्ति छिद्रान्वेषी, दूषण-खोजी, तथा अव्यवहारिक होता है।

किसी-किसी हस्त-शास्त्री के अनुसार दोनों गांठे उभरी हुई और पुष्ट होने वाला व्यक्ति उत्तम विचार-सम्पन्न, व्यवस्थित कार्य-कर्ता, समन्वयशील, व्यवहारिक, शोधक, तथा तान्त्रिक होता है। उसे वाद-विवाद करने में प्रसन्नता होती है और वह शास्त्र का ज्ञाता होता है। इसके साथ ही यदि चन्द्र पर्वत भी उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति विषय के सार को ग्रहण करके शास्त्र, शुद्ध, उदात्त मौलिक काव्यों के गायन में रुचि रखने वाला होता है।

यदि अंगुलियों के दोनों सन्धि-स्थानों में कभी भी उभार न हो अर्थात् गांठों का सर्वथा अभाव हो तो व्यक्ति में शीघ्रगामी विचारों का अन्तर्प्रवाह तीव्र होता है और कला तथा विज्ञान मे रुचि होती है; किन्तु उसके कार्य काल्पनिक तरंगवश, तर्क पर आश्रित तथा इच्छा शक्ति के अनुकूल होते हैं और उसे उचिता-नुचित विचार शक्ति तथा ज्ञान का पूर्ण अभाव रहता है। इस

प्रकार के व्यक्ति का कोई भी काम नियमित तथा उचित ढंग से आरम्भ होता है; किन्तु उसका परिणाम निरर्थक ही होता है। ऐसे व्यक्ति बिना भली प्रकार सोचे-विचारे ही काम को आरम्भ कर देते हैं, अतः प्रायः उसे बीच में ही छोड़ बैठते हैं।

छोटी अंगुलियों के गुण बड़ी अंगुलियों से भिन्न होते हैं। छोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति प्रत्युत्पन्नमति (शीघ्र ही विचार कर लेने वाला) होता है तथा उसे अनायास ही उकसाया जा सकता है। उसमें प्रत्येक काम को तत्काल कर बैठने का स्वभाव होता है। साथ ही कदाचित् उसका हाथ वर्गाकार हो तो वह तर्क निपुण होता है। यही कारण है कि वर्गाकार हाथ और छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति अधिकांशतः वकील, बैरिस्टर और मुख्तार होते हैं।

लम्बी और मोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति कठोर प्रकृति और निर्दयी मनोवृत्ति का होता है। किन्तु यदि अंगुलियां छोटी और गांठदार हों तो उसका स्वभाव उपरोक्त प्रकार का नहीं रहता यही कारण है कि छोटी किन्तु गठीली अंगुलियां शुभ मानी जाती हैं।

यदि अंगुलियां ढीली कोमल और अलग अलग हों तो व्यक्ति स्वेच्छाचारी होता है। किसी आज्ञा या बन्धन का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता। वह अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने ऊपर किसी प्रकार का नियन्त्रण भी नहीं चाहता। अपने विचारों के अनुसार वह जो कुछ उचित समझता है वही करता है।

जिसकी अंगुलियां एक दूसरे से मिली हों वह कोई भी ऐसा काम नहीं करता जिससे उसकी अपकीर्ति अथवा निन्दा हो। वह प्रत्येक काम करने से पूर्व उसे भली प्रकार लोक मर्यादा तथा धर्ममर्यादा की कसौटी पर पूर्ण रूपेण परख लेता है।

कोमल और पीछे झुकी हुई अंगुलियों वाले व्यक्ति तीव्र बुद्धि होते हैं। किसी भी बात को समझने में उन्हें विलम्ब नहीं लगता। यही कारण है कि इस श्रेणी के व्यक्ति अनुभवी, सुयोग्य तथा सफल वकील, बैरिस्टर और मुख्तार हो सकते हैं। इनका स्वभाव सरल किन्तु चंचल होता है। यों ये प्रत्येक क्षेत्र में उदार रहते हैं।

यदि अंगुलियां अन्दर की ओर झुकी हों तो व्यक्ति मन्द बुद्धि और मूर्ख होता है। वह प्रत्येक बात को कठिनता से समझ पाता है। इस श्रेणी के व्यक्ति साहसहीन, भीरु और कायर होते हैं। वे चुप रहना अधिक पसन्द करते हैं। हर समय अपने ही मे मग्न इनका स्वाभाविक लक्षण है। किंतु ऐसे व्यक्ति प्रत्येक विषय काकचेष्ट-शील और सतर्क होते हैं।

गोरा हाथ मनुष्य के स्वभाव में स्वाभिमानता और रूखापन प्रकट करता है। इस श्रेणी के व्यक्ति प्रायः दूसरों के सम्पर्क में काम आते हैं। इस प्रकार का हाथ यदि कठोर हो तो व्यक्ति फुर्तीला, विनम्र और आराम-पसन्द होता है।

जिसके हाथ पर बाल हों वह व्यक्ति रजोगुणी होता है। ऐसा व्यक्ति उत्तमोत्तम वस्त्रालंकार, षड्रस व्यंजन, ऐश्वर्य भोग

तथा आमोद-प्रमोद का सदैव इच्छुक रहता है। अंगुलियों पर बाल होने से व्यक्ति उग्र स्वभाव और क्रोधावेश में प्रायः निर्दयता का व्यवहार करने वाला होता है।

कनिष्ठिका अंगुली यदि अनामिका अंगुली के उर्ध्व पर्व को स्पर्श करे तो व्यक्ति कुलीन होता है तथा अपने सभी बन्धु-बान्धव परिजनों में अग्रणी होकर स्वयं पराक्रम से अधिक धन संचय करता है।

हाथ की अंगुलियों को सीधा फैलाकर स्वभाविक अवस्था में परस्पर मिलाने से यदि बीच में होकर छिद्र दिखाई दें तो व्यक्ति दरिद्री होता है और यदि छिद्र दिखाई न दें तो व्यक्ति धन संचय करने वाला होता है। किन्तु यदि ये छिद्र कनिष्ठिका और अनामिका के मध्य में हों तो वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। अनामिका और मध्यमा के मध्य में छिद्र हो तो तरुणावस्था में सुख होने की सूचना है और यदि मध्यमा और तर्जनी के मध्य में छिद्र हों तो बाल्यावस्था में सुख की द्योतक है।

अंगुलियों के आधार भाग लगभग सम धरातल में हों तो सफलता सूचक हैं। जो अंगुली अपने से अगली अंगुली के धरातल से जितनी नीची होगी उसकी शक्ति उतनी ही न्यून होगी।

अंगुलियाँ बांकी-टेढ़ी हों, नख छोटे हों और करतलगत आयुरेखा, मस्तक रेखा और हृदय रेखा खुली हुई हों तो वह मनुष्य अवश्यमेव निर्दयी, क्रूर-कर्मा, घातक और हत्यारे स्वभाव का होता है। यदि उत्तम हाथ में इस प्रकार की अंगुलियां हों तो वे भयानक स्वभाव की द्योतक होती हैं।

हाथ को फैला देने पर स्वभाविक अवस्था मे अंगुलियों को मिलाने से यदि वे पूर्ण रूपेण परस्पर चिपटी हुई प्रतीत हों तो व्यक्ति कृपण, लोकाचार व्यवहार-शील, संकोची, शील-स्वभाव, तथा सज्जन होता है। यद्यपि वह विचारवान भी होता है तथापि दूसरों की सम्मति के बिना अपने विचार स्थिर नहीं करता।

हाथ को फैला कर स्वभाविक अवस्था मे अंगुलियों को मिलाने से यदि उनके मध्य में छिद्र प्रतीत हों तो व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर, ज्ञान-सम्पन्न, मेधावी और दृढ़-निश्चयी होता है। ऐसा व्यक्ति लोकाचार-व्यवहार की चिन्ता नहीं करता और किसी भी प्रकार का निमन्त्रण स्वीकार नहीं करता। यह अन्तर यदि तर्जनी और मध्यमा के मध्य में विशेष हो तो व्यक्ति कल्पना शक्ति में तीव्र और स्वतन्त्र विचारशील होता है। मध्यमा और अनामिका के मध्य का अन्तर विशेष होने से व्यक्ति भाग्यशाली होता है और अनामिका तथा कनिष्ठका के मध्य में अन्तर अधिक होने से स्वतन्त्र कार्य करने वाला होता है। अंगुलियों का इस प्रकार का अन्तर यदि दक्षिण हाथ की अंगुलियों में न होकर केवल वाम हस्त की अंगुलियों के मध्य में ही हो तो व्यक्ति स्वयं का ही भरोसा करने वाला होता है और यदि इस प्रकार का अन्तर केवल दक्षिण हाथ की अंगुलियां के मध्य में ही हो तो व्यक्ति स्वतन्त्रता तथा आत्म-निष्ठा प्राप्त मनुष्य होता है।

पारदर्शी अंगुलियों वाला व्यक्ति अविवेकी, अनुभव हीन, मूर्ख और वाचाल होता है।

अंगुलियां के अग्र भाग उन्नत हों तो व्यक्ति जन्म से ही प्रत्येक काम में लगनशील, सचेष्ट, सहृदय, अनुभवी, व्यवहार-कुशल, बुद्धिमान, दूरदर्शी, और मेधावी होते हैं।

समस्त अंगुलियों के आधार यदि समतल हों तो व्यक्ति को आन्तरिक दृढ़ता और गुणों की पूर्ति मे शुभ स्थिति की सूचना समझना चाहिये। यह हस्त-परीक्षा के नाते अति शुभ लक्षण है।

गोल, पतली, चपटो और गठीली अंगुलियों वाला व्यक्ति वाष्प, बिजली अथवा मन्त्रचालित कार्यों का करने वाला, इंजीनियर, अथवा मस्तिष्क से काम करने वाला होता है।

नुकीली और गठीली अंगुलियां वाला व्यक्ति केवल नुकीली अंगुलियो वाले व्यक्ति की अपेक्षा अधिक उत्साही, साहसी, अद्भुत कार्यों का करने वाला निःसंशयी, तथा व्यवहारिक होता है।

समकोण और गठीली अंगुलियां वाला व्यक्ति विज्ञान, अनुमान तथा गणित में विशेष रुचि रखने वाला होता है।

जिस व्यक्ति की अंगुलियां गठीली होगी उसे रंग-मिश्रण में दक्षता प्राप्त होगी और यदि वह चित्रकार हुआ तो उसके चित्र मनोहर एवं चित्ताकर्षक होंगे, किन्तु उसके चित्र उत्तेजक कदापि नहीं होंगे। और यदि वह लेखक हुआ तो उसकी कृतियों में कल्पना बहुत ही कम होगी। वह प्रायः इतिहास, जीवन चरित्र तथा यात्राओं का वर्णन अधिक लिखेगा।

गठीली अंगुलियों वाला गवैया प्रभावहीन शास्त्रीय नियमों से हीन, किन्तु कर्ण-प्रिय बाजा बजावेगा।

सीधी और सुदृढ़ अंगुलियाँ होने से मस्तिष्क की स्थिति समान होती है और टेढ़ी अंगुलियां होने से आचरण में दोष प्रकट होता है।

हथेली के अनुपात में अंगुलियां अधिक लम्बी होने से व्यक्ति विरही, अपने ही ध्यान में मस्त, संशयी तथा धार्मिक विश्वासों तथा विचारों में आस्तिक होता है। यह व्यक्ति खूब छान-बीन किये बिना किसी भी व्यक्ति अथवा बात का विश्वास नहीं करता। बोलने तथा काम करने में ऐसा व्यक्ति आलसी होता है और शीघ्र निर्णय करना तो यह जानता ही नहीं।

हथेली के अनुपात में छोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति धूर्त, चालाक, साहसी, संकुचित विचार वाला होता है किन्तु यह व्यक्ति काम करने में तत्पर रहता है। कार्य आरम्भ शीघ्र ही कर देता है और विचार शक्ति तीव्र होती है। इसकी उल्लेखन शैली संक्षेप में ही तात्पर्य दर्शाने वाली होती है तथा गम्भीर होती है। इसे सरलता से उत्तेजित किया जा सकता है।

हथेली के अनुपात में लम्बी और मोटी अंगुलियों वाला व्यक्ति स्वभाव से कठोर होता है। यह संक्षेप में ही बात का अर्थ समझ लेते हैं। बाह्य टीमटाम अथवा प्रदर्शन की इनको चिन्ता नहीं होती। किन्तु यदि इस प्रकार की अंगुलियां पुष्ट हों तो व्यक्ति निर्दयी होता है।

हथेली के अनुपात में अंगुलियों का लम्बा होना श्रेष्ठ है। यह स्मरण रखना चाहिए कि हथेली और अंगुलियों के विकास का अनुपात व्यक्ति के आदर्शवादी अथवा भौतिकवादी होने के रहस्य को स्पष्ट करता है। नास्तिकों (Atheists) की अंगुलियां प्रायः छोटी और हथेली बड़ी होती है। इसके विपरीत लम्बी अंगुलियों वाला व्यक्ति शीघ्र ही विचार ग्रहण कर लेता है। अत्यधिक लम्बा हाथ और अंगुलियों वाला व्यक्ति प्रायः अत्यधिक काल्पनिक और शेखचिल्ली के समान विचारों वाला होता है।

अंगुलियों के सोलह भेद

हमारे ऋषियों ने अंगुलियों के निम्नलिखित सोलह भेद किये हैं—

अवलित अथवा सुस्पष्ट अंगुली, सूक्ष्म अथवा छोटी अंगुली दीर्घ अंगुली, चपटी अंगुली, बाहर झुकी हुई अंगुली, छोटी व चपटी अंगुली, फटी हुई अंगुली, रूखी अंगुली, पृष्ठ भाग पर रोम या केश युक्त अंगुली, ऊंची-नीची अंगुली, बांकी-टेढ़ी अंगुली, बहुत छोटी अंगुली, बहुत पतली अंगुली, अलग रहने वाली अंगुली, और सघन अथवा पास जुड़ी हुई अंगुली।

साधारणतः इनके प्रभाव निम्न प्रकार हैं—

अवलित अथवा सुस्पष्ट अंगुली वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है। छोटी अंगुलियों वाला मेधावी होता है। सरल व दीर्घ अंगुलियों वाला दीर्घायु होता है। लट्ठ के समान अंगुलियों

वाला निर्धन अथवा दरिद्री होता है। बाहर झुकी हुई अंगुलियों वाला शस्त्र-संभालन में निपुण योद्धा होता है। छोटी और चपटी अंगुलियों वाला दास होता है। चपटी फटी हुई, रुखी, पृष्ठ भाग मे रोम युक्त, ऊंची-नीची, टेढ़ी-बांकी, बहुत छोटी, बहुत पतली और अलग अलग रहने वाली अंगुलियों वाला दरिद्री होता है। सघन अंगुलियों वाला धन संचय करने वाला होता है।

स्त्रियों के हाथ-पैर की अंगुलियां टेढ़ी-बांकी हों, तो इसे वैधव्य और निपुत्रिक होने का लक्षण समझना चाहिए।

अंगुलियों के विशिष्ट प्रभाव

तर्जनी अंगुली (First Finger)—यह अंगुली यदि लम्बी हो तो व्यक्ति के स्वभाव मे अभिमान, विलास-प्रियता, ललित कलाओं से प्रेम. उतमोत्तम वस्त्रालंकारों में रुचि तथा षट्-रस व्यंजन की अभिलाषा तीव्र होती है। यदि यह अंगुली छोटी हो तो व्यक्ति दूसरों से मिलने वाला, शीलस्वभाव चतुर फुर्तीला तथा लगनशील किन्तु उत्तरदायित्वहीन होता है। अंगुलियों की परीक्षा करते समय उनके पर्वों पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए। पर्वों की आकृति और स्थिति का प्रभाव भी बहुत प्रबल होता है और वह सारे के सारे परिणाम को पूर्ण रूपसे परिवर्तित भी कर देता है। अंगुलियों के पर्व यदि विषय, विकृत, रूप अथवा कुरूप होंगे तो उनका परिणाम अत्यन्त भयानक हो सकता है। अंगुली का उर्ध्व भाग गोल अथवा वर्गाकार होगा तो व्यक्ति बुद्धिमान, विचार शील, दूरदर्शी, मेधावी और अनुभवी

होगा। इसके विपरीत नुकीले अग्रभाग वाली अंगुली अदूर दर्शिता, चंचल स्वभाव, अस्थिर मनोवृति, विचारहीनता तथा बुद्धिहीनता की द्योतक है। तर्जनी अंगुली लम्बी होने पर व्यक्ति दूरदर्शी और मितव्ययी भी होता है। इस प्रकार का व्यक्ति प्रायः नवयौवनाओं के प्रति अत्यधिक आकृष्ट रहता है। वह साहसी भी उत्कृष्ट श्रेणी का होता है और नारी अपहरण के काम में अत्यन्त कुशल होता है। यदि इस प्रकार के व्यक्ति के हाथ मे कुलक्षणों का विशेष प्रभाव हो तो वह चोर, डाकू, धूर्त ठग आदि होता है। तर्जनी का स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रथम पर्व में मीन, द्वितीय मे कुम्भ तथा तृतीय मे मकर राशि का स्थान माना गया है।

मध्यमा अंगुली (Second Einger)—मध्यमाङ्गली का स्वामी शनी (Saturn) है। इसके प्रथम पर्व में धनु राशी, द्वितीय पर्व मे वृश्चिक राशि तथा तृतीय पर्व तुला राशि का स्थान माना गया है। मध्यमा अंगुली के लम्बी होने से व्यक्ति एकान्त-प्रिय, विद्याभ्यासी, स्वाध्यायी स्वभाव वाला और अपने ही में रहने का अभिलाषी होता है। यह व्यक्ति बुद्धिमान, गम्भीर तथा आत्माभिमानी होता है। यह व्यक्ति सावधान तथा सतर्क रहता है और गुप्त विद्याओं की ओर इसकी विशेष रुचि होती है। यह व्यक्ति चिन्तातुर और रोगी होगा तथा भाग्यवादी होगा यदि हस्त मे अन्य कोई विशेषता अथवा शुभ चिह्न नहीं होगा तो यह व्यक्ति निर्बल इच्छा-शक्ति वाला, उत्साह-हीन तथा

साहस हीन होगा ऐसा व्यक्ति जोभी काम करता है उसीमें असफल रहता है। शनी के प्रभाव से ऐसे व्यक्तियों में साहस कभी उत्पन्न नहीं हो सकता और उसके प्रत्येक काम में नीच मनोवृति का समवेश रहता है। ऐसा व्यक्ति निर्बल मनुष्यों की सम्पत्ति पर अधिकार करके सम्पत्ति संचय करता है।

मध्यमा अंगुली लम्बी किन्तु वर्गाकार हो तो व्यक्ति पशु पक्षियों से—विशेषतः हाथी घोड़ों से प्रेम रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति अधिकांश में हाथियों के महावत या घोड़ों के चाकर हुआ करते हैं। यदि उस व्यक्ति की तर्जनी अंगुली भी मध्यमा के समान ही लम्बी हो जाय तो वह हाथी द्वारा या किसी अन्य पशु द्वारा मृत्यु को प्राप्त करता है।

मध्यमा अंगुली लम्बी हो और साथ ही अनामिका भी उसके समान या लगभग ही लम्बी हो तो व्यक्ति बाजी लगाने वाला, सट्टेबाज और जुआरी होता है। ऐसे व्यक्ति पक्षियों (तीतर-बटेर आदि) की लड़ाई का भी प्रेमी होता है। इस प्रकार का व्यक्ति धूर्त क्रीड़ा (जुआ) में अपनी सभी प्रकार की सम्पत्ति चल और अचल को बाजी पर लगा देता है, यहां तक कि अपनी स्त्री और बच्चों तक को बाजी पर लगाने में शंका नही होती। यदि इस प्रकार की अंगुलियों के उर्ध्व-पर्व शेष दोनों पर्वों के अनुपात मे लम्बे हों तो उसमें उपरोक्त दोषों का सर्वथा अभाव होता है। इसके विपरीत ऐसा व्यक्ति सद्गुण-सम्पन्न और आदर्शवादी होता है।

लम्बे जोड़ों वाला व्यक्ति अपने में ही अधिक मस्त रहेगा और सदैव यही सोचेगा कि मेरा कहा हुआ वाक्य ब्रह्म वाक्य हो जाय। इस प्रकार का व्यक्ति कभी किसी काम में असफल हो जाने पर अत्यधिक दुःखी हो जाता है। यह जीवन मे अनेकों दुर्घटनाओं से बच जाता है, किन्तु इसकी मृत्यु सहसा ही हो जाया करती है। सिर-दर्द, पेट-दर्द, अथवा हृदय की गति रुक जाने से इसकी मृत्यु होती है।

मध्यमा अंगुली यदि छोटी होती है तो व्यक्ति सभी कामों में उतावला रहता है। गम्भीरता ऐसे व्यक्ति मे कल्पना के लिए भी नहीं होती।

मध्यमा अंगुली यदि छोटी और नुकीली होती है तो व्यक्ति कमीने विचारों वाला, ओछी मनोवृति का तथा नीच होता है। विचारशीलता तो ऐसे व्यक्ति को छू तक नहीं जाती है।

मध्यमा अंगुली यदि टेढ़ी होती है तो व्यक्ति दूषित मनोवृति वाला तथा कलुषित विचारों का होता है। यह व्यक्ति नित्य-रोगी रहता है।

मध्यमा अंगुली का प्रथम पर्व लम्बा होने से व्यक्ति निराशा-वादी होता है और सदैव लगन के साथ मृत्यु का आह्वान करता रहता है।

मध्यमा अंगुली का द्वितीय पर्व लम्बा होने से व्यक्ति गुप्त विद्याओं (ज्योतिष, वेदान्त, मैस्मेरिजम, हिप्नाटिज्म, परलोक-

विद्या आदि) में प्रतीति रखने वाला तथा उनमें उत्सुकता रखने वाला होता है ।

मध्यमा अंगुली का तृतीय पर्व लम्बा हो तो व्यक्ति लोकप्रिय, मितव्ययी, धनवान, चतुर, व्यवहार-कुशल तथा प्रतिभा-सम्पन्न होता है ।

अनामिका अंगुली (Third finger)

अनामिका अंगुली का स्वामी सूर्य है। यह हस्त-कला तथा धन का क्षेत्र है। इसके प्रथम पर्व में कन्या, द्वितीय पर्व मे सिंह तथा तृतीय पर्व में कर्क राशि का स्थान माना गया है। यदि इसका ऊर्ध्व भाग पतला और नुकीला हो तो शुभ होता है ।

अनामिका के नख के पास का भाग पतला और नुकीला हो तो व्यक्ति हस्त-कला में प्रवीण होगा और किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के हेतु निश्चिन्त होकर धन व्यय करता है। यह व्यक्ति धार्मिक कार्यों में भी हृदय खोल कर व्यय करता है। अपने उपार्जित धन को व्यय करने मे यह व्यक्ति सर्वथा निर्मम होता है और अपने इष्ट-मित्रों तथा सहयोगियों की सहायता भी खूब करता है ।

अनामिका अंगुली यदि तर्जनी अंगुली से छोटी होती है तो वह व्यक्ति अपने दाम्पत्य-जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है तथा व्यापारिक क्षेत्र में भी उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। व्यापारिक कार्यों में वह किसी का विश्वास नहीं करता, यहां तक कि अपने कार्यकर्ताओं पर भी अधिक विश्वास नहीं करता।

बन्धु-बान्धव, परिजन, इष्ट-मित्र तथा सम्बन्धियों से व्यापार में साझेदारी करना इसे सर्वथा अरुचिकर होता है। किन्तु यदि चन्द्र और शुक्र का उभार अच्छा न हो तो परिणाम इसके सर्वथा विपरीत होता है। दाम्पत्य-जीवन और व्यापारिक क्षेत्र—दोनों स्थानों में इसे असफलता ही पल्ले पड़ती है। क्योंकि व्यापारिक सफलता की प्रधान कुञ्जी मंगल के उभार के अच्छा होने पर ही निर्भर करती है। मंगल का उभार ठीक न होने पर व्यक्ति चाहे कितना ही धनी और मानी क्यों न हो, व्यापारिक-क्षेत्र में उसे सफलता प्राप्त होने के अत्यन्त अवसर होते हैं।

अनामिका और तर्जनी के परस्पर बराबर लम्बी होने से व्यक्ति विचित्र कला-कौशल का उत्कट प्रेमी होता है। अपने हाथ मे नवीन वस्तुओं के निर्माण से उसे परम प्रसन्नता प्राप्त होती है और अपने काम में यशस्वी होने की उसकी तीव्र लालसा रहती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम से नहीं घबड़ाता, किन्तु उससे परिश्रम की प्रेरक शक्ति उसकी यशस्वी होने की उत्कट अभिलाषा ही होती है।

अनामिका अंगुली यदि तर्जनी अंगुली से बड़ी होती है तो वह मनुष्य की उन्नति मे बाधक होती है। ऐसा व्यक्ति अपने कामों में सफलता होते देखता है, किन्तु वास्तव में वह सफल नहीं होता। ऐसा व्यक्ति अपने प्रयत्नो में सफल होने का भरसक प्रयत्न करता है, किन्तु अन्त में उसके प्रयत्न ही उसके मार्ग के रोड़े बन जाते हैं। कार्यारम्भ के समय तो ऐसे व्यक्ति के सहयोग

सहयोग प्रदान करते हैं, किन्तु बाद में वे ही विरोधी हो जाते हैं और सहयोग प्रदान करने मे आनाकानी करते हैं।

साधारणतः अनामिका अंगुली लम्बी हो तो व्यक्ति यश-अभिलाषी और कला-कौशल-प्रेमी होता है यदि यह अंगुली विशेष लम्बी हो तो व्यापार-कौशल, बुद्धिचातुर्य द्यूत प्रेम और धन की लालसा प्रकट करती है। छोटी हो तो उदासीनता और कला-कौशल की ओर से अरुचि उत्पन्न करती है। टेढ़ी हो तो अपयश प्रदान करती है।

अनामिका की लम्बाई यदि मध्यमा के समान हो और उसका द्वितीय पर्व उन्नत हो तथा मंगल-पर्वत उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति तर्क-शक्ति-सम्पन्न, द्यूत-क्रीड़ा-प्रेमी, नीलाम-लाटरी तथा अन्य भाग्य परीक्षक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। यदि उपरोक्त लक्षणों के साथ-साथ बुध-पर्वत भी उभरा हुआ हो तो वह सट्टे का व्यापार करने वाला होता है।

कनिष्ठका अंगुली (Fourth Finger)

हाथ की चोथी अंगुली का नाम कनिष्टका अंगुली (Fourth Finger) है। हाथ में प्रायः यह सबसे छोटी अंगुली होती है। इसका स्वामी बुध (Mercury) है। बुध व्यवहार-कुशलता और व्यवसाय आदि का प्रतीक है। अतः इस अंगुली से व्यापार, व्यवहार सम्बन्धी विषयों की परीक्षा की जाती है। इसके प्रथम पर्व मे मिथुन, द्वितीय पर्व में वृषभ तथा तृतीय पर्व मे मेष राशि का स्थान है।

कनिष्ठका अंगुली लम्बी हो तो व्यक्ति को ज्ञान-गरिमा तर्क पटुता, दूर-दर्शिता, वाणी में ओज एवं धारा प्रवाह, विभिन्न भाषाओं की ग्रहण शक्ति की योग्यता प्रदान करती है और वह व्यक्ति विद्वान, तर्क-पटु दूरदर्शी व्याख्यान-दाता, विभिन्न भाषाओं का ज्ञाता मेधावी तथा प्रतिभा-सम्पन्न होता है।

कनिष्ठका के अधिक लम्बा होने से व्यक्ति चतुर, कूटनीतिज्ञ, तीव्र-बुद्धि छली एवं धूर्त होता है। विश्वासघात करना, अपने शत्रु को बातों में लाकर आपत्ति में फंसा देना और स्वयं पानी से कमल के पत्ते की तरह निर्लेप रह जाना, किसी अज्ञातवासी (Under-ground) को पकड़वा देना, अपने स्वार्थ साधन के हेतु किसी को भी अपनी कूटनीति का आखेट बना डालना इस प्रकार की अंगुली वाले व्यक्ति के लिए साधारण-सी बात है। इस प्रकार के व्यक्ति व्यापारिक क्षेत्र में चरम सीमा तक पहुच जाते हैं। (इस सत्य का अनुभव हमारे देश के उच्चकोटि के उद्योग-पतियों तथा व्यापारिक-महारथियों में अनायास ही किया जा सकता है) अपने स्वार्थ साधन के निमित्त, इस प्रकार का व्यक्ति, अपने अनन्यतम आत्मीय, परम धर्म, इष्ट-मित्र आदि तक को अपना शिकार बनाने में आगा-पीछा नहीं करता, यहां तक कि चोर और डाकुओं तक से साठ-गाँठ करके समाज और राष्ट्र के विनाश की नाटकीय खन्दक खोदने में इसे अदन्य गौरव अनुभव होता है। जिस हाथ में इस प्रकार की अंगुली होगी वह कुरूप एवं विकृताकृति होगा। दैवयोग से यदि इस

प्रकार के लक्षण वाला हाथ सुन्दर और श्रेष्ठ आकृति एवं स्वरूप वाला हो तो वह व्यक्ति दूरदर्शी, ज्ञान-पिपासु जिज्ञासु, उदार, सहृदय, सहिष्णु, विद्यार्थी-मनोवृति का मनुष्य होता है।

कनिष्ठका अंगुली यदि छोटी हो तो बुद्धि मान्द्य, अदूरदर्शिता, असफलता, मूढ़ता, मूर्खता आदि की जननी है। ऐसे व्यक्ति में धूर्तता और कपटता नाम-मात्र को भी नहीं होती। ऐसे व्यक्ति अपनी सच्चरित्रता, साधुता तथा सरलता से समाज और राष्ट्र की सेवा करते हैं और सुयश भी अर्जन करते हैं। किन्तु कनिष्ठका अंगुली का यह प्रभाव केवल उसी व्यक्ति को होता है जिसका हाथ सुन्दर और चित्ताकर्षक होता है। हाथ के कुरूप होने से कनिष्ठका के छोटी होने का प्रभाव केवल उपरोक्त दुर्गुणों तक ही सीमित रहता है और वह व्यक्ति स्वप्न में भी सुयश अर्जन नहीं करता, बल्कि दूसरों का भार बन कर पशु-तुल्य जीवन व्यतीत करता है अथवा दासत्व-वृत्ति से जीविकार्जन करके जीवन-यात्रा पूरी करता है।

कनिष्ठका अंगुली यदि टेढ़ी हो तो दुर्बल मनोवृति, शिथिल विचार शक्ति, निर्बल इच्छा शक्ति, नैतिक ज्ञान की न्यूनता, उपकारी अथवा सहायक के प्रति उपेक्षा भाव, और अस्तव्यस्त एवं किसी का भी प्रभाव स्वीकार कर लेने की हीन-भावना का सृजन करती है। ऐसा व्यक्ति शान्त रहने वाला, दूसरों के प्रभाव में अनायास ही आ जाने वाला, उचितानुचित का ज्ञान न रखने वाला, अवसर से लाभ न उठाने वाला, जिनसे सहायता अथवा

पोषण प्राप्त होता है उनके प्रति उपेक्षा-मिश्रित उदासीनता का व्यवहार करने वाला, निर्बल इच्छा शक्ति वाला, अस्थिर विचार वाला नैतिक-शक्ति में न्यून तथा पराधीन मनोवृति वाला होता है।

कनिष्ठका अंगुली के अग्र भाग की नोक यदि चपटी हो तो व्यक्ति शिक्षण-कला में कुशल होता है।

कनिष्ठका अंगुली यदि मध्य श्रेणी की हो तो व्यक्ति में क्षमा शीलता की शक्ति अद्भुत होती है। ऐसा व्यक्ति अपने शत्रुओं तक को क्षमा कर देता है और अपने घोर विरोधी अथवा विरोधियों तक से प्रतिकार की भावना को बदल देता है। किसी के द्वारा हानि पहुचने पर भी उसे क्षमा कर देना अपना धर्म समझता है। वह अहिंसा का पक्षपाती होता है। ऐसा व्यक्ति धर्मशील कहा जा सकता है और वह किसी का भी अपकार करना अत्याधिक घृणित समझता है। ऐसा व्यक्ति अपने मित्रों का विश्वास करता है और उन्हें लाभ पहुंचाता है, साथ ही वह अपने साथियों से लाभ उठा भी लेता है।

मध्यमा अंकुली (Second Finger) और कनिष्ठका अंगुली (Forth Finger) दोनों का एक साथ समान रूप से लम्बा होना सर्वथा अशुभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वप्न में भी विश्वास करने योग्य नहीं होता। वह अपना भेद सदैव छिपाये रखता है। ऐसी स्थिति में यदि बुध-पर्वत निर्बल हो। उसका उभार उठा हुआ न हो किन्तु चपटा तथा नुकीला हो तो परिणाम

उपरोक्त प्रकार का नहीं होता। ऐसा व्यक्ति जब तक अपना रहस्य दूसरों को प्रकट नहीं कर देता है तब तक उसे सन्तोष नहीं होता। ऐसा व्यक्ति बहुधा असफल ही रहता है।

कनिष्टका अंगुली के छोटी होने से व्यक्ति के स्वभाव में महान अन्तर उस समय आ जाता है जब कि उसकी मध्यमा अंगुली अत्यधिक लम्बी हो जाय। ऐसी स्थिति में वह चरित्रहीन लम्पट, धूर्त, व्यभिचार में संलग्न तथा पर-स्त्री अपहरण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति वेश्यागामी और व्यभिचार के अड्डे खोलने वाला होता है।

यदि कदाचित् अनामिका अंगुली कनिष्टका अंगुली से छोटी हो तो व्यक्ति धूर्तता और लम्पटता की ओर झांकता तक नहीं है। अपने सच्चरित्र से वह दूसरों को लाभ पहुंचाता है तथा यशस्वी होता है।

पाठकों की सरलता के लिए हम यहां एक मानचित्र देते हैं जिसमें अंगुलियों के क्रम भेद से उनके प्रभाव का सूक्ष्म विवेचन करेंगे—

अंगुलियों के क्रम भेद फल बोधक मानचित्र

तर्जनी अंगुली (First Finger)

साधारण—स्वभाव में भीरुता, शान्ति प्रिय, उत्तरदायित्व से दूर भागना, दूसरों से प्रभावित रहना, अनिश्चित एवं अस्थिर मनोवृत्ति, इच्छा शक्ति तथा भावना; उद्देश्य हीनता।

लम्बी—शक्ति का पुजारी; शासन-कर्ता अथवा लोक नेता; शासन की योग्यता; शक्ति-सम्पन्न; ऐश्वर्यशाली; महत्वाकांक्षी; विलास-प्रिय; अभिमानी; दानवीर; परोपकारी; तथा व्यवहार कुशल।

विशेष लम्बी—निष्ठुर स्वभाव; पाशविक मनोवृत्ति; निर्भय, निर्दयी; हृदयहीन; दमन-प्रिय नृशंस; आत्म प्रशंसक; उपद्रवी; अपने मुंह मियाँ मिट्ठू, विप्लवी, धूर्त, तथा दुष्ट।

टेढ़ी—उद्देश्य-हीन जीवन, निर्बल इच्छा शक्ति, अस्थिर मनोवृत्ति, अनिश्चित विचार अस्त-व्यस्त भावनायें, अयोग्य शासन-शक्ति, तथा आन्दोलित मस्तिष्क।

मध्यमा अंगुली (Second Finger)

साधारण—यश कीर्ति की अभिलाषा, कला-कौशल से प्रेम, तथा अपनी जीविका स्वयं अर्जन करने में सुख का अनुभव।

लम्बी—एकान्त-प्रिय, गुप्त विद्या प्रेमी, सावधान, प्रपंची, आडम्बरी, स्वार्थी, धूर्त, कूट-नीतिज्ञ, तथा साहसी।

यदि किसी स्त्री के हाथ की मध्यमा अंगुली लम्बी होगी तो वह काम करने में दृढ़ होगी। ऐसी स्त्री प्रायः बाल-विधवा होकर व्यभिचारिणी हो जाती है और अपने घर में ही व्यभिचार का अड्डा बना लेती है तथा इसकी व्यभिचार लिप्सा इतनी प्रबल होती है कि स्वयं अपनी ही सन्तान से भी व्यभिचार की कामना करती है।

विशेष-लम्बी—विद्वान; स्वाध्यायी; विद्या व्यसनी; भाग्यहीन यशस्वी; दुर्बल स्वास्थ्य; अल्प-विषयी; निर्बल आकांक्षायें; तथा आर्थिक-स्थिति हीन।

टेढ़ी—कलुषित विचार; पाशविक-मनोवृत्ति; नीच प्रकृति; यदि यह टेढ़ापन मध्यमा के मध्य में हो तो निम्नतम श्रेणी का व्यभिचारी होता है। अनैतिक व्यभिचारी में ऐसे व्यक्ति की विशेष रुचि होती है। यह स्त्रियों की अपेक्षा किशोरावस्था वाले बच्चों से अधिक व्यभिचार करता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः आतशक, सुजाक प्रभृति जननेन्द्रिय-सम्बन्धी रोगों से विशेष रूप से पीड़ित रहता है। इसके विचार कभी स्वप्न में भी पवित्र नहीं रहते। बालकों को उड़ा ले जाना, उनसे व्यभिचार करना तथा उन्हें अपने ही समान व्यभिचारी तथा दुराचारी बना देना ऐसे व्यक्ति का प्रधान काम होता है।

इस प्रकार की अंगुली यदि छोर पर से नोंकदार हो जाय तो ऐसा व्यक्ति कमीनी मनोवृत्ति का होता है। प्रत्येक बात में ओछापन दिखाता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी विषय में विश्वस्त नहीं होता।

अनामिका अंगुली (Third Finger)

साधारण—हस्त-कला का प्रेमी; कलाकार, कला का उपासक, यशार्जन का अभिलाषी; कला-प्रचारक तथा उपकारी।

लम्बी—प्रत्येक विषय में उदासीन; अन्यमनस्क मनोवृत्ति वाला तथा अस्त व्यस्त।

विशेष लम्बी—यशप्राप्ति की उत्कट अभिलाषा; मनोभावों में विरोधाभास; कीर्ति प्राप्ति की सम्भावना; तथा स्वप्न द्रष्टा।

टेढ़ी—यश तथा सफलता प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा, किन्तु उद्देश्य-हीनता के कारण कुछ भी हाथ न लगना; इस प्रकार के व्यक्ति विरले ही सफल या यशस्वी होते हैं।

छोटी—कीर्ति के प्रति अनिच्छा, कला के प्रति प्रेम में न्यूनता तथा उदासीन।

कनिष्ठका अंगुली (Fourth Finger)

साधारण—आर्थिक-विषमता; यशस्वी; विद्वान, वक्ता प्रतिभाशाली; प्रबल मानसिक-शक्ति वाला; लोकप्रिय; प्रभावशाली; कथा-वाचक, सम्पादक, अध्यापक तथा ज्ञान सम्पन्न—

लम्बी—अस्थिर मनोवृति चचल स्वभाव, आलसी; तथा उच्छृङ्खल विचार।

विशेष लम्बी—अत्यन्त चतुर; दूरदर्शी; कूटनीतिज्ञ; धूर्त; छली; रहस्यमय; मायावी; विचक्षण; सूक्ष्म विचार वाला; सावधान; तथा स्वाभिमानी।

टेढ़ी—मितभाषी; मितव्ययी; शिथिल-विचार अदूरदर्शी; सरल, स्पष्ट, असावधान, दूसरों के प्रभाव में आनेवाला, तथा दुर्बल मनोवृति।

छोटी—मन्द-बुद्धि, विचार-हीन, दुर्बल इच्छाशक्ति; तथा प्रत्येक कार्य में असफल।

अंगुलियों की कुछ विशेष ज्ञातव्य विशेषतायें

व्यक्ति-मात्र की अंगुलियों की गठन, आकृति, स्वरूप किंवा बनावट परस्पर भिन्न होती है और इसी तथ्य के आधार हस्त-

विज्ञान-वेत्ताओं ने मानव-जीवन की घटनाओं एवं उसके भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने के सिद्धान्तों की व्यवस्था करली है, अतः प्रत्येक व्यक्ति की जीवन घटनायें और उसका भविष्य परस्पर भिन्न होता है। अतः मानव-जीवन की घटनायें तथा उनका भविष्य चाहे भिन्न हो, किन्तु अँगुलियों की उम गठन, आकृति, स्वरूप किंवा बनावट कैसी ही क्यों न हो, किन्तु उनमें भिन्नता किसी विरले हाथ ही में पाई जाती है। पाठकों के सामान्यज्ञान मे वृद्धि करने के हेतु हम उनका संक्षिप्त परिचय निम्न पंक्तियों में देते हैं—

१—प्रत्येक अंगुली में साधारणतः तीन भाग होते हैं। जन-साधारण की भाषायें उसे पार, पोरु, पोरवा अथवा पर्व कहते हैं और हस्त विज्ञान-वेत्ताओं ने उसे युग संज्ञा प्रदान की है।

२—प्रत्येक अंगुली के छोर वाले युग (सब से ऊपर वाले (उर्ध्व) भाग) में एक चिह्न होता है। (इस चिह्न का विस्तृत परिचय तथा प्रभाव यथा स्थान किया जायगा) अधिकांशतः यह चिह्न शंख, चक्र गदा और पद्म के होते हैं। (एक ही चिह्न प्रत्येक अंगुली में अथवा प्रत्येक में भिन्न २ चिह्न हो सकते हैं।)

३—प्रत्येक अंगुली दूसरी अंगुली से कुछ अन्तर पर होगी। हथेली के जिस भाग पर अंगुलियां विकसित होती हैं, वहां प्रत्येक अंगुली का उद्गम-परस्पर भिन्न स्थान पर से होगा। अत्यन्त समीप अर्थात् सटा हुआ उद्गम-स्थान अथवा एक ही स्थान पर से सब अंगुलियों का उद्गम यद्यपि सर्वथा असम्भव नहीं है तथापि ऐसी घटना विरली ही होगी।

४—प्रत्येक अंगुली के प्रथम अथवा उर्ध्व (छोर वाले) युग, पार, पोरू, पोरवा अथवा पर्व के पृष्ठ-भाग मे नख होता है। अंगुली का सौन्दर्य विशेषतः एवं अधिकांशतः नख पर ही निर्भर करता है। नख को यदि अंगुली के सौन्दर्य की आत्मा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। लम्बी, चपटी, भद्दी अंगुलियों का आधार अधिकांशत नख पर ही होता है।

५—प्रत्येक अंगुली की युग धारा रेखायें (पार, पोरू, पोरवा अथवा पर्व रेखायें) प्रायः कटी हुई होती है। युग, पोरू, पोरवा, पार अथवा पर्व की बीच मे कटे-फटे होते है। साफ अंगुली कोई विरली ही होती है।

अंगुलियों में ऋतुओं का निवास

मानव-जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक दैहिक, दैविक तथा भौतिक विषयों की हस्त विज्ञान वेत्ताओं ने मानव-हस्त मे व्यवस्था की है। इसी सिद्धान्त के प्रतिपादन-स्वरूप उन्होंने हाथ की चारो अंगुलियों मे चारों ऋतुओं का स्थान भी निश्चित किया है। यद्यपि हमारे ऋषियों ने सर्व प्रथम हस्त-विज्ञान का दर्शन रचा अथवा सरल शब्दों में--(जहां हस्त-विज्ञान का सर्व प्रथम अनुसन्धान किया गया) छः ऋतुयें होती हैं, किंतु संसार के शेष सभी भागों में केवल चार ही ऋतु होती हैं और मानव कल्याण के उपासक हमारे ऋषियोंने हस्त-विज्ञान शास्त्र की रचना एक-मात्र मानव-कल्याण की आधार शिला पर ही की है, अतः इस महान उपयोगी शास्त्र में केवल चार ही ऋतुओं को श्रेय दिया गया है, ताकि अखिल विश्व का मानव इस शास्त्र को मानव-विज्ञान-शास्त्र रूप में अपनी श्रद्धाञ्जली भेंट करें।

ऋषि-प्रणीत इस सिद्धांत के अनुसार हाथ की चारों अंगुलियों में ऋतुओं का निवास इस प्रकार है—

तर्जनी अंगुली (First Finger) वसन्त (Spring)

मध्यमा अंगुली (Second Finger) शीत (Winter)

अनामिक अंगुली (Third Finger) ग्रीष्म (Swing)

कनिष्टका अंगुली (Four Finger ` हेमन्त

हस्त-परीक्षा करते समय अंगुलियों मे इन ऋतुओं का ध्यान अवश्य रखना चाहिये ।

अंगुलियों की बनावट के साधारण भेद

प्रत्येक हाथ की अंगुलियों की बनावट प्राय. भिन्न होती है । हस्त-विज्ञान-वेताओं के मतानुसार बनावट की दृष्टि से अंगुलियों के साधारण भेद निम्नलिखित हैं । अंगुलियों की बनावट का व्यक्ति के जीवन पर उतना ही प्रभाव पड़ता है, जितना हाथ की बनावट का अथवा हाथ के किसी लक्षण या चिह्न विशेष का। प्रत्येक अंगुली चाहे वह किसी भी गठन, बनावट, स्वरूप अथवा आकृति की क्यों न हो, वह अपना विशेष स्थान रखती है । अत: हस्त-परीक्षा में इसका महत्व भूल कर भी आँखों से ओझल नही किया जा सकता । अतः अंगुलियों की बनावट, गान, स्वरूप किंवा आकृति के निम्नलिखित भेदों का मनन पूर्वक ध्यान से अध्ययन करना चाहिये ।

१—बिल्कुल सीधी तथा चौरस—इस लक्षण वाली अंगुली मूल से लेकर छोर तक एक समान सीधी होती है । इसके तीनों

युग बराबर होते हैं न तो वह किसी स्थान पर मोटी होती है और न किसी स्थान पर पतली होती है। वह किसी भी ओर झुकी हुई अथवा टेढ़ी भी नहीं होती। उसका छोर भी उसकी बनावट के अनुरूप ही होता है। नोकीला, चपटा, पतला अथवा गोल ही नहीं होता। समान आकार का होता है।

२—पतली, चौरस किन्तु टेढी अंगुली—बहुत सी अंगुलियां बिल्कुल सीधी तो नहीं होती किन्तु पतली और चौरस अवश्य होती हैं और किसी न किसी ओर झुकी होती हैं।

३—पतली किन्तु गोलाई लिये हुये—कितनी ही अंगुलियां पतली तो अवश्य होती हैं किन्तु सामान्यतः गोलाई लिये हुए होती है। कोई कोई अंगुली तो एकदम धनुष के आकार तक की देखी गई है। किन्तु ऐसी अंगुलियां साधारणतः सामान्य गोलाई लिये हुए ही अधिक देखने मे आती है।

४—मूल मोटा किन्तु छोर पतला—कुछ अंगुलियों का मूल अथवा उद्गम (वह स्थान जहां से हथेली में अंगुली का विकास होता है) स्थान तो मोटा होता है किन्तु छोर उर्ध्वपर्व-जिसके पृष्ठ भाग पर नख होता है) पतला होता है। ऐसी अंगुली ज्यों-ज्यों छोर की ओर बढ़ती हैं सुई की नोंक की भांति पतली होती जाती है।

५—बिल्कुल सीधी किन्तु मोटी—इस प्रकार की अंगुली एकदम सीधी होती है किन्तु पर्याप्त मोटी होती है। ऐसी अंगुली का उद्गम स्थान और छोर, दोनो समान रूप से मोटे होते हैं

और दोनों के मध्य का भाग भी उन्हीं के अनुरूप मोटा होता है। संक्षेप में ऐसी अंगुली लट्ठ के समान मोटी दृष्टिगोचर होती है। और आदि से अन्त तक भारी ही दिखाई देती है।

६—जड़ के पास मोटी और बीच में पतली—इस प्रकार की अंगुली को गठीली अंगुली कहते हैं। इसकी प्रत्येक गाँठ (सन्धि-स्थान) स्पष्टतः मोटी दृष्टिगोचर होती है। शेष भाग गांठों की अपेक्षा पतला होता है।

७—लचकीली अंगुलियां—कोई कोई अंगुली स्प्रिंग की भाँति अत्यधिक लचकीली होती है। ऐसी अंगुली तनिक से झटके में लचक जाती है। वह आगे-पीछे दोनो ओर अत्यन्त सरलता से मोड़ी जा सकती है। इस प्रकार की अंगुली का ऊर्ध्व-पर्व सहज ही में पृष्ठ भाग की ओर मोड़ा जा सकता है।

यद्यपि अंगुलियां अन्य कितनी ही प्रकार की और भी हो सकती हैं, किन्तु उनके इस प्रकार सूक्ष्म भेदों का उल्लेख करने से विवरण बहुत विस्तृत हो जायगा और पाठकों को भूल-भुलैया सा बन जायगा। साधारणतः उपरोक्त प्रकार की अंगुलियाँ ही देखने में आती हैं। इसी कारण से केवल इन्हीं का उल्लेख करके शेष—सूक्ष्म भेदों को यहां स्थान नहीं दिया गया है। सुविज्ञ पाठकों को समय २ पर जिस-जिस प्रकार की अंगुलियां देखने को मिलें उनका प्रभाव उपरोक्त अंगुलियो के भेदानुसार निश्चित करना चाहिए। उपरोक्त विचित्र-प्रकार की अंगुलियों के गुण-दोष उनके अनुरूप निम्न प्रकार हैं।

बनावट के अनुसार अंगुलियों के प्रभाव

१—बिल्कुल सीधी और चौरस (चित्र संख्या १६)—इस प्रकार की अंगुली मूल से लेकर छोर तक बिल्कुल सीधी होती है। इस प्रकार की पतली अंगुली अधिकांश देखने में सुन्दर होती है और उसके नख भी चमकदार तथा चित्ताकर्षक होते हैं। इस प्रकार अंगुलियां विशेषतः नारी जाति के हाथों में होती हैं। किम पुरुष तथा कोमल कलेवर पुरुषों के हाथों में भी इसी प्रकार की अंगुलियां होती हैं। इस प्रकार की अंगुलियों के साथ निम्न-लिखित लक्षणों का विचार करते हुये उनके प्रभाव का निर्णय करना चाहिए—

साधारणतया तो अंगुलियाँ सीधी ही दृष्टिगोचर होती हैं, किन्तु जब हाथ को स्वभाविक रूप से फैला दिया जाता है और अंगुलियों को एकदम सीधी करके (फैला करके) एक दूसरे से मिला लिया जाता है तो प्रत्येक दो अंगुलियों के मध्य में छिद्र-सा अवश्यमेव दिखाई देता है। कहीं-कहीं औरकभी-कभी सम्पूर्ण हाथ में यह छिद्र न्यूनाधिक रूप में होता है अथवा बिल्कुल नहीं होता है। अतः छिद्र जिस अनुपात में हो उसी के अनुसार इस लक्षण का प्रभाव होता है। यह छिद्र विस्तृत हों तो व्यक्ति दरिद्र होता है और बड़े २ स्पष्ट छिद्र हों तो परिद्रता का आभास कराते हैं।

कनिष्ठका और अनामिका के मध्य इस प्रकार के छिद्र न हों तो वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है और यदि यत्किंचित छिद्र हों तो वह स्वतन्त्र-प्रियता का लक्षण है।
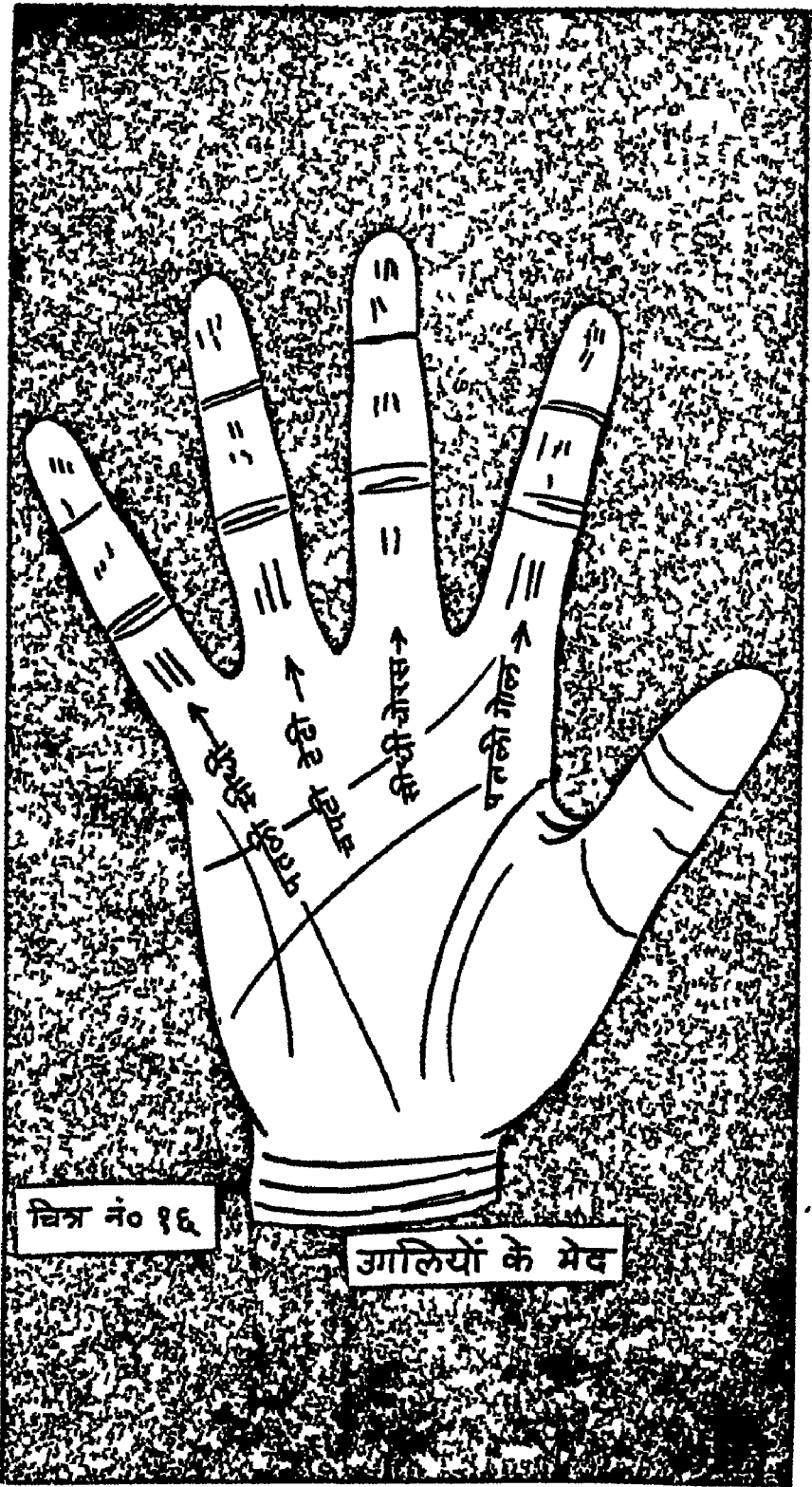
चित्र नं० १६

उंगलियों के भेद

अनामिका और मध्यमा के मध्य इस प्रकार के छिद्र न हों तो युवावस्था में सुखी होने के लक्षण है, किन्तु यदि यत्किञ्चित् छिद्र हो तो वह व्यक्ति अवश्यमेव स्थिर-स्वभाव वाला होगा। उसकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी, विचार वान होगा, दृढ़ मनोवृत्ति का होगा और उसकी इच्छा शक्ति प्रबल होगी। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक कार्य को विचार कर तथा दृढ़ निश्चय करके करने की क्षमता रखता है।

मध्यमा और तर्जनी के मध्य इस प्रकार के छिद्र न हों तो बाल्यावस्था में सुख का बोध होता है। ऐसे व्यक्ति का आरम्भिक जीवन अवश्य ही सुख पूर्ण रहा होना चाहिये। किन्तु यदि यत्किंचित् छिद्र हों तो वह व्यक्ति स्वप्न दृष्टा होता है।

इस प्रकार की अंगुलियों वाले व्यक्ति में कोमलता (नाजुकता) विशेष रूप से होती है और उसके जीवन का स्थूल अध्ययन अंगुलियो के मध्य स्थान छिद्रों के आधार पर अनायास ही हो जाता है।

२—पतली, चौरस किन्तु टेढ़ी अंगुली (चित्र संख्या १६)— इस प्रकार की अंगुलियां भी प्रायः देखने मे आती हैं। ऐसी अंगुलियों मे एक विशेषता होती है। आगे अथवा पीछे की ओर इनका झुकाव होता है। इस प्रकार की अंगुलियां बहुत कुरूप बेडौल और भद्दी प्रतीत होती हैं। उनको देखने से ऐसा लगता है कि या तो उन पर बोझ डाला गया है अथवा उनसे कोई इस प्रकार का अव्यवहारिक या कठिन काम लिया गया है जिसके

फलस्वरूप उनकी आकृति विकृत हो गई है। कभी-कभी इस प्रकार की अंगुलियां दायें या बाईं ओर भी झुकी हुई होती हैं। ऐसी अंगुलियों का प्रभाव उनके झुकाव के अनुरूप ही होता है।

यदि समस्त अंगुलियों का झुकाव आगे की ओर ही हो तो वह व्यक्ति चंचल स्वभाव वाला तथा अस्थिर मनोवृत्ति वाला होता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी कार्य को स्थिर होकर नहीं कर सकता। यदि उर्ध्व पर्व सीधा हो और मध्य पर्व पर से अंगुलियों का झुकाव आगे की ओर हो तो वह व्यक्ति चंचल स्वाभाव और अस्थिर मनोवृत्ति का होता ही है साथ ही वह हठधर्मी भी होता है। यद्यपि अपने निश्चय पर ऐसा व्यक्ति स्वभावतः दृढ़ नहीं रहता, किन्तु यदि उसके निश्चय के विपरीत उससे कुछ कह दिया जाय तो वह हठ पकड़ लेता है और अपनी हठ पूरी करने में ही उसे शान्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार के व्यक्तियों मे साधारणतः निम्न प्रकार के गुण दोषों का मिश्रण होता है—

चंचल हृदय, अथिर मनोवृत्ति, हठ-धर्मी, मन्द-बुद्धि, साहस-हीनता एकान्तप्रियता, सदैव मौन रहने की अभिलाषा, अपने विचारों में ही मस्त, निर्बल इच्छाशक्ति तथा विचार हीनता।

(परीक्षक को केवल अंगुलियों के झुकाव को ही देख कर अपना मत स्थिर नहीं कर लेना चाहिए हाथ के अन्य लक्षणों और उनके गुण-दोषों पर परिपक्व विचार करके ही अपना मत निश्चित करना चाहिए। केवल अंगुलियों के झुकाव पर ही

आश्रित रह कर अपना मत स्थिर करने में सफलता की आशा सन्देहास्पद ही रहती है।)

यदि समस्त अंगुलियों का झुकाव पृष्ठ भाग की ओर हो तो व्यक्ति चालाक और गम्भीर प्रकृति का होता है। इस प्रकार की अंगुलियों का झुकाव पीछे की ओर होने का स्पष्ट अर्थ यह है कि व्यक्ति धूर्त कूटनीतिज्ञ, मायावी, छली, प्रपंची और चालाक है। यदि अंगुलियां मूल अथवा अधो पर्व तक सीधी हों तथा आगे जाकर पृष्ठ भाग की ओर झुकी हों तो उनका प्रभाव निम्न प्रकार होता है—

कूटनीतिज्ञ, मायावी, धूर्त, लम्पट, प्रपंची, छली, स्थिर स्वभाव प्रबल मनोवृत्तिः शक्तिशाली, इच्छाशक्ति, दृढ़ विचारक, स्वावलम्बी तथा मृग-तृष्णा में भटकने वाला होता है। इस प्रकार के व्यक्ति यदि शान्ति के साथ किसी बात पर समझाया जाय तो वह सरलता से सहमत हो जाता है। वह प्रकृति से गम्भीर तथा विचारशील होता है। ऐसा व्यक्ति सदैव एक वस्तु को छोड़ कर दूसरी को पाने की लालसा में भटकने वाला होता है।

यदि समस्त अंगुलियां कनिष्टका की ओर ही झुकी हुई हों तो उनका प्रभाव निम्नलिखित होता है—

दुष्ट-प्रकृति नीचमनोवृति, हेकड़ स्वभाव, निर्बल स्वास्थ्य, शक्ति-हीन किन्तु भयानक क्रोधी, दुर्व्यहारी धूर्त, मक्कार, जालसाज, तथा मायावी।

इस प्रकार का व्यक्ति निरर्थक ही अपनी बात पर अड़ जाता है। वह अपनी शक्ति को वास्तविकता से बहुत अधिक आंकता है

और स्वयं को सबसे अधिक शक्तिशाली समझता है, अतः हरेक व्यक्ति से भिड़ने को प्रस्तुत रहता है।

यदि समस्त अंगुली अंगुष्ठ की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्ति विचारशील, विनम्र, विशाल हृदय, और कोमल स्वभाव का होता है और वह प्रत्येक विषय को मननपूर्वक सोचता-विचारता है इस प्रकार अपना निर्णय स्थिर करके ही तद्-अनुसार कार्य करता है। वह शील स्वभाव और नम्र मनोवृत्ति का होता है इस प्रकार के व्यक्ति के गुण-दोष संक्षेप में निम्न प्रकार होते हैं।

शील स्वभाव, विशाल हृदय, कोमल मनोवृत्ति, स्थिर बुद्धि, परिष्कृत, मनोवृत्ति, विद्वान, मेधावी, विचारशील, श्रद्धान्ध, विनयी, विनम्र, उपकारी, दानी, सुदृढ़ इच्छाशक्ति तथा प्रतिभा सम्पन्न।

यह व्यक्ति अन्य लोगों का समुचित तथा यथा योग्य आदर करता है। यदि लेखक होता है तो विशेष रूप से साहित्यिक विषयों पर रचना करेगा तथा चित्रकार होता है तो विशेष रूप से अपने इष्टदेव के चित्र अंकित करने में अधिक व्यस्त रहेगा।

३—पतली किन्तु गोलाई लिये हुए (चित्र संख्या १६) कुछ अंगुलियां प्रायः ऐसी होती हैं जो मूल से लेकर छोर तक पतली ही होती हैं, किन्तु गोलाई लिए हुए अवश्य होती हैं। इस प्रकार की अंगुलियों का झुकाव कभी आगे अर्थात् हथेली की ओर होता है और कभी पीछे अर्थात् पृष्ठ भाग की ओर होता है। जिनका झुकाव हथेली की ओर होता है वह व्यक्ति श्रमजीवी, अन्य व्यवसायी, तथा परिश्रम से जीविकार्जन करके अपना तथा अपने

परिवार का भरण-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कठिन से कठिन शारीरिक श्रम करके भी अपना तथा अपने आश्रितों का जीवन-निर्वाह करने की क्षमता से सम्पन्न होता है किन्तु विचारशीलता इस प्रकार के व्यक्ति में न्यून-मात्रा में होती है। विचार शक्ति निर्बल होती है, अतः वह किसी विषय में पूर्ण रूपेण गम्भीर विचार कदापि नहीं कर सकता। प्रत्येक विषय में वह अपना निर्णय शीघ्र ही कर लेता है और उसके अनुरूप ही कार्य में संलग्न हो जाता है। वैसे वह समझदार होता है। यद्यपि उसकी समझदारी विचार-विनिमय के सम्बन्ध में अपना प्रभाव नहीं रखती तथापि उचित एवं उपयोगी परामर्श को वह अवश्य ही स्वीकार कर लेता है। ऐसा व्यक्ति आजीवन निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। मनोवांछित फल अथवा सफलता के हेतु वह सर्वदा भटकता रहता है। उसकी इच्छायें भी अधिकांशतः उसकी स्थिति से विशेष होती हैं। अतः वास्तव में इस प्रकार का व्यक्ति मृग तृष्णा के पीछे भटकता है।

इस प्रकार की अंगुलियां प्रायः मध्यमवर्ग के व्यक्तियों में पायी जाती हैं। ऐसे व्यक्ति सदैव अपने विचारों से ही काम करने की प्रेरणा-प्राप्त करते हैं।

इसके विपरीत जिस व्यक्ति की अंगुलियों का झुकाव पृष्ठ भाग की ओर होता है, उसका स्वभाव, प्रेरणा-शक्ति तथा योग्यता भी तदनुरूप ही होती है। इस प्रकार का व्यक्ति मन्द बुद्धि, विचार हीन, मूर्ख, तथा निर्बल मनोवृत्ति का होता है। इस प्रकार

के व्यक्ति में सोचने की शक्ति प्रायः नहीं के बराबर होती है। और वह किसी भी विषय में पूर्व-विचार करने मे सर्वथा असमर्थ होता है। वह जो भी कुछ विचार करता है वह कार्यारम्भ के पश्चात् उसकी आवश्यकताओं अथवा प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर ही करता है।

इस प्रकार के व्यक्ति में साहस तो दीपक लेकर खोजने पर भी नहीं मिलता। वह प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व ही साहस छोड़ बैठता है और प्रायः उधर से अपना हाथ खींच लेता है। किन्तु शेखचिल्ली के समान स्वप्न-द्रष्टा वह अवश्य होता है।

इस प्रकार का व्यक्ति स्वभावतः ही भीरु होता है। उसे अपनी शक्ति पर नाम-मात्र को भी विश्वास नहीं होता अपनी इस दुर्बलता पर आवरण डालने के हेतु वह प्रायः चुप रहता है।

४—मूल भाग स्थूल किन्तु ऊर्ध्व भाग पतला (चित्र संख्या १६) इस प्रकार की अंगुलियों वाले व्यक्ति में साधारणतः निम्न-लिखित लक्षणों का समावेश रहता है।

ऐसा व्यक्ति होनहार, बुद्धिमान, चतुर तथा विद्वान होगा। किसी न किसी कला में वह अवश्य ही दक्ष होगा। प्रायः ऐसा व्यक्ति ललित कला प्रेमी होता है और उसी में क्रियात्मक-दक्षता भी प्राप्त करता है।

यदि हाथ के अन्य लक्षण तथा चिह्न दूषित हों तो ऐसा व्यक्ति धूर्त, मक्कार, ठग, क्रूर कर्मा तथा हत्यारा तक भी हो सकता है। यह सब हाथ के अन्य चिह्नों के दोषों की मात्रा पर निर्भर करता है कि उसके दुर्गुण किस सीमा तक बढ़ जायं।

अपने सम्बन्ध में किसी प्रकार का विचार करने में वह पूर्ण रूप से उदासीन होता है। फलतः कठिन काम में वह सदैव असफलता ही प्राप्त करता है।

अंगुलियों का विशेष ज्ञान

अंगुलियों के सम्बन्ध में जितना हम लिख चुके हैं, उतना ही पर्याप्त नहीं है। इस सम्बन्ध में जितनी गम्भीरता से विचार किया जायगा उतना ही अधिक और सटीक ज्ञान मानव जीवन की घटनाओं और भविष्य के सम्बन्ध में प्राप्त होगा। यहां हम पाठकों को अंगुलियों और हथेली के सन्धि-स्थान के सम्बन्ध में विशिष्ट परिचय तथा उनका प्रभाव बतलायेंगे। इस विषय का सुचारु ज्ञान होने पर हस्त परीक्षा में निस्सन्देह विशेष सफलता प्राप्त होती है।

यह स्पष्ट है कि प्रत्येक अंगुली हथेली के साथ स्थान-विशेष पर जुड़ी हुई होती है। हथेली और अंगुलियों के इन सन्धि स्थानों का स्थिति-विशेष के अनुसार विशिष्ट प्रभाव होता है। संक्षेप में यह इस प्रकार है—

जिस व्यक्ति की अंगुलियां हथेली पर एक ही सीधी रेखा में अथवा लगभग एक ही सीधी रेखा में मिलती हैं, वह व्यक्ति निस्सन्देह अपने जीवन में विशेष रूप से सफल रहता है। अंगुलियों की हथेली से इस प्रकार की सन्धि स्वभाव की सरलता तथा सन्तुलितता की द्योतक है। इस प्रकार के लक्षणवाला व्यक्ति भाग्यशाली, ऐश्वर्य-सम्पन्न और विद्वान होगा।

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं तर्जनी अंगुली का स्वामी बृहस्पति है। यदि यह अंगुली हथेली में कुछ नीचे की ओर आकर मिलती है तो ऐसे लक्षणवाला व्यक्ति मनुष्यों पर शासन करने की शक्ति में निर्बल होता है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव विचित्र-सा होता है और वह मिलनसार नहीं होता। सभा, सोसायटी आदि में अथवा नये व्यक्तियों से मिलते समय वह अस्त व्यस्त-सा हो जाता है तथा व्याकुल रहता है। ऐसे समय में वह अत्यधिक भावुक हो जाता है। इसके विपरीत यदि यह अंगुली अन्य सभी अंगुलियों की अपेक्षा हथेली के साथ ऊंचे स्थान पर मिलती है तो उसका प्रभाव उपरोक्त प्रभाव के बिल्कुल विपरीत होता है। वह व्यक्ति सुयोग्य शासन कर्ता, सबल विचार शक्ति सम्पन्न, विद्वान, मिलनसार, दूरदर्शी तथा सफल होता है।

मध्यमा अंगुली साधारणतः अपने स्थान पर ही हथेली के साथ मिलती है। हाथ की गठन, आकृति तथा बनावट में ही इसे ऐसा स्थान प्राप्त है जिसके कारण इसके स्थान-भ्रष्ट होने की सम्भावना किसी विरले ही हाथ में होती है।

अनामिका अंगुली यदि अन्य अंगुलियों के सन्धि स्थान के साथ सीधी रेखा में न होकर नीची होती है तो व्यक्ति का स्वभाव मनोवृत्ति अथवा प्रकृति ऐसी होती जिसके कारण वह आजीवन प्रशंसा-योग्य कोई भी काम नहीं कर पाता। कला-कौशल की ओर से तो यह व्यक्ति एकान्त उदासीन ही होता है।

इसके विपरीत यदि व्यक्ति की अनामिका की हथेली से सन्धि ऊंचे स्थान पर होती है तो वह कीर्तिवान, यशस्वी, कला-प्रिय तथा सफल होता है।

कनिष्ठका अंगुली यदि निम्न स्थान पर सन्धि करती है तो व्यक्ति व्यापार तथा आर्थिक-विषयों में अच्छी सफलता प्राप्त नहीं करता। अपने व्यक्तिगत लाभ के हेतु यह व्यक्ति दूसरों का उपयोग करना उचित नहीं समझता और आर्थिक विषयों में अनायास ही दूसरों के कहने में अथवा प्रभाव में आ जाता है।

इसके विपरीत यदि कनिष्ठका अंगुली उच्च-स्थान पर हाथ के साथ सन्धि करती है तो व्यक्ति आर्थिक-विषयों में विशेष रूप से सफल होता है। व्यापार आदि कार्यों में उसे अपने मनोवाञ्छित फल प्राप्त होते हैं। देन-लेन के विषयों में ऐसा व्यक्ति दूसरों के प्रभाव में भूल कर भी नहीं आता और सदैव सतर्क रहता है।

इस शीर्षक में हमने अंगुलियों और हथेली के सन्धि स्थानों की ओर प्रकाश डाला है। हस्त परीक्षा-जिज्ञासु हमारे पाठकों को इससे पर्याप्त सुविधा तथा ज्ञान प्राप्त होगा। यदि यह कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी कि सूक्ष्म बारीकियों में जाने से पूर्व ही, केवल उपरोक्त आधार पर, मानव-जीवन सम्बन्धी प्रत्येक क्षेत्र का ज्ञान अनायास ही हो जाता है। अब हम पाठकों की ज्ञान-वृद्धि के हेतु अंगुलियों के झुकाव के सम्बन्ध में लिखेंगे।

अंगुलियों का झुकाव

यदि हाथ को खोल कर फैला दिया जाय और वह अपनी स्वभाविक स्थिति में हो तो प्रायः देखा जाता है कि अंगुलियां परस्पर एक दूसरे पर झुकी हुई होती हैं। अंगुलियों के इस झुकाव का भी अपना विशिष्ट प्रभाव होता है और उसके अनुसार व्यक्ति के जीवन में उत्थान और पतन, सुख और दुख, विकास और विनाश, सफलता और असफलता आदि का स्थान होता है निम्न पंक्तियों में हम पाठकों के लाभार्थ इसका विशद विवरण लिखते हैं, जिनके द्वारा एक ही दृष्टि में मानव-जीवन के अधिकांश रहस्यों का उद्घाटन अनायास ही हो जाता है।

यदि कनिष्ठका, अनामिका और मध्यमा—तीनों अंगुलियों का झुकाव तर्जनी अंगुली की ओर होता है और तर्जनी अंगुली एकदम सीधी होती है तो वह व्यक्ति को महत्वाकांक्षी, स्वतन्त्र विचारवाला, तथा उत्साही बनाती है और वह जीवन में सदैव अपनेही विचारों के अनुकूल अपने विशेष मार्ग पर आगे बढ़ताहै।

यदि तर्जनी अंगुली मध्यमा अंगुली की ओर झुकी हुई होती है तो इसका प्रभाव उपरोक्त प्रभावके एकदम विपरीत होता है। ऐसा व्यक्ति स्वभावतः ही निरुत्साही,निश्चेष्ट और उदास रहताहै।

यदि तर्जनी अंगुली के साथ २ कनिष्ठका और अनामिका अंगुलियों का झुकाव भी मध्यमा अंगुली की ओर ही हो और मध्यमा अंगुली एकदम सीधी हो तो वह व्यक्ति अत्यधिक शोक-ग्रस्त, चिन्तातुर, और उदास रहता है। उसके स्वभाव तथा

मनोवृति पर शनि का प्रबल दुष्परिणाम पड़ता है जिसके फल-स्वरूप ऐसा व्यक्ति सदैव एकान्तवास की अभिलाषा रखता है और अन्य व्यक्तियों से मिलना-जुलना वह एकदम नहीं चाहता।

यदि मध्यमा अंगुली तर्जनी अंगुली की ओर झुकी हुई रहती है तो ऐसा व्यक्ति कुविचारी होता है। इसकी आकांक्षायें सदैव दूषित, कलुषित और घर्षित होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः कुकर्मी, लम्पट, लुच्चा और लफंगा होता है। उसे दूसरे को सताने, दूसरों का हानि पहुंचाने तथा दुष्टतापूर्ण कार्य करने में ही अधिक प्रसन्नता होती है।

मध्यमा अगुली यदि अनामिका अंगुली की ओर झुकी हो तो मानव-स्वभाव मे अत्यधिक अन्तर पड़ जाता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः भावों मे बहता रहता है। क्षणभर में तो वह उत्साही, प्रसन्न और आशावादी हो जाता है और क्षणभर में उत्साह-हीन उदास और निराश हो जाता है। इस प्रकार के लक्षणवाले व्यक्ति के विचार, मनोभाव तथा भावनायें कभी भी स्थिर नही रहती।

अनामिका अंगुली यदि मध्यमा अंगुली की ओर झुकी रहती है तो व्यक्ति को अमानुषिक तथा अनैतिक कार्यों की ओर प्रेरित करती है। ऐसा व्यक्ति कुकर्म अथवा क्रूर-कर्मों से प्रख्यात होने की आकांक्षा रखता है और प्राय. चोरी, हत्या, ठगी, विश्वासघात आदि कार्यों से ख्याति प्राप्त करता है।

अनामिका अंगुली यदि कनिष्ठका अंगुली की ओर झुकी होती है तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में व्यापार और कला-कौशल के

अद्भुत समन्वय होता है। इस प्रकार के व्यक्ति का कला-प्रेम प्रधानतः धनोपार्जन के हेतु ही होता है।

इसके विपरीत यदि कनिष्टका अंगुली अनामिका अंगुली की ओर झुकी हो तो ऐसा व्यक्ति भी अपने जीवन में व्यापार तथा कला-कौशल का अद्भुत सम्बन्ध रखता है। किन्तु इस प्रकार के व्यक्ति की व्यापारिक भावनायें तथा उद्योग सर्वथा कला के विकास के लिये ही होते हैं। वह प्रायः इस प्रकार के व्यापार में संलग्न होता है जो कला के लिये हो।

जिस हाथ की चारों अंगुलियां एकदम सीधी हों (किसी ओर भी झुकी न हों), उनका विकास उत्तम हो, सुन्दर हों और सुदृढ़ हों, वह उपरोक्त सभी प्रकार के झुकावों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली, सफलता प्रदान करने वाली, ऐश्वर्य-सम्पन्न, प्रतिभा-दायिनी तथा भाग्यशालिनी होती हैं।

तर्जनी अंगुली यदि एकदम सीधी; सुडोल तथा हथेली की ओर झुकी हो तो व्यक्ति अत्यधिक महत्वाकांक्षी मनोवृत्तिवाला तथा दूसरों पर शासन करने की उत्कट अभिलाषा वाला होता है।

अंगुलियों के मध्यान्तर

अंगुलियों के अन्य लक्षणों की भांति उनके मध्य का अन्तर भी मानव-जीवन पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। अतः अब हम अंगुलियों के बीच के अन्तर पर प्रकाश डालेंगे।
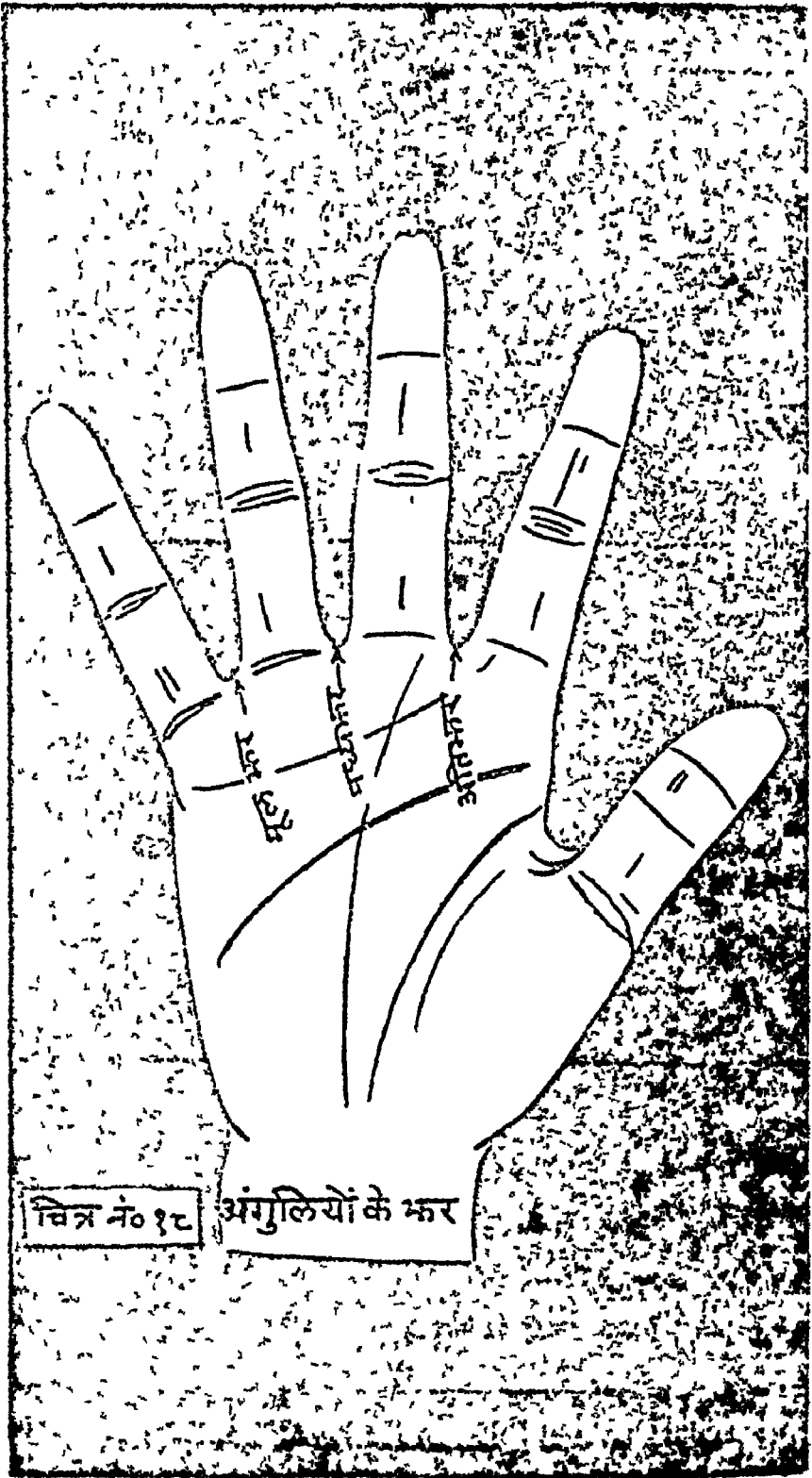
चित्र नं० १८ अंगुलियों के भार

अंगुष्ठ तथा तर्जनी अंगुली के मध्य का अन्तर यदि विस्तृत हो तो व्यक्ति उदार स्वभाव विशाल-हृदय, स्वतन्त्र विचार वाला, दयालु, अनुभवी, चतुर, निर्भीक, बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी तथा स्थिर-मतिवाला होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति सहिष्णु की उत्तम श्रेणी का होता है और वह जीवन-पर्यन्त अपने कर्त्तव्य के प्रति सावधान अथवा जागरूक रहता है।

तर्जनी और मध्यमा के मध्य का अन्तर जितना अधिक होगा, व्यक्ति उतना ही अधिक स्वतन्त्र विचार वाला होगा तथा वह सदैव अपनी इच्छा अथवा निर्णय के अनुकूल काम करने वाला होगा। कभी भी, किसी भी अवस्था मे ऐसा व्यक्ति दूसरों के पीछे चलने वाला नहीं होगा।

मध्यमा और अनामिका के मध्य का अन्तर जितना अधिक होगा व्यक्ति उतना ही पवित्र विचारों वाला, स्थिर मनोवृत्ति वाला तथा दृढ़ स्वभाव वाला होगा। वह प्रत्येक काम शान्ति पूर्वक, स्थिर चित्त होकर सावधानी के साथ करेगा। ऐसा व्यक्ति धैर्य-शाली और धर्म भीरू होता है।

अनामिका और कनिष्ठका के मध्य का अन्तर जितना अधिक होगा व्यक्ति उतना ही अधिक स्वतन्त्र होकर काम करने वाला होगा। वह अपने सहयोगियों से परामर्श तो अवश्य लेगा, किन्तु कार्य-प्रणाली का निश्चय सर्वथा अपने निर्णय के अनुसार ही रखेगा। इस सम्बन्ध में वह किसी की भी सम्मति को नहीं मानेगा। इस प्रकार का व्यक्ति सदैव नेतृत्व की भावना से पूर्ण रहता है।

अंगुलियों के पृष्ट भाग पर बाल

जिस व्यक्ति की अंगुलियों के पृष्ठ भाग पर दोनों पर्वों पर घने बाल होने हैं वे उग्र-स्वभाव, क्रूर कर्मा, क्रोधी, निर्दयी, दुष्ट और कुटिल होते हैं। यदि बाल दोनों पर्वों पर हों किन्तु न्यून मात्रा में हो तो बालों के परिमाण के अनुसार ही व्यक्ति के स्वभाव में उपरोक्त दुर्गुणों की न्यूनाधिकता पाई जाती है।

जिस व्यक्ति के मध्य पर्व के पृष्ठ भाग पर बाल हों वह अविचारी, अविवेकी, लम्पट, विश्वासघाती, धूर्त तथा नीच प्रकृति का होता है।

जिस व्यक्ति के केवल अधोपर्व के पृष्ट-भाग पर सूक्ष्म बाल होते हैं वह बुद्धिमान, दूरदर्शी, शक्ति-सम्पन्न, उदार तथा उत्तम विचारों वाला होता है।

जिस व्यक्ति की अंगुलियों के पृष्ट भाग पर बिल्कुल भी बाल नहीं होते वह कायर, पुरुपार्थ-विहीन और प्रायः नपुंसक होते हैं। वे अपने जीवन में सदैव भटकते ही रहते हैं।

अंगुलियों के पर्व

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं प्रत्येक अंगुली में तीन पर्व होते हैं। सामुद्रिक-विज्ञान की भापा मे उन्हें युग कहते हैं और जन साधारण की भापा में पोरू, पोर या पोरवा भी कहते हैं। अंगुलियों के इन पर्वों की आकृति, स्वरूप, गठन तथा बनावट का मानव-जीवन पर प्रबल प्रभाव होता है। अंगुलियों के इन तीनों पर्वों का भिन्न-भिन्न प्रभाव होता है। इनके आसपास तथा
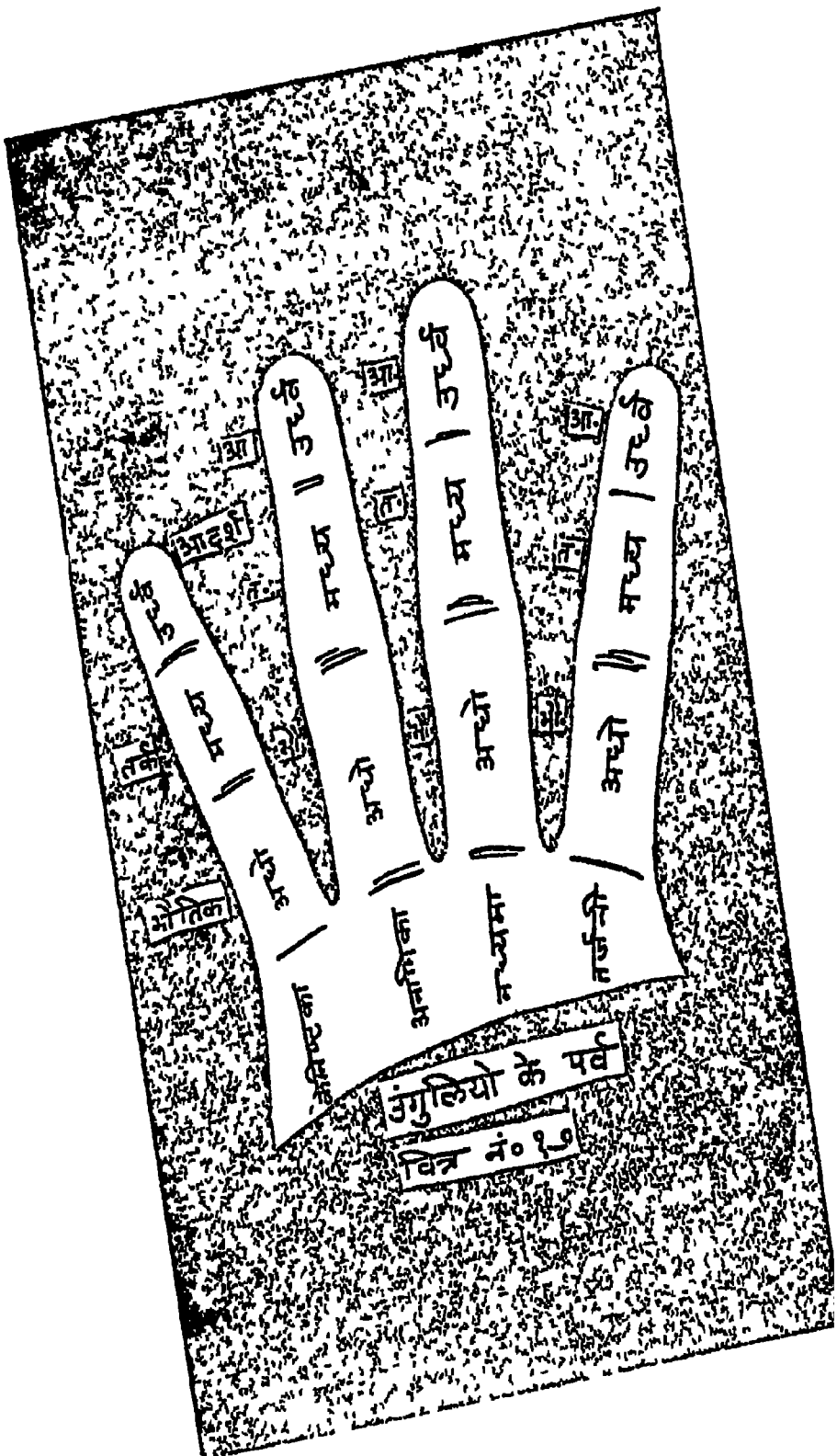
अंगुलियो के पर्व
चित्र नं० १७

इन पर खड़ी रेखाओं का रहना शुभ-फल-प्रद होता है। अंगुलियों के ये पर्व क्रमशः मानव-जीवन की तीन विशिष्ट एवं प्रभाव-शाली भावनाओं किवा मानसिक क्रियाओं के केन्द्र हैं।

ऊर्ध्व-पर्व	आदर्श-भावना	आध्यात्मिक विचार, धार्मिक-भावना, बौद्धिक ज्ञान, विद्या, कला-कौशल
मध्य-पर्व	तर्क-भावना	विचार-शक्ति, दूरदर्शिता, निर्णायक-बुद्धि, तर्क-योग्यता, विश्लेषण-शक्ति
अधो-पर्व	भौतिक-भावना	लौकिक-व्यवहार, कार्य-क्षमता,

अंगुलियों के पर्वों के सात भेद

आकार-प्रकार आकृति, गठन, बनावट तथा स्वरूप आदि के भेद से पर्वों को सात प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है। पर्वों के ये सात भेद निम्नलिखित हैं।

१—मोटा (Thick), २—पतला (Thin), ३—लम्बा (Long), ४—छोटा (Short), ५—मध्यम (Medium), ६—साधारण (Ordinary), ७—गठीला (Knotted),

ऊर्ध्व पर्व यदि लम्बा और पुष्ट हो तो व्यक्ति आदर्शवादी, आध्यात्मिक, ज्ञान-सम्पन्न, धर्म-भीरु, महत्त्वाकांक्षी, उच्चाभिलाषी तथा ईश्वरीय संकेतों पर चलने वाला होता है। यह व्यक्ति प्रायः प्रत्येक काम में सफल होता है। यदि यह पर्व नुकीला भी हो तो वह व्यक्ति कला-कौशल में विशेष रुचि वाला होगा।

मध्य पर्व लम्बा और पुष्ट हो तो व्यक्ति विचारशील और अनुभवी होता है। मध्य पर्व विशेषतः बुद्धि से सम्बन्धित होता

है अतः इस पर्व के आकार के अनुसार ही मनुष्य में बुद्धि और विचार पाये जाते हैं। यदि इस पर्व पर खड़ी रेखायें हों तो व्यक्ति निर्णय करने मे शीघ्रता करता है और वह अत्यन्त दूरदर्शी होगा। उसकी बुद्धि कुशाग्र होगी। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक कार्य आरम्भ करने से पूर्व उसके सम्बन्ध में गम्भीरता से गूढ़ विचार करताहै, किन्तु किसी भी बात के निर्णय में वह विलम्ब नहीं करता। वह दृढ़-निश्चयी होता है तथा विश्वासपात्र होता है।

अधो पर्व का सम्बन्ध भौतिक विषयों से होता है यदि यह पर्व लम्बा और पुष्ट होता है तो व्यक्ति चतुर, व्यवहार-कुशल नीतिज्ञ, तथा लौकिक कार्यों में दक्ष होता है। इस प्रकार का व्यक्ति धोखा विरला ही खाता है। इस व्यक्ति की कार्य क्षमता के बल पर यह प्रत्येक सम्बन्धित व्यक्ति को अपने प्रति आकर्षित कर लेता है। इसे कपट का व्यवहार स्वप्न मे भी रुचिकर नही होता। यह व्यक्ति उत्तम वस्त्राभूषण, षडरस व्यञ्जन तथा ऐश्वर्य का विशेष प्रेमी होता है। विलास-प्रिय भी होता है।

ऊर्ध्व पर्व यदि मोटा होता है तो व्यक्ति आदर्शवादी होता है दुश्चरित्रता का उसमें सर्वथा अभाव रहता है। प्रत्येक कार्य में निपुणता तथा अभिलाषा पूर्ति उसके विशेष गुण होते हैं।

मध्य पर्व यदि मोटा होता है तो व्यक्ति विचारशील होता है तथा प्रत्येक कार्य में अनुभव पर अधिक भरोसा करता है। प्रत्येक कार्य मे सफलता प्राप्त करने के लिए यह व्यक्ति लगन के साथ प्रयत्नशील रहता है।

ऊर्ध्व पर्व यदि मोटा होता है तो व्यक्ति भौतिक पदार्थों में उन्नति के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील रहता है। विलास प्रियता इसका विशेष गुण है। यह व्यक्ति कुमारी कन्याओं (अविवाहित लड़कियों) को भ्रष्ट करने की ओर अधिक प्रयत्न शील रहता है, किन्तु इस कार्य में उसे सफलता अपेक्षाकृत बहुत ही कम प्राप्त होती है।

चरित्र के सम्बन्ध में ऐसे व्यक्ति निकृष्टतम श्रेणी के होते हैं। अवसर प्राप्त होने पर दुश्चरित्रता के हीनतम कार्य करने से यह नहीं चूकते। पशु-मैथुन तक से ऐसे व्यक्ति पीछे नहीं हटते। संक्षेप में इस प्रकार के व्यक्ति कामान्ध होते हैं तथा प्रायः अपनी जीवन में अनेकों बार कारावास का दण्ड भोगते हैं।

इसके विपरीत यदि अधोपर्व छोटा और मूल भाग से पतला हो तो व्यक्ति टीम-टाम की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता और उपरोक्त गुणावगुणों का उसमें सर्वथा अभाव होता है। इस प्रकार के व्यक्ति खान-पान तथा रहन-सहन में भी अत्यन्त साधारण प्रकार के होते हैं।

अंगुलियों में राशियों के स्थान

अंगुलियों में राशियों के स्थान में पूर्व तथा पश्चिम के सामुद्रिक-शास्त्र-वेत्ताओं में मतभेद है। हमारे ऋषियों तथा आचार्यों के मतानुसार मनुष्य के हाथ की अंगुलियों में राशियों का निवास इस प्रकार है—

राशि-स्थिति-सम्बन्धी पौर्वात्य-मत

मेष	कनिष्टका	तृतीय पर्व	तुला	मध्यमा	तृतीय पर्व
वृषभ	„	द्वितीय पर्व	वृश्चिक	„	द्वितीय पर्व
मिथुन	„	प्रथम पर्व	धन	„	प्रथम पर्व
कर्क	अनामिका	तृतीय पर्व	मकर	तर्जनी	तृतीय पर्व
सिंह	„	द्वितीय पर्व	कुम्भ	„	द्वितीय पर्व
कन्या	„	प्रथम पर्व	मीन	„	प्रथम पर्व

राशि स्थिति सम्बन्धी पाश्चात् मत

जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं पाश्चात् सामुद्रिक शास्त्र वेत्ताओं का इस सम्बन्ध मे भिन्न मत है। पाठकों की ज्ञान-वृद्धि तथा सुविधा के हेतु हम उसे निम्न पंक्तियों में अंकित करते है—

मेष	तर्जनी	प्रथम पर्व	तुला	कनिष्टका	प्रथम पर्व
वृषभ	„	द्वितीय पर्व	वृश्चिक	„	द्वितीय पर्व
मिथुन	„	तृतीय पर्व	धन	„	तृतीय पर्व
कर्क	अनामिका	प्रथम पर्व	मकर	मध्यमा	प्रथम पर्व
सिंह	„	द्वितीय पर्व	कुम्भ	„	द्वितीय पर्व
कन्या	„	तृतीय पर्व	मीन	„	तृतीय पर्व

उपरोक्त मानचित्रों को ध्यान मे देखने पर पता चलता है कि राशि-विषयक मान्यताओं मे परस्पर प्रबल मत भेद होते हुये भी एक स्थान पर साम्यता भी मिलती है। यह स्थान सिंह राशि का है। पूर्व और पाश्चात्य दोनों मतों से सिंह राशि का स्थान अनामिका के द्वितीय पर्व मे ही है। शेष सब भिन्न हैं।

अंगुलियों में मास-स्थिति

पाश्चात्य सामुद्रिक-विज्ञान-वेताओं ने मनुष्य के हाथ की अंगुलियों में मासों (Months) का निवास भी निश्चित किया है । प्रत्येक पर्व में एक मास का स्थान निर्धारित किया गया है । मासों का यह स्थान वितरण निम्न प्रकार है ।

जनवरी	मध्यमा	मध्य पर्व	जोलाई	अनामिका	मध्य पर्व
फरवरी	"	अधो पर्व	अगस्त	"	अधो पर्व
मार्च	तर्जनी	उर्ध्व पर्व	सितम्बर	कनिष्ठका	उर्ध्व पर्व
अप्रेल	"	मध्य पर्व	अक्टूबर	"	मध्य पर्व
मई	"	अधो पर्व	नवम्बर	"	अधो पर्व
जून	अनामिका	उर्ध्व पर्व	दिसम्बर	मध्यमा	उर्ध्व पर्व

अंगुलियों में देव तथा तीर्थ स्थान

अंगुलियों की सहायता से ही लौकिक-जीवन के प्रत्येक कार्य सुविधा पूर्वक सम्पन्न होते हैं । अतः इनमें देवताओं और तीर्थों का स्थान भी निर्धारित किया गया गया है । इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है ।

अंगुष्ठ और कनिष्ठका के मूल भाग में ब्रह्म तीर्थ है । अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य भाग में पितृ तीर्थ है सभी अंगुलियों के मूल भाग में देव तीर्थ है । तर्जनी के मूल और अग्र भाग में शत्रुञ्जय तीर्थ है अनामिका के मूल और अग्र भाग में अर्बुद तीर्थ है कनिष्ठका के मूल भाग से मणिबन्ध के बाहरी भाग तक ऋषि तीर्थ है ।

अंगुष्ठ के उर्ध्व भाग पर अष्टापद नामक पर्वत माना गया है ।

षष्ठम परिच्छेद

नखों का परिचय

हस्त-परीक्षा के आधार पर मनुष्य की शारीरिक शक्तियों, मानसिक क्रियाओं, स्वास्थ्य, स्वभाव, मनोवृत्ति, पैतृक रोग तथा भावी जीवन की शुभाशुभ घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करने में जितनी सरलता और सहायता नखों से प्राप्त होती है उतनी हाथ के किसी अन्य भाग से प्राप्त नहीं होती। नखों के इस महत्व का केवल ज्योतिष शास्त्र के सामुद्रिक किंवा हस्त-परीक्षा के आचार्यों ने ही स्वीकार किया हो ऐसी बात नहीं है; नखों का महत्त्व और उसका मानव-जीवन से अभिन्न तथा रहस्यमय सम्बंध चिकित्सा शास्त्रियों ने भी डंके की चोट स्वीकार किया है यहां तक कि आधुनिक एलोपैथिक डाक्टर तक रोगी के नखों को देखकर अपने निदान की पुष्टि करते हैं। क्योंकि मानव-शरीर के अन्तरतम तथा गूढ़ तम रोगों के लक्षण भी नखों पर स्पष्ट दृष्टि-गोचर हो जाते हैं। इस प्रकार मानव-जीवन में नख अपना विशिष्ठ-स्थान रखते हैं, यह निर्विवाद है।

नखों की सुचारु परीक्षा से जहां मनुष्य के स्वास्थ्य, स्वभाव तथा मानसिक क्रियाओं पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है, वहां मानव-शरीर की उन दुर्बलताओं का भी स्पष्ट ज्ञान हो जाता है जो मानव

जन्म से ही अपने साथ लाता है और जिहें पैतृक संज्ञा दी जाती है तथा जो समय पाकर उसके शरीर में कोई भयंकर व्याधि की जननी हो जाया करती हैं। इसके अतिरिक्त नखों के द्वारा मानव-जीवन का अध्ययन; तत्सम्बन्धी घटनाओं का ज्ञान तथ शुभाशुभ परिणाम भी अनायास ही ज्ञात हो जाता है। नखों के मानव-जीवन सम्बन्धी महत्व पर यदि पूर्ण प्रकाश डाला जाय तो एक विशाल ग्रन्थ लिखने की आवश्यकता होगी, किन्तु स्थानाभाव के कारण हम यहाँ इनका संक्षिप्त परिचय तथा लक्षण और उनके शुभाशुभ परिणामों का ही वर्णन करेंगे।

नखों के भेद

आकार-प्रकार, गठन, स्वरूप, आकृति तथा बनावट के भेद से नख प्रायः चार प्रमुख भागों में विभक्त है—

१—लम्बे (Long), २—छोटे (Short)

३—चौड़े (Broad), ४—पतले अथवा तंग (Narrow)

नखों का उचित परिमाण

पौर्वात्य विशेषज्ञों के मतानुसार नखों का उचित परिमाण 'पर्वार्द्धमित' वर्णित है। अर्थात् जो नख उर्ध्व पर्व से आधा होता है, वह अपने उचित परिमाण में होता है। शेष छोटा या बड़ा होता है।

लम्बे नखों (Long Nails) का स्वास्थ पर प्रभाव

लम्बे नखों वाला व्यक्ति विरला ही शारीरिक शक्ति में प्रबल होगा। ऐसे व्यक्ति का हृदय (Chest) और फेफड़े निर्बल

चित्र न० १६ नख भेद
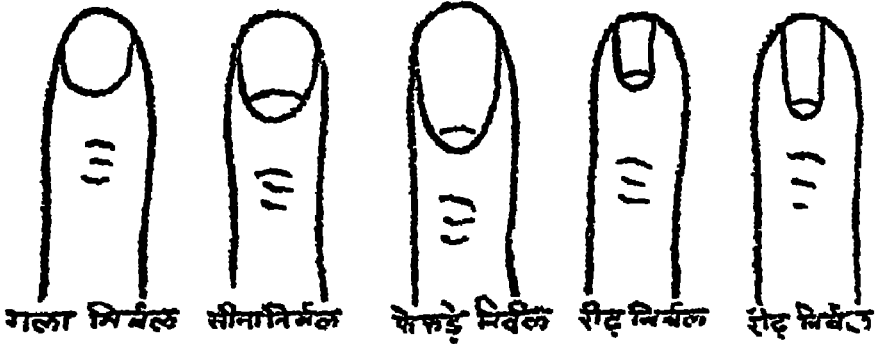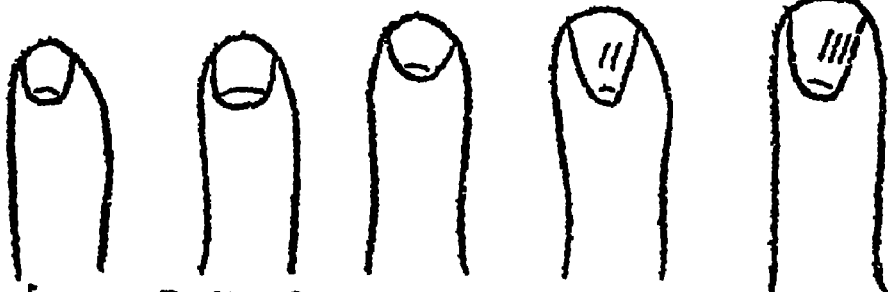
होते हैं और तपेदिक या सिलदिक प्रभृति घातक रोगों से ग्रस्त होता है। इस प्रकार के नख यदि सिरे से नीचे अंगुली की ओर तथा एक कोर से दूसरी कोर तक अधिक मुड़ा हुआ हो तो उपरोक्त निर्बलता तथा व्याधि का प्रभाव उतना ही अधिक समझना चाहिये।

यदि नख अधिक लम्बे हों और उनके बीच में रेखायें हों तो व्यक्ति अधिक निर्बल तथा कोमल (नाजुक) होता है इस प्रकार के नखों वाला व्यक्ति स्वयं चाहे हृदय तथा फेफड़े के रोगों से ग्रस्त न हो, किन्तु सूक्ष्म परीक्षा से स्पष्ट हो जायगा कि इसके परिवार में यह रोग किसी न किसी रूप में

अपना प्रभाव अवश्य रखता रहा है। अत: उन कुल के व्यक्ति चाहे कितने ही हृष्ट-पुष्ट क्यों न प्रतीत हों उन्हें न्यूमोनिया (Pneumonia) तथा शीत से सदैव सावधान रहना चाहिये।

छोटे और चौड़े नख वाला व्यक्ति प्रायः गले के रोगों से ग्रसित रहता है। गले का सूज आना, दमा, शीत, खांसी तथा गले के दूसरे रोग इस प्रकार के व्यक्ति को सदैव दवाते रहते हैं।

जिस व्यक्ति के नख लम्बे हों, किन्तु सिरे पर चौड़े तथा उद्गम-स्थान पर नीलिमा लिये हुये अथवा नीले हों, उसके शरीर में रक्त-प्रवाह व्यवस्थित रूप में नहीं होता तथा हृदय की गति निर्बल होती है।

नख लम्बे हों अथवा छोटे यदि उनके उद्गम स्थान पर अर्द्ध-चन्द्र (⌒) का चिह्न न हो तो हृदय की निर्बलता को प्रगट करते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति की अनायास ही हृदय की गति बन्द हो जाने से अकाल-मृत्यु की सम्भावना रहती है।

नख के अर्द्ध-चन्द्र (⌒) बहुत बड़े हों अर्थात् उनका आकार आवश्यक परिमाण से अधिक हो, तो हृदय की गति तथा रक्त-प्रवाह उसी परिमाण में अधिक तीव्र होगा। इस प्रकार के लक्षण वाले व्यक्ति को स्वप्न में भी अत्यधिक उत्तेजित नहीं होना चाहिये तथा ऐसे आचार-विचार, कार्य-कलाप तथा खान-पान से सर्वदा दूर रहना चाहिये जिसके द्वारा रक्त-प्रवाह में उत्तेजना उत्पन्न हो। यदि इस सम्बन्ध में सावधान तथा

सतर्क नहीं रहा गया और उत्तेजना-वृद्धि के कारण रक्त-प्रवाह अधिक तीव्र हो गया तो निम्नांकित दो उपद्रव मानव-शरीर में उपस्थित हो जाते हैं।

१—रक्त-प्रवाह के अधिक तीव्र हो जाने के फल-स्वरूप रक्त-प्रवाह अत्यधिक तीव्र-गति से मस्तिष्क की ओर प्रसारित होता है। फलतः धमनियों पर आवश्यकता से अधिक दबाव पड़ता है और हृदय की चपनियों (Valves) के फट जाने की पूर्ण सम्भावना रहती है।

२—रक्त-प्रवाह के अत्यधिक तीव्र-गति से मस्तिष्क की ओर प्रसारित होने के फलस्वरूप मूर्छा, मृगी, अर्द्धांङ्ग, पक्षाघात, तथा वायु- रोगों का आक्रमण हो जाता है।

इस प्रकार के लक्षण वाले व्यक्ति को भांग, चरस, गांजा, शराब, अफीम आदि नशीली वस्तुओं तथा उत्तेजक पदार्थों का सेवन भूलकर भी नहीं करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में हस्त विज्ञान-वेत्ताओं ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि किस दशा में उपरोक्त घातक उपद्रवों में से किस उपद्रव का आक्रमण अधिक सम्भावित है। इसका विश्लेषण निम्न प्रकार से होता है।

१—यदि मस्तक रेखा (*Line of Head*) मंगल के क्षेत्र में होकर जाती है तो उसका प्रभाव मस्तक पर हानिकारक ही होता है। फलतः रक्त-प्रवाह के अधिक तीव्र गति से मस्तिष्क की ओर प्रसारित होने तथा उसके परिणाम स्वरूप मूर्छा, मृगी,

अर्द्धांङ्ग, पक्षाघात तथा वायु-रोगों के आक्रमण की सम्भावना अधिक रहती है। यदि मस्तक रेखा पर द्वीप चिह्न (-o-) भी हो तो यह अपना कु-प्रभाव अवश्यमेव घटित करती है।

२—यदि स्वास्थ्य-रेखा (Line of Health) अत्यधिक स्पष्ट होकर हृदय-रेखा (Line of Health) से चलकर जीवन-रेखा (Line of Life) में जाकर प्रवेश करती हो तो इसका सीधा प्रभाव हृदय पर होगा। फलतः हृदय पर आपत्ति की अत्यधिक सम्भावना होगी और यदि उचित एवं आवश्यक सावधानी तथा सतर्कता की उपेक्षा की गई तो धमनियों से सम्बन्धित हृदय रोगों Valvular Heart Diseases) के आक्रमण की पूर्ण सम्भावना रहती है।

लम्बे नाखून वाले व्यक्तियों के शरीर में प्रायः ऐसे रोगों का आक्रमण अधिक होता है जिनका प्रभाव शरीर के आधे भाग पर ही होता है संक्षेप में ऐसे व्यक्ति अर्द्धांङ्ग-रोगों किंवा विकारों से अधिक ग्रस्त पाये जाते हैं। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति के गले के रोग, खांसी, जुकाम, न्यूमोनिया आदि का आक्रमण भी अधिक होता है। दैवयोग से यदि लम्बे नख ऊर्ध्व भाग में चौड़े भी हों तो फेफड़ों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। ऐसे व्यक्ति यदि सावधान न रहें तो उनके फेफड़े गल जाते हैं और फेफड़ों के रोग (Tuber culosis), क्षयरोग (Pthisis) प्रभृति प्राण-घातक रोगों से वह ग्रस्त हो जाता है। नखों में अर्द्ध चन्द्र (⌒) का अभाव होने पर हृदय की गति से सम्बन्धित रोगों की विशेषता रहती है। यहाँ तक कि हृदय की गति से सम्बन्धित रोगों

की विशेषता रहती है। यहां तक कि हृदय की गति के अचानक ही सर्वथा बन्द हो जाने का भी पूरा-पूरा भय रहता है।

जिस व्यक्ति के नख लम्बे किन्तु तग अर्थात् पतले (Long and narrow Nails) हों तो उसकी रीढ़ की हड्डी निर्बल होती है। यदि दैवयोग से इस प्रकार के नख मुड़े हुए (Curved) तथा अधिक पतले हों तो रीढ़ की हड्डी में झुकाव होने की सूचना देते हैं। इस प्रकार का व्यक्ति नाजुक और कायर होता है।

जिस व्यक्ति के नख लम्बे और पतले होते हैं उसकी कमर निर्बल होती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति अधिकांशतः शरीर के ऊर्ध्व भाग के रोगों के आखेट होते हैं जैसे फेफड़े, छाती, गले तथा मस्तक रोग।

छोटे नखों का (Short Nails) स्वास्थ्य पर प्रभाव

जिस परिवार में हृदय की गति मन्द तथा रक्त-प्रवाह अव्यवस्थित रूप में होता है, उस परिवार के प्रायः सभी सदस्यों के नख पतले होते हैं और उनमें अर्द्ध चन्द्र (⌒) नहीं होते।

छोटे नखों की निकृष्टतम श्रेणी वह है जिसमें नख पतले होते हैं और उनका अधोभाग चपटा होता है तथा उसमें अर्द्धचन्द्र चिराग लेकर ढूंढने पर भी नहीं मिलता।

छोटे नख यदि बहुत ही चपटे तथा मांस में धंसे हुए हों तो मनुष्य पुंसत्वहीन, सुनवरी, फलवहरी, लकवा आदि रोगों में ग्रसित रहता है।

छोटे नख यदि अत्यधिक चपटे तथा सीपाकार के हों तथा उनके छोर उठे हुए अथवा मुड़े हुए हों तो हीन चेतना लकवा तथा

पौरुष सम्बन्धी रोगों के निश्चित लक्षण होते हैं। यदि दैवयोग से इस प्रकार के नखों का आधार (अधो भाग Base) नीला अथवा नीलिमा-युक्त हो तो उपरोक्त रोगों का होना अवश्यम्भावी है।

जिन मनुष्यों के नख छोटे होते हैं उनको हृदय रोग साधारण सी व्याधि है। ऐसे व्यक्ति प्रायः कमर तथा शरीर के अधोभाग पर होने वाले रोगों के सदैव आखेट होते रहते हैं।

चपटे नखों (Flat Nails) का स्वास्थ्य पर प्रभाव

जिस व्यक्ति के नख चपटे (चित्र संख्या १६) होते हैं वह प्रायः पेट और पसली के रोगों का रोगी बना रहता है। ऐसे व्यक्ति को स्नायु सम्बन्धी रोग भी अधिक होते हैं।

नख यदि बहुत चपटे हों और बाहर के सिरे की ओर मांस में उभरे हुए प्रतीत हों तो यह फालिज रोग का भय सूचित करते हैं। यदि यह लक्षण विशेषता लिए हुए हों और नख छिलके की आकृति का तथा उद्गम (Base) स्थान पर नुकीला हो और अर्द्ध चन्द्र (⌒) का सर्वथा अभाव तथा उस पर सफेद या नीले रङ्ग के चिह्न भी न हों तो रोग अत्यधिक उग्र रूपमें होता है।

विशेष ज्ञातव्य

नख को पूरा उगने में नौ मास का समय लगता है। इस आधार पर नखों द्वारा रोगों के सम्बन्ध में समय का ज्ञान सरलता से हो जाता है। नखों पर की गहरी रेखा यदि नख के आर-

पार हो तो रोग सम्बन्धी समय का ज्ञान निम्न प्रकार से करना उचित है—

१—यदि उपरोक्त रेखा नख के किनारों के पास हो तो रोग नौ मास पूर्व आरम्भ हुआ समझना चाहिए।

२—यदि उपरोक्त रेखा नख के मध्य भाग में हो, तो रोग पाँच मास पूर्व आरम्भ हुआ समझना चाहिए।

३—यदि उपरोक्त रेखा नख के मूल भाग में हो, तो रोग का आरम्भ हुआ समझना चाहिए।

यदि नख पर सफेद दाग हों तो स्नायविक दुर्बलता का द्योतक है। यदि यह लक्षण पतले और अस्पष्ट रेखाओं वाले हाथ में हों तो स्वाभाविक दुर्बलता का पूर्व रूप समझना चाहिए।

नखों का स्वभाव पर प्रभाव

लम्बे नखों का प्रभाव

जहां तक स्वभाव का सम्बन्ध है लम्बे नखों (चित्र संख्या १६) वाले व्यक्ति छोटे नखों वाले व्यक्तियों की अपेक्षा कम विलक्षण होते हैं। वे स्वभाव में अधिक कोमल और शान्त होते हैं। साधारणतः लम्बे नख वाले व्यक्ति प्रत्येक विषय को अधिक सरलता से ग्रहण कर लेते हैं। किन्तु वे अपेक्षाकृत कल्पना-लोक में विशेष रूप से रहते हैं और जिन विषयों को अपने स्वभाव के विपरीत पाते हैं उनके सम्बन्ध में संशयी भी होते हैं।

लम्बे और श्वेत नख वाला व्यक्ति बुद्धिमान, दूरदर्शी, विचारशील, स्थिर स्वभाव वाला तथा नीतिज्ञ होता है।

लम्बे और मुड़े हुए नख यदि पीले रंग के हों तो मनुष्य स्वभाव से कठोर और निर्दयी होता है। देखने में ऐसा व्यक्ति चाहे हँस मुख हो, किन्तु सुशीलता और सहानुभूति तो उसे छू तक नहीं जाती। इस लक्षण वाले नर-नारी—दोनों ही निर्मम और नृशंस होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति प्रायः शिकारी, चिड़ीमार व्याध, मछुये प्रभृति व्यवसाय करने वाले होते हैं।

छोटे नखों का प्रभाव

छोटे नखों (चित्र संख्या १६) वाले व्यक्ति स्वभावतः ही अति विलक्षण होते हैं। स्वयं अपने से सम्बन्धित विषयों के सम्बन्ध में भी वे अत्यधिक संशयी मनोवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति विचार, धारणा, तथा क्रिया—सभी का पूर्ण रूपेण विश्लेषण करते हैं और तर्क तथा प्रमाण पर विशेष रूप से विश्वास करते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति लम्बे नखों वाले व्यक्तियों से अधिक व्यवहारिक होते हैं।

प्रायः देखा जाता है कि बहुत से व्यक्ति अपने हाथों के नख दांतों से काटते रहते हैं। उनके इस प्रकार नखों को काटने से नख साधारण छोटे हो जाते हैं। इस प्रकार के छोटे नखों वाले व्यक्ति स्वभावतः ही कायर और उत्साह हीन प्रकृति के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की स्नायविक शक्ति अपेक्षा कृत निर्बल और निकम्मी होती है।

छोटे नखों वाले व्यक्ति अस्थिर विचार तथा चंचल मनोवृत्ति के होते हैं। दूसरों को चिढ़ाने तथा उनकी हंसी उड़ाने में इस

प्रकारके मनुष्योंको विशेष आनन्द आता है। अर्थहीन वाद-विवाद तथा बकवास भी बहुत करते हैं। प्रायः स्त्री से बहुत प्यार करते हैं और बन्धु-बान्धव, परिजन, सम्बन्धियों से मेल-जोल रखते हैं।

छोटे और लाल रंग वाले व्यक्ति तामसी और चिड़चिड़े स्वभाव वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति उग्र भी होते हैं।

छोटे नख यदि चौड़े हों और उनका अधो भाग दबा हुआ व चौड़ा हो तो व्यक्ति झगड़ालू, चिड़चिड़ा, ऐश्वर्योपभोग की लालसा रखने वाले, अपनी और आस-पास की बातों को अपने वश में रखने वाले, नियमानुसार चलने वाले व्यवहार कुशल, तथा बर्ताव में सावधान रहने वाले होते हैं।

उपरोक्त प्रकार के नखों के साथ ही यदि मंगल का क्षेत्र उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति अवश्यमेव झगड़ालू होता है और प्राय: अपनी ओर से ही झगड़ा आरम्भ करने वाला होता है।

छोटे और गोल नख वाला व्यक्ति छिद्रान्वेषी तथा चिड़चिड़ा होता है। यह व्यक्ति तामसी नहीं होता।

छोटे नख वाले व्यक्ति की अंगुलियाँ यदि चौड़ी हों और अंगुष्ठ छोटा हो तो उसके निवास-स्थान में विविध प्रकार की वस्तुओं का संग्रह होता है। किन्तु वह व्यक्ति उनको सदैव इधर से उधर स्थानान्तरित करता रहता है।

दैवयोग से उपरोक्त लक्षण नारी में हों तो वह कर्कशा होती है। इन लक्षण के साथ ही साथ यदि हृदय-रेखा छोटी हो, मस्तक

रेखा सरल और कनिष्ठका अंगुली की ओर झुकी हुई हो, बुध के क्षेत्र में गड्ढा हो और वह रेखाओं से आच्छादित हो, मंगल और चन्द्र के पर्वत उन्नत हों, अंगुलियों के पर्व सुस्पष्ट हों तो वह नारी पुरुष स्वभाव की होती है और वह वीराङ्गना होकर कीर्ति प्राप्त करती है।

नख यदि छोटे हों किन्तु चौड़े न हों तो व्यक्ति बुद्धिमान, कुशाग्र बुद्धि तथा चंचल स्वभाव वाला होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति प्रत्येक विषय को तुरन्त ही समझने वाला होता है। तथा प्रत्येक विषय में उत्तम टीका-टिप्पणी करने की शक्ति से सम्पन्न श्रेष्ठ लेखक किंवा पत्रकार होता है।

अतीव कोमल हाथ के नख यदि छोटे हों किन्तु चौड़े न हों तो बड़प्पन का सूचक है। इस लक्षण वाला व्यक्ति विरोधाभास तथा हास्यरस के विषयों का विश्लेषण करने में अधिक सफल होता है।

छोटे, गोल और अधिक श्वेत रंग वाले नख वाला व्यक्ति क्रोधी होता है।

कनिष्ठका अंगुली का नख छोटा हो तो व्यक्ति ठिठोलीबाज होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की विचित्रताओं तथा स्वभाव का अध्ययन शीघ्रता से कर लेता है।

छोटे और फीके नखों वाला व्यक्ति लुच्चा लफंगा और बद-माश होता है।

चौड़े नखों का प्रभाव

नख यदि लम्बाई से अधिक चौड़े (चित्र संख्या १६) हों तो वह व्यक्ति झगड़ालू स्वभाव का होता है। इस प्रकार का व्यक्ति वाद-विवाद, विरोध आदि अधिक पसन्द करता है। ऐसा व्यक्ति वाद विवाद के समय किसी पक्ष को ग्रहण कर लेता है। ऐसे व्यक्ति को सन्तुष्ट करना अत्यधिक कठिन होता है।

पतले नखों का प्रभाव

पतले नखों (चित्र संख्या १६) वाले व्यक्ति का हृदय तथा मस्तिष्क कभी-भी अपनी स्वभाव स्थिति में नहीं रहता। इस प्रकार का व्यक्ति सदैव दुःखी रहता है और प्रायः गले के रोगों में फंसा रहता है।

चपटे नखों का प्रभाव

जिस व्यक्ति के नख बहुत चपटे (चित्र संख्या १६) हों तथा धंसे हुए हों तो उसे स्नायविक रोगों का सदैव ही आखेट बना रहना पड़ता है। चपटे नख यदि फटे हुये हों तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

भूसी के समान नख का प्रभाव

नखों का आकार यदि भूसी के समान (चित्र संख्या १६) अर्थात् लम्बा और छोटा हो तो व्यक्ति नपुंसक होता है।

विविधि प्रकार के नखों का प्रभाव

जिस व्यक्ति के नख कुत्सित तथा विवर्ण हों वह खोटी

दृष्टि से देखने वाला होता है। इस प्रकार के व्यक्ति का मन सदैव कलुषित रहता है और वह कभी भी विश्वास करने योग्य नहीं होता।

लाल या ताम्र वर्ण के नख वाला व्यक्ति धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न सम्मानित तथा सुखी होता है।

पीले नख वाला व्यक्ति विश्वासघाती होता है। इसका आत्मिक बल तथा शारीरिक बल कमजोर होता है।

छोटे और लाल नाखून वाला व्यक्ति उग्र स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक तामसी होता है।

छोटे, समकोण और नुकीले नख वाले व्यक्तियों को प्रायः हृदय रोग अधिक सताते हैं।

नख यदि चौड़ाई से अधिक लम्बे हों तो व्यक्ति स्वतन्त्र विचार और निश्चियात्मक बुद्धि वाला होता है। इसका स्वभाव कोमल, सुशील, सभ्यता युक्त तथा सरल होता है।

नख यदि अधिक चमकदार हों तो व्यक्ति की कल्पना शक्ति अधिक तीव्र होती है।

स्वच्छ और श्वेत रंग के नख तथा काले नख वाला व्यक्ति दुष्ट, क्रोधी, हठी, विश्वासघाती, तथा खेती के काम में चतुर होता है।

नखों की आकृति यदि लहर के समान (Fluted) हो तो स्नायु-मण्डल अधिक कोमल (नाजुक) होता है।

नख में उपरोक्त नहर नुमां खाड़ियां परस्पर विपरीत दशा की ओर जाती हों और उनके कारण नख टूटे-फूटे से प्रतीत होते हों तो वह भी कोमलता (नाजुकता) ही प्रकट करते हैं।

नखों का रंग श्वेत हो और वे सुपारी की आकृति के हों तो व्यक्ति को क्रोध तुरन्त नहीं आता और जब आ जाता है तो शीघ्र ही शान्त नहीं होता।

नारी के नख यदि श्वेत रंग के हों तो ढीठ, लम्पट, विश्वास घातिनी, धूर्त तथा चालाक होती है।

नखों की आकृति गोल हो तो व्यक्ति सुख भोगने के स्वभाव वाला होता है।

नखों के कठोर होने से लकवा, पक्षाघात, अर्द्धांग प्रभृति रोगों के आक्रमण की सम्भावना रहती है।

नखों पर श्वेत रंग के धब्बे हों तो व्यक्ति की पाचन-शक्ति में दोष होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः अजीर्ण, अपच आदि से पीड़ित रहता है और इसके प्रभाव से उसकी रक्त-शुद्धि दूषित हो जाती है।

नख यदि झुके हुये हों तो राज यक्ष्मा का भय रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति यदि सावधान नहीं रहता तो उसे निश्चय ही किसी घातक रोग का आखेट होना पड़ता है।

नख पर अर्द्ध-चन्द्र के समान छोटे छोटे धब्बे हों तो पक क्रिया में दोष होता है।

नखों का अधोभाग (Bas·) नेकीली हो तो व्यक्ति बात बात में रुष्ट होने वाला होता है और तनिक सी बात पर स्वयं को अपमानित मानने वाला होता है।

नख श्वेत बड़े तथा वर्गाकार हों तो व्यक्ति में प्रतिशोध की भावना प्रबल होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति सदैव अवसर की प्रतीक्षा में रहता है और अवसर मिलते ही प्रतिशोध लेने से नहीं चूकता।

नख खड़े हुए हों और बड़े हों तो वह उदासीन वृत्ति का होता है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति के स्वभाव मे वैराग्य, निराशा और चिड़चिड़ेपन का प्रभाव अधिक होता है। यदि अंगुलियों के अग्रभाग चौड़े हों और नख इस प्रकार के हों तो इन सब प्रभावों का होना अवश्यम्भावी होता है।

नख श्वेत हों, पतले हों, पानीदार हों, साफ हों सीधे हों तथा चपटे हों और उनमे गुलाबी रंग की झलक हो तो व्यक्ति मलान्तःकरण वाला, कार्य-कुशल, योग्य तथा स्वाभिमानी होता है।

नखों की आकृति विकृत हो, रंग बदरंग हो; मोटे और फूले हुये हों, प्रमाण विरुद्ध हों तथा बांके टेढ़े हों तो व्यक्ति सीमातीत कामुक तथा विषयान्ध होता है।

लम्बे और बाँकदार नख हों तो व्यक्ति क्रूर, निर्दयी और नीच मनोवृत्ति वाला होता है। मि० गाल के मतानुसार इस प्रकार का व्यक्ति पाशविक वृत्ति वाला, व्यभिचारी तथा दुष्ट लक्षणों से युक्त होता है।

मुकड़े हुये और ऊंचे चढ़े हुये (Curly) नख हों तो व्यक्ति आततायी डाकू और इसी प्रकार के कर्म करने वाला होता है।

नखों का पतला होना व्यक्ति के मिथ्या भाषी और लफंगेपन का सूचक है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः निर्बल प्रकृति तथा चंचल स्वभाव के होते हैं।

नख यदि अत्यधिक पतले हों तो व्यक्ति कोमल (नाजुक) होता है।

बांसुरी के समान गोल नख वाला व्यक्ति अधिकांशतः वात-व्याधि तथा चर्म रोगों का आखेट होता है।

नखों पर दांत के समान दाग होने से गत रोगों की सूचना प्राप्त होती है।

नखों पर पूर्ण चन्द्र के समान धब्बे हों तो रक्त संचालन-क्रिया में दोष प्रकट होता है।

जिस व्यक्ति के नखों पर श्वेत रंग के धब्बे हों वह प्रमाणिक होता है, किन्तु अपने कामों में लगनशील न होने के कारण प्रायः असफल रहता है तथा हानि ही उठाता है।

नख का रंग श्वेत हो और उस पर कोई दुष्ट चिह्न हो तो अकाल मृत्यु का भय रहता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः आकस्मिक मृत्यु के आखेट होते हैं।

नखों के आरम्भ में रहने वाला रक्ताभ रंग अन्य रंगों से मिश्रित हो तो व्यक्ति झगड़ालू होता है तथा उसकी मृत्यु प्रायः विषूचिका से होती है।

लाल रंग के सुकड़े हुये नखों वाला व्यक्ति दुष्ट स्वभाव वाला होता है और उसके स्वभाव के कारण ही उसके अड़ोस-पड़ोस वाले उससे असन्तुष्ट रहते हैं।

जिस व्यक्ति के नखों में श्यामता तथा पीलेपन का मिश्रण हो वह प्रायः रोगी रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति विश्वास-घाती भी होता है।

जिस व्यक्ति के नखों का रंग लाल हो और उन पर विविध प्रकार के चिह्न हों तो वह व्यक्ति अत्यअधिक दुष्ट होता है। इस प्रकार के लक्षण वाले व्यक्ति का संग स्वप्न मे भी नहीं करना चाहिये।

पुष्पित नख यदि सफेद अथवा काले तारे के समान बिन्दुओं से युक्त हों तो वह व्यक्ति व्यर्थ की आत्म-प्रशंसा करने वाला होता है। यदि ये चिह्न पूर्ण रूपेण तारे के आकार के हों तो उस व्यक्ति की मनोवृति वर्णनातीत होती है।

अंगुष्ठ के नख पर यदि श्वेत और तेज युक्त बिन्दु हों तो परावलम्बता के सूचक हैं। यदि इन बिन्दुओं में से फव्वारे के समान किरणें फूट रही हों तो अगम्यागामित्व के लक्षण समझना चाहिये। यदि ये बिन्दु श्वेत न होकर काले हों तो वह व्यक्ति विषयान्धता के कारण अपराध करने का अभ्यस्त होता है और कभी-कभी तो इस सम्बन्ध में वह इतना बढ़ जाता है कि भीषण अपराध तक कर बैठता है।

कनिष्ठका पर के नख पर यदि काले बिन्दु हों तो लाभकारी होते हैं और यदि काले बिन्दु हों तो हानि कारक होते हैं।

अनामिका के नख पर श्वेत बिन्दु होने से व्यक्ति की श्रद्धा शास्त्रों मे होती है तथा वह व्यापार में लाभ उठाता है। यदि काले बिन्दु हो तो हानिप्रद होते हैं।

मध्यमा के नख पर श्वेत बिन्दु हों तो व्यक्ति जल-पर्यटन करता है। यदि ये बिन्दु कुछ पीलापन लिये हुए हों और कुछ ऊंचे उठे से देख पड़ते हों तो चिन्ता के द्योतक हैं तथा भाई और स्त्री की हानि दिखाते हैं और ये ही यदि काले हों तो भावी संकटों की सूचना देते हैं।

तर्जनीके नख पर श्वेत बिन्दु हों तो व्यक्ति को ऐश्वर्य कीर्ति, सम्मान तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं। इसके विपरीत यदि ये काले हों तो अपकीर्ति, अपमान, दारिद्र्य आदि के सूचक हैं तथा व्यक्ति के हाथ से नीच कर्म होने की सूचना देते हैं।

जिस व्यक्ति के नख सुपारी की आकृति के तथा श्वेत रंग के होते हैं वह प्रायः जीवन-पर्यन्त रोगी बना रहता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को अस्थिगत ज्वर होनेकी आशंका विशेष रूप से पायी जाती है।

सुपारी की आकृति के नख यदि लाल रंग के हों तो व्यक्ति चंचल मनोवृत्ति का तथा अस्थायी क्रोध वाला होता है।

सुपारी की आकृति के नख यदि पीले अथवा गुलाबी रंग के हों तो व्यक्ति मधुर स्वभाव का होता है।

जिस व्यक्ति के नख अत्यन्त निर्मल, स्निग्ध, पतले, मूंगे के रंग के समान लाल, तथा कछुवे की पीठ के समान ऊंचे उठे हुए हों, वह सर्व सुख सम्पन्न होता है।

जिस व्यक्ति के नख "इन्द्रगोपक संकाश" अर्थात् वीर बहूटी के समान अत्युत्तम श्रेणी के लाल रंग के समान हों, वह राजा होता है।

जिस व्यक्ति के नख प्रवाल के समान लाल रंग के, कान्ति युक्त, स्निग्ध चौड़े तथा कछुवे की पीठ के समान ऊंचे उठे हुए हों तथा जिनका अधो भाग नीचे दबा हुआ न हो और जो पर्व के आधे भाग तक लम्बे हों वह व्यक्ति भी राजा होता है। नारी के नख उपरोक्त लक्षणों से युक्त हों तो वह शुभ सूचक, सुख तथा सौभाग्य प्रदान करने वाले होते हैं।

नारी के नखों पर यदि श्वेत बिन्दु हों तो वह प्रायः निरंकुश, स्वच्छन्द तथा स्वतन्त्र विचार वाली होती है।

जिस व्यक्ति के नख सूप के आकार के हों तथा टूटे-फूटे हों तथा सीप के आकार की रेखाओं तथा पसीने से युक्त हों वह दुखी होता है।

श्वेत नखों वाला व्यक्ति योगी होता है।

जिस नारी की तर्जनी आदि अंगुलियों के नख सम्पूर्ण न हों उनकी क्रमशः ५० वर्ष, ३० वर्ष, २५ वर्ष तथा १२ वर्ष की आयु होती है।

जिस नारी के अंगुष्ठ का नख टूटा हुआ हो वह धर्म-भीरु होती है तथा तीर्थ यात्रा करती है।

जिस नारी के अंगुष्ठ का नख कछुवे की पीठ के समान उन्नत हो वह भाग्य हीन होती है।

पाश्चात् विद्वान श्री डिमोक्रीटस जूनियर (राबर्ट बर्टन), श्री गार्डन तथा श्री मेल्टन प्रभृति ने अपने जीवन की घटनाओं तथा अनुभवों के आधार इस मत की पुष्टि की है कि नखों पर काले दाग दुर्भाग्य पूर्ण तथा अशुभ सूचक होते हैं।

नखों पर धब्बे

नखों पर धब्बे प्रायः चिन्ता, रोग विशेष, मनोवृत्ति, रक्त-संचालन, मानसिक क्रिया, कठिन परिश्रम, अस्वभाविक स्थिति अथवा कार्य, स्नायु-मण्डल पर दबाव आदि कारणों से उत्पन्न होते हैं। उत्तम श्रेणी के स्वास्थ्य वाले माता-पिताओं के नवजात शिशुओं के नखों पर प्रायः किसी भी प्रकार धब्बे किंवा दाग परिलक्षित नहीं होते। यदि वास्तव में देखा जाय तो यह स्वास्थ्य की ही प्रतिक्रियाओं का प्रमाण है और इस सत्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि स्वास्थ्य ही जीवन का एक मात्र आधार है। स्वस्थ व्यक्ति स्वयं ही अपने भाग्य का संचालन करने में सफल होता है। उत्तम स्वास्थ्य के साथ-साथ यदि विकसित मनोवृत्ति, उत्तम विचार धारा, पवित्र इच्छा शक्ति, उच्च भावनायें तथा विशाल आकांक्षा में हों तो मनुष्य की उन्नति तथा सुख में कोई बाधक नहीं हो सकता। हस्त विज्ञान के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री कैरो के इस मत से हम पूर्ण रूपेण सहमत हैं कि 'नखों पर के श्वेत और काले धब्बे के सम्बन्ध में स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रभावों

के अतिरिक्त प्राचीन अन्ध विश्वास की ओर मे कोई ध्यान नहीं देता ।'

नखों पर के धब्बों के प्रभाव का समय

नखों पर होने वाले धब्बों तथा दागों का उनकी नखों पर स्थिति के अनुसार प्रभाव-काल चिन्न भिन्न होता है।

यह धब्बे यदि नखाग्र भाग होते है तो उसका प्रभाव भूतकाल मे हो चुका है। यदि यह धब्बे नख के मध्य भाग मे होते हैं तो उसके प्रभाव का समय वर्तमान होता है और नख के मूल भाग में होने वाले धब्बे भविष्य की ओर संकेत करते हैं।

जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं ये धब्बे चिन्ता, रोग-विशेष, मनोवृति रक्त-संचालन-शक्ति, मानसिक-क्रिया, कठिन, परिश्रम, अस्वाभाविक कार्य, विषम स्थिति तथा स्नायु मण्डल की शक्ति-क्षीणता के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न होते है। अतः प्रायः ये नख के मूल-भाग (Base) पर ही सर्व-प्रथम दिखाई देते हैं। शरीर-विज्ञान की कसौटी पर परीक्षा करने से हमारे इस कथन की पुष्टि अनायास ही हो जाती है। इसके पश्चात् ये धब्बे नखों के साथ-साथ शनैः शनैः आगे को खिसकते जाते हैं और एक दिन नख के सम्बन्धित भाग के साथ-साथ ये समाप्त भी हो जाते हैं। इस प्रक्रिया के आधार पर ही इनके प्रभाव का समय निश्चित है।

चूंकि इन धब्बों का नखों पर कोई स्थिर स्थान नहीं होता, अतः स्वाभाविक रूप से इनका कोई स्थाई महत्व नहीं है। हां, यदि किसी स्वस्थ व्यक्ति के नखों पर इस प्रकार का दाग किसी एक स्थान पर स्थिर रहे और उसका रंग श्वेत हो तो वह

सम्बन्धित व्यक्ति के स्वभाव मे प्रेम की भावना का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति अपने परिचितों मे सम्मान प्राप्त करता है।

अब हम पाठकों की सुविधा के हेतु नखों के श्वेत और काले धब्बों (ये ही विशेष रूप से उत्पन्न होते हैं) का तुलनात्मक मान चित्र देकर इस विषय को समाप्त करेंगे। —

नखों के श्वेत और काले धब्बों के प्रभाव का तुलनात्मक मान चित्र

नख-स्थान	श्वेत धब्बे का प्रभाव	काले धब्बे का प्रभाव
अंगुष्ठ नख	स्नेह, प्रेम, व्यापार-लाभ सफलता, महत्वाकांक्षा-पूर्ति सम्मान, ऐश्वर्य, सुख, विद्वता, दूरदर्शिता, नीतिज्ञता तथा उन्नति	धूर्तता, लम्पटता, नीचता, विश्वासघात, क्रूरकर्मा, निर्दयी, व्यभिचारी, मन्द बुद्धि, अपकीर्ति, व्यापारहानि
तर्जनी नख	लाभ, सम्मान, नीति-पटुता, बुद्धि, सुख	अपमान, दुर्बुद्धि दुःख, धूर्तता
मध्यमा नख	देशाटन, जल-यात्रा	मृत्यु-भय
अनामिका नख	सम्मान, कीर्ति, श्रद्धा, व्यापार-लाभ, धर्माचरण विजय	अपमान, पराजय, व्यापार-हानि नीच-कार्य
कनिष्टका नख	आशा, विश्वास, लाभ	निराशा, अविश्वास व्यापार-हानि

सप्तम-परिच्छेद

करतल-परिचय

अनुभव ने यह बात सिद्ध करदी है कि जिस व्यक्ति के हाथ लम्बे होते हैं वह अपेक्षाकृत नियमित, स्थिर-प्रकृति तथा क्रिया-शील होते है तथा छोटे हाथ वाले व्यक्ति संशयी, अनियमित तथा चंचल होते हैं। छोटे हाथ वाले व्यक्ति प्रायः किसी भी विषय पर अपना निर्णय करने मे अत्यधिक समय नष्ट कर देते हैं, फिर भी किसी स्थिर-निश्चय पर नहीं पहुचते। उनका संशय बना ही रहता है। इसके अतिरिक्त वे बड़े २ काल्पनिक विचारों मे मग्न रहते हैं। छोटे हाथ वालों में जो सब से प्रबल अवगुण होता है वह यह है कि वे जितना कहते हैं उतना करते नहीं। गरजते तो बड़े जोर-शोर से हैं, किन्तु बरसते केवल नाम के लिए हैं। इस श्रेणी के व्यक्ति प्रायः ऐसी बाते ज्यादा करते हैं जो उनकी शक्ति से सर्वथा दूर होती है। यही कारण है कि वे गरजते अधिक है, किन्तु बरसते कम हैं। इस प्रकार के व्यक्ति लिखते समय प्रायः बड़े २ अक्षर बनाते हैं।

हाथ के विषय में हम 'हाथों का परिचय' शीर्षक से द्वितीय परिच्छेद में विस्तृत वर्णन कर चुके है। अतः इस परिच्छेद में उसकी आवृत्ति करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस परिच्छेद

चित्र नं० २०

में हम करतल अथवा हथेली के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन करना उपयुक्त समझते हैं।

हाथ का मध्य स्थान (चित्र संख्या २०) अर्थात् मणिबन्ध से लेकर अंगुलियों के उद्गम-स्थान तक के भाग को करतल व

हथेली कहते हैं। हस्त परीक्षा विज्ञान में करतल का अपना विशेष स्थान है। करतल के आकार-प्रकार, गठन, आकृति, स्वरूप, बनावट आदि का मानव-जीवन में अपना विशेष महत्व होता है। जिस प्रकार केवल हाथके गठन, आकर-प्रकार, स्वरूप, आकृति तथा बनावट, अंगुष्ठ, अंगुलियों तथा नखों आदि के द्वारा मानव-जीवन का साधारणतः आद्योपान्त अध्ययन किया जा सकताहै, ठीक उसी प्रकार करतल द्वारा भी मानव-जीवन का सांगोपांग अध्ययन किया जा सकता है। प्रसंगवश हम यहां यह बता देना चाहते हैं कि हाथों के विभिन्न अंगों के आधार पर मानव-जीवन का अध्ययन करते समय प्रायः लक्षणा में विरोधाभास-सा भी परिलक्षित होता है। उदाहरणतः हाथ उत्तम श्रेणी का होता है, तो अंगुष्ठ के कोई-कोई लक्षण मध्यम श्रेणी के उपस्थित हो जाते हैं और अंगुलियों मे कहीं-कहीं अधम श्रेणी का प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न अंगों के लक्षणों मे परस्पर विरोध उपस्थित हो जाता है। अनुभव शील विद्वानों ने सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार इस पारस्परिक विरोध को ही 'रेख मे मेख' कह कर हस्त-परीक्षकों को चेतावनी दी है। अतः मानव-जीवन का वास्तविक और सच्चा अध्ययन तब ही सम्भव है जब कि हस्त परीक्षा विज्ञान के आधार पर हाथ के सभी अंगों का पूर्ण-विश्लेषण के साथ सांगोपांग अध्ययन किया जाय। अतः प्रस्तुत परिच्छेद में हम पाठकों के लाभार्थ तथा ज्ञान वृद्धि के हेतु करतल का विस्तृत विवेचन करेंगे।

करतल के भेद (पौर्वात्यमत)

आकार-प्रकार, गठन, स्वरूप, आकृति तथा बनावट के आधार पर हथेली के अनेकों भेद हैं। हमारे ऋषियों ने उपरोक्त आधार पर करतल के निम्नलिखित बीस भेद किये हैं—

१—संवृत-निम्न (Round-Hollow)—इस प्रकार का करतल वर्तुलाकार आकृति का होता है और उसका मध्य भाग वर्तुलाकार नीचे धंसा हुआ (गोल-गड्ढे के समान) होता है।

२—उन्नत (Devolophed)—इस प्रकार का करतल मध्य-भाग में से ऊँचा उठा हुआ होता है।

३—निम्न (Hollow)—इस प्रकार का करतल मध्य भाग में नीचे धंसा हुआ, गहरा (गड्ढे के समान) होता है।

४—विषम (Unven)—इस प्रकार का करतल असम आकृति का होता है। इसका मध्य-भाग कहीं ऊंचा उभरा-हुआ होता है तो कहीं नीचे की ओर धंसा होता है।

५—रोम-शिरा-हीन (Hair-Nerve-Less)—इस प्रकार के करतल में बाल नहीं होते और उस में नसें दृष्टि-गोचर नहीं होतीं।

६—घन मांस (Well Developped)—इस प्रकार का करतल कठोर मांस से परिपूर्ण होता है।

७—स्निग्ध (Bright)—इस प्रकार का करतल चिकना और चमकदार होता है।

८—अनुन्नत-अनिम्न (Neither Developped nor Hollow)—इस प्रकार का करतल न तो ऊंचा उभरा हुआ होता है और न नीचे की ओर धंसा हुआ ही होता है। साधारणतः यह पतला (Thin) होता है।

९—रुक्ष अथवा अचिक्कण (Rongh)—इस प्रकार का करतल शुष्क अथवा रूखा होता है।

१०—खर (Very Hot)-इस प्रकार का करतल अत्यन्त गर्म होता है।

११—विवर्ण अथवा निस्तेज (Sad or Dismal) इस प्रकार का करतल फीका तथा कान्ति-हीन होता है।

१२—मृदु-उन्नत (Soft and Developped)—इस प्रकार का करतल कोमल होता है। इसका मध्य भाग उन्नत (उभरा हुआ होता है तथा रंग आरक्त होता है) इसे प्रशस्त संज्ञा भी दी गई है।

१३—अस्वेदन—इस श्रेणी के करतल में पसीना नहीं आता।

१४—मृदु-सुवर्ण (Soft & Colour ful)—इस प्रकार का करतल कोमल होता है तथा उसका रंग कमल के गर्भ के समान अत्यन्त सुन्दर होता है।

१५—मृदु (Soft)—इस प्रकार का करतल अत्यन्त कोमल होता है।

१६—कठोर (Hard)—इस प्रकार का करतल कठिन अर्थात् कठोर होता है।

१७—रेखा-हीन (Line-Less)—इस प्रकार के करतल में रेखाओं का सर्वथा अभाव होता है।

१८—बहु रेखा (Thickly-Lined)—इस प्रकार के करतल में बहुत अधिक रेखायें होती हैं।

१९—विस्तीर्ण (Broad)—इस प्रकार का करतल चौड़ा और फैला हुआ होता है।

२०—प्रोत्तान (Highly Developp d)—इस प्रकार के करतल अत्यधिक उन्नत अर्थात् ऊंचे उठे हुये अथवा उभरे हुये होते हैं।

करतल के भेद (पाश्चात् मत)

पाश्चात् हस्त-विज्ञान-वेत्ताओं ने भी करतल का विस्तृत अध्ययन किया है। उनके मतानुसार इसके निम्नलिखित बीस भेद हैं।

१—साधारण (Ordinary)—इस प्रकार का करतल न तो अधिक चौड़ा होता है और न अधिक संकुचित ही होता है। इस आकार के करतल प्रायः साधारण होते हैं।

२—समाकार (Equal)—इस प्रकार का करतल चौरस अर्थात् मणिबन्ध की ओर तथा अंगुलियों के मूल स्थान पर—दोनों ओर समान आकार होता है।

३—अंगुली-लम्ब (Finger-Length)—इस प्रकार का करतल हथेलियों के बराबर ही लम्बा होता है।

४—संकुचित और पतला (Narrow & Thin)—इस प्रकार का करतल संकुचित अथवा सिकुड़ा हुआ (बहुत कम चौड़ाई वाला) तथा पतला होता है।

५—अधिक लम्बा (Very Long)—इस प्रकार का करतल परिमाण से अधिक लम्बा होता है।

६—संकुचित, पतला तथा सलवटदार (Narrow, Thin and Twisted)—इस प्रकार का करतल संकुचित अथवा सिकुड़ा हुआ (बहुत कम चौड़ाई वाला), पतला तथा सलवटदार होता है।

७—छोटा (Short)—इस प्रकार का करतल परिमाण अधिक छोटा होता है।

८—उन्नत-मांसल और मोटा (Over Developpted) इस प्रकार का करतल अत्यधिक मांस-युक्त, ऊंचा उठा हुआ तथा मोटा होता है।

९—कठोर (Hard)—इस प्रकार का करतल कठिन अथवा कठोर होता है।

१०—अत्यन्त कठोर (Very Hard)—इस प्रकार का करतल अत्यधिक कठिन अथवा कठोर होता है।

११—कठोर और लम्बा (Hard and Long)—इस प्रकार का करतल कठिन अथवा कठोर होता है तथा उसकी लम्बाई अंगुलियों की लम्बाई की अपेक्षा अधिक होती है।

१२—मृदु (Soft)-इस प्रकार का करतल कोमल (नाज़ुक) होता है।

१३—निम्न (Hollow)—इस प्रकार का करतल मध्य-भाग में नीचे धंसा हुआ (गहरा) होता है।

१४—विस्तीर्ण (Broad)—इस प्रकार का करतल काफी लम्बा और चौड़ा होता है।

१५—संकुचित (Narrow)—इस प्रकार का करतल सिकुड़ा हुआ होता है।

१६—बहु रेखा (Thickly-Lined)—इस प्रकार के करतल में अत्यधिक रेखायें होती हैं।

१७—पतला और कठोर (Thin and Hard)—इस प्रकार का करतल प्राय: मांस रहित तथा कठिन अथवा कठोर होता है।

१८—बड़ा और कोमल (Large and Soft)—इस प्रकार का करतल आकार में बड़ा और कोमल होता है।

१९—सुदृढ़ और मांसल (Firm and Elastic)—इस प्रकार के करतल में मांस अपेक्षाकृत अधिक होता है, किन्तु उसकी गठन सुदृढ़ होती है।

२०—कोमल और मांसल (Soft and Flabby)—इस प्रकार के करतल में मांस अपेक्षाकृत अधिक होता है और साथ ही साथ वह कोमल (नाजुक) भी होता है।

करतल के वर्णानुसार भेद (पौर्वात्यमत)

करतल के विभिन्न वर्णों (रंगों) के अनुसार हमारे आचार्यों एवं ऋषियों ने उसे निम्नलिखित सात श्रेणियों में विभक्त किया है।

१—अरुण (Bright Red)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल उगते हुये सूर्य के समान ताम्राभ रक्त-वर्ण का होता है।

२—पीला—(Yellow)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल पीले रंग का होता है।

३—श्वेत (White)—इस प्रकार के वर्ण का करतल श्वेत रंग का होता है।

४—काला (Black)—इस प्रकार के वर्ण का करतल श्याम (काले) रंग का होता है।

५—नीला (Blue)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल नील कमल के समान रंग वाला होता है।

६—रक्ताभ (Bloody)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल शोणित या रक्त (खून) के रंग जैसा होता है।

७—लाक्षाभ—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल लाख के समान लाल रंग का होता है।

करतल के वर्णानुसार भेद (पाश्चात्य-मत)

हस्त विज्ञान के पाश्चात्य विद्वानों ने वर्ण भेद से करतल को छः भागों में विभक्त किया है। ये छः श्रेणियां निम्नलिखित हैं—

१—श्वेत (White)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल सफेद रंग का होता है तथा इसका श्वेत रंग स्थायी होता है।

२—लाल (Red)—इस प्रकार के वर्ण का करतल तांबे के समान लाल रंग का होता है।

३—पीला (Yellow)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल पीले रंग का होता है।

४—काला (Black)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल श्याम (काले) रंग का होता है।

५—भूरा (Tint-Colour)—इस प्रकार के वर्ण करतल भूरा पन लिये हुये होता है।

६—गुलाबी (Rosy)—इस प्रकार के वर्ण वाला करतल गुलाबी रंग के गुलाब के पुष्प के समान वर्ण का होता है।

इस प्रकार हमारे ऋषियों तथा हस्त-विज्ञान वेताओं ने करतल के आकार-प्रकार, गठन, आकृति स्वरूप तथा बनावट और वर्ण भेद के आधार पर सत्ताईस भेद किये हैं और पाश्चात्य विद्वानों ने छब्बीस भेद किये हैं। पौर्वात्य और पाश्चात्य विद्वानों द्वारा निर्धारित उपरोक्त भेदों में अधिकांश भेद समान ही है, तथापि यह स्वीकार करना ही होगा कि कहीं-कहीं इन में विलक्षण मतभेद है। आगे चल कर हम इनके प्रभावों का वर्णन करेंगे।

करतल की आकृति, गठन तथा आकार-प्रकार के अनुसार प्रभाव

संवृत-निम्न (Round-Hollow)

जिस व्यक्ति का करतल पूर्णतया गोलाकृति हो और उसका मध्य भाग बीच में अन्दर धंसा हुआ गड्ढे के आकार का हो, वह सम्पति-शाली, वैभव का स्वामी तथा सर्व सुख-सम्पन्न होता है। इस लक्षण वाली नारी धर्माचरणी होगी तथा उसके पास धन भी रहेगा। वह अपने पति से छिपाकर धन रखने की उन्नत (Developped) अभ्यस्त होगी।

जिस व्यक्ति का करतल ऊंचा उठा हुआ अर्थात् उभरा हुआ हो आकांक्षा तथा रुचि सदैव धर्म-भीरू होती है। यह व्यक्ति अत्यन्त उदार तथा दानशील होता है। धर्म के अभ्युदय, ईश्वर भक्ति तथा आत्म-शुद्धि से सम्बन्धित अथवा परलोक निर्माण के कार्यों मे और सर्वथा असहाय, वात रोग आदि की सेवा में यावत् शक्ति हृदय खोल कर व्यय करते हैं। धर्मशाला, अनाथालय, कूप, बावली, आश्रम, प्याऊ, पाठशाला, धर्मार्थ चिकित्सालय पुस्तकालय, वाचनालय, आदि कार्यों में ऐसा व्यक्ति विशेष रूप से लगनशील होता है छात्रवृति, अनाथ तथा निराश्रित विधवाओं के लिये जीविका-वृत्ति, अनाथ मन्दिरों में भगवद्-सम्मानार्थ अथवा कृष्णार्पणार्थ सेवा-वृति आदि की ओर भी इन लक्षणों वाले व्यक्ति को पर्याप्त आकर्पण रहता है।

निम्न (Hollow)

जिसका करतल मध्य-भाग में नीचे दबा हुआ गड्ढे के आकार का हो और हाथ कुलक्षणों से पूर्ण तथा अशुभ गठन, आकृति, स्वरूप, बनावट तथा आकार-प्रकार का हो तो दुर्भाग्य सूचक है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को पिता का धन (पैतृक-धन) नहीं मिलता तथा संसार-यात्रा के मार्ग में उसे सदैव दुर्दैव से टक्कर लेनी पड़ती है। किन्तु यह व्यक्ति शान्ति-प्रिय तथा मिलनसार होता है। परिश्रम से कभी नहीं घबराता तथा साहसी भी प्रथम-श्रेणी का होता है। धैर्य इस लक्षण वालें का परम मित्र है। सन्तोप और निग्रह-वृति इसकी जीवन-यात्रा के दो उपकारी तथा सहायक हैं।

निम्न करतल वाले व्यक्ति पर आपत्तियों का तांता-सा लगा रहता। जीवन-यात्रा में इसके सामने धन की विडम्बना सदैव भयानक बनी रहती है। इस पर भी तुर्रा यह है कि वह बेचारा ऐसी विडम्बना पूर्ण परिस्थितियों से आक्रान्त रहता है कि धन का सदैव व्यय होता है। व्यवसाय में इससे प्रायः हानि तथा अपयश ही पल्ले पड़ता है। इसके स्वार्थों का लाभ—इसके देखते देखते अन्य लोग उठा लिया करते हैं। ऐसे व्यक्ति में प्रतिकूलताओं का सामना करने की शक्ति और साहस नहीं के लगभग ही होते हैं। इसका साहस तो अधिकांशतः विषमताओं के घातक आघात सन्तोष की शक्ति पर झेलते रहने तक ही सीमित है। इस क्षेत्र में अवश्य ही ऐसा व्यक्ति कभी २, तो दुस्साहसी तक हो जाता है। ऐसे अवसर भी उपस्थित हो जाते हैं जबकि इसके सामने मृत्यु देव अपना पैशाचिक अट्टहास करते हुए नग्न ताण्डव करते हैं और यह केवल-मात्र सन्तोष की शक्ति से अपनी शून्य-प्रायः चेतना को समेट कर निस्तेज तथा सूखी हंसी के द्वारा उसका सफल उपहास तथा अवगणना करते हैं। पारिवारिक विवाद में वे केवल शान्ति के नाम पर अपनी भावनाओं तथा प्रतिक्रियाओं को दबोच लेते हैं। अशुभ हाथ में इस प्रकार का लक्षण हो और उस गड्ढे में कोई शुभ चिह्न भी हों तो वे सर्वथा व्यर्थ हो जाते हैं।

निम्न करतल के दुष्प्रभाव में भिन्नता भी पाई जाती है। साधारण दृष्टि से परीक्षा करने पर इस भिन्नता का संकेत नहीं

मिलता। यही कारण है कि प्रायः हस्त-परीक्षक इस सम्बन्ध में सन्देह में पड़ जाते हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो यह रहस्य अनायास ही प्रकट हो जाता है। इस भिन्नता का वास्तविक कारण करतल गत रेखायें हैं। करतल की जो-जो रेखायें इस गड्ढे (निम्न-भाग) मे होती है उन सब पर इसका विपरीत प्रभाव होता है। पाठकों की सुविधा के हेतु हम यह विश्लेषण निम्न-पंक्तियों मे अंकित करते है—

१—जीवन-रेखा (Line of Life)—यदि जीवन रेखा करतल के निम्न भाग में हो तो व्यक्ति के पारिवारिक-जीवन में निराशा की प्रलयंकार घटायें तथा आपत्तियों के दुर्गम पहाड़ से टक्कर लेनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त इस लक्षण से युक्त हथेली वाले हाथ में अन्य लक्षणों तथा चिह्नों के द्वारा स्वास्थ्य-हानि की सूचना मिल रही हो उपरोक्त लक्षण के प्रभाव से व्यक्ति मे कोमलता (नाजुकता-Delicacy) तथा किसी भयानक रोग के लक्षण उपस्थित होते हैं।

२—भाग्य-रेखा (Line of Fate)-यदि भाग्यरेखा करतल के निम्न-भाग मे हो तो व्यक्ति के भाग्य का पलड़ा सदैव हलका रहता है। लोक-व्यवहार, व्यापार, तथा आर्थिक-क्षेत्र मे उसे सदैव दुर्भाग्य घेरे रहता है। भाग्य इस लक्षण वाले व्यक्ति के साथ सदैव आँख-मिचोली खेला करता है। ऐसा व्यक्ति यदि किसी को कुछ दे देता है तो उस धन का अथवा वस्तु का लौट आना असम्भव-प्रायः हो जाता है और साथ ही साथ लेने वाले

पक्ष की ओर इस बेचारे को लाञ्छन, अपयश, निन्दा, विषमता, विरोध, कटुता और शत्रुता अवश्यमेव प्राप्त होती है। अपनी आर्थिक विषमता कटुता से यह इतना असमर्थ रहता है कि जिससे ले लेता है उसे लौटाना इसे भी दुस्तर हो जाता है।

३—हृदय-रेखा (Line of Heart)—यदि करतल के निम्न भाग में हृदय-रेखा टपक पड़े तो इस लक्षण वाले व्यक्ति का हृदय टूटा हुआ ही समझना चाहिए। निकटतम स्नेहियों तथा प्रेमियों से इसे निराश होना अवश्यम्भावी है। इष्ट-मित्र भी इसके साथ स्नेह किंवा प्रेम के अखाड़े में विश्वासघात ही करते हैं। वहां भी इसकी आशालता सर्वथा मुरझा ही जाती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को किसी ओर से भी सन्तोष, सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त नहीं होती।

निम्न करतलस्थ रेखाओं के सम्बन्ध में विशेष ज्ञातव्य

दैवयोग से करतल के निम्न भाग में स्थित रेखा अथवा रेखायें सम्पूर्ण उस गढ्ढे में न हों, केवल उनका कोई भाग ही उस गढ्ढे में हो अथवा वे उस गढ्ढे को स्पर्श-मात्र करती हों (अर्थात् सम्पूर्ण रेखा अथवा उसका कोई भाग) उक्त गढ्ढे की सीमाओं को स्पर्श करता हो) तो सम्बन्धित रेखाओं पर इसका दुष्परिणाम उसी परिमाण में होता है जिस परिमाण में उनका परस्पर सम्बन्ध हो। हां यदि किसी रेखा का मध्यभाग ही करतल के निम्न भाग में हो, तो दोनों छोर उसके बाहर होने पर गढ्ढे में विपाक्त प्रभाव को न्यून नहीं कर पाते और उस

रेखा का सुफल लगभग सर्वांश में ही कुफल में परिवर्तित हो जाता है।

निम्न तथा संवृत-निम्न में भिन्नता

निम्न तथा संवृत-निम्न-दोनों ही प्रकार के करतलों में मध्य भाग में गड्ढा होता है, फिर भी निम्न करतल का प्रभाव मानव-जीवन पर दुर्भाग्यपूर्ण तथा विषैला पड़ता है और संवृत-निम्न करतल का प्रभाव इसके सर्वथा विपरीत अर्थात परम-सौभाग्य पूर्ण होता है। पाठकों को यह शंका अवश्य ही संशय उपस्थित करेगी। हमारे महर्षियों ने अपने अनुसन्धान में यद्यपि कोई भी निर्बलता शेष नहीं रहने दी है और प्रायः सभी विषयों पर सांगोपांग खोज की है और उसके सूक्ष्मतम अंग-प्रत्यंगों पर प्रखर प्रकाश डाला है तथापि भाष्यकारों तथा टीकाकारों की असावधानी अथवा आलस्य किंवा प्रमाद के कारण वस्तु-स्थिति में इस प्रकार की शंकायें-उपस्थित होती हैं। अपने सुहृदय पाठकों की शंका शमनार्थ हम इस रहस्य का निम्न-पंक्तियों में उद्घाटन करते हैं।

करतल पर निम्न क्रमशः (अंगुष्ठ के मूल भाग से आरम्भ करके तर्जनी अंगुली की ओर) शुक्र और मंगल के क्षेत्र हैं। इसके पश्चात् क्रमशः तर्जनी के मूल से गुरु का, मध्यमा के मूल में शनि का अनामिका के मूल से सूर्य का तथा कनिष्ठिका के मूल में बुध का क्षेत्र है फिर कनिष्ठिका से मणिबन्ध की ओर क्रमशः मंगल और चन्द्रमा का क्षेत्र है। इस प्रकार करतल के सीमाप्रदेश

चारों ओर से शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, सूर्य, बुध तथा चन्द्रमा के क्षेत्रों से संवृत है। हस्त-सामुद्रिक विज्ञान के सिद्धान्तानुसार इन क्षेत्रों (पर्वतों अथवा उभारों) का उन्नत होना शुभ-सूचक है। यदि किसी करतल के सभी क्षेत्र उन्नत हों तो करतल के मध्य भाग में गड्ढा अवश्य पड़ेगा। ऐसी दशा में करतलस्थ सभी ग्रह क्षेत्रों के उन्नत होने का शुभ परिणाम व्यक्ति के जीवन पर प्रभावित होता है और करतल के निम्न होने का दुष्परिणाम दृष्टिगोचर नहीं होता। करतलगत दोनों प्रकार के गड्ढों के प्रभाव का रहस्य यही है।

इस रहस्य के कपाट खोलने के लिए हमें दोनों प्रकार के गड्ढों की आकृति, गठन, आकार-प्रकार, बनावट किंवा स्वरूप का सूक्ष्म अध्ययन करना होगा। इन दोनों गड्ढों का तथा कथित अध्ययन करने से पूर्व हमें एक बार हमारे महर्षियों तथा हस्त-विज्ञानाचार्यों द्वारा निरधारित नामों पर पुनः ध्यान देना परमावश्यक है। यदि उन नामों के अनुरूप इन गड्ढों का अध्ययन किया जायगा तो यह रहस्य-कपाट स्वयमेव अनायास ही खुल जायेंगे।

करतलगत गड्ढों के हम उपरोक्त दो भेद लिख आये हैं। पहला संवृत-निम्न और दूसरा निम्न। संवृत-निम्न का स्वरूप, आकृति, आकार-प्रकार, गठन किंवा बनावट का परिचय निम्न प्रकार है।

जिस करतल के मध्य भाग में वर्तुलाकार गड्ढा हो।

और निम्न का स्वरूप, आकृति, आकार-प्रकार, गठन किंवा बनावट का परिचय-निम्न प्रकार है।

जिस करतल के मध्य भाग में गड्ढा हो।

पाठको! दोनों प्रकार के गड्ढों के परिचय में केवल एक मात्र शब्द 'वर्तुलाकार' की ही भिन्नता है और यही 'वर्तुलाकार' शब्द ही दोनों प्रकार के गड्ढों की भिन्नता के रहस्य का कपाट है पहले गड्ढे का जिसे 'संवृत-निम्न' की संज्ञा से सम्बोधित किया गया है आकार गोल है।

करतलस्थ गड्ढे का आकार गोल उसी दशा में होगा जब करतल-सीमा-प्रदेशस्थ शुक्र मंगल, गुरु, शनि सूर्य, बुध तथा चन्द्रमा सातों ग्रहों के समस्त क्षेत्र उन्नत हों। यदि एक भी क्षेत्र अनुन्नत अथवा नीचे धंसा हुआ होगा तो करतल-स्थ गड्ढे का आकार वर्तुल अर्थात् गोल न रह कर टेढ़ा-मेढ़ा हो जायगा और उसी के प्रभाव से करतलस्थ गड्ढे का प्रभाव दूषित हो जायगा। यही कारण है कि हमारे महर्षियों ने इसके दो भेद करके करतलस्थ वर्तुलाकार गड्ढे का प्रभाव शुभ और वर्तुल-नष्ट गड्ढे का प्रभाव अशुभ लिखा है। पाश्चात् विद्वानों ने करतलस्थ इस गड्ढे का अध्ययन सूक्ष्म दृष्टि से नहीं किया है, अतः उन्होंने कवल गड्ढे का ही अध्ययन करके उसका अशुभ प्रभाव ही वर्णन किया है।

विषम (Uneven)

जिस व्यक्ति का करतल असम हो अर्थात् कहीं ऊंचा हो तथा कहीं नीचा हो—मिश्रित स्थिति का हो, उस पर दरिद्र-नारायण की कृपा दृष्टि होती है। आचार्य-प्रवर वराह मिहिर के मतानुसार इस लक्षण वाला व्यक्ति केवल दरिद्री ही नहीं होता। इसके साथ ही साथ उसका स्वभाव भी क्रूर होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः निर्दयी और क्रूर-कर्मा होता है। धूर्तता, लम्पटता विश्वास घात, कपट आदि इसके स्वाभाविक लक्षण हैं।

रोम-शिरा-हीन (Hair Nerve less)

जिस व्याक्ति के करतल रोम न हों तथा शिरायें (नसें) दृष्टिगोचर न होती हों, वह शुभ लक्षण का सूचक है।

घन मांस (Well Developped)

जिस व्यक्ति का करतल मांस से परिपूर्ण तथा पुष्ट हो वह भी शुभ सूचक है।

स्निग्ध (Bright)

जिस व्यक्ति का करतल चिकना और आभा युक्त हो वह श्रेष्ठ होता है।

अनुन्नत अनिम्न (Neither Developed Nor Hollow)

जिस व्यक्ति का करतल न तो ऊंचा उठा हुआ (उभरा हुआ) हो और न नीचे धंसा हुआ (गड्ढे जैसा) हो, अर्थात् क्षीण-मांस और चपटा यानी पतला (Thin) हो, वह दुर्भाग्य की सूचना

देता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वभाव से भीरु, निरुत्साही, साहस हीन, अस्तव्यस्त तथा दुःखी होता है।

रूक्ष किंवा अचिक्कण (Rough)

जिस व्यक्ति का करतल शुष्क किंवा रूखा हो और चिकनाहट नाम को भी न हो वह क्लेश-कारक होता है।

खर (Very Hot)

जिस व्यक्ति का करतल अत्यन्त गरम रहता हो, उसके जीवन में गृह-कलह पारिवारिक स्थितियों की विषमता तथा अर्थ संकट की विशेषता होती है।

विवर्ण किंवा निस्तेज (Sad or Dismal)

जिस व्यक्ति का करतल फीका किंवा कान्ति-हीन हो उसका जीवन प्रायः आपत्तियों का आगार होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में प्रत्येक क्षेत्र मे विषमता और असफलता की प्रधानता होती है। इस प्रकार का करतल क्लेश-दायक होता है।

मृदु-उन्नत (Soft and Developped)

जिस व्यक्ति का करतल कोमल हो और मध्य-भाग में ऊंचा उठा हुआ (उभरा हुआ) हो तथा वर्ण (रंग) में आरक्त (शोणित के समान रंग वाला) हो तथा तत्सम्बन्धी हाथ को फैला देने पर उसके स्वाभाविक स्वरूप में होने पर अंगुलियों को मिलाने से अंगुलियों के मध्य में छिद्र दृष्टिगोचर न होते हों, साथ ही जिसमें उत्तम रेखायें स्थित हों, वह करतल निस्सन्देह

प्रशस्त होता है। ऐसे लक्षणों से युक्त करतल वाला व्यक्ति बुद्धिमान, नीतिज्ञ, सदाचारी, शक्तिशाली, विचारशील, स्थिर-मति, दूरदर्शी, उद्योगी, महत्वाकांक्षी, दयालु, धैर्यवान, परिश्रमी, शास्त्रज्ञ व्यवहार-कुशल, सम्मानित, तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। इसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

अस्वेदन

जिस व्यक्ति के करतल में स्वभावतः ही स्वेद (पसीना) नहीं आता, वह शुभ होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति जीवन-यात्रा में सुविधायें प्राप्त करता है तथा सुखी रहता है।

मृदु-सुवर्ण (Soft-Colourful)

जिस व्यक्ति का करतल मृदु अर्थात् कोमल (Soft) (नाजुक) हो तथा लाल कमल के गर्भ समान सुन्दर एवं चित्ता-कर्षक वर्ण (रंग) वाला हो, वह अत्यन्त शुभ होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्थिर कार्य करने वाला, धैर्यवान, दक्ष तथा सम्पत्ति-शाली होता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में शारीरिक-श्रम से सम्बन्धित कार्य नहीं करता। वह सदैव मानसिक तथा बौधिक कार्यों में ही जीवन-यापन करता है। उसे वाहन-सौख्य भी उत्तम श्रेणी का प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः उत्तम श्रेणी के मनुष्य होते हैं। राजा, मन्त्री, राज्याधिकारी, बड़े व्यापारी, उद्योग-पति, न्यायाधीश, आचार्य, बैरिस्टर आदि के करतल प्रायः इसी प्रकार के होते हैं।

मृदु (Soft)

जिस व्यक्ति का करतल मृदु अर्थात् कोमल (Soft-नाजुक) हो वह शुभ-फलप्रद होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की जीवन-यात्रा सुख तथा शान्ति के साथ सम्पन्न होती है।

कठोर (Hard)

जिस व्यक्ति का करतल कठोर (Hard) हो वह शारीरिक श्रम के द्वारा अपना जीवन यापन करता है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः श्रम-जीवी होते हैं। इस प्रकार के मनुष्य चंचल-प्रकृति, अस्थिर विचार तथा डांवाडोल मनोवृत्ति वाले होते हैं। ये प्रायः अदूरदर्शी होते हैं। विचारशीलता इनमें अतिशय न्यून परिमाण में होती है। इस प्रकार के व्यक्ति प्रायः सुनार, लुहार, बढ़ई, पाषाण-शिल्पी, सुथार आदि होते हैं अथवा कृषी कर्म करने वाले होते हैं। केवल-मात्र शारीरिक-श्रम के आधार पर जीवि-कार्जन करने वाले दास और मजदूर श्रेणी के व्यक्तियों का करतल भी प्रायः इसी लक्षण का पाया जाता है।

रेखा-हीन (Line-Less)

जिस व्यक्ति के करतल पर रेखाओं का सर्वथा अभाव हो, वह अल्पायु, निर्धन तथा दुःखी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं होती। सदैव, सर्वत्र तिरस्कृत होता है। ऐसा व्यक्ति, बुद्धिहीन, अदूर-दर्शी आलसी, तथा निकम्मा होता है।

बहुरेखा (Thickly-Lined)

जिस व्यक्ति के करतल में अत्यधिक रेखाये हों अर्थात् कर-तल का प्रत्येक भाग रेखाओं से ओत-प्रोत हो, वह महा दरिद्री होता है। इस प्रकार के लक्षण वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में 'बहु-रेखा दरिद्री' की लोकोक्ति प्रचलित है। यदि यथार्थ पूछा जाय तो यह निकृष्टतम दुर्भाग्य की सूचना है। यह व्यक्ति स्वभाव से भीरु तथा कायर होता है। इस पर दूसरों का प्रभाव अत्यन्त शीघ्र पड़ता है। यह प्रायः बुद्धिहीन, अल्पायु, दरिद्री, असफल तथा महा दुःखी होता है विचारशीलता तो इसके पास तक नहीं फटकती। इसे सदैव सर्वत्र अपमानित होना पड़ता है, यहां तक कि इसकी पत्नि तक इसका अपमान करने से नहीं चूकती है। इसके जीवन में सर्वदा नैराश्य और असफलता का एक छत्र राज्य रहता है।

विस्तीर्ण (Broad)

जिस व्यक्ति का करतल विस्तीर्ण (Broad) अर्थात् चौड़ा और फैला हुआ हो वह शुभ लक्षण सूचक होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वच्छ एवं स्वच्छन्द वायु मण्डल में निवास करने का प्रेमी होता है तथा व्यवसायिक मनोवृति का होता है। यह उदार चेता, अनुभवी तथा परिश्रमी भी होता है। हस्तगत अन्य लक्षणों के परिणाम-स्वरुप उसके जीवन, भाग्य अथवा स्वभाव में अन्य किसी भी प्रकार का परिवर्तन किंवा प्रभाव क्यों न हो जाय किन्तु उसकी उदार मनोवृत्ति में किंचित मात्र भी अन्तर नहीं

आता है। उदारता इसका विशिष्ट गुण है। यह राज-सन्मान प्राप्त करता है। बुद्धिमान, दूरदर्शी, महत्वाकाँक्षी, दृढ़ निश्चयी, विचारशील, विकसित मनोवृत्ति वाला, उच्चभावनाओं वाला, सहिष्णु, धैर्यवान, क्षमाशील सत्य-भाषी सदाचारी तथा उपकारी होता है। बुरे विचार तो इसे कल्पना तक मे स्पर्श नहीं करते। ऐसे समय वाला व्यक्ति प्राय: जीवन में सफल रहता है।

प्रोत्तान (Highly Developped)

जिस व्यक्ति के करतल में ग्रह क्षेत्र (शुक्र, मंगल, बृहस्पति शनि, सूर्य, बुध, चन्द्रमा, राहु आदि के स्थान अथवा पर्वत) अति उन्नत (बहुत अधिक ऊंचे उठे हुए—उभरे हुए) हों अर्थात् जिसका करतल प्रत्येक-स्थान पर बहुत अधिक ऊंचा उठा हुआ हो वह दानवीर होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति में दान की रुचि अपेक्षा कृत अत्यधिक परिमाण में होती है। यह व्यक्ति उत्तम श्रेणी उदार-चेता तथा सर्वथा निर्लोभी होता है।

साधारण (Ordinary)

जिस व्यक्ति का करतल साधारण अर्थात लम्बाई चौड़ाई में परिमाण के सर्वथा अनुकूल होता है, वह शुभ है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति साधारणत: सुख तथा शान्ति से जीवन यापन करते हैं। जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं को उपलब्ध करने के लिये इन्हें अधिक कठिनाई उत्पन्न नहीं होती। ये व्यवहारकुशल, परिश्रमी, चतुर तथा मिलनसार होते हैं।

समाकार (Epual)

जिस व्यक्ति का करतल अधिकतर चौरस होता है अर्थात् जितना उर्ध्व भाग (अंगुलियों के मूल स्थान) पर फैला होता है उतना ही अधो भाग (मणिबन्ध के पास) फैला होता है, वह सम-भाग्य वाला होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक शक्तियां प्रायः सन्तुलित होती हैं। इसकी कोई भी शक्ति न तो अत्यधिक रूप से न्यून होती है और न विशेष होती है। बुद्धि, विचार शक्ति, इच्छाशक्ति, कल्पना शक्ति कार्य-क्षमता आदि सभी साधारण तथा स्वभाविक रूप में होती है। ऐसे व्यक्ति में यद्यपि किसी भी प्रकार की विलक्षणता का प्रायः अभाव ही होता है तथापि वह अपने जीवन को सुव्यवस्थित रूप से संचालित रखता है और जीवन-यात्रा सुख तथा शान्ति से पूर्ण करता है।

अंगुली-लम्ब (Finger-Length)

जिस व्यक्ति के करतल की लम्बाई उसकी अंगुलियों की लम्बाई के परिणाम की होती है, वह व्यक्ति शुभ लक्षण संम्पन्न होता है। इस प्रकार का करतल जितना अंगुलियों के सम-परिमाण में होगा उतना ही अधिक शुभ-फल-प्रद होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है।

संकुचित और पतला (Narrow and Thin)

जिस व्यक्ति का करतल संकुचित (सिकुड़ा हुआ) अर्थात् बहुत कम चौड़ाई वाला हो और क्षीण-मांस वाला अर्थात् पतला

हो, वह व्यक्ति बुद्धिहीन, दुराचारी, अविचारी, लम्पट तथा धूर्त होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की भावनायें प्राय: दूषित रहती हैं। ऐसा व्यक्ति किसी का उपकार तो कभी स्वप्न में भी नहीं करता।

अधिक लम्बा (Very Long)

जिस व्यक्ति का करतल परिमाण से अधिक लम्बा अर्थात् अंगुलियों से अत्यधिक लम्बा होता है वह भाग्यशाली होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति नियम-बद्ध तथा सतत कार्यशील होते हैं। वह व्यक्ति बुद्धिमान, नीतिज्ञ, व्यवहार-कुशल, दूरदर्शी तथा उद्योगी होते हैं।

संकुचित, पतला तथा सलवटदार (Narrow Thin and Twisted)

जिस व्यक्ति का करतल बहुत कम चौड़ा तथा मांस रहित हो और जिसमें सलवटें पड़ती हों वह भाग्यहीन होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति निरुत्साही, भीरु, आलसी, निर्बुद्धि, चरित्र हीन, दुराचारी, क्रूर तथा कुमार्गी होता है। किसी भी काम में परिश्रम करने की उसे कभी इच्छा ही नहीं होती। प्राय: कुविचारों में डूबा रहता है। दूसरों को हानि पहुंचाने में इस लक्षण वाले व्यक्ति को अधिक प्रसन्नता होती है।

छोटा (Short)

जिस व्यक्ति का करतल परिमाण से छोटा अर्थात् अंगुलियों की लम्बाई से कम लम्बा हो, वह व्यक्ति वाचाल होता है। इस

लक्षण वाला व्यक्ति अपना अधिकांश में व्यर्थ के सोच-विचार में नष्ट कर देता है। यह प्रायः शेखचिल्ली की भांति हवाई किले बनाया करता है। ऐसा व्यक्ति गरजता तो अत्यधिक है किन्तु बरसता बहुत ही कम है। जितना कहता है उतना करता नहीं। इसका कारण यह है कि कहते समय कही हुई बात के सम्बन्ध में यह अपनी शक्ति का विचार कभी नहीं करता और प्रायः ऐसी बातें कह जाता है जिनको पूरा करना उसके सामर्थ्य से सर्वथा परे होता है। यह प्रायः बड़े-बड़े अक्षर लिखता है।

उन्नत मांसल और मोटा (Over Developped)

जिस व्यक्ति का करतल अत्यधिक मांस युक्त तथा ऊंचा चढ़ा हुआ हो, वह व्यक्ति स्वार्थी, आत्म-प्रशंसी और विषयान्ध होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति धूर्त, लम्पट और विश्वास घाती होता है। अपने स्वार्थों की सिद्धि के हेतु पर अपने अत्यन्त निकटस्थ तथा अन्यतम प्रेमी व्यक्ति के साथ भी विश्वास घात करने से नहीं चूकता। सदैव अपने मुंह मियां मिट्ठू बना करता है। अपने अणुमात्र कार्य के सम्बन्ध में आकाश-पाताल के कुलावे मिला देता है। इसका चरित्र अत्यन्त घृणित होता है। मनोवृत्ति दूषित होती हैं तथा सदैव कामुक विचारों में डूबा रहता है। कम आयु वाली कुमारी कन्याओं को भ्रष्ट करने के लिये अधिक उत्सुक रहता है। इसकी इन्द्रिय लोलुपता इस सीमा तक बढ़ी होती है कि यह कामान्ध होकर भोग्याभोग्य तक का विचार नहीं रखता और प्रायः इस सम्बन्ध

में अपराध करके कारावास तक भोगता है। कामवासना को शान्त करने के विचार से यह व्यक्ति छोटे बालकों के साथ तथा पशुओं तक से व्यभिचार करने में आगा पीछा नहीं करता।

अत्यन्त कठोर (Very Hard)

जिस व्यक्ति का करतल अत्यन्त कठोर होता है उसमें पशु वृति तथा पशु बुद्धि का प्राबल्य होता है। ऐसे व्यक्ति को 'पुच्छ विषाण हीन पशु' कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी।

पतला और कठोर (Thin and Hard)

जिस व्यक्ति का करतल प्राय: माँस हीन और कठोर हो वह भीरु, निरुत्साही, दुखी और खिन्न स्वभाव का होता है।

बड़ा और कोमल (Large and Soft)

जिस व्यक्ति का करतल आकार में बड़ा और कोमल हो वह आलसी और परिश्रम से घबड़ाने वाला होता है।

सुदृढ़ और मांसल (Firm and Elestic)

जिस व्यक्ति के करतल में मांस अपेक्षा कृत अधिक हो और गठन सुदृढ़ हो, वह शक्तिशाली, साहसी, उत्साही और उद्यमशील होता है।

कोमल और मांसल (Soft and Flabby)

जिस व्यक्ति के करतल में मांस अपेक्षा कृत अधिक हो और वह कोमल भी हो निर्बल, अशक्त, साहस हीन और दीर्घ सूत्री होता है।

यद्यपि उपरोक्त विवेचन मे हमने करतल के आकार-प्रकार गठन, आकृति, घनावट तथा स्वरूप भेद के अनुसार हस्त-विज्ञान वेत्ताओं, महर्पियों तथा आचार्यों के मतों पर पूर्ण प्रकाश डालने की चेष्टा की है, तथापि हस्त परीक्षक को यह स्मरण रखना चाहिये की हस्त-परीक्षा के समय वह प्रत्येक भेद पर गम्भीर मनन करे तथा सभी प्रकार से गूढ़ विचार करके ही व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, भविष्यफल तथा भाग्य के सम्बन्ध मे अपना निर्णय दे।

प्रायः देखा जाता है कि वर्तमान काल के स्वच्छन्द आचार विचार, रहन-सहन, तथा सामाजिक रीति-रिवाजो के कारण मानव समाज में वर्ण-संकरता आ गई है, जिसके फल स्वरूप मानव-शरीर की रचना मे भी सम्मिश्रण होता जा रहा है। इस सम्मिश्रण का परिणाम यह है कि मानव-अंग में शुद्ध लक्षणों का अभाव होता जाता है और शुद्ध लक्षण प्रायः विरले ही व्यक्ति मे दृष्टिगोचर होते हैं। अधिकांशतः मानव-शरीर मे शारीरिक लक्षण मिश्रित ही पाये जाते हैं। अतः परीक्षक को फल निश्चित् करने से पूर्व प्रत्येक लक्षण पर गम्भीर विचार करना आवश्यक है।

अब हम पाठकों के लाभार्थ पौर्वात्य तथा पाश्चात्य आचार्यों के मतानुसार, करतल आकृति-भेद-फल बोधक चक्र देकर करतल गत रंगों का प्रभाव लिखेंगे।

करतल आकृति-भेद फल-बोधक चक्र

पौर्वात्य मतानुसार		पाश्चात् मतानुसार	
करतल भेद	फलादेश	करतल भेद	फलादेश
संवृत-निम्न	वृद्धि, सम्पत्ति, मान	साधारण	वृद्धिमान
उन्नत	दानशील, उदार	समाकार	शुभ फलप्रद
निम्न	पैतृक-धन-हीन	अंगुली-लम्ब	लाभ-प्रद
विपम	क्रूर, दरिद्र, दुष्ट	संकुचित-पतला	भीरु, मंदवुद्धि
रोमशिरा हीन	शुभ फलप्रद	अधिक लम्बा	उत्तम फलदायक
घन मांस	उत्तम, लाभप्रद	संकुचित-पतला सलवटदार	अशुभ
स्निग्ध	शुभ, लाभकारी	छोटा	वाचाल, क्रूर
अनुन्नत-अनिम्न	दुःखद, अशुभ	उन्नत-मांसल मोटा	स्वार्थी
रुक्ष	क्लेश, चिन्ता	कठोर	श्रमजीवी
खर	कलह, दु.ख	अत्यन्त कठोर	पशु वुद्धि, पशुवृत्ति
विवर्ण	विरोध, असफलता	कठोर-लम्बा	साधारण
मृदु-उन्नत	सर्वसुख, सौभाग्य	मृदु	उत्तम
अस्वेदन	शुभ फलदायक	निम्न	भाग्यहीन
मृदु-सुवर्ण	अति श्रेष्ठ, परमसुख	विस्तीर्ण	राजमान,सुख
मृदु	उत्तम, सुखप्रद	संकुचित	अशुभ
कठोर	परिश्रमशील	बहु रेखा	दरिद्री

रेखा-हीन	निर्धन, दुःखी	पतला-कठोर	निरुत्साही दुखी
बहुरेखा	दरिद्री, बुद्धिहीन	बड़ा-कोमल	आलसी, अशुभ
विस्तीर्ण	राजमान, धन, सुख	सुदृढ मासल	उत्साही, सुखी
प्रोतान	दानवीर	कोमल-मासल	निर्बल, दीर्घ सूत्री

करतल का रंग के अनुसार प्रभाव

अरुण (Bright Rod)

जिस व्यक्ति की करतल का वर्ण बाल-सूर्य (उगते हुए सूर्य) के समान ताम्राभ वर्ण हो वह व्यक्ति धन, वैभव सम्पन्न; बुद्धिमान्, आशावादी, उत्साही, दूरदर्शी, नीतिज्ञ, उदार तथा गुणवान होता है। किन्तु इस लक्षण वाले व्यक्ति को रक्त-प्रकोप की सम्भावना अत्यधिक रहती है।

पीला (Yellow)

जिस व्यक्ति का करतल पीतवर्ण का होता है, वह व्यक्ति अगम्यागामी, पर-स्त्री गामी, तथा व्यभिचारी होता है। लक्षण वाला व्यक्ति वास्तव में चरित्र हीन और अत्यन्त दुर्बल मनोवृत्ति का होता है। इसमें योग्यायोग्य का विचार करने की शक्ति प्रायः नहीं के बराबर होती है। इसकी इन्द्रिय लोलुपता इतनी तीव्र होती है कि विषयान्ध होकर यह अगम्यागामी होने से भी पीछे नहीं हटता। इसकी प्रकृति में पित्त का प्रभाव अधिक होता

है। स्वभाव से यह संतप्त होता है। मन्द बुद्धि, अदूरदर्शी, तथा शक्तिहीन होता है। इसके विचार कभी स्थिर नहीं रहते तथा मनोवृत्ति सदैव दूषित रहती है। इस रंग के करतल वाले व्यक्ति पर प्रायः ज्वर; प्लीहा प्रभृति पित्त-रोगों का आक्रमण अधिक होता है।

श्वेत (White)

जिस व्यक्ति के करतल का वर्ण श्वेत होता है- वह स्वार्थी आत्म-प्रशंसक, सहानुभूति-शून्य, क्रूर, कुटिल, विश्वासघाती तथा नीच मनोवृत्ति वाला होता है।

काला (Blck)

जिस व्यक्ति के करतल का वर्ण नीला होता है वह दुःखी, निस्तेज, कोमल-स्वभाव, कफ-प्रकृति, भाग्यहीन, दरिद्री तथा संतप्त होता है। इस व्यक्ति का जीवन सदैव दुःख तथा निराशा से पूर्ण रहता है। इसे सफलता कभी नहीं मिलती।

नीला (Blue)

जिस व्यक्ति का करतल का वर्ण नीला होता है। वह मद्यप, व्यसनी, तथा व्यभिचारी होता है। विचारों की दृढ़ता तथा चरित्र की दृढ़ता इस व्यक्ति में स्वप्न में भी नहीं होती। इसके विचार पूर्ण रूपेण निर्बल होते हैं।

रक्ताभ (Booldy)

जिस व्यक्ति के करतल का वर्ण शोणित (रक्त) के समान लाल होता है, वह धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। इस लक्षण वाला

व्यक्ति भाग्यशील, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, विचारशील, गुणवान, दूरदर्शी तथा मेधावी होता है।

लाक्षाभ

जिस व्यक्ति के करतल का वर्ण लाख (लाक्षा) के रंग के समान लाल होता है वह वराहमिहिर के मतानुसार राजा होता है।

भूरा (Tint-Colour)

जिस व्यक्ति के करतल का वर्ण भूरा होता है वह निस्तेज और पुंसत्वहीन होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः नपुंसक होते हैं और स्त्रियों के समान आचरण करने वाले होते हैं। दैवयोग से यदि नारि का करतल भूरे रंग का हो तो वह वंध्या होती है।

गुलाबी (Rosy)

जिस व्यक्ति का करतल गुलाबी रंग का होता है वह सर्वोत्तम लक्षण-सम्पन्न होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः सभी गुण विद्यमान रहते हैं। वह तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पन्न, मेधावी, गुणी, न्याय-बुद्धि, पराक्रमी, बुद्धिमान, दूरदर्शी, विचारशील, दृढ़ निश्चयी, उत्तम मनोवृति वाले, महत्वाकांक्षी, धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न, उपकारी, सहिष्णु, परिश्रमी, साहसी तथा उत्साही होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल होते हैं।

करतल के सम्बन्ध में विशेष-विचार

उन्नत-करतल

जिस व्यक्ति का करतल उन्नत हो वह शारीरिक शक्ति की अपेक्षा मानसिक तथा बौद्धिक शक्ति में विशेष प्रबल होता है।

ऐसा व्यक्ति तार्किक तो अवश्य होता है किन्तु व्यर्थ एवं अर्थ-हीन वाद-विवाद से वह सदैव दूर ही रहता है, वह विचारशील चतुर, स्वाधीन चेता, व्यवहार-कुशल, नीतिज्ञ, तथा बुद्धिमान होता है। उसकी मनोवृत्ति स्वार्थ की ओर विशेपरूप से प्रभावित रहती है और अपना स्वार्थ साधने के लिए वह छल-बल तथा कौशल का अपनी पूर्ण शक्ति से उपयोग करता है। अवसर पड़ने पर ऐसा व्यक्ति विश्वासघात शत्रुता तथा महान अनिष्ट करने तक से नहीं चूकता।

इस लक्षण वाला व्यक्ति 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे हैं' की श्रेणी का होता है। वह गुप्त रहस्य को यत्न पूर्वक गोपनीय रखता है। किसी भी काम मे वह बाधाओं की चिन्ता नहीं करता और कठिन से कठिन कार्य करने के लिये भी उत्साहित रहता है। यह विचार का दृढ़ होता है। इसका सम्पर्क विशेपतः निम्न श्रेणी के व्यक्ति के साथ होता तथा वह अपनी जीविका म्लेच्छ या नीच संसर्ग से ही अर्जन करता है। नीच कार्यों द्वारा धन-संचय करने की ओर इस लक्षण वाला व्यक्ति विशेप रूप से प्रवृत रहता है।

अनुन्नत-करतल

जिस व्यक्ति का करतल अनुन्नत होता है, वह पैतृक सम्पत्ति का नाशक, कलह-प्रिय, अपव्ययी, निस्तेज, और शक्ति-हीन होता है। प्रायः निरर्थक वाद-विवाद और झगड़ों में उसे विशेप रुचि रहती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः चरित्रहीन होता है और विपयान्ध

होकर उचितानुचित काफी विचार नहीं करता। फलतः यौवनावस्था में प्रायः जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगों का आखेट बना रहता है। यह स्वभाव का कुटिल और लम्पट होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को प्रौढ़ावस्था में उदर रोग तथा शिरोरोग अधिक सताते हैं।

करतल का अनुन्नत होना अशुभ लक्षण है। इस सम्बन्ध में प्रायः देखा गया है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति निर्धन, चिंतातुर और क्रोधी होते हैं। इन्हें क्षय-रोग की सम्भावना भी बनी रहती है। इसका भाग्य सदैव डांवा डोल रहता है। ऋण लेकर ये प्रायः कम ही चुकाते हैं। साथ ही यदि ये किसी को उधार दे दें तो वह इन्हें वापिस नहीं मिलता। ऐसे व्यक्ति प्रायः पराश्रित होकर ही जीवन यापन करते हैं। इन्हें मातृ-पक्ष (नाना-मामा आदि) का सुख प्रायः प्राप्त नहीं होता।

अष्टम परिच्छेद

कर-पृष्ठ-परिचय

मणिबन्ध, अंगुष्ठ, अंगुलियां, नख, करतल आदि के समान ही कर-पृष्ठ भी अपना विशेष स्थान रखता है। हस्त-विज्ञान विशेषज्ञों ने यद्यपि इस विषय पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया है और कर-पृष्ठ के सम्बन्ध में हाथ के अन्य अंग-प्रत्यंगों की तुलना में बहुत ही कम-विवरण प्राप्त होता है, तथापि जितना भी प्राप्त है वह भी अपनी विशिष्ठ महत्ता रखता है। कर-पृष्ठ के द्वारा भी मानव-जीवन पर पर्याप्त-प्रकाश उपलब्ध होता है। पाठकों की ज्ञान-वृद्धि के लिये हम इस सम्बन्ध से महर्षियों तथा आचार्य के प्रमाणिक मत यहां लिखते हैं।

शुभ कर-पृष्ठ के लक्षण

कर-पृष्ठ पर केश नहीं होने चाहियें। विस्तीर्ण (लम्बा-चौड़ा तथा फैला हुआ) सुदृढ़ (कठोर किन्तु कोमल), पुष्ट (मांस से परिपूर्ण), उन्नत (कछुये की पीठ के समान ऊंचा उठा हुआ), शिरा-रहित (जिस पर नाड़ियों का जाल दृष्टिगोचर न होता हो), तथा सुडौल (जिसका आकार-प्रकार तथा गठन दर्शनीय हो) कर-पृष्ठ उत्तम होता है। इस प्रकार के कर-पृष्ठ वाला व्यक्ति उत्तम श्रेणी का होता है। उसका जीवन धन-ऐश्वर्य सम्पन्न तथा सुखी रहता है। वह बुद्धिमान, नीतिज्ञ, दूरदर्शी, मेधावी, उत्साही,

पराक्रमी, दानी, उदार, सहिष्णु, परोपकारी, प्रबल इच्छा-शक्ति-सम्पन्न, उन्नत विचारों वाला, मन्त्रायोगी, तथा श्रेष्ठ आचरणों वाला होता है।

अशुभ कर-पृष्ठ के लक्षण

विरूपाकृति, सिकुड़ा हुआ, जिस पर सलवटें पड़ी हों, नीचे दबा हुआ, पतला, जिसमें गड्ढा-सा पड़ा हुआ हो, जो ढीला-ढाला सा हो, जिसमें मांस की अत्यधिक न्यूनता के कारण हड्डियाँ तथा नसें उभरी हुई प्रतीत होती हों, तथा जिसमें अत्यधिक केश हों—ऐसा कर-पृष्ठ अशुभ माना है। इस प्रकार के कर-पृष्ठ वाला व्यक्ति नीच मनोवृत्ति का होता है। ऐसा व्यक्ति चरित्र-हीन, धूर्त, कपटी, आलसी तथा क्रूर होता है। वह प्रायः व्यभिचारी होकर तत्सम्बन्धी प्रयत्नों में ही सदैव संलग्न रहता है। उसकी कामुकता इतनी अधिक तीव्र होती है कि कामान्ध होकर वह भोग्याभोग्य का भी विचार नहीं रखता। ऐसा व्यक्ति प्रायः कम उम्र की कुमारी कन्याओं को भ्रष्ट करने से सिद्धहस्त होता है। पराई स्त्री और पराये धन पर उसकी गिद्ध-दृष्टि लगी रहती है। अपने स्वार्थ-साधन के हेतु वह जघन्य से जघन्य काम करने में भी आगा-पीछा नहीं करता। अपने अत्यन्त निकटस्थ सम्बन्धियों यहां तक कि स्त्री, पुत्र, माता, पिता और भाई तक के साथ विश्वासघात करने में उसे लज्जा नहीं आती है। आलस्य और प्रमाद उसके जीवन-साथी होते हैं। ईर्षा और क्रोध भी उसमें अत्यन्त उग्र रूप में होते हैं। संक्षेप में ऐसे लक्षणों से युक्त

कर-पृष्ठ वाले व्यक्ति प्रायः दुर्गुणों की खान होते हैं। यदि स्त्रियों
५. कर-पृष्ठ इस लक्षण के हों तो वह प्रायः विधवा होती हैं।

कर-पृष्ठ पर विस्तृत विचार

जिस व्यक्ति के कर पृष्ठ पर अत्यधिक केश हों, वह चंचल मनोवृत्ति का होता है। उसकी विचारधारा किसी एक विषय पर स्थिर नहीं रहती। वह क्षण भर में यह सोचता है और दूसरे ही क्षण वह सोचने लगता है। इस प्रकार की उसकी कार्य-प्रणाली भी होती है।

जिस व्यक्ति के कर पृष्ठ पर केश बिल्कुल न हों अर्थात् जिसका कर पृष्ठ सर्वथा केश-रहित (साफ) हो, वह मूर्ख और तर्कहीन रहता है। ऐसा व्यक्ति कायर होता है। उसकी मनोवृत्ति भीरु होती है। साधारण-सी बात से उसका दिल धड़कने लगता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति पुरुषत्वहीन और प्रायः नपुंसक होता है।

जिस व्यक्ति के कर-पृष्ठ पर थोड़े, छोटे और कहीं-कहीं अथात् दूर-दूर पर केश होते हैं वह दूरदर्शी और चतुर होता है। ऐसे व्यक्ति महत्वाकांक्षी, उदार तथा उपकारी मनोवृत्ति वाला होता है। ऐश्वर्य-सुखोपभोग की इस लक्षण वाले व्यक्ति को बहुत इच्छा रहती है।

जिस स्त्री के कर-पृष्ठ पर अंगुष्ठ पर केस हों वह निर्दयी, निर्मम तथा हृदय हीन होती है। ऐसे लक्षण वाली स्त्री प्रायः क्रूर-कर्मा होती है।

जिस व्यक्ति के कर-पृष्ठ में अंगुष्ठ पर केश हों वह बुद्धिमान दूरदर्शी, चतुर तथा नीतिज्ञ होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति मेधावी तथा विद्वान होता है।

जिस व्यक्ति के कर-पृष्ठ पर अंगुलियों के ऊर्ध्व पर्व के पृष्ठ-भाग पर केश हों वह कठोर-हृदय वाला होता है। भीषण से भीषण दृश्यों अथवा परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। भावुकता जन्य दया अथवा सहानुभूति तो उसे स्पर्श तक नहीं करती। ऐसे व्यक्ति एक प्रकार से लौह-पुरुष ही होता है।

जिस व्यक्ति की अंगुलियों के पृष्ठ-भाग (समस्त पर्वों) पर केश हों वह उग्रस्वभाव वाला होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति क्रोधी तथा तमोगुणी होता है। वह प्रत्येक काम में गड़बड़झाला उत्पन्न करने वाला होता है।

नवम परिच्छेद

ग्रह-क्षेत्र

पाठकों को स्मरण होगा कि हम गत परिच्छेदों में हाथ में देवताओं के स्थानों अथवा क्षेत्रों की चर्चा कर आये हैं। सामुद्रिक शास्त्र-वेत्ता हमारे महर्षियों, अचार्यों तथा मुनियों ने मनुष्य के हाथ में देव-स्थानों की कल्पना की है। हस्त विज्ञान के पाश्चात् विद्वानों ने भी मानव-हस्त की स्थिति स्वीकार की है और इन स्थितियों के अनुसार सम्बन्धित देवताओं अथवा ग्रहों का मानव-जीवन पर अकाट्य प्रभाव भी उन्होंने स्वीकार किया है। वास्तव में शरीर-विज्ञान की दृष्टि से भी देखा जाय तो यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि मानव-हस्त पर महर्षियों द्वारा कल्पित देव अथवा ग्रह स्थान कोरी कल्पना में मानव-जीवन-विज्ञान का गूढ़तम रहस्य गागर में सागर की भांति भरा हुआ है। अनुभव ने यह प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया है कि हस्त-स्थित ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति का मानव-जीवन पर खटीक प्रभाव होता है। यही कारण है कि भारत की इस रहस्य-पूर्ण विद्या में अलौकिक चमत्कार के प्रखर प्रकाश में सम्मुख सभ्यता के ठेकेदार तथा आधुनिक-विज्ञान के अनन्य भक्त भी नत मस्तक होते जा रहे हैं। प्रस्तुत परिच्छेद में हम पाठकों के लाभार्थ इन ग्रह-क्षेत्रों का विस्तृत वर्णन करेंगे।

"भाई ! अधिक तो मैं नहीं जानता । हां इसकी परीक्षा अवश्य कर सकता हूँ और परीक्षा करके इतना तक बता दूंगा कि यह आपको किस परिमाण में हानिकारक है ।"

"अच्छा तो यही सही । कहिये कब और कैसे इसकी परीक्षा होगी ?"

इसकी परीक्षा में सात दिन लगेंगे और किसी विद्वान ब्राह्मण को अनुष्ठान करना होगा । महाशय जी को इतना समय हो तो देख लीजिये ।"

अन्त में परीक्षा की गई और वह माणिक्य उनको आठ विस्वा हानिकारक निकला ।

इसके द्वारा हम अपने पाठकों को यह बताना चाहते हैं कि यदि वे सम्बन्धित ग्रह का रत्न ग्रहण करना चाहते हैं तो उसकी परीक्षा अवश्य करलें अन्यथा विपरीत परिणाम होने की संभावना उपस्थित हो सकती है । यदि कहीं परीक्षा की सुविधा न हो तो निम्न पते पर हमें लिखकर हम से परीक्षा करवा सकते हैं—

श्री रामेश्वर प्रसाद मोडिया, मोडिया-हाउस
राजगढ़ (अलवर), राजस्थान ।

ग्रहों के विशिष्ट-स्थान का रहस्य

मानव-हस्त पर नियत ग्रह स्थानों पर साधारण दृष्टि डाली जाय तो प्रतीत होता है कि विभिन्न ग्रहों का स्थान ग्रहों के साधारण क्रम के विचार से पूर्ण-रूपेण अटपटा-सा है । उन में कोई क्रम नहीं है । ऐसी दशा में स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है

कि ऐसा क्यों किया गया है ? यह तो हो नहीं सकता कि इस अलौकिक मानव-जीवन-विज्ञान के आविष्कर्ताओं ने इस विषय में असावधानता अथवा प्रमाद किया हो। अवश्य ही इसमें कोई रहस्य है पाठकों की उत्सुकता पूर्ण जिज्ञासा को शान्त करने के हेतु हम स्थान-नियुक्ति के इस गूढ़तम रहस्य को निम्न पंक्तियों में स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

मानव-हस्त पर ग्रह का स्थान नियत करने में हमारे महर्षियों ने अपने बुद्धि-चातुर्य्य, गम्भीर अध्ययन, व्यवहार कुशलता और मानव-शरीर-विज्ञान की अद्वितीय ज्ञान-गरिमा का अभूत पूर्व परिचय दिया गया है। यदि अनुसन्धानात्मक दृष्टि से मानव-हस्त पर नियत ग्रह-क्षेत्रों का अध्ययन किया जाय और साथ ही साथ ग्रहों के व्यक्तित्व, गुण-दोष, स्वभाव आदि के साथ उनके सम्बंधि स्थान विशेषों की मानव-जीवन मे व्यवहारिक उपयोगता पर विचार किया जाय तो यह अनायास ही स्पष्ट हो जायगा कि ग्रह-क्षेत्रों की नियुक्ति में प्रधानत' तीन विषयों पर मार्मिक अध्ययन किया गया है। जिन तीन विषयों के गवेषणात्मक अध्ययन के परिणाम स्वरूप मानव-हस्त पर ग्रह-क्षेत्रों की नियुक्ति की गई है, वे निम्नलिखित हैं—

१—ग्रहों का व्यक्तित्व, गुण-दोष, स्वभाव तथा चेष्टा।

२—मानव-जीवन में सम्बन्धित स्थानों की व्यवहारिक उपयोगिता।

३—शरीर-विज्ञान के आधार पर सम्बन्धित स्थानों का मानव जीवन मे महत्व।

उपरोक्त तीनों विषयों का गम्भीरतम एवं गूढ़तम अध्ययन तथा उनका अलौकिक समन्वय ही मानव-हस्त पर ग्रहक्षेत्रों की नियुक्ति की कुञ्जी किंवा रहस्य है। निम्न पंक्तियों में हम प्रत्येक ग्रह के स्थान का पृथक-पृथक विश्लेषण करके पाठकों की शंका को निर्मूल करेंगे।

सूर्य-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

भौतिक जगत् के अन्धकार को दूर करने का महत्व सूर्य देव को ही प्राप्त है। इसके अतिरिक्त सूर्य की गरमी के द्वारा ही प्राणियों में जीवन-शक्ति का संचार होता है। यदि सूर्य न हो तो समस्त ब्रह्माण्ड शीत में ठिठुर कर समाप्त हो जाय। इसके अतिरिक्त सूर्य देव में एक विशेषता यह है कि उनका प्रकाश और ताप भूतल पर शनैः २ बढ़ता है किन्तु नियमित रूपसे बढ़ता है।

अब अनामिका अंगुली का अध्ययन कीजिए। हाथ की अन्य सभी अंगुलियों की अपेक्षा यह विशेष रूप से नियमित है। यह अपना काम निर्धारित मार्ग पर निश्चित-भाव से करती है। किसी प्रकार की विशेष हलचल पर उखाड़-पछाड़ अनामिका अंगुली के स्वभाव के विपरीत है। यही कारण है कि इसका स्वामी सूर्य देव नियुक्त किया गया है और इसके मूल-स्थान में ही सूर्यक्षेत्र निर्धारित है

यह हस्तगत रेखाओं की दृष्टि से इस सम्बन्ध में विचार किया जाय तो विदित होता है कि सूर्य क्षेत्र की रेखायें व्यक्ति के यश और समृद्धि को बताने में ही अपना विशिष्ट महत्व रखती हैं।

इधर यश और समृद्धि का उत्थान अथवा प्रसार शनैः २ ही होता है। अतः यह स्थान सूर्य के लिए सर्वथा उपयुक्त है। पाठक देखेंगे कि उपरोक्त प्रमाणों के आधार इस क्षेत्र की नियुक्ति में शास्त्र-कारों ने कितना बुद्धि-चातुर्य तथा मेधा का उपयोग किया है।

चन्द्र-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

चन्द्र देव मधुरता का अधिष्ठता है तथा स्वच्छ, शुद्ध एवं शीतल जल के समान ब्रह्माण्ड को शीतलता और शान्ति प्रदान करता । चन्द्र देव की ज्योत्सना किंवा चांदनी की मधुरता प्रत्येक ऋतु में प्राणियों को अपनी ओर आकर्षित करती है। शरद् पूर्णिमा की चांदनी का तो अमृत-के-तुल्य महत्व माना गया है। चन्द्रमा की प्रकृति शीतल और शान्ति-दायक है।

अब करतल-गत चन्द्र-क्षेत्र का अध्ययन कीजिये। हाथ के अन्य सभी भावों की अपेक्षा यह भाग अधिक शीतल रहता है। वैसे भी श्रान्त व्यक्ति विश्राम के लिये पृथ्वी पर बैठते समय जब हाथ का सहारा लेने के विचार से हाथ पृथ्वी पर टिकाता है तो यही भाग सर्व प्रथम पृथ्वी पर टिक कर श्रान्त व्यक्ति को शान्ति प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह भाग चन्द्र देव के समान ही अपेक्षाकृत अधिक कोमल, स्निग्ध और मधुर प्रतीत होता है।

उपरोक्त दोनों विषयों का समन्वय करने पर अनायास ही यह निष्कर्ष निकलता है कि शीतल और शान्ति-प्रद स्वभाव वाले ग्रह-विशेष—चन्द्रदेव का मानव-हस्त गत अपेक्षाकृत शीतल और

विश्रामदायक यह स्थान उनके सर्वथा उपयुक्त है और इस स्थान को निश्चित करने में शास्त्रकारों ने निस्सन्देह अपनी अलौकिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

यदि चन्द्रक्षेत्र गत रेखाओं तथा अन्य लक्षणों का विचार किया जाय तो विदित होता है कि इस क्षेत्र की रेखायें तथा अन्य लक्षण व्यक्ति के सदाचार, दयालुता, कल्पना शक्ति आदि के सम्बन्ध में अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं। सदाचार, दयालुता आदि गुण शान्ति-प्रियता और प्रकृति की शीतलता के ही परिणाम होते हैं। उग्र प्रकृति वाले व्यक्ति में दया की भावना का सर्वथा लोप न भी हो तो भी उसे अत्यन्त सूक्ष्म परिमाण में ही दया-भावना प्रभावित करती है। इधर तामसिक प्रवृत्ति होने पर व्यक्ति में सदाचार की निर्बलता ही पाई जाती है। अतः यह स्थान प्रत्येक दृष्टि से चन्द्र-क्षेत्र के सर्वथा उपयुक्त ही है।

मंगल-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

मंगल-देव स्वभाव के स्थिर, विचारों के दृढ़ तथा मनोवृत्ति के निश्चित हैं। इनकी रुचि भौतिक पदार्थों की ओर विशेष रूप से आकृष्ट रहती है। इनका दूसरा नाम भौम भी है। भौम का अर्थ है भूमि-सुत। अतः स्वभावतः इन्हें भूमि (जो कि इनकी माता है) से अधिक प्रेम होना चाहिए। इधर इनमें अन्याय सहने की यत् किंचित भी क्षमता नहीं है। ये सदैव न्याय के आधार पर दूसरों पर अपना प्रभाव डालने की अभिलाषा रखते हैं।

मानव-हस्त पर इनका स्थान दो स्थानों पर है। एक शुभ क्षेत्र तथा गुरु क्षेत्र के मध्य में, दूसरा पहले के एकदम दूसरी ओर

चन्द्र क्षेत्र तथा बुध क्षेत्र के मध्य में। अपनी बुद्धि के अनुसार व्यक्ति जब न्याय के पक्ष में खड़ा होता है और न्याय के लिए संघर्ष में जूझता है तो अपने हाथ के इस भाग के आधार पर ही वह न्याय-दण्ड को ऊंचा उठाता है। लाठी, तलवार आदि भी हाथ के इसी भाग के आधार पर उन्नत होकर अपना कौशल दिखाती हैं।

अब इस स्थान पर स्थित रेखाओं और अन्य लक्षणों पर भी विचार कर लेना चाहिए। इस स्थान की रेखाओं तथा अन्य लक्षणों से व्यक्ति का भौतिक वैभव, महत्वाकांक्षा, साहस, पराक्रम तथा धर्माधर्म में रुचि का आभास होता है। व्यक्ति की युद्ध-प्रियता का भी इससे पता लगता है।

उपरोक्त विषयों का समन्वय करने से प्रकट होता है कि मंगल का यह स्थान सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि मंगल के दोनों क्षेत्र दृढ़ और कोमल होंगे तो व्यक्ति स्वभावतः ही पराक्रमी होगा और किसी भी अन्याय को वह किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं करेगा। इस लक्षण वाला व्यक्ति सदैव न्याय की शक्ति से ही अपना प्रभाव स्थापित करेगा।

मंगल की स्थिति अथवा मंगल-क्षेत्र से विशेषतः युद्ध प्रियता का अधिक स्पष्ट ज्ञान होता है। यदि यह दोनों क्षेत्र स्वस्थ तथा श्रेष्ठ स्थिति में होंगे तो व्यक्ति संघर्ष में सदैव विजय प्राप्त करेगा और अपने भाग्य का स्वयं ही निर्माण करेगा। दूसरों का आश्रय ग्रहण करना उसे कभी भी स्वीकार नहीं होगा। मंगल देव की

यह संघर्ष-प्रियता ही मानव हस्त में उसे इन स्थानों का आधिपत्य प्राप्त करने में सहायक हुई है। क्योंकि युद्ध किंवा संघर्ष काल में हाथ के इन्हीं भागों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

कहावत भी है—'जर, जमीन और जोरू जोर की जोर घटे पर और की।' संसार का इतिहास डंके की चोट पुकार-पुकार कर कह रहा है कि संघर्ष किंवा युद्ध सदैव धन पृथ्वी और स्त्री में से किसी एक या अधिक के लिये ही हुये हैं। इधर मंगल-देव ठहरे भूमि सुत। भूमि की संज्ञा स्त्रीलिंग है। भला पुत्र माता का अपमान कैसे सह सकता है। अतः मंगल देव के ये दोनों क्षेत्र उनके सर्वथा उपयुक्त हैं।

बुध क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

बुध देव मानसिक गति विधि, व्यापार, विज्ञान आदि के देवता हैं। ये सभी काम शान्ति में विशेषतः सफल और उन्नत होते हैं। मन में शान्ति होगी तब ही वह अच्छी विचार धाराओं को स्थान देगा। देश में शान्ति होगी तब ही व्यापार, विज्ञान आदि का प्रसाद तथा अभ्युदय होगा। इस प्रकार बुध देव शान्ति प्रिय देवता हैं।

कनिष्ठका अंगुली हाथ की सभी अंगुलियों से छोटी और अपेक्षा कृत निर्बल है। साथ ही यह अंगुली प्रत्येक कार्य में सबसे पहले नत होती है। इसका प्रमुख कार्य प्रायः दूसरी अंगुलियों की सहायता करना ही है। प्रायः देखा जाता है कि सहायक का कार्य या तो निर्बल करते हैं अथवा शान्ति प्रिय होते हैं वह करते हैं।

इधर इस क्षेत्र की रेखाओं तथा अन्य लक्षणों से व्यक्ति की मानसिक स्थिति, जीविकार्जन तथा विचार धारा का आभास होता है। इन तीनों चीजों के लिए भी शान्ति की अत्याधिक आवश्यकता है।

उपरोक्त अध्ययन का समन्वय करने पर स्पष्ट हो जाता है कि मानव-जीवन में शान्ति-प्रिय साधनों के द्वारा सफलता और अभ्युदय का स्वामित्व शास्त्रकारों ने बुध देव को सौंप कर निःसन्देह क्षेत्र विभाजन में अपने बुद्धि कौशल का अद्भुत परिचय प्रदर्शित किया है।

बृहस्पति-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

बृहस्पति देवताओं के गुरु माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त बृहस्पति को विद्या, बुद्धि, मेधा आदि का अधिष्ठाता भी स्वीकार किया गया है। शान्ति और अहिंसा का कार्य भी बृहस्पति को ही सौंपा गया है। बुद्धिवादी होने के नाते बृहस्पति के लिए ये सभी कार्य सर्वथा उपयुक्त एवं उनके सम्मान को बढ़ाने वाले हैं। इच्छा शक्ति, कल्पना शक्ति और महत्त्वाकांक्षी भी इन पर आश्रित हैं। अनुशासन स्थापित करना तथा ताड़ना देना भी इन्हीं का काम है।

मानव-हस्त में तर्जनी अंगुली का उपयोग विशेषतः पढ़ने लिखने के काम मे होता है। ताड़ना भी इसी अंगुली से दी जाती है। निर्देशन कार्य में अथवा संकेत करने में भी इसी अंगुली का विशेष प्रयोग होता है। यदि सच पूछा जाय तो बुद्धि, बै

सम्बन्धित प्रत्येक कार्य का भार तर्जनी अंगुली पर ही है। अनुशासन तथा शान्ति की स्थापना एवं फसाद में भी तर्जनी को ही पिलना पड़ता है।

बृहस्पति के इस क्षेत्र से विद्या, बुद्धि आदि का हो विशेष रूप से परिचय मिलता है। इन सब विषयों का तुलनात्मक अध्ययन करके उनका परस्पर समन्वय करने से यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि बृहस्पति के लिये मानव हस्त के इस स्थान का स्वामित्व सर्वथा उपयुक्त है।

शुक्र-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

मानव हस्त मे शुक्र देव का क्षेत्र अंगुष्ठ के मूल-स्थान पर है। शुक्र के दो अर्थ हैं। एक तो इस शब्द से महर्षि शुक्राचार्य, जो कि असुरों के महा-पराक्रमी तथा विद्वान गुरु थे, का बोध होता है, दूसरे शुक्र का अर्थ वीर्य माना गया है।

असुर लोग शारीरिक शक्ति में दूसरे लोगों से विशेष पराक्रमी होते हैं—यह सवमान्य बात है। उनका गुरु कितना नीतिज्ञ और पराक्रमी तथा साहसी वीर होगा यह बात प्रमाण देकर समझाने की आवश्यकता नहीं है। इस दृष्टिसे शुक्र का यह क्षेत्र उनके सर्वथा उपयुक्त है। क्योंकि अंगुष्ठ हस्त-गत सभी अंगुलियों में विशेष प्रबल तथा बल शाली है।

अब यदि हम शुक्र का अर्थ वीर्य लेते हैं तो शुक्र से ही मानव-पराक्रम का आभास मिलता है और यही उसके स्वरूप होने का भी प्रमाण है। संसार में भाई-बहिन आदि भी मनुष्य की

शक्ति के ही द्योतक हैं और कतिपय आचार्यों के मतानुसार इस क्षेत्र गत रेखाओं द्वारा भाई-बहिन आदि का अनुमान भी किया जाता है। अतः प्रत्येक दृष्टि से शुक्र देव का यह क्षेत्र उनके सर्वथा उपयुक्त है। शास्त्रकारों का यह निर्णय अवश्य ही उनकी प्रतिभा का प्रबल प्रमाण है।

शनि-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

शनिदेव स्वभाव से ही उग्र हैं। प्रायः सभी देवताओं के साथ इनकी चख-चख चलती रहती है। इनके सम्बन्ध में अधिकांश वार्तायें अथवा कथायें इनकी निर्दयता, क्रूरता तथा उपहासास्पद विषयों पर ही प्राप्त होती हैं। इनका स्वरूप भी बेडोल और भयानक है।

मध्यमा अंगुली भी हाथ की अन्य सभी अंगुलियों की तुलना में बेडोल और बढ़ी-चढ़ी हुई होती है। इसका प्रयोग भी प्रायः क्रूरता पूर्ण कामों में ही अधिक होता है। अथवा उपहासास्पद विषयों में संदेह आदि के लिये भी इसका प्रयोग करते हैं।

इस स्थान पर की रेखायें तथा अन्य लक्षण भी हीन मनोवृत्ति के परिचायक कार्यों का ही बोध कराते हैं।

उपरोक्त बातों का मनन-पूर्वक अध्ययन करने से तथा उनका तुलनात्मक सम्बन्ध करने से हस्त-विज्ञान वेत्ताओं द्वारा नियुक्त मानव-हस्त में शनिदेव का स्थान उनके सर्वथा उपयुक्त है। 'जैसी तेरी घूघरी वैसे मेरे गीत' वाली कहावत के अनुसार शास्त्रकारों ने शनि-क्षेत्र की नियुक्ति शनि देव की उपयुक्तता के अनुसार

ही की है। सामुद्रिक शा त्र के आचार्यों का यह निर्णय सर्वांश में प्रशंसनीय है।

राहु-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

राहु वास्तव में असुर है, किन्तु उसकी देव वैभव के प्रति अत्यधिक आकांक्षा ने ही उसे प्रेरित किया और उसने देव-रूप धारण कर अमृत पीने का प्रयास किया। चूंकि उसने देवताओं के मध्य में घुसने के दुस्साहस का परिचय दिया था, इस तथ्य को दृष्टि में रख कर राहु क्षेत्र के सम्बन्ध में विचार किया जाय तो शास्त्र-कारों के इस निर्णय के लिये उनके बुद्धि चातुर्य की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

मानव-हस्त मे करतल के मध्य भाग में राहु-क्षेत्र नियत करके शास्त्रकारों ने यहां भी राहु को सब देवताओं से घेर दिया है। वैसे भी हाथ के इस भाग से ऐश्वर्य का ही ज्ञान विशेपरूप से होता है और राहु भी ऐश्वर्य का लोभी होकर ही देवताओं के बीच मे आकर बैठा था। अतः यह स्थान उसके सर्वथा उपयुक्त है।

केतु-क्षेत्र की नियुक्ति का रहस्य

केतु का आकार मस्तकहीन है। यह राहु का ही धड़ है। समुद्र-मन्थन के पश्चात् जब देवताओं मे अमृत बांटा जा रहा था तो यह भी अमरत्वाकांक्षा से देवताओं का छद्मवेष बना कर सूर्य देव और चन्द्र देव के मध्य मे जाकर बैठ गया। यद्यपि माया-द्वारा रचित इसका छद्मवेष सभी प्रकार से इसे देवता के

अनुरूप ही बना चुका था, किन्तु सूर्य देव और चन्द्र देव से इसका छल छिपा न रहा। उन्होंने पहचान लिया कि यह असुर है और इस प्रकार कपट नीति से अमृत-पान कर लेने पर यह अमर हो जायगा तो देवताओं के लिए महान समस्या बन जायगा। अतः जब विष्णु भगवान क्रमशः देवताओं में अमृत वितरण करते हुए इस तक आये और इसे भी अमृत दे दिया तो आगत भय की आशंका से सूर्य देव और चन्द्र देव का हृदय कांप उठा। साथ ही असुरों के प्रति उनकी जन्मजात शत्रुता के भाव भी प्रबल हो उठे और उन्होंने भगवान विष्णु को संकेत द्वारा बताया कि यह तो असुर है। आप इसे अमृत-पान कराकर हमारे लिये कराल आपत्ति क्यों पैदा कर रहे हैं। सूर्य देव और चन्द्र देव के द्वारा यह रहस्य प्रकट होते ही भगवान विष्णु ने इस असुर का मस्तक सुदर्शन चक्र से काट डाला। किन्तु इसी बीच में वह अमृत-पान कर चुका था और अमृत उसके गले तक पहुंच चुका था। अतः यह अमर हो गया। मरा नहीं तथा इसका मस्तक राहु और धड़ केतु कहलाया।

अब व्यवहारिक दृष्टि से देखिये। यद्यपि मानव-जीवन के प्रत्येक कार्य का संचालन मस्तक के अनुशासनानुसार होता है तथापि धड़हीन मस्तक व्यर्थ ही है। मस्तक का आधार धड़ ही है और उसी की दृढ़ता पर मस्तक की प्रतिभा और अभ्युदय निर्भर करता है।

इस न्याय के आधार पर यदि हाथ में केतु स्थान का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन का अत्यन्त

महत्वपूर्ण अंग हाथ भी अपने आधार-स्थान मणिबन्ध की दृढ़ता पर ही निर्भर करता है। मणिबन्ध जितना दृढ़, पुष्ट तथा स्वस्थ होगा हाथ उतना ही श्रेष्ठ होगा। पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि इस दृष्टि से केतु का स्थान मणिबन्ध में स्थित करके सामुद्रिक-शास्त्रवेत्ताओं ने कितना महत्वपूर्ण बुद्धि-कौशल प्रदर्शित किया है।

अब रेखाओं की दृष्टि से केतु क्षेत्र का विचार किया जाय तो प्रकट होता है कि इस क्षेत्रगत रेखाओं तथा शुभाशुभ लक्षणों से मनुष्य की आर्थिक-स्थिति का विशेष रूप से ज्ञान होता है। यदि वास्तव में देखा जाय तो मानव-जीवन में सफलता और सौख्य का मुख्य आधार आर्थिक-स्थिति ही है। यदि आर्थिक-स्थिति निर्बल हो तो संसार में सर्वत्र ही मनुष्य तिरस्कार का भाजन होता है और आर्थिक-स्थिति प्रबल हो तो उसके सभी अवगुण छिप जाते हैं। फिजूल खर्ची को दरिया-दिली की प्रतिष्ठा मिल जाती है। दिल-हीनता को सुखोपभोग की, धूर्तता को कूटनीति की—तात्पर्य यह है कि धन के चमत्कार से उसके दोष भी गुणों का स्वरूप बन जाते हैं। किन्तु यह सब आर्थिक-स्थिति की प्रबलता पर निर्भर करता है, क्योंकि यही मानव के लौकिक-जीवन का आधार है।

अब उपरोक्त सभी विवेचन, विश्लेषण आदि का तुलनात्मक सम्बन्ध करने पर केतु महाराज के क्षेत्र की उपयुक्तता निर्विवाद सिद्ध हो जाती है। जैसा कि ऊपर बता चुके हैं, केतु मानव-शरीर का आधार है और हस्त-स्थित केतु-क्षेत्र मानव-जीवन के

प्रधान आधार आर्थिक-स्थिति का द्योतक है। अतः दोनों के सामंजस्य को देखते हुये मानव-हस्त में केतु-क्षेत्र की नियुक्ति केतु महाराज के सर्वथा उपयुक्त है।

उपरोक्त विवरण से पाठकों को स्पष्टतः विदित हो गया होगा कि हाथ में ग्रहों के क्षेत्रों की कल्पना कोरी कल्पना नहीं है, वरन् इसके ठोस कारण हैं जो मानव शरीर-विज्ञान तथा सौर-मण्डल मे अद्भुत सामञ्जस्य स्थापित करके ही नियत किये गये हैं।

ग्रहों के विविध नाम

सामुद्रिक-शास्त्र के विभिन्न ग्रन्थों में विचित्र स्थानों पर ग्रहों के विभिन्न नामों का प्रयोग किया गया है। यद्यपि एक ही ग्रह के पर्यायवाची होने के कारण इस प्रकार प्रयुक्त नामों से तत्सम्बन्धित ग्रह का ही बोध होता है, किन्तु जन-साधारण इन सभी नामों से अपरिचित होता है। इसका परिणाम यह होता है कि कोई नया नाम सामने आने पर उन्हें बड़ी परेशानी होती है और कितनी ही बार तो अर्थ का अनर्थ तक कर बैठते हैं। पाठकों की इस कठिनाई को दूर करने के दृष्टि से हम निम्न पंक्तियों में सभी ग्रहों के समभान्य पर्यायवाची नामों का उल्लेख करते हैं—

ग्रहों के पर्यायवाची नाम बोधक चक्र

ग्रह	पर्यायवाची नाम
सूर्य	हेति, तपन, दिनकर, दिवाकर, आदित्य, भानु, पूषा, अरुण, दिवानाथ।
चन्द्रमा	शीत, द्युति, उडुपति, ग्लौ, मृगांग, इन्दु, शशि, निशानाथ, रजनीश, रजनीपति।
मंगल	भौम, आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर अंगारक, क्रूरनेत्र, भूसुत, पृथ्वी-पुत्र।
बुध	सौम्य, तारा-तनय, वित, बोधन, इन्दु-पुत्र।
बृहस्पति	मंत्री, वाचस्पति, सुरगुरु, गुरु, सुराचार्य, देवेजा।
शुक्र	काव्य, सित, भृगु, अच्छ, स्युजित, दानवेज्य,
शनि	छाया, सुनू, तरणिनाथ, कोण, आकि, मन्द
राहु	सर्प, असुर, फणि, तम, सैंहिकेय।
केतु	ध्वज, शिखी, गुलिक, मनि।

शुभाशुभ ग्रह

उपरोक्त नवग्रहों में कुछ तो स्वभाव से ही क्रूर और तमोगुणी प्रकृति के हैं। ये मानव को प्रायः प्रतिकूल ही फल देते हैं, अतः इन्हें अशुभ ग्रह अथवा क्रूर ग्रह कहते हैं। दूसरी श्रेणी के ग्रह स्वभावतः सौम्य हैं। उनकी प्रकृति सतोगुणी अथवा रजोगुणी होती है। ये प्रायः मानव के हितेच्छुक ही रहते हैं। इनके

प्रतिकूल होने पर भी क्रूर ग्रहों की भांति अत्यधिक हानिकर परिणाम नहीं होते। हस्त-परीक्षा-फल घोषित करने से पूर्व ग्रहों की इस श्रेणी पर भी समुचित विचार कर लेना अत्यावश्यक है। पाठकों के बोधार्थ हम उनका विवरण निम्न पंक्तियों में लिखते हैं।

शुभ-ग्रह

चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र स्वभाव से ही मधुर, सरल और सौम्य हैं। इनका प्रभाव मानव-जीवन के अभ्युदय की ओर ही अधिक रहता है। अन्य सबल ग्रहों के प्रभाव में होने पर ये भले ही अशुभ परिणाम दें। किंतु स्वतन्त्ररूप से ये प्रायः बहुत ही कम अशुभ-कारक होते हैं। इन्हें शुभ अथवा सौम्य ग्रह कहते हैं।

अशुभ-ग्रह

सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु—इन्हें अशुभ अथवा पाप-ग्रह कहते हैं। ये ग्रह स्वभावतः ही उग्र हैं और इनके प्रतिकूल होने पर मानव का सर्वनाश ही समझना चाहिये। इनके प्रबल होने पर सौम्य ग्रहों का प्रभाव भी नष्ट हो जाता है।

सौम्य ग्रहों का पाप रूप

चन्द्रमा यद्यपि सौम्य ग्रह है, किन्तु क्षीण होने पर वह भी पाप-ग्रह ही हो जाता है।

बुध यदि पाप-ग्रहों के साथ सहयोग कर बैठे तो वह भी पाप-ग्रह ही होजाता है।

ग्रहों से फल विचार

हस्त-गत विभिन्न-ग्रहों से मानव-जीवन सम्बन्धी विभिन्न विषयों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होता है। यदि एक ही ग्रह से मानव-जीवन के सभी क्षेत्रों के विषय में परिचय प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाय तो निराश ही होना पड़ेगा। जिस प्रकार किसी भी कार्य की व्यवस्था में उसके विभिन्न अंगों का दायित्व विभिन्न व्यक्तियों पर होता है उसी प्रकार सौर मण्डल-स्थित इन ग्रहों ने भी मानव-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के दायित्व को परस्पर विभाजित कर लिया है और प्रत्येक ग्रह अपने-अपने अधिकारस्थ विषय का ही विशिष्ट स्वामी होता है। हस्त-परीक्षा के समय ग्रहों के इस अधिकार-विभाजन पर भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिये। अन्यथा परीक्षक भूल-भुलैया में फंस जायगा और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में उसे तनिक भी सफलता नहीं मिलेगी। पाठकों के बोधार्थ हम ग्रहों के इस अधिकार विभाजन का विवरण निम्नांकित 'ग्रह-अधिकार-विभाजन-बोधक-चक्र' में अंकित करते हैं।

ग्रह-अधिकार-विभाजन-बोधक-चक्र

ग्रहों के नाम	ग्रहों के अधिकृत विषय
सूर्य	आत्मा, पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति सम्पत्ति, शोभा
चन्द्रमा	मन, बुद्धि, राज-मान, माता, सम्पति, प्रतिष्ठा, प्रभाव
मंगल	पराक्रम, रोग, गुण, बान्धव, भूमि पुत्र, परिवार
बुध	विद्या, बन्धु, विवेक मातुल, मित्र, वाक्-शक्ति
बृहस्पति	प्रजा, धन-ऐश्वर्य, तन, पुष्टि, पुत्र, विचार, इच्छा-शक्ति, ज्ञान-गरिमा
शुक्र	पत्नी, वाहन, वस्त्राभूषण, काम-केलि-सौख्य, आमोद-प्रमोद, ऐश्वर्य
शनि	आयु, मृत्यु, सम्पत्ति, विपत्ति, सौभाग्य, दुर्भाग्य
राहु	पितामह तथा पैतृक विषय
केतु	मातामह तथा मातृपक्ष

ग्रह-कृत कष्ट

प्रत्येक ग्रह अपनी-अपनी रुचि के अनुसार मानव पर कष्ट विशेष का प्रकोप करते हैं। चूंकि प्रत्येक ग्रह की प्रकृति भिन्न २ है अतः उनके द्वारा उपस्थित रोग भी भिन्न-भिन्न हैं। वात-प्रकृति वाला ग्रह वातज रोगों को ही जन्म देता है, पित्तज या कफज रोगों को नहीं। पाठकों के बोधार्थ हम निम्नांकित 'ग्रह-कृत-कष्ट-बोधक-चक्र' द्वारा इनका विवरण देते हैं।

ग्रह-कृत-कष्ट-बोधक-चक्र

ग्रहों के नाम	ग्रह कृत कष्ट विवरण
सूर्य	अग्नि रोग, ज्वर-वृद्धि, अतिसार आदि राजा, देवता, किंकर तथा ब्राह्मणों से कष्ट प्राप्त होता है तथा चित्त में दोष उत्पन्न होता है।
चन्द्रमा	पाण्डु रोग, कमल रोग, पीनस रोग, स्त्री जन्य-रोग देवता आदि से व्याधा उत्पन्न होती है।
मंगल	बीज-दोष, कफ-प्रकोप, शस्त्रास्त्र द्वारा घात, अग्नि-जन्य-रोग, गिल्टी, फोड़ा, घाव, दारिद्रय जन्य-रोग, स्थूल रोग।
	वीर. शैव-गण, भैरवादि गण से भय उत्पन्न होता है तथा उनके द्वारा रोग उत्पन्न होते हैं। शरीर में भय का संचार होता है।
बुध	गुदा रोग, उदर रोग, दृष्टि पात, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि
	मन में विकार उत्पन्न होता है तथा भूत, पिशाच, वैतालादि का भय होता है।
बृहस्पति	आचार्य, गुरु, ब्राह्मण, पूज्यजन आदि द्वारा शाप जनित रोग-दोष-भय आदि तथा गुल्म रोग।

ग्रहों के नाम	ग्रहों के अधिकृत विषय
शुक्र	काम लिप्सा की अधिकता के कारण वीर्य दोष तथा वीर्य सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं तथा अतिशय स्त्री समागम से जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग घर कर लेते हैं अथवा दुश्चरित्र नारियों से सम्भोग करने के कारण आतशक, सुजाक प्रभृति रोग घेर लेते हैं।
शनी	दारिद्र्य जन्य रोग, अपने दुष्कर्मों से उपार्जित रोग, सन्धि रोग, चोर पिशाचादि के प्रभाव से कष्ट, क्लेश तथा व्याधायें उत्पन्न होती हैं।
राहु	मृगी, मसूरिका, रज्जु, छींक, क्षुधा, दृष्टि रोग, कृमी रोग, प्रेत, पिशाच, भूतादि का भय तथा इनके द्वारा कष्ट, कुष्ठ, उद्‌बन्धन, कुष्ठ अरुचि आदि आदि।
केतु	खाज, दाद, मरीचिका, शत्रु जन्य कष्ट, कृमिरोग, नीच व्यक्ति द्वारा उत्पात, आचारहीन व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न शारीरिक तथा मानसिक कष्ट।

ग्रह-क्षेत्र और मानव जीवन

ग्रह-क्षेत्रों का परिचय लिखते समय हम ग्रहों के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं। अब हम इन ग्रहों का मानव जीवन के साथ सम्बन्ध पर शास्त्रोक्त प्रमाणों के आधार पर अपने विचार प्रकट करेंगे। इस सम्बन्ध में आगे बढ़ने से पूर्व हम यह लिख देना आवश्यक समझते हैं कि सौर-

मण्डल (Solar System) स्थित इन ग्रहों का स्वभाव तथा इनके गुण-दोष परस्पर सर्वथा भिन्न हैं। अतः व्यक्ति विशेष पर जिस ग्रह विशेष का प्रमुख प्रभाव होता है उसी ग्रह के अनुरूप उस व्यक्ति का आकार प्रकार, स्वभाव, गुण दोष शारीरिक गठन, आकृति आदि होती है।

प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में ग्रह स्थान समान नहीं होते। किसी हाथ में इनका स्वरूप कैसा होता है और किसी हाथ में कैसा। कहने का तात्पर्य यह है कि ग्रह-स्थान प्रत्येक हाथ में भिन्न २ प्रकार के होते हैं। इसके साथ ही यह भी जान लेना आवश्यक है कि किसी भी हाथ में समस्त ग्रह क्षेत्र एक ही प्रकार के नहीं होते। किसी हाथ में ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति परस्पर भिन्न दशा में ही होती है।

उपरोक्त दोनों बातों का उल्लेख करने से हमारा तात्पर्य यह है कि विभिन्न ग्रह अपने-अपने व्यक्तिगत स्वभाव के अनुकूल तथा व्यक्ति विशेष के हाथ में उनकी विशिष्ट स्थिति के अनुकूल ही अपना प्रभाव दिखाते हैं। अतः हस्त-परीक्षा करते समय इस तथ्य को भली प्रकार समझ कर ही फल का निर्णय करना चाहिये। अब हम पाठकों को इस सम्बन्ध में अन्य बातों का परिचय करावेंगे।

जिस प्रकार हाथ की आकृति, बनावट, स्वरूप, गठन तथा आकार-प्रकार से मानव की जातीय विशेषता, नस्ल आदि के सम्बन्ध में सम्यक् परिचय प्राप्त होता है उसी प्रकार ग्रह-क्षेत्रों

के द्वारा मानव की शारीरिक (Constitutional) तथा वंश परम्परागत अथवा पैतृक (Hereditary) विशेषताओं का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होता है। यहाँ प्रसंगवश यह बता देना अनुचित न होगा कि जीवन को विषम परिस्थितियों से प्रताड़ित व्यक्ति के शारीरिक परिश्रम करने से ग्रह-क्षेत्रों की त्वचा अपेक्षाकृत कठोर अवश्य हो सकती है, किन्तु उसके द्वारा उनके स्वाभाविक आकार प्रकार, आकृति, स्वरूप, गठन अथवा बनावट में कोई अन्तर नहीं आता। शारीरिक श्रम के प्रभाव से ग्रह-क्षेत्र उन्नत अथवा अवनत कभी नहीं होते। वे सदैव एवं सर्वथा अपनी स्वभाविक दशा में ही रहते हैं।

ग्रह-क्षेत्रों के प्रभाव में शुभाशुभ चिन्ह कृत भेद

मूल विषय का विवेचन आरम्भ करने से पूर्व हम यहां पाठकों के लाभार्थ हस्त परीक्षा की इस सैद्धान्तिक बात को पुनः स्मरण करा देना चाहते हैं कि मानव हस्त-गत इन ग्रह क्षेत्रों का फल निश्चित करने से पूर्व सम्बन्धित हस्त-गत अन्य चिह्नों का भी गम्भीर अध्ययन कर लेना चाहिये, क्योंकि ग्रह-क्षेत्रों की अशुभ स्थिति भी प्रायः अन्य शुभ लक्षणों के प्रभाव से उतनी उग्र नहीं रह जाती जितनी वास्तव में उसे होनी चाहिये। अतः इस सैद्धान्तिक मर्म को कभी नहीं भूलना चाहिये, अन्यथा फल निर्णय सटीक नहीं होगा।

ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति का भेद

मानव-हस्त स्थित ग्रह-स्थान सम्बन्धित व्यक्ति की मौलिकता अथवा वास्तविकता को प्रकट करता है, अतः उनकी स्थिति का

प्रशस्त अध्ययन करना अत्यावश्यक है। साधारणतः ग्रह स्थानों की स्थिति निम्नांकित सात भेदों मे विभक्त की जा सकती है।

१—उन्नत—जो ग्रह क्षेत्र अपनी स्वभाविक शुभ स्थिति में होता है उसे उन्नत कहते हैं। इस प्रकार का ग्रह क्षेत्र अपने नियत स्थान पर ऊंचा उठा हुआ रहता है। अधिक स्पष्ट रूप से इसको समझने के लिए इसे उभार कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा। इस प्रकार का ग्रह-क्षेत्र चारों ओर से पर्वत के समान उन्नत रहता है। यह किसी भी ओर अधिक-ऊंचा या नीचा नहीं होता। इस प्रकार का ग्रह क्षेत्र अपने स्वामी का स्वतन्त्र प्रभाव मानव-जीवन पर आच्छादित करता है और उसका प्रभाव व्यक्ति के लिए लाभदायक ही होता है।

२—अत्युन्नत—जो ग्रह क्षेत्र अपनी स्वभाविक स्थिति से अधिक ऊंचा उठा हुआ होता है उसे अत्युन्नत कहते हैं। ऐसा ग्रह क्षेत्र यद्यपि अपने नियत स्थान पर ही होता है किन्तु ऐसा प्रतीत होता है जैसे हाथ में कोई फोड़ा उठने वाला हो अथवा कोई टीला खड़ा हो। इसे कोई-कोई विद्वान अत्युच्च ग्रह क्षेत्र भी कहते हैं।

३—अवनत—जो ग्रह क्षेत्र अपनी स्वभाविक स्थिति से अधिक नीचा अथवा धंसा हुआ हो वह अवनत ग्रह क्षेत्र कहलाता है। इस प्रकार का ग्रह क्षेत्र झील सा प्रतीत होता है।

४—अत्यवनत—जो ग्रह-क्षेत्र अपनी स्वभाविक स्थिति से अत्यधिक नीचा अथवा धंसा हुआ हो वह अत्यवनत ग्रह-क्षेत्र

कहलाता है इस प्रकार का ग्रह-क्षेत्र गडढा जैसा दृष्टिगोचर होता है।

५—समतल अथवा चपटा—जो ग्रह क्षेत्र अपनी स्वभाविक स्थिति के अनुरूप उन्नत न हो और अवनत भी न हो, किन्तु चौरस सा लगता हो उसे समतल अथवा चपटा ग्रह क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार का ग्रह क्षेत्र पठार जैसा प्रतीत होता है।

६—झुका हुआ अथवा विषम—जो ग्रह क्षेत्र किसी ओर उन्नत हो और किसी ओर अवनत हो अर्थात् जिसका आकार पहाड़ के ढाल के समान हो उसे झुका हुआ अथवा विषम ग्रह क्षेत्र कहते हैं।

७—स्थान-भ्रष्ट—जो ग्रह क्षेत्र अपने नियत स्थान से इधर उधर हट कर स्थित हो उसे स्थान-भ्रष्ट ग्रह क्षेत्र कहते हैं।

ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति का प्रभाव

उपरोक्त पंक्तियों में हमने ग्रह क्षेत्रों की स्थिति का स्पष्टीकरण किया है। ग्रह क्षेत्रों की स्थिति का मानव जीवन पर तद्-अनुकूल भिन्न भिन्न प्रभाव होता है। पाठकों के बोधार्थ हम उनका विवेचन निम्न पंक्तियों में करते हैं।

उन्नत ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव

उन्नत ग्रह क्षेत्र अत्यन्त शुभ होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में जो ग्रह-क्षेत्र उन्नत होता है उसके स्वभाव, आचरण, मनोवृति, कार्य कलाप, विचार धारा आदि आदि पर सम्बन्धित ग्रह के स्वभाव आचरण, मनोवृति, कार्य कलाप, विचारधारा आदि

का पूरा-पूरा प्रभाव रहता है। दूसरे शब्दों में उसे यदि उसी ग्रह का अंशावतार कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी। यहां यह बता देना आवश्यक है कि उन्नत ग्रह-क्षेत्र का परिणाम मानव-जीवन के लिये सर्वदा शुभ तथा लाभकारी होता है। यदि हस्तगत अन्य लक्षण, चिह्न अथवा रेखायें किसी प्रकार से बाधक न हों तो वह व्यक्ति अपने जीवन मे सफलता प्राप्त करता है और सम्बन्धित ग्रह के प्रभाव की अवधि में उसे विशेष लाभ होता है।

अत्युन्नत ग्रह क्षेत्र का प्रभाव

ग्रह-क्षेत्र का अत्युन्नत दशा में होना मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये अहित कर होता है। जिस ग्रह का क्षेत्र अत्युन्नत दशा में होगा मानव शरीर के उसी भाग मे (जिसका स्वामी अत्युन्नत-क्षेत्र का ग्रह हो) अस्वस्थ कर परिणाम प्रकट होते हैं।

मानव-शरीर-गत ग्रहों का अधिकार

मूल विषय में आगे बढ़ने से पूर्व यहां प्रसंगवश यह स्पष्ट कर देना उपयुक्त होगा कि मनुष्य के शरीर के विभिन्न भागों पर विभिन्न ग्रहों का विशेष अधिकार होता है। प्रत्येक ग्रह अपने इस अधिकार का उपभोग करने में परम स्वतन्त्र हैं। व्यक्ति विशेष से जिस ग्रह का जैसा सम्बन्ध होता है उसी के अनुकूल उस व्यक्ति के शरीर का भाग विशेष स्वस्थ अथवा अस्वस्थावस्था में रहता है। जैसे मंगल ग्रह का अधिकार मस्तक तथा गले पर है। अतः मंगल के अनुकूल होने पर मस्तक और गला स्वस्थ

रहेंगे और शरीर के इस भाग मे रोगों का उत्पात प्रायः नहीं ही होगा। इसके विपरीत यदि मंगल प्रतिकूल होगा तो सम्बन्धित व्यक्ति शिरःशूल, आधा शीशी, स्नायु पीड़ा (Neuralgia) रोहिणी अथवा खुनाक (Diphthriea) कण्ठ माला (Scorofula) लोहितांग सन्निपात (Scailt fever) कर्कट रोग (Can Cer) प्रभृति रोगों का प्रभाव होगा। बुध कलेजे और पेट का अधिपति है। इसके विपरीत होने पर उदरशूल, अजीर्ण मन्दाग्नि, वात व्याधि (Bheum atic Diseceses) आदि का अधिक भय रहता है।

अवनत ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव

अवनत ग्रह क्षेत्र अशुभ होता है। इस प्रकार के ग्रह-क्षेत्र वाला व्यक्ति अपने जीवन मे कभी सफल नहीं होता। उसकी इच्छा शक्ति निर्बल होती है और विचारधारा स्थिर रहती है। वह आलसी और निरुद्यामी होता है। संक्षेप में उस पर सम्बंधित ग्रह के दुर्गुणों का ही प्रभाव रहता है।

अत्यवनत ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव

अत्यवनत ग्रह-क्षेत्र महा अशुभ तथा दुर्भाग्य पूर्ण होता है। इस प्रकार के ग्रह-क्षेत्र वाला व्यक्ति दरिद्री, मूर्ख, कुटिल और धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति को यदि नर-पिशाच भी कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। ऐसे व्यक्ति में 'छूट भलाई' सब दुर्गुणों का अखण्ड राज्य रहता है। वह सदैव दूसरों का नाश करने मे ही प्रसन्नता लाभ करता है। सम्बन्धि ग्रहों के दुर्गुणों

का अति उग्र तथा घृणित प्रभाव इस व्यक्ति के जीवन में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है।

समतल ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव

समतल ग्रह-क्षेत्र साधारण स्थिति का द्योतक है। इस प्रकार के ग्रह-क्षेत्र वाला व्यक्ति यद्यपि अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाता किन्तु ज्यों-त्यों करके अपनी जीवन-नैया को ढकेलता रहता है। हां, इस प्रकार के व्यक्ति को यदि हस्तगत अन्य लक्षणों से तनिक भी सहारा मिल जाय तो इसका जीवन अपेक्षाकृत अधिक सुखी और शान्ति पूर्ण रहता है।

विषम ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव

विषम ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव किसी न किसी अन्य ग्रह के प्रभाव से मिश्रित होता है। जिस ग्रह की ओर इसका झुकाव होता है उस ग्रह के स्वभाव और प्रभाव का इस प्रकार के ग्रह-क्षेत्र वाले व्यक्ति के जीवन में अद्भुत सामञ्जस्य रहता है। एक ही साथ दो ग्रहों के गुणों का सम्मिश्रण हो जाने के कारण इस प्रकार के क्षेत्र वाले व्यक्ति के स्वभाव, मनोवृत्ति, विचारधारा, कार्य-कलाप आदि में निश्चित रूप से अत्यधिक विलक्षणता दृष्टिगोचर होती है।

उदाहरणतः यदि बृहस्पति का क्षेत्र शनि के क्षेत्र की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति जनता पर शासन करने की लालसा रखेगा। उसमें शनि और गुरु के लक्षणों का सम्बन्ध परिलक्षित होगा। वह प्रायः चिन्तातुर, उदास और खिन्न रहेगा। इसी

प्रकार यदि शनि का क्षेत्र बुध और मंगल के क्षेत्र से सम्बन्ध करले तो उस व्यक्ति में शनि के दुर्गुणों का लोप हो जाता है। इसी प्रकार अन्य ग्रह-क्षेत्रों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये।

स्थान-भ्रष्ट ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव

स्थान-भ्रष्ट ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव उसकी नवीन स्थिति के अनुकूल होता है अर्थात् वह जिस स्थान पर स्थित होता है उस स्थान के स्वामी के साथ उसके जैसे सम्बन्ध होते हैं उसी प्रकार का उसका प्रभाव होता है। उदाहरणार्थ यदि बुध-क्षेत्र स्थान भ्रष्ट होकर गुरु-क्षेत्र से सामञ्जस्य करे तो परिणाम शुभ होगा किन्तु यदि स्थान भ्रष्ट बुध-क्षेत्र शनि से सम्बन्ध करे तो फिर भगवान ही रक्षक है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों के सम्बन्ध में समझना चाहिये।

ग्रह-क्षेत्र और अंगुलियों का सम्बन्धजनित प्रभाव

यदि किसी ग्रह-क्षेत्र की अंगुली अत्यधिक लम्बी हो तो उसका प्रभाव उतना ही होता है जितना उस क्षेत्र के उन्नत होने पर होना चाहिये। उदाहरणार्थ यदि बृहस्पति-क्षेत्र (Mount of gupiter) की अंगुली तर्जनी (First Finger) अत्यधिक लम्बी हो तो वह व्यक्ति जनता पर शासन करने की अभिलाषा रखने वाला, आदेश प्रदान करने की मनोवृति वाला, अधिकार की लालसा वाला आदि गुणों से सम्पन्न होगा। इसके विपरीत यदि यह अंगुली छोटी होगी तो साधारणतः यह व्यक्ति उत्तरदायित्व से भागने वाला होगा।

ग्रह-क्षेत्र-स्थित एक रेखा का प्रभाव

यदि किसी ग्रह-क्षेत्र पर एक स्पष्ट, सीधी, गहरी और बिना कटी फटी रेखा हो तो चाहे वह पर्वत उन्नत न हो तो भी उसका प्रभाव वही होता है जो उसके उन्नत होने पर होना चाहिये।

ग्रह-क्षेत्र-स्थित दो रेखाओं का प्रभाव

यदि किसी ग्रह-क्षेत्र पर दो स्पष्ट सीधी गहरी और बिना कटी-फटी रेखायें हां तो वह सम्बन्धित ग्रह के पराक्रम में वृद्धि करती हैं। किन्तु न्यायतः ग्रह क्षेत्रों पर एक ही रेखा का होना अपेक्षा कृत अधिक शक्तिदायक होता है।

ग्रह-क्षेत्र-स्थित अधिक रेखाओं का प्रभाव

यदि किसी ग्रह क्षेत्र पर दो से अधिक रेखायें हों अथवा रेखाओं का जाल-सा हो अथवा एक दूसरी को काटने वाली रेखा हों तो यह अशुभ द्योतक है। ऐसी रेखायें ग्रह-क्षेत्र की निकृष्टता प्रकट करती हैं। इनके द्वारा सम्बन्धित ग्रह के गुणों की न्यूनता तथा निर्बलता परिलक्षित होती है।

ग्रह-क्षेत्र की कठोरता का प्रभाव

हस्त-गत ग्रह क्षेत्रों में जो अधिक कठोर आकार-प्रकार का होगा वह चाहे अन्य ग्रह-क्षेत्रों की अपेक्षा अथवा उनके अनुरूप उन्नत न हो फिर भी वह अन्य सभी ग्रह-क्षेत्रों से अधिक सजीव और शक्तिशाली होता है। ऐसा ग्रह-क्षेत्र शुभफलदायक होता है।

सर्वोत्तम ग्रह-क्षेत्र के लक्षण

जिस ग्रह-क्षेत्र की अंगुली सुगठित, सरल, समुन्नत, बड़ी और सीधी हो, जिस ग्रह क्षेत्र पर एक स्पष्ट, सीधी, गहरी और बिना कटी-फटी रेखा हो, जिस ग्रह-क्षेत्र की आकृति अथवा गठन कठोर हो तथा उसका रंग गुलाबी या लाल हो—वह ग्रह क्षेत्र अपने गुणों में सर्वोत्तम होता है।

ग्रह-क्षेत्र की कोमलता का प्रभाव

जो ग्रह-क्षेत्र कोमल होता है वह अपने से सम्बन्धित ग्रह के गुणों की हीनता तथा पराक्रम की निर्बलता प्रकट करता है। इस प्रकार का ग्रह क्षेत्र उन्नत होने पर भी लाभप्रद नहीं होता।

ग्रह-क्षेत्र के रंग और उनका प्रभाव

जिस प्रकार ग्रह-क्षेत्र की गठन और स्थिति अपना विशिष्ट प्रभाव रखती हैं ठीक उसी प्रकार ग्रह-क्षेत्र के रंग भी अपना २ विशेष प्रभाव रखते हैं। यों तो सम्बन्धित ग्रहों के अनुरूप ग्रह-क्षेत्रों के विचित्र रंग व विभिन्न रंगों का आभास पाया जा सकता है, किन्तु इस सम्बन्ध में विशेष विचारणीय रंग प्रधानतः दो ही हैं—एक लाल किंवा गुलाबी और दूसरा श्वेत। लाल किंवा गुलाबी रंग ग्रह-क्षेत्र उत्तमता तथा शुभ लक्षण का द्योतक है। जिस व्यक्ति के हाथ में लाल किंवा गुलाबी रंग के ग्रह क्षेत्र पाये जाते हैं उनके जीवन में तत्सम्बन्धित ग्रहों का प्रभाव अत्युत्तम एवं लाभकारी होता है। इसके विपरीत श्वेत रंग वाले ग्रह क्षेत्रों की उपस्थिति अनिष्ट कर प्रभाव की द्योतक है। ऐसे

व्यक्ति के तत्सम्बन्धित ग्रह निर्बल होते हैं और उनका प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर अशुभ कारक होता है। हस्त-परीक्षा करते समय इस ओर भी ध्यान अवश्यमेव रखना चाहिये।

ग्रह-क्षेत्र के बलाबल का निर्णय

हस्त-परीक्षा करते समय ग्रह-क्षेत्रों के बलाबल का निर्णय अत्यन्त सावधानी के साथ करना चाहिये। प्रायः देखा गया है कि परीक्षक इस सम्बन्ध में भूल कर बैठते हैं। कभी-कभी इस प्रकार की भूल हो जाना स्वाभाविक भी है, क्योंकि किसी किसी हाथ में ग्रह-क्षेत्रों की गठन और उनका आकार-प्रकार ऐसा विचित्र होता है कि उनके भेद का निर्णय करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। ऐसे ग्रह-क्षेत्र को देखकर परीक्षक भूल-भलैया में पड़ जाता है और लाख प्रयत्न करने पर भी भूल कर बैठता है। जिसका परिणाम यह होता है कि उनके प्रभाव के अनुसार फल का निर्णय नहीं हो पाता और जिज्ञासु को हस्त-विज्ञान के प्रति श्रद्धा नहीं रहती। अतः यदि ग्रहक्षेत्रों का विवेचन ठीक प्रकार से समझ में नहीं आवे तो उसका निर्णय करने के लिए हाथ के अन्य भागों से सहायता लेनी चाहिए। क्योंकि जिस प्रकार मानव शरीर का प्रत्येक भाग एक-दूसरे पर अत्यधिक आधारित है और एक भाग के बलाबल का दूसरे पर अत्यधिक प्रभाव होता है, ठीक उसी प्रकार मानव-हस्त के विभिन्न भाग भी एक-दूसरे पर अत्यधिक आश्रित हैं और उनके पारस्परिक बलाबल का प्रभाव अवश्य होता है। अनुभव के आधार पर हमने इसका एक अत्यन्त

सरल तथा सटीक उपाय खोज निकाला है । इसके अनुसार गृह-क्षेत्र के बलाबल का निर्णय करने में भूल होने की कोई सम्भावना नहीं रहती । यद्यपि यह हमारा गुप्त-गुरु (Master key) है जिसे आज तक हमने किसी भी व्यक्ति को नहीं बताया है, तथापि इस विज्ञान के प्रति लोगों की अश्रद्धा तथा उपेक्षा देख कर आज हम इसे अनायास ही लिख रहे हैं । हमारे पाठक इसके अलौकिक चमत्कार को देख कर अवश्य ही हत-प्रभ रह जायेंगे । इस प्रकार के चुटकुले अत्यन्त गहन अध्ययन तथा विशाल अनुभव के द्वारा ही हस्तगत होते हैं ।

ग्रह-क्षेत्र के बलाबल निर्णय का गुप्त-मन्त्र

जब किसी भी प्रकार से गृह-क्षेत्र के बलाबल-निर्णय के सम्बन्ध में सफलता न मिले और परीक्षक को सन्तोष न हो तो उसे हाथ की अंगुलियों का गम्भीर अध्ययन करना चाहिए । यह स्मरण रखना चाहिए कि जो गृहक्षेत्र प्रबल होगा उसकी अंगुली भी प्रबल होगी और जो गृह-क्षेत्र निर्बल होगा उसकी अंगुली भी निर्बल होगी हमारे इस कथन की पुष्टी के लिये हम पाठकों का ध्यान गृह-क्षेत्र के स्थान की ओर आकर्षित करना चाहते हैं । जैसे कि पीछे लिख चुके हैं—प्रत्येक अंगुली का मूल भाग (वह स्थान जहां अंगुली और कर की सन्धि होती है) उसी अंगुली के स्वामी गृह का क्षेत्र होता है । जैसे तर्जनी का स्वामी बृहस्पति है । अतः तर्जनी का मूलभाल बृहस्पति का क्षेत्र है । अब हमें मूल के महत्व पर विचार करना चाहिये इस

सम्बन्ध में यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि किसी वस्तु का बलाबल और विकास उसके मूल के बलाबल और विकास पर ही निर्भर करता है। भौतिक विज्ञान ने यह प्रत्यक्ष कर दिया है कि स्वल्प मूल वाला पदार्थ भी शक्तिशाली होता है। यही न्याय हाथ की अंगुलियों पर भी अक्षरशः घटित होता है। अतः अंगुलियों का शक्तिशाली एवं विकसित होना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि तत्सम्बन्धि ग्रह-क्षेत्र प्रबल एवं विकसित है। अतः ग्रह-क्षेत्र के बलाबल के सम्बन्ध में अंगुलियों की स्थिति द्वारा अनायास ही सटीक निर्णय हो जाता है।

अंगुलियों के बलाबल का निर्णय

ग्रहक्षेत्र के बलाबल का निर्णय अंगुलियों के आधार पर करने के लिए यह आवश्यक है कि अंगुलियों के बलाबल का निर्णय उचित एवं सटीक हो। क्योंकि यदि अंगुलियों के बलाबल के सम्बन्ध में ही भूल हो जायगी तो ग्रह-क्षेत्रों के सम्बन्ध में सही निर्णय की आशा ही व्यर्थ है। अतः पाठकों के बोधार्थ यहां अंगुलियों के बलाबल का निर्णय करने का अत्यन्त सुगम एवं सटीक उपाय लिखते हैं।

अंगुलियों का विवेचन करते समय हम लिख आये हैं कि अंगुलियों की श्रेष्ठता उनके करतल के अनुरूप होने पर ही निर्भर करती है। यदि अंगुलियां करतल के परिमाण के अनुकूल ही लम्बी होंगी तो शुभ है अन्यथा अशुभ। अब यह निर्णय करना शेष रह जाता है कि अंगुलियों का परिमाण करतल के समतुल्य

है अथवा नहीं—इसका निश्चय किस प्रकार से हो। इसके निर्णय की विधि इस प्रकार है :—

शनी क्षेत्र के बलाबल का निर्णय

मणिबन्ध से अंगुलियों के अधोभाग अथवा मूल भाग पर्यन्त करतल की लम्बाई को नापो। फिर मध्यमा अंगुली की लम्बाई नापो, दोनों की तुलना करो। यदि दोनों समान लम्बाई की हों तो श्रेष्ठ है अन्यथा नहीं। मध्यमा अंगुली की लम्बाई करतल की लम्बाई क समान हो तो शनी-क्षेत्र उन्नत दशा मे समझना चाहिए और यदि मध्यमा अगुली करतल से छोटी हो तो शनी-क्षेत्र अवनत समझना चाहिए। अत्यन्त छोटी होने पर अत्यवनत तथा मध्यमा की लम्बाई करतल की लम्बाई से विशेष होने पर अत्युन्नत समझना चाहिए।

बृहस्पति-क्षेत्र के बलाबल का निर्णय

उपरोक्त विधि से शनी क्षेत्र के बलाबल का निर्णय होता है। अब यदि गुरु (बृहस्पति) क्षेत्र का निर्णय करना हो तो मध्यमा अंगुली और तर्जनी अंगुली की लम्बाई की तुलना करनी चाहिये। साधारणतः तर्जनी अंगुली मध्यमा अंगुली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य तक पहुंचती है। तर्जनी के इस स्थिति में होने पर बृहस्पति क्षेत्र साधारण होता है। इसके विपरीत यदि तर्जनी इस परिमाण से विशेष लम्बी हो तो बृहस्पति क्षेत्र तदनुरूप ही उन्नत होता है और छोटा होने पर अवनत होता है।

सूर्य-क्षेत्र के बलाबल का निर्णय

अनामिका अंगुली भी साधारणतया मध्यमा अंगुली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य भाग तक पहुचती है। इसकी यह स्थिति सूर्य के गुणों की साधारण शक्ति प्रकट करती है। इस परिमाण से अधिक लम्बी होने पर सूर्य के गुणों की विशेषता का बोध कराती है और इस परिमाण से न्यून होने पर अशुभ फल प्रदान करती है।

बुध-क्षेत्र के बलाबल का निर्णय

कनिष्ठा अंगुली साधारणतया अनामिका अंगुली के ऊर्ध्व पर्व की ग्रन्थी अथवा मूल तक पहुंचती है। इसकी इस लम्बाई का परिणाम साधारण होता है। इस परिमाण से अधिक लम्बाई होने पर बुध-गृह के गुणों का समुचित विकास होता है और उसके न्यून होने पर बुध के अवगुण अपना प्रभाव दिखाते हैं।

ग्रह-क्षेत्रों के परिणाम पर अंगुलियों का प्रभाव

ग्रह-क्षेत्रों के प्रभाव का फल घोषित करते समय अंगुलियों के आकार-प्रकार का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। उपरोक्त विवरण से पाठकों को ग्रह-क्षेत्र और अंगुलियों के सम्बन्ध का महत्व पूर्णतया विदित हो गया होगा। उपयुक्त परिमाण से छोटी अंगुलियाँ व्यक्ति के अवगुणों को प्रकट करती हैं जोकि उनके लिये उपयुक्त ही है, क्योंकि उनके छोटे होने का अर्थ है ग्रह-क्षेत्र का अवनत होना और अवनत ग्रह क्षेत्रों से शुभ परिणाम की आशा रखना बालू में से तेल निकालने का प्रयत्न करना ही

है। इसी प्रकार उपयुक्त परिमाण से लम्बी होने पर अंगुलियाँ व्यक्ति के सद्‌गुणों की घोषणा करती हैं, क्योंकि उनके लम्बे होने का अर्थ है ग्रहों के क्षेत्रों का उन्नत होना और उन्नत ग्रह-क्षेत्र शुभकारक होते ही हैं। अतः परीक्षक को अंगुलियों की लम्बाई का गम्भीर अध्ययन करके ही ग्रह-क्षेत्रों का फल घोषित करना चाहिए।

समस्त ग्रह-क्षेत्रों के समान-रूप से उन्नत होने का प्रभाव

यद्यपि ऐसे अवसर अपेक्षाकृत कम ही होते हैं, किन्तु यदि किसी व्यक्ति के हाथ में सभी ग्रहों के क्षेत्र समानरूप से उन्नत हों तो उस व्यक्ति का चरित्र, विचार तथा व्यवहार असाधारण रूप से सन्तुलित होता है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति में प्रायः सर्वतोमुखी सद्‌गुणों का समावेश रहता है। ऐसा व्यक्ति साधारणतया बुद्धिमान, दूरदर्शी, स्वस्थ, व्यवहार-कुशल, नीति-निपुण, विशाल हृदय, उदार, विवेकशील, दृढ़ विचार वाला तथा सज्जन होता है।

दशम परिच्छेद

ग्रह-क्षेत्रों का विवेचन

पिछले परिच्छेद में ग्रह-क्षेत्रों की पृष्ठ-भूमि का विस्तृत विवेचन किया गया है। वहां प्रसंगवश हमने ग्रहों के व्यक्तित्व, स्वभाव, मनोवृत्ति आदि का पूर्ण परिचय दिया है और उनके अनिष्टकर प्रभाव को शमन करने का वैज्ञानिक साधन भी बताया है। संभव है हमारे किसी पाठक को ग्रह-दोष-शमन-कारक उपाय आध्यात्मिक, तांत्रिक या इसी प्रकार की अन्य श्रेणी के प्रतीत हों और उसे 'वैज्ञानिक' कहना उन्हें उपहासास्पद लगे, किन्तु यदि वे सम्बन्धित उपायों के तथ्य पर मौलिक रूप से विचार करेंगे तथा उनकी वैज्ञानिक विश्लेषण की कसौटी पर परीक्षा करेंगे तो उन्हें हमारे विचारों से सहमत होना ही पड़ेगा। अपनी इस दृढ़ता के प्रमाण में हम केवल इतना ही लिखना पर्याप्त समझते हैं हस्त-विज्ञान की पृष्ठ-भूमि मानव-शरीर-विज्ञान है। इसके अतिरिक्त आज के वैज्ञानिक महारथी हीरा, माणिक्य आदि रत्नों में विद्युत-शक्ति का प्रभाव स्वीकार भी कर चुके हैं। इन्हीं रत्नों के पूर्व रूप कुछ खनिज पदार्थ तो अणुबम, उद्जनबम आदि ध्वंसकारी शक्तियों के हेतु परम उपयोगी भी प्रमाणित हो चुके हैं। अच्छा तो अब हम प्रस्तुत परिच्छेद में ग्रह-क्षेत्रों का विवेचन करेंगे। इस सम्बन्ध में हम पाठकों के बोधार्थ ग्रह-क्षेत्र

के सम्बन्ध में विस्तृत परिचय, पारस्परिक सम्बन्ध, उनका व्यक्तिगत प्रभाव एवं दो या अधिक का मिश्रित प्रभाव आदि विषयों पर सभी प्रकार से प्रकाश डालेंगे।

हस्तगत ग्रह-क्षेत्रों का क्रम

मानव-हस्त-क्षेत्रों की संख्या ग्रहों की संख्या से एक अधिक है। ग्रह नौ हैं—बृहस्पति, शनी, सूर्य, बुध, मंगल, चन्द्रमा, शुक्र, राहु और केतु, किन्तु ग्रह-क्षेत्र दस हैं। इसका कारण यह है कि इन नव ग्रहों में से मंगल देव के दो क्षेत्र हैं। यदि हम मानव-हस्त पर तर्जनी अंगुली के मूल-स्थान से ग्रह क्षेत्रों की गणना आरम्भ करें तो उनका क्रम निम्न प्रकार है।

१—बृहस्पति—तर्जनी के मूल स्थान पर।

२—शनि—मध्यमा के मूल स्थान पर।

३—सूर्य—अनामिका के मूल स्थान पर।

४—बुध—कनिष्ठका के मूल स्थान पर।

५—मंगल (ऊपर का क्षेत्र)—बुध-क्षेत्र से नीचे तथा चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर। यह स्थान वास्तव में अन्तःकरण रेखा (Heat lne) तथा मस्तक रेखा (Heat line) के मध्य में स्थित है (देखो चित्र संख्या क+ख)

६—चन्द्रमा—मंगल के ऊपर वाले क्षेत्र के नीचे, शुक्र क्षेत्र के सामने।

७—शुक्र—अंगुष्ठ के मूल स्थान पर, मंगल के नीचे वाले क्षेत्र के नीचे।

८—मंगल (नीचे का क्षेत्र)—बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे तथा शुक्र क्षेत्र के ऊपर। यह स्थान शुक्र क्षेत्र के ठीक ऊपर आरम्भ होकर जीवन रेखा तक प्रसारित है।

९—राहु—उपरोक्त आठों ग्रह-क्षेत्रों के मध्य में, करतल का झील के आकार वाला मध्य स्थान।

१०—केतु—मणिबन्ध में।

सूचना—उपरोक्त ग्रह क्षेत्रों का मानव हस्त पर निश्चित स्थान जानने के लिये चित्र संख्या क और ख देखें।

अब हम उपरोक्त क्रम से क्षेत्रों का विवेचन आरम्भ करते हैं—

बृहस्पति-क्षेत्र का विवेचन

संसार में प्रत्येक वस्तु का महत्त्व उसकी उपयोगिता के आधार पर आंका जाता है और तदनुकूल ही उसे श्रेष्ठता अथवा गौरव प्राप्त होता है। लोक-व्यवहार के इस तथ्य के अनुसार मानव हस्त की अंगुलियों में जितना महत्व तर्जनी को प्राप्त है उतना अन्य किसी को भी नहीं। यही कारण है कि इसकी गणना सर्व प्रथम होती है तथा इसका आश्रय ग्रहण करने के नाते गुरुदेव बृहस्पति का क्षेत्र भी सर्व प्रथम स्थान पाता है। जैसा कि इस परिच्छेद के आरम्भ में बताया जा चुका है गुरु क्षेत्र तर्जनी अंगुली के मूल में स्थित है। गुरु क्षेत्र वास्तव में तर्जनी के मूल से आरम्भ होकर जीवन-रेखा (Line of life) तक फैला हुआ है (देखो चित्र क-ख)

जिस व्यक्ति के हाथ में गुरु क्षेत्र (Mount of Jupiter) समुन्नत, विकसित, प्रशस्त सुगठित, सुन्दर, तथा लाल अथवा गुलाबी रंग का, किसी भी ओर न झुका हुआ, अपने स्वाभाविक रूप में पर्वत की भांति चारों ओर सम-परिमा में ऊंचा उठा हुआ तथा रेखा हीन (अथवा एक सीधी, खड़ी हुई, स्पष्ट, गहरी तथा बिना टूटी-फूटी रेखा से युक्त) हो वह बृहस्पति के अत्यधिक शुभ होने का द्योतक है। इस लक्षण वाला व्यक्ति बृहस्पति ग्रह की प्रकृति का होता है। उसके अंगों की गठन, आकृति, बनावट आकार-प्रकार तथा स्वरुप बृहस्पति के समान ही होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल बृहपति का क्षेत्र (Mount of Jupiter) ही अत्यन्त श्रेष्ठ होता है तथा अन्य ग्रह-क्षेत्रों का प्रभाव गौण होता है उसके शारीरिक अंगों की गठन, आकृति बनावट, आकार-प्रकार तथा स्वरूप निम्न प्रकार का होता है—

शारीरिक आकार

इस लक्षण वाला व्यक्ति ऊंचाई में मध्यम प्रकार का होता है उसकी लम्बाई न तो अधिक ही होती है न न्यून ही वह लम्बा और नाटा दोनों प्रकार का नहीं होता, किन्तु साधारण परिमित ऊंचाई (Balanced Height) का होता है। उसका शरीर सुगठित, मांसल तथा पुष्ट होता है। उसके शरीर का मांस ठोस होता है तथा उसकी हड्डियां सुदृढ़ होती हैं। उसकी त्वचा स्वच्छ तथा चिकनी होती है। उसका वर्ण (रंग) गुलाबी सा होता है। उसकी मुखाकृति प्रतिभा-सम्पन्न स्वच्छ पुष्ट तथा दर्शनीय होती है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक होता है।

भौंह

इस लक्षण वाले व्यक्ति की भौंहें धनुष के समान तिरछी और झुकी हुई होती हैं तथा उनके बाल सुन्दर और समान होते हैं।

नेत्र

इस लक्षण वाले व्यक्ति के नेत्र मृग के समान विशाल तथा प्रभावोत्पादक होते हैं। इसके नेत्रों से दिव्य ऐश्वर्य, शुद्धता, सरलता, प्रेम, दयालुता, शांति, शालीनता, प्रेम सत्यता, निष्कपटता, ओज, तेजस्विता, प्रतिभा तथा माधुर्य टपकता है। ऐसे व्यक्ति के नेत्र देखकर उन्हें देखते ही रटने की लालसा उत्पन्न हो जाती है। उस समय वास्तव में किसी कवि के ये शब्द—"ज्यों वदरी अंखियां निरख अंखियन को सुख होत" अक्षरशः चरितार्थ होने लगते हैं। उपरोक्त गुणों के साथ-साथ उसकी दृष्टि से निर्भीकता का स्रोत प्रभावित होता है। आंखों की ऊपर वाली पलकें कुछ भारी तथा फूली हुई सी होती हैं। पलकों के बाल लम्बे, घुंघराले तथा दर्शनीय होते हैं। उसकी पुतलियां स्वच्छ तथा आकर्षक होती हैं तथा भौंहों और तरंगों के सम्मिश्रण से विकसित और प्रभावशाली हो जाती हैं।

नासिका

इस लक्षण वाले व्यक्ति की नासिका सीधी और सुगठित होती है। नाक का आकार न अधिक मोटा होता है और न अधिक पतला नासा-पुट भी नासिका के अनुरूप दर्शनीय होते हैं।

मुख तथा ओष्ठ

इस लक्षण वाले व्यक्ति का मुख विशाल होता है। ओष्ठ भारी होते हैं तथा उनका वर्ण (रंग) लाल होता है। दन्त पंक्तियों की गठन के कारण ऊर्ध्व ओष्ठ साधारणतः अधिक सबल होता है।

दन्त

इस लक्षण वाले व्यक्ति के दन्त दृढ़ तथा स्वच्छ मोती के सदृश्य श्वेत वर्ण के होते हैं, किन्तु वे प्रायः लम्बे और पतले (Narrow) होते हैं। सामने के दन्त अन्य दन्तों से अपेक्षाकृत अधिक लम्बे प्रतीत होते हैं।

कपोल

इस लक्षण वाले व्यक्ति के कपोल सुन्दर, गोल तथा दर्शनीय होते हैं। कपोलों पर मांस सुगठित एवं उन्नत होता है। इसके कपोलों की हड्डियां दृष्टिगोचर नहीं होतीं।

ठोढ़ी

इस लक्षण वाले व्यक्ति की ठोढ़ी सुगठित, सुडौल तथा सुदृढ़ होता है, किन्तु उसके अन्तिम प्रदेश में थोड़ा गड्ढा-सा होता है।

ग्रीवा

इस लक्षण वाले की ग्रीवा परिमित लम्बाई की तथा मोटी होती है। यद्यपि ग्रीवा की हड्डियां मांस की अधिकता के कारण दृष्टिगोचर नहीं होती, किन्तु उसका गठन सुदृढ़ एवं पुष्ट होता है। इसके कंठ पर तिल होता है।

स्कन्ध

इस लक्षण वाले के स्कन्ध प्रशस्त, सुदृढ़, पुष्ट तथा बलिष्ठ होते हैं। स्कन्ध प्रदेश का आकार-प्रकार इसके व्यक्तित्व की विशालता तथा गम्भीरता में चार चांद लगा देता है।

कर्ण

इस लक्षण वाले व्यक्ति के कर्ण सुन्दर होते हैं। उनका गठन उसके शरीर के अनुरूप परिमाण में होता है और सिर से एकदम सटे हुए से होते हैं।

कटि

इस लक्षण वाले व्यक्ति की कटि पुष्ट, सुदृढ़ तथा वर्गाकार सी होती है।

टांग तथा पैर

इस लक्षण वाले व्यक्ति की टांगें तथा पैर की गठन सुडौल तथा सुदृढ होती है। टांगों की लम्बाई शरीर के परिमाण में होती हैं। पैरों के तलवे अपेक्षा कृत छोटे होते हैं।

केश तथा रोम

इस लक्षण वाले व्यक्ति के केश सुन्दर, भूरे, बारीक, सघन, घुंघराले तथा लम्बे होते हैं। स्त्रियों के केश अत्यधिक लम्बे (एड़ी-चुम्बी) होते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति को साधारण श्रम से भी स्वेद अत्यधिक बहने लगता है और वह भी सिर पर बहुत ही अधिक परिमाण में बहता है। अतः ऐसे व्यक्ति प्रायः अल्पायु में ही गंजे होजाते हैं। उनके सरीर पर रोम बहुतायत से

होते हैं। यह स्मरण रखना चाहिये कि रोम तथा केशों की अधिकता शारीरिक स्वास्थ्य की उत्तमता तथा शारीरिक शक्ति की दृढ़ता के द्योतक हैं।

चाल

इस लक्षण वाले व्यक्तिकी चाल राजसी-ढंग की होती है। यह व्यक्ति धीर-गम्भीर-गति से चलता है। इसकी चाल से इसका व्यक्तित्व टपकता है। वह बहुत ही प्रतिभाशाली आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक एवं सम्माननीय होती है। वह बनराज केशरी अथवा हस्ती के समान झूमता हुआ चलता है।

वक्षस्थल

इस लक्षण वाले व्यक्ति का वक्षस्थल प्रशस्त एवं विशाल होता है। वह समुन्नत होता है जिसके परिणाम-स्वरुप उसकी श्वांस नलियां भी विशाल होती हैं। उन्हें यदि एक उत्तम प्रकार का वाद्य यन्त्र कहा जाय तो कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि उनसे गम्भीर, संगीत के सदृश्य वाणी प्रसारित होती है।

वाणी

इस लक्षण वाले व्यक्ति की वाणी मेघ घोष के समान गम्भीर स्पष्ट तथा कर्ण-प्रिय संगीत के सदृश्य मधुर होती है। यह प्रायः शासनात्मक तथा अधिकार-युक्त प्रभावशाली शब्दों का उपयोग करता है, जिसके द्वारा इस व्यक्ति को अनायास ही मानव-समाज का नेतृत्व प्राप्त हो जाता है।

बृहस्पति-क्षेत्रीय व्यक्ति में नेतृत्व शक्ति क्यों रहती है ?

उपरोक्त पंक्तियों में हमने बताया है कि जिस व्यक्ति का गुरु क्षेत्र (Mount of Jupiter) समुन्नत, पूर्ण स्वस्थ तथा अत्यन्त शुभ होता है, वह स्वभावतः ही मानव-समाज का नेतृत्व प्राप्त कर लेता है। हमारे पाठकों को अवश्यही इसका रहस्य जानने की उत्सुकता होगी कि गुरु-क्षेत्रीय व्यक्ति में नेतृत्व शक्ति इतना प्रबल क्यों होती है ? यदि तनिक भी गम्भीरता से विचार किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि इसमें कोई रहस्य नहीं है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का सुदृढ़ सुगठित, आकर्षक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व ही इसका मुख्य कारण है। वाणी का ओज, गम्भीरता और माधुर्य भी इसमें सहायता देता है। साथ ही इस लक्षण वाले व्यक्ति को अपनी शक्ति पर एकान्त विश्वास होता है और जिस व्यक्ति को अपनी शक्ति पर प्रबल विश्वास होगा उसकी इच्छा शक्ति अत्यन्त शक्तिशाली होगी। फलतः उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति स्वभावतः ही उसकी ओर आकर्षित होंगे तथा उसके प्रभाव को स्वीकार करके उसके नेतृत्व में कार्य करने की अभिलाषा रखेंगे। यही कारण है कि गुरु क्षेत्रीय व्यक्ति को जन-समाज का नेतृत्व अनायास ही प्राप्त हो जाता है तथा वह सर्वोत्तम श्रेणी का मानव गिना जाता है।

बृहस्पति-क्षेत्रीय व्यक्ति का स्वभाव

बृहस्पति क्षेत्रीय व्यक्ति विद्वान, मेधावी, दूरदर्शी, नीति-निपुण महत्वाकांक्षी, आत्माभिमानी, विचारशील, जितेन्द्रिय, व्यवहार-

कुशल धर्मानुरागी, तत्त्ववेत्ता, श्रद्धालु, धैर्यशील, सत्यवादी, समदर्शी न्याय-प्रिय, देश-भक्त, आत्म-विश्वासी, सहिष्णु स्वावलम्बी, परोपकारी, उदार, प्रतिभा सम्पन्न, सुशील सम्मानित, उद्योगी, कुशल कलाकार, साहित्यिक, आशुकवि, श्रुति धर, पारदर्शी, निष्कपट, ईर्षा-द्वेष रहित सन्तोषी, निराभिमानी, प्रियदर्शी, मधुर भाषी तथा इष्ट मनोवृति वाला होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति में जन-कल्याण के कार्यों में योगदान करने की स्वभाविक प्रवृति होती है अतः यह मानव-समुदाय में सर्व प्रिय तथा प्रतिष्ठित होते हैं। इसके विचार सदैव उच्चाभिलाषी होते हैं। यह अतिथि सत्कार करने में सदैव तत्पर रहता है। इसका शील स्वभाव तथा उदार चित्त इसके अन्तः करण में पीड़ित तथा आपत्ति-ग्रस्त व्यक्तियों के प्रति समवेदना और सहानुभूति की भावना का संचार करता है। अतः उससे प्रेरित होकर यह व्यक्ति अपने धन का लोक-हितकारी कार्यों तथा पीड़ित और आपत्ति-ग्रस्त व्यक्तियों के उपकार में करता है। नीच मनोवृति वाले, कृपण तथा स्वार्थी लोगों से इसे स्वभाविक घृणा होती है। यह धार्मिक मनोवृति के तथा आध्यात्मवादी होते हैं। प्राचीन पद्धतियों एवं आदर्शों के प्रति इनको विशेष श्रद्धा होती है। इनके जीवन का माप-दण्ड रजोगुणी होता है। अतः यह व्यक्ति ऐश्वर्य-सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है और अपनी प्रतिष्ठा एवं सम्मान को अत्यन्त सावधानी के साथ अक्षुण रखने में व्यवहार कुशल होता है।

धूर्त, छली, कपटी, भ्रष्टाचारी, क्रूर व्यसनी, दम्भी, आचरण हीन

तथा विश्वासघाती व्यक्तियों की गन्ध तक से इसे घृणा होती है। असहाय, गरीब, अनाथ, पीड़ित, आपत्ति-ग्रस्त तथा अपने सगे सम्बन्धी बन्धु-बान्धव, इष्ट मित्र परिजन आदि के साथ विश्वास-घात करने वालों, उन्हें आघात किंवा पीड़ा पहुंचाने वालों, उनसे विवाद करने वालों तथा उनका अनिष्ट करने वालों से इस व्यक्ति को आन्तरिक घृणा होती है। बृहस्पति के उत्तम प्रभाव से युक्त व्यक्ति अनेकानेक तत्वों में पारदर्शी होता है। यह व्यक्ति भोले बाबा भगवान शंकर की भांति आशुतोष होते हैं। जिस किसी को अपना लेते हैं उसे यावत् प्रयत्न निभाते हैं। यह व्यक्ति भाग्यशाली, धनाढ्य, राज-पूजित, भूमिपति तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होते हैं। विद्वान, सुलेख, कवित्व शक्ति-सम्पन्न, भावपूर्ण संगीतज्ञ, गुप्तशास्त्रों के ज्ञाता, विविध शास्त्रों के पण्डित, ओजस्वी वक्ता तथा उच्चकोटि के बुद्धिमान होते हैं। इनका धर्मानुराग अत्यन्त पवित्र तथा प्रबल होता है। फलतः ये आध्यात्मिक तत्वों के ज्ञाता, तथा मातृ-पितृ-देव-राष्ट्र-देश-भक्ति-निरत होते हैं। ये शस्त्रास्त्र विद्या में निपुण होते हैं तथा देश-विदेशों में पर्यटन का इन्हें अत्यधिक प्रेम होता है। इनके शरीर का भार साधारणतः १६०० पल तथा शरीर की ऊंचाई प्रायः ९६ अंगुल होती है।

ज्ञातव्य-सूचना

बृहस्पति के उत्तम, शुभ तथा कल्याणकारी प्रभाव से युक्त व्यक्ति के जो गुण हमने ऊपर लिखे हैं उनमें अतिशयोक्ति अणुमात्र भी नहीं है। हां, एक ही व्यक्ति में उपरोक्त समस्त

गुणों का समावेश नहीं होता। किसी में गुण अधिक परिमाण में होते हैं और किसी में न्यून परिमाण होते हैं। अतः हस्त-परीक्षक को इसका ध्यान रखना चाहिये।

गुरुक्षेत्रीय व्यक्ति के अन्य स्वभाविक गुण

इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने विचारों में सर्वथा स्वतन्त्र होता है। अतः उसे किसी भी विषय में किसी से भी परामर्श करने का अभ्यास नहीं होता, वह अधिकांशतः अपने ही विचारों का अनुसरण करता है। यदि कदाचित वह किसी से परामर्श करता भी है तो भी वह परामर्श केवल लोकाचार के नाते ही करता है, क्योंकि अन्ततः किसी भी विचार को कार्यरूप में परिणित करते समय वह दूसरों की सम्मति का तनिक भी विचार नहीं करता।

वार्तालाप करते समय यह व्यक्ति स्वभावतः ही शासनात्मक तथा अधिकार पूर्ण ढंग से बोलता है। देखने वाले व्यक्ति को ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह अहंकार पूर्ण ढंग से बात चीत कर रहा हो, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। उसकी वाणी में ओज और माधुर्य होता है तथा वह गम्भीर ध्वनि में आत्मविश्वास से परिपूर्ण, आदर्शात्मक तथा स्वायत्तता को प्रकट करने वाले ढंग से वार्तालाप करता है। अपने वार्तालाप के इस ढंग तथा उसके प्रभाव का उसे पूर्ण ज्ञान रहता है। उसकी मनोवृत्ति सदैव दूसरों पर प्रभाव डालने की तथा नेतृत्व करने की रहती है।

इस लक्षण वाले व्यक्ति का हृदय स्वभावतः ही विशाल होता है और अपनी सहृदयता को वह सदैव व्यवहारिक रूप में प्रकट

करता रहता है। मनुष्योचित उदारता इनका जन्म सिद्ध अधिकार है। असहाय, गरीब, अनाथ, पीड़ित तथा अन्य आपत्ति-ग्रस्त व्यक्ति उनकी विशाल-हृदयता तथा सहानुभूति केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं रहती, वरन् उसको वे रचनात्मक रूप भी अवश्य देते हैं। वे दानशील भी होते हैं। उनकी दानशीलता उनके मानवोचित विशाल-हृदयता का ही प्रत्यक्ष स्वरूप होता है। वह जिसे कुछ भी देते हैं उसे यह अनुभव होता है कि देने वाले को देने में सन्तोष और शान्ति जनित आनन्द प्राप्त हुआ है।

इस लक्षण वाले व्यक्ति की दृष्टि (विचारशीलता तथा क्रियाक नाप) अत्यन्त विशाल एवं व्यापक होती है। वह प्रत्येक वस्तु को हृदय खोल कर विशाल दृष्टि से देखता है। उसकी तुच्छताओं की ओर उसका ध्यान ही नहीं होता। किसी भी विषय में उसका माप-दण्ड सत्य और न्याय के पलड़ों पर आश्रित होता है। वह मानवीय सद्गुणों को रचनात्मक रूप देने का पक्षपाती होता है और इसके लिये यावत्-प्रयत्न हर प्रकार से प्रोत्साहन देने में सर्व प्रथम रहता है। उसका व्यवहार, शिष्टाचार, आचार-विचार, जीवन-चर्या आदि प्रत्येक कार्य सत्य, न्याय, आदर्श तथा नीति पर सन्तुलित रहता है। इन में से किसी भी गुण की यत्किंचित न्यूनता भी उसे स्वीकार नहीं होती। वह उत्साही और अग्रसर होने वाला होता है। हां, यह बात अवश्य है कि वह अपने से विपरीत लिङ्ग वालों पर विशेषरूप से आकर्षित होता है। किन्तु इसमें भी उसके विचारों की पवित्रता, आचरण की शुद्धता तथा

इन्द्रियों की निर्मलता में कोई अन्तर नहीं आता। इस व्यक्ति की उदारता सदैव एक सदृश रहती है, अतः वह प्रत्येक हर दयाशील बना रहता है।

यह व्यक्ति व्ययशील भी होता है, किन्तु अपव्ययी नहीं होता वह अधिकांशतः परोपकार धर्म साधन, प्रतिष्ठा, सम्मान अनु-शासन, व्यवस्था तथा शक्ति वर्द्धन के हेतु ही व्यय करता है। उसकी दृष्टि में इनमें से प्रत्येक का मूल्य धन से विशेष—अमूल्य होता है। धन संग्रह के लिए वह कभी भी अनुचित तथा तुच्छ प्रयत्न नहीं करता। कृपणता तथा तुच्छ व्यवहार से उसे हार्दिक घृणा होती है।

वह प्रकृति से ही धार्मिक होता है। यदि सच पूछा जाय तो उसका जन्म अपने सहयोगियों तथा अनुयायियों पर नेतृत्व करने तथा उनपर अनुशासन रखने के लिए ही होता है। यह सर्वथा निर्विवाद तथा प्रत्यक्ष है कि उसकी स्वच्छता की रक्षा करने तथा उसे दुर्गुणों से सुरक्षित रखने का व्यवहारिक चातुर्य उसकी बुद्धि को ईश्वर प्रदत्त होता है। धार्मिकता से यहां हमारा आशय किसी प्रकार की विशिष्ट पूजा, आराधना आदि की पद्धति से कदापि नहीं है। यहां धार्मिकता का एकमात्र अर्थ उस जगन्नि-यन्ता, जगदीश्वर, सच्चिदानन्द घन, सर्वोत्कृष्ट शक्ति के प्रति सच्ची माननीय श्रद्धा तथा विश्वास है से।

व्यवहारिक पवित्रता, प्रशस्त विशालता, गाम्भीर्य पूर्ण उच्चता आदि प्रभावोत्पादक गुण इस लक्षण वाले व्यक्ति में सर्वथा

ईश्वर प्रदत्त होते हैं। यही कारण है कि अन्य सभी प्रकार के शुभ लक्षणों से युक्त व्यक्ति की अपेक्षा विशेष रूप से स्वभाव सिद्ध सज्जन, विचारशील, दूरदर्शी, बुद्धिमान, न्याय परायण, नीतिज्ञ, व्यवहार-कुशल योग्य तथा सद्वृत्ति सम्पन्न नेता होता है और धर्म को उसके अन्तः करण में विशिष्ट श्रद्धा-सम्पन्न स्थान प्राप्त होता है।

इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रदर्शन प्रिय विशेष रूप से होता है। अनुशासन और शान्ति में उसे अनन्य विश्वास होता है। न्यायोचित आज्ञा पालन के लिए वह सदैव तत्पर रहता है। परस्पर सहृदयता पूर्ण निष्कपट प्रेम का वह पक्का समर्थक होता है तथा इस भावना को सदैव प्रोत्साहन देने के हेतु सचेष्ट रहता है। वह पाशविक शक्ति की उन्नति के हेतु स्वप्न में भी संघर्ष नहीं करता। उसका संघर्ष सदैव जन-कल्याण, अनुशासन तथा शान्ति के लिए होता है।

इस व्यक्ति का विश्वास जन-तन्त्र में होता है। उसकी नीतिज्ञता की पृष्ठ भूमि जन कल्याण की पवित्रतम भावनायें होती हैं। अतः वह विश्वासघात, छल, कपट, प्रपंच धूर्तता आदि की घोर निन्दा करता है। उसकी इस प्रकार की मनोवृति का एक मात्र कारण उसका सम्मान, प्रतिष्ठा तथा कीर्ति से अनन्य प्रेम ही है। शक्ति तथा कीर्ति की इच्छा उसकी नस-नस में ओत-प्रोत होती है। संक्षेप में नेतृत्व की लालसा, शक्ति की आकांक्षा कीर्ति की अभिलाषा स्वाभिमान, आत्मसम्मान, लोक-प्रतिष्ठा आदि उसके प्रमुख गुण होते हैं।

इस लक्षण वाला व्यक्ति प्राकृतिक वस्तुओं का भी अत्यधिक प्रेमी होता है। दैवयोग से हस्तगत किसी अशुभ लक्षण के फल स्वरूप यह व्यक्ति यदि निर्धन भी होता है तो भी उसके प्रभाव, मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा कीर्ति में किसी भी प्रकार का अणु-मात्र भी अन्तर नहीं आयेगा। ऐसी दशा मे वैभव सम्पन्न होने पर तो कहना ही क्या है।

जसा कि हम लिख चुके है यह व्यक्ति पथ-प्रदर्शक होता है और इस कार्य में इतना निपुण होता है कि सदैव नवीन मार्गों तथा प्रयोगों का सफलता पूर्वक सम्पादन एवं संचालन करता है। नवीन योजनाओं को रचनात्मक-स्वरूप देने तथा उनका संचालन करने में इसे विशेष उत्साह होता है। अपने अनुशासन की सफलता देखकर इसे हार्दिक आनन्द प्राप्त होता है। यदि किसी पर भी उसे तनिक भी सन्देह उत्पन्न हो जाता है तो वह उससे तुरन्त ही सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है। सहयोगियों तथा अनु-यायियों में मत भेद उत्पन्न हो जाने पर अथवा उनके द्वारा अपने मार्ग में बाधायें उपस्थित होने पर वह उन्हें अपनी नीति-कुशल के द्वारा अपने मार्ग से हटाकर अपना कार्य करता रहता है और अत्यल्पकाल में ही सहयोगियों तथा अनुयायियों को अपने अनुकूल बना लेता है।

इस लक्षण वाला व्यक्ति इतना सच्चा तथा दृढ़ होता है कि असफलता की प्रचण्ड आशंका हो जाने पर अथवा सर्वथा असफल होजाने पर भी विश्वासघात नहीं करता। असफल होकर

भी पुनः नव चेतना तथा उत्साह के साथ अपने प्रयास में लगनशील होकर दत्त-चित्त हो जाता है। अत्यन्त विषम परिस्थितियों में भी वह किसी से भी याचना नहीं करता। इस सम्बन्ध में वह इतना दृढ़ होता है कि सहायता के नाते भी किसी के सामने अपनी दुर्बलता प्रकट नहीं करता।

जैसा कि हम लिख चुके हैं इस लक्षण वाले व्यक्ति निर्भीक साहसी, लगनशील. उद्यमी तथा कर्त्तव्य परायण होते हैं, अतः यह जिस किसी काम मे भी हाथ डालता है। वहीं इसे सफलता प्राप्त होती है। जीविकार्जन के प्रत्येक क्षेत्र मे यह व्यक्ति आशातीत उन्नति करता है। व्यापार करने पर उच्चकोटि का व्यापारी तथा उद्योग पति बनता है। राज-सेवा मे प्रविष्ट होने पर प्रायः उच्चतम श्रेणी के पद प्राप्त करता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी इसे अद्वितीय सफलता प्राप्त होती है।

यह व्यक्ति यद्यपि लोकोपकारी कार्यों में अग्रणी रहता है तथा सार्वजनिक-कार्यों का प्रायः नेतृत्व ही ग्रहण करता है, किन्तु राजनैतिक कार्यों में प्रायः अनिच्छा से ही—परिस्थिति वश सम्मलित होता है। यदि यह कहा जाय तो अधिक स्पष्ट रहेगा कि यह व्यक्ति राजनैतिक कार्यों में प्रायः इच्छा न होने पर भी फस ही जाता है, किन्तु एक बार फंस जाने पर पीछे पग रखना यह नहीं जानता। फिर तो सफलता प्राप्त करके ही दम लेता है। अत्यन्त उपयोगी तथा अकाट्य तर्क को भी यह व्यक्ति अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक मनन कर लेने के पश्चात् ही स्वीकार करता है।

किसी भी बात को अनायास ही स्वीकार कर लेना इस लक्षण वाले के स्वभाव विरुद्ध है।

यह व्यक्ति बाल्यकाल ही से अपनी सूझ-बूझ को क्रियात्मक स्वरूप देने लगते हैं। विद्यार्थी जीवन में अपने सहपाठियों का संगठन करके आन्दोलन का संचालन करते हैं। ऐसे बालक अल्पावस्था ही में अपना जीवन-पथ निश्चित करने के लिए व्यग्र देखे जाते हैं। ये अपने भाग्य का निर्माण स्वयं ही करते हैं। यह अपने सहयोगी की खोज उस समय करते हैं जब किसी काम में दूसरे के सहयोग की अटल आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। अपने ध्येय में साङ्गोपाङ्ग सफलता प्राप्त करने से पूर्व यह व्यक्ति अपने कार्य-क्रम में अत्यधिक परिवर्तन करता है, किन्तु अन्ततः सफलता प्राप्त करके ही छोड़ता है।

इस व्यक्ति का अत्यधिक आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक गुण यही है कि यह प्रत्येक काम की—जिसे आरम्भ कर देता है—तह में पहुंचे बिना सन्तुष्ट नहीं होता। मस्तक रेखा (Head Line) का इसके जीवन में अत्यधिक महत्व होता है।

बृहस्पति क्षेत्र पर करतल-गत प्रमुख रेखाओं का प्रभाव

मनुष्य के करतल पर यों तो अनेकों रेखायें होना सम्भव है और उनका शुभाशुभ प्रभाव मानव-जीवन पर परिलक्षित होता रहता है, किन्तु कुछ रेखायें अपने प्रमुख स्थान तथा विशिष्ट महत्व रखती हैं। इन रेखाओं का जहां अपनी स्वतन्त्र विशेषता एवं महत्व है, वहां ये हस्त-गत अन्य शुभाशुभ लक्षणों पर भी

अत्यन्त प्रभावोत्पादक अधिकार रखती हैं। मानव हस्त गत ऐसा कोई भी लक्षण नहीं है जिस पर इन रेखाओं का शुभाशुभ प्रभाव न होता हो। इसी प्रकार ये रेखायें ग्रह-क्षेत्रों के शुभाशुभ प्रभाव में भी आश्चर्य-जनक परिवर्तन करने की शक्ति रखती हैं। अत्यन्त श्रेष्ठ और शुभ-फल-प्रद ग्रहक्षेत्रों के प्रभाव में भी अपेक्षाकृत न्यूनता अथवा अत्यधिक न्यूनता उपस्थित कर देना अथवा उसके महत्व को सर्वथा नष्ट कर देने में ये रेखायें सर्वथा समर्थ हैं। इसी प्रकार अशुभ फलप्रद ग्रहक्षेत्रों के कुपरिणाम न्यूनाधिक करती अथवा नष्ट करती हैं। अतः ग्रहक्षेत्रों का फल घोषित करने से पूर्व इन रेखाओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर लेना चाहिये अन्यथा हस्त-परीक्षा फल में अत्यधिक भूल होना सर्वथा सम्भव है। ये प्रमुख एवं विशिष्ट रेखायें निम्न लिखित हैं—

१—अन्त करण रेखा (Heart Line)—यह रेखा तीन स्थानों में से किसी एक स्थान पर से आरम्भ हो कर करतल के दूसरे छोर—बुध तथा मंगल के क्षेत्र के मध्य में—तक जाती है। इसके तीन उद्गम स्थान निम्नांकित हैं—

(क) बृहस्पति क्षेत्र का मध्य भाग।

(ख) तर्जनी और मध्यमा का मध्य भाग

(ग) शनि क्षेत्र का मध्य भाग।

२—मस्तक रेखा (Head Line)—यह रेखा भी अन्तःकरण रेखा (Heart Line) की भांति तीन स्थानों में से किसी एक स्थान पर आरम्भ होती है तथा करतल के मध्म भाग

में से होती हुई करतल के दूसरे छोर पर अन्तकरण रेखा (Heart Line) के नीचे मंगल तथा चन्द्रमा के क्षेत्र के मध्य तक जाती है। इसके तीन उद्गम-स्थान निम्नांकित हैं:—

(क) जीवन रेखा से ऊपर बृहस्पति के क्षेत्र का कोई भाग।

(ख) जीवन रेखा के उद्गम-स्थान पर उसे स्पर्श करती हुई।

(ग) बृहस्पति क्षेत्र के नीचे वाला मंगल क्षेत्र में जीवन-रेखा के अन्दर।

३—जीवन-रेखा (Life Line)—यह रेखा तर्जनी और अंगुष्ठ के मध्य बृहस्पति क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होकर शुक्रक्षेत्र को अपने वर्तुल में समेटती हुई करतल के अधोभाग तक—मणिबन्ध तक पहुँचती है।

४—भाग्य-रेखा (Fate Line)—यह रेखा निम्नलिखित चार स्थानों से आरम्भ होती है:—

(क) मणिबन्ध से।

(ख) जीवन रेखा (Life Line) को स्पर्श करती हुई।

(ग) चन्द्र-क्षेत्र में किसी स्थान से।

(घ) करतल के मध्य भाग अर्थात् राहु-क्षेत्र से।

उपरोक्त रेखाओं के स्पष्ट, सुडौल, गहरी, यथास्थान, चिकनी, अक्षत तथा सुन्दर होने पर ही ग्रह-क्षेत्रों का शुभ प्रभाव अधिकांशत: निर्भर करता है। यदि ये रेखायें अस्पष्ट, कटी-फटी, टेढ़ी-मेढ़ी तथा मोटी हों तो ग्रह-क्षेत्रों का प्रभाव भी प्राय: शुभ फल-

प्रद नहीं होता। विशेषतः जब ये रेखायें अत्यधिक बुरी स्थिति में हों अथवा अन्य रेखाओं द्वारा बुरी तरह कट रही हों अथवा स्वयं ही किसी स्थान से कटी हुई हों, तो इनका अशुभ प्रभाव ग्रह-क्षेत्रों पर अवश्य ही कुप्रभाव डालता है।

बृहस्पति क्षेत्र पर मस्तक रेखा का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र उन्नत हो तथा मस्तक रेखा (Head Line) स्पष्ट, सुडौल, गहरी, यथा-स्थान चिकनी, अक्षत तथा सुन्दर हो, उस व्यक्ति में उपरोक्त शुभ गुणों का प्रकाश अवश्यमेव परिलक्षित होता है, किन्तु मस्तक रेखा (Head Line) के अस्पष्ट, फटी-फटी, टेढ़ी-मेढ़ी तथा भोंढ़ी होने पर उन्नत गुरु-क्षेत्र वाला व्यक्ति अभिमानी, दम्भी, अहंकारी, स्वेच्छाचारी, निरंकुश, अपने ही में विश्वास करनेवाला आदि आसुरिक गुणों से सम्पन्न होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का सबसे बड़ा दुर्गुण यह होता है यह प्रत्येक वस्तु की—उसके हानि लाभ पर विचार किये बिना ही अथवा उसकी उपयुक्तता-अनुपयुक्तता की उपेक्षा करके—सीमा तक पहुंच जाते हैं और इससे प्रायः अपना अमूल्य समय और घोर परिश्रम व्यर्थ ही नष्ट कर देते हैं। इनके विपरीत मस्तक रेखा शुभ हो, सीधी हो तथा करतल के आर-पार हो तो उन्नत गुरु-क्षेत्रीय व्यक्ति उच्चतम स्थिति तथा उत्तर-दायित्व का उपभोग करते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र पर की दो खड़ी तथा लहरदार रेखायें आकर मस्तक रेखा (Head Line) पर मिलें,

वह धूर्त मिथ्या-भाषी, छली, कपटी, विश्वासघाती, कुटिल तथा अपना कार्य दूसरों से कराने वाला होता है, किन्तु यह व्यक्ति श्रमशील अवश्य होता है। अपने स्वार्थ-साधन के लिये यह कठिन से कठिन परिश्रम से भी नहीं घबराता। अपनी मनोवृत्ति की कुटिलता के प्रभाव से यह व्यक्ति अपने इष्ट-मित्रों तथा सहयोगियों द्वारा पर-स्त्री-हरण भी करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में वृहस्पति-क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य से एक गहरी रेखा चलकर हृदय-रेखा (Heart Line) को काटती हुई मस्तक-रेखा (Head Line) को स्पर्श करे अथवा काटे, उस व्यक्ति की मृत्यु निश्चित रूप से मस्तक में प्राण-घातक चोट लगने से होती है।

वृहस्पति-क्षेत्र पर मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा का संयुक्त-प्रभाव

जिस व्यक्ति के गुरु क्षेत्र के नीचे से निकलने वाली जीवन-रेखा (Life Line) तथा मस्तक रेखा (Heart Line) मोटी हों तथा गुरु-क्षेत्र के ठीक नीचे ही (अर्थात लगभग आरम्भ होने वाले स्थान पर ही) उन्हें दो छोटी-छोटी रेखायें काटे तो वह व्यक्ति प्राकृतिक रूप से दुर्बल शरीर वाला होगा तथा प्रायः रोग-ग्रस्त ही रहेगा और औषधि-सेवन द्वारा ही स्वस्थ रहेगा। इसके साथ ही यह व्यक्ति भाग्यहीन तथा शुत्रुओं से पीड़ित रहता है। बाल्यावस्था में इसे अत्यधिक पीड़ित रहना होता है। ऐसा व्यक्ति सदैव चिन्ता, कलह, तथा क्रोध में ही जीवन बिताता है।

जिस व्यक्ति के बृहस्पति-क्षेत्र से चली एक शुद्ध और सरल रेखा मस्तक-रेखा (Head-Line) तथा जीवन रेखा (Life Line) को काट कर बृहस्पति क्षेत्र के नीचे वाले मंगल क्षेत्र पर जाय, वह व्यक्ति बुद्धिमान, गुणवान, नितिज्ञ, दूरदर्शी, मेधावी, विद्वान, साहित्यिक, कला-कौशल में प्रवीण, उदार, दानशील, परोपकारी, प्रतिष्ठित, महत्वाकांक्षी, विचारशील, माननीय, प्रख्यात-कीर्ति, सुशील, कुल-दीपक, दृढ़-निश्चयी, लोक-प्रिय तथा सर्वगुण सम्पन्न होता है।

बृहस्पति-क्षेत्र पर हृदय-रेखा का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ पर बृहस्पति-क्षेत्र और शनि-क्षेत्र के मध्य-स्थल से आरम्भ होने वाली एक सुस्पष्ट (गहरी) रेखा हृदय रेखा (Heart Line) को स्पर्श करे अथवा काटे वह व्यक्ति अपने जीवन में प्रायः शिरो-रोगों से पीड़ित रहता है।

जिस व्यक्ति के करतल में हृदय-रेखा (Heart Line) बृहस्पति-क्षेत्र पर जाय और उसे बृहस्पति-क्षेत्र पर (रेखा के अन्तिम छोर पर) एक छोटी सीधी खड़ी रेखा काटे तो वह व्यक्ति अधर्मी, लम्पट, अविचारी, अनाचारी, व्यभिचारी, खाद्या-खाद्य-भक्षी गम्यागम्य-भोगी, विषयान्ध तथा नीच मनोवृत्ति वाला होता है। अपने कुकर्मों के फल-स्वरूप वह राज-दण्ड भोगता है तथा अग्नि, चोर और शत्रुओं से पीड़ित रहता है। वृद्धावस्था में ऐसे व्यक्ति चिंतातुर रहते हैं।

बृहस्पति-क्षेत्र-गत दीक्षा-रेखा का परिचय

बृहस्पति-ग्रह के परिचय में हम लिख चुके हैं कि यह ग्रह देवताओं का गुरु किंवा आचार्य है और इसका सम्बन्ध मानव-जीवन में प्रधानतः विचार-शक्ति, इच्छा-शक्ति, मानस-शक्ति आदि मस्तिष्क किंवा मानसिक क्रियाओं में रहता है। विद्या, बुद्धि आदि सतोगुणी विषय इसके प्रभाव-क्षेत्र के प्रमुख विषय हैं। अतः इस क्षेत्र में अर्थात् बृहस्पति-क्षेत्र में एक विशेष प्रकार की रेखा होती है। यह रेखा करतल के बाहर से, अंगुष्ठ वाली दिशा से बृहस्पति-क्षेत्र पर प्रवेश करती है। यह रेखा आड़ी होती है। इसे दीक्षा-रेखा कहते हैं। इस रेखा से यथा-प्रसंग गुरु अथवा शिष्य किंवा भक्त का बोध होता है। इसके अतिरिक्त इस रेखा से अनन्य अनुरागी तथा अभिन्न हृदय सच्चे और जीवन-पर्यन्त साथ देने वाले इष्ट-मित्रों का भी विचार किया जाता है।

बृहस्पति-क्षेत्रस्थ दीक्षा-रेखा का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में गुरु-क्षेत्रस्थ दीक्षा-रेखा शुद्ध, सुस्पष्ट सुडौल, गहरी, चिकनी, सीधी, अक्षत तथा सरल हो तो वह पवित्रता, आत्म-ज्ञान, वैराग्य, निस्पृहता, अन्तर्दृष्टि, आत्मोन्नति आदि आध्यात्मिक विषयों में विशेषरूप से पारंगत होता है। वह व्यक्ति स्वभावतः ही जितेन्द्रिय, उदार, परोपकारी तथा दानशील होता है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, अहंकार आदि का इसके जीवन में कुछ भी प्रभाव नहीं होता। वह अपने जीवन के अन्तिम काल में वेदान्ती तथा ब्रह्म-निष्ठ होता है। वह किसी सुयोग्य

सद्गुरु से दीक्षा ग्रहण करता है। यदि दीक्षा-रेखा एक से अधिक हों तो जितनी दीक्षा-रेखा होंगी उतने ही सद्गुरुओं से दीक्षा ग्रहण करने का उसे सौभाग्य प्राप्त होगा। किन्तु ध्यान में रखना चाहिये कि ये दीक्षा-रेखा शुद्ध तथा सरल हों और किसी भी अन्य रेखा अथवा रेखाओं द्वारा कटती हुई न हों।

यदा-कदा दीक्षा-रेखा गृहस्थाश्रम-स्थ व्यक्तियों के हाथों में भी परिलक्षित होती हैं। ऐसी स्थिति में लोगों को इसके उपरोक्त गुणों के प्रति प्रायः शंका हो जाती है, जो वास्तव में सर्वथा निर्मूल एवं हास्यास्पद है। गृहस्थाश्रम इसके अचूक प्रभाव को परिवर्तित नहीं कर सकता। उस व्यक्ति में भी उपरोक्त स्वभाव-सिद्ध गुण अवश्यमेव विद्यमान होंगे और यदि सौभाग्यवश उसका बृहस्पति-क्षेत्र उन्नत, प्रशस्त, विस्तृत तथा श्रेष्ठ दशा में हुआ तो वह व्यक्ति किसी सद्गुरु के प्राप्त होते ही वैराग्य धारण कर लेगा और आत्मोन्नति तथा ब्रह्म-प्राप्ति के हेतु केवल गृह त्याग ही नहीं करेगा बल्कि लौकिक-जीवन से ही उपराम हो जावेगा। यदि कहीं उसका बृहस्पति-क्षेत्र शुभ चिह्नों से युक्त हुआ (जैसे बृहस्पति-क्षेत्र पर चतुष्कोण हुआ और बृहस्पति क्षेत्र को एक सुस्पष्ट, सुडौल तथा अक्षत चन्द्राकार रेखा किंवा वृत घेरे हो और साथ ही उसकी तर्जनी अंगुली विशेषरूप से लम्बी, शुभलक्षणों से युक्त तथा श्रेष्ठ हो तो उसका गृह-त्याग पूर्णरूपेण निश्चित है।

दैवयोग से यदि किसी व्यक्ति के हाथ में परम शुद्ध तथा सरल दीक्षा-रेखा ही हो तथा उपरोक्त अन्य सद्गुण एवं शुभ

लक्षण किंवा चिह्नों का अभाव हो तो केवल-मात्र दीक्षा-रेखा के प्रभाव से ही वह व्यक्ति कुशल गृह-पति, पवित्र-विचारशील, जितेन्द्रिय, उदार, परोपकारी, दानशील, सहिष्णु, धैर्यवान, क्षमा-शील, निरहंकारी, सत्यवादी, सदाचारी, धर्म-निष्ठ, विद्वान, अध्ययनशील, वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी तथा शास्त्रों का ज्ञाता होता है। उसे सुयोग गुरु से दीक्षा भी प्राप्त होती है, किन्तु वह प्रायः गृहस्थ-जीवन मे ही अपने उपरोक्त गुणों द्वारा अपना जीवन सफल करता है।

गुरु-क्षेत्रस्थ अन्य रेखाओं का विचार

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र पर एक सुस्पष्ट, सरल सीधी, गहरी, अक्षत, सुडौल तथा सुन्दर रेखा हो वह यशस्वी गुणज्ञ, मित्रों से युक्त, लोक प्रिय, विनीत, सुशील, दानी, उदार, शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला तथा शान्त-प्रकृति होता है। यह व्यक्ति साहित्य-सेवी, अध्ययन-शील, विद्याव्यसनी, सदैव अपनी उन्नति में लगनशील तथा प्रसन्नचित्त रहने वाला होता है, किन्तु इसे अपने परिजन बन्धु-बान्धवा तथा दुष्ट एवं कुटिल-प्रकृति के व्यक्ति से सदैव भय लगा रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति का क्षेत्र (Mount of gupiter) उच्च हो, तर्जनी अंगुली मध्यमा अंगुली के बराबर लम्बी हो तथा मस्तक रेखा (Head Line) चन्द्र-क्षेत्र तक जाती हो वह व्यक्ति ख्यातिमान सुयोग्य विद्वान, कलाकार अथवा नीतिज्ञ होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः सफलशासक, लोक-प्रिय कलाकार, अनुभवी नीतिज्ञ तथा सुयोग्य आचार्य होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी अंगुली का ऊर्ध्व-पर्व छोटा हो, सूर्य क्षेत्र उच्च हो तथा हृदय-रेखा स्वच्छ,सरल,सुस्पष्ट, अक्षत, गहरी तथा सुन्दर हो वह व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति तो अवश्य करता है, किन्तु उसको बहुधा शत्रुओं तथा परिजन बन्धु-बान्धवों द्वारा अपमानित होकर क्लेश तथा चिन्ताओं में ही जीवन बिताना पड़ता है। इन्हीं कारणों से उसके मार्ग में बाधायें भी अत्यधिक उपस्थित होती हैं, किन्तु उपरोक्त लक्षणों के साथ-साथ यदि बृहस्पति-क्षेत्र भी उच्च हो तो परिणाम शुभ-फल-प्रद ही होता है।

(विशेष सूचना—यद्यपि साधारणतः तर्जनी अंगुली का ऊर्ध्व-पर्व छोटा होना अशुभ होता है और प्रायः अनिष्ट फल-प्रद ही पाया जाता है; किन्तु सूर्य-क्षेत्र तथा बृहस्पति-क्षेत्र की उच्चता तथा हृदय-रेखा (Heart Line) की शुद्धता के प्रभाव से उसका अशुभ परिणाम नष्ट हो जाता है।)

जिस व्यक्ति के गुरु-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली एक रक्त रेखा हृदय-रेखा (Heart Line) के असमानान्तर होकर उच्च सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचे उस रेखा को हस्त शास्त्रकारों ने कन्दुक रेखा की संज्ञा प्रदान की है। इस रेखा से सम्बन्धित व्यक्ति के रोग-ग्रस्त रहने की सूचना प्राप्त होती है, किन्तु यदि यह कन्दुक रेखा सरल, सुस्पष्ट, अक्षत, गहरी, सुडौल, चिकनी तथा सुन्दर हो और हृदय रेखा (Heart Line) के समानान्तर जा रही हो तो इसका प्रभाव अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। ऐसी दशा में

तत्सम्बन्धित व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति के कार्य करने वाला; वेदांत, तर्क, मीमांसा आदि गूढ़ विषयों का विद्वान; सुवक्ता, वाक-पटु, गुरु जनों में श्रद्धा तथा भक्ति रखने वाला एवं उनकी आज्ञा का पालने वाला होता है। इस व्यक्ति की स्त्री बुद्धिमती, गृह-कार्य में दक्ष, आनन्द दायिनी तथा बहु-सन्तान वाली होती है। उसका हृदय शुद्ध एवं निष्कपट होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य भाग मे पांच छोटी-छोटी, खड़ी, स्पष्ट, सरल, गहरी, अक्षत, सुडौल तथा सुन्दर रेखायें हों वह हठी, शंकालु किन्तु बुद्धिमान, बहुत से मित्रों वाला तथा अनेकों शत्रुओं से पीड़ित होता है। इन रेखाओं से यह भी सूचित होता है कि इस व्यक्ति की मृत्यु का कारण उसकी हठ होगी। ऐसे व्यक्ति का मन प्रायः चंचल होता है और उनका जीवन बहुधा दुःखमय ही व्यतीत होता है।

उपरोक्त (शनि और बृहस्पति क्षेत्र के मध्यस्थ) रेखायें यदि हृदय रेखा (Heart Line) को काटें तो वह व्यक्ति वृद्धावस्था में शस्त्राघात अथवा किसी भयङ्कर दुर्घटना से मृत्यु को प्राप्त करता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः पचास वर्ष की आयु से दुःख और चिन्ताओं का आखेट रहने लगता है और पचहत्तर वर्ष की आयु पर उसे तथा कथित मृत्यु द्वारा भौतिक शरीर से छुटकारा मिलता है।

जिस व्यक्ति के गुरु क्षेत्र पर स्थित दो सीधी खड़ी रेखाओं को एक आड़ी रेखा काटे वह शुभ-सूचक है। इस लक्षण वाला

व्यक्ति धार्मिक-क्षेत्र में अत्यधिक ख्याति प्राप्त करता है तथा नये-नये प्रकाशन करता है। ऐसे व्यक्ति उच्चकोटि के शास्त्रज्ञ, सम्पादक, नीतिज्ञ, और कुशल कलाकार होते हैं। ये कोमल स्वभाव, मधुरभाषी तथा धन सम्पन्न भी होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होने वाली एक सरल, सुस्पष्ट, सीधी, अक्षत, गम्भीर, सुडौल तथा सुन्दर रेखा हो और इसके साथ ही एक लहरदार रेखा भी हो और दोनों रेखायें मस्तक रेखा (Head Line) पर आयें तो वह व्यक्ति स्वभावतः ही अत्यन्त उग्र, मतवाला, कामान्ध, इन्द्रिय-लोलुप, तथा क्रोधी होता है। इस प्रकार सुस्पष्ट तथा शुद्ध जितनी रेखायें मस्तक-रेखा (Head Line) का स्पर्श करें उस व्यक्ति के उतने ही विवाह होते हैं। यदि सौभाग्यवश उसका बृहस्पति-क्षेत्र उच्च हो तो वह व्यक्ति यशस्वी, उदार, दानशील, परोपकारी, लोक-प्रिय तथा धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न भी होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र पर रेखा-जाल जैसा चिह्न हो वह महा-स्वार्थी, उपद्रवी, निर्दयी, धूर्त, दुष्ट, कुटिल, कपटी, प्रपञ्ची, दम्भी, नीच तथा अहंकारी होता है। इस व्यक्ति को सामाजिक-क्षेत्र में अत्यधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसके विवाह में किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है। यह अत्यधिक कामातुर, इन्द्रिय-लोलुप, भ्रान्तधारणा-युक्त, कुकर्मी, अनाचारी, दुराचारी, अत्याचारी, आततायी तथा दुष्ट होता है। ऐसे व्यक्ति मानवता के लिये अभिशाप ही होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र पर तर्जनी के मूल-स्थान के नीचे तीन खड़ी, सरल, सुस्पष्ट, अक्षत, सुडौल तथा सुन्दर रेखायें हों वह सौभाग्यशाली, दूरदर्शी, नीतिज्ञ, बुद्धिमान, गुणवान अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, कार्यकुशल तथा मेधावी होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः महात्मा, योगी, लोक-नेता, उच्च राज्याधिकारी अथवा शासक होता है।

जिस व्यक्ति के गुरु-क्षेत्र से (तर्जनी के मूल देश के नीचे से) चलने वाली दो टेढ़ी रेखायें शनीक्षेत्र पर पहुंचें तो वह धन-ऐश्वर्य सम्पन्न, वैभवशाली, सन्मित्रयुक्त, विविध-वाहनों वाला तथा समस्त प्रकार के भौतिक ऐश्वर्यों का भोक्ता होकर सुखी होता है किन्तु उसका चित्त भ्रान्त रहता है और शिरोआघात से पीडित होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र के अधोभाग में छोटी, गहरी तथा मोटी तीन रेखायें हों वह शक्ति-सम्पन्न होता है किन्तु ऐसे लक्षणवाला व्यक्ति अत्यधिक विषय-वासना में लिप्त तथा कामातुर होता है। उसे प्रायः वात-रोगों का आखेट रहना पड़ता है। यह व्यक्ति प्रायः सेवा-कार्य करता है और दूसरों का भृत्य होकर जीवन-यापन करता है। इसकी संगति प्रायः दुष्ट, कुटिल, धूर्त तथा असभ्य व्यक्तियों से होती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः समाज में तिरस्कृत रहते हैं।

जिस व्यक्ति के बृहस्पति-क्षेत्र तथा शनी क्षेत्र के मध्यस्थल की रेखा को तर्जनी के मूल से आरम्भ होने वाली रेखा काट कर शनी-क्षेत्र पर पहुंचे तो वह कार्य-कुशल, विलास-प्रिय, स्वाभिमानी,

पराक्रमी तथा उत्साही होता है। किन्तु यदि इसी रेखा को एक और छोटी रेखा काट रही हो तो उसके प्रभाव से व्यक्ति आलसी कृश-शरीर वाला, तथा मस्तक-पीड़ा से युक्त होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में वृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होने वाली एक धनुषाकार रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुंचे वह व्यक्ति लम्पट, धूर्त, कपटी, अनाचारी, अभिमानी, व्यभिचारी, अविचारी, दुराचारी, मानहानि से चिन्तित तथा पाखण्डी होता है।

उपरोक्त धनुषाकार रेखा यदि सुस्पष्ट, अक्षत, गम्भीर तथा शुद्ध हो और बुध-क्षेत्र पर जाकर उसमें से कई शाखायें निकलती हों तो वह शुभफल-प्रद हो जाती है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति उदार, परोपकारी, दानी, विद्वान, विचारशील, कुशल-व्यवसायी, कलाकार, सुविख्यात-वक्ता, तथा अपने जीवन में सर्वथा सफल होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी के मूल में सन्धिवाली आड़ी रेखाओं को अन्य तिरछी रेखायें काटें तो वह उन्नति में बाधा पाकर निराश होता है। उसका मन चंचल और मस्तक पीड़ायुक्त होता है।

गुप्त-विद्या-रेखा का परिचय

किसी २ व्यक्ति के वृहस्पति-क्षेत्र पर एक अर्द्ध-चन्द्राकार रेखा (‿) होती है। यह रेखा गुरु-क्षेत्र से आरम्भ होकर शनी-क्षेत्र अथवा मध्यमांगुली के मूल तक जाती है। इसे सामुद्रिक शास्त्र-वेत्ताओं ने गुप्त-विद्या-रेखा (Soloman Ring) के नाम से सम्बोधन किया है।

गुप्त-विद्या-रेखा का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ मे गुप्त विद्या रेखा होती है वह अपूर्व शक्तिशाली, विद्वान, विचारशील, दूरदर्शी, मेधावी प्रतिभा-सम्पन्न, ओजस्वी-वक्ता, मधुरभाषी, बुद्धिमान, सर्वजन-प्रिय, कला-कल्याण भावना-युक्त कला-प्रवीण, व्यवहारकुशल, नीति-निपुण तथा गुप्त-विद्याओं का ज्ञाता होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता, उत्कृष्ट श्रेणी का गणितज्ञ, नूतन अनुसन्धानकर्ता वैज्ञानिक, ब्रह्मज्ञानी, आत्मतत्वदर्शी तथा उच्च-कोटि का आध्यात्मिक होता है। वेदान्त तथा न्याय मीमांसा की ओर इसकी रुचि अधिक पाई जाती है। महात्माओं, गुरुजनों तथा उच्च कोटि के आध्यात्मिक महा-पुरुषों की इस व्यक्ति पर अनन्य कृपा होती है। यह व्यक्ति प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसे खूब सोच विचार लेता है। तथा अपने मार्ग को पहले ही से निर्धारित कर लेता है। इस व्यक्ति का जीवन आद्यान्त आनन्द से व्यतीत होता है। चिन्ता और कलह तथा राग-द्वेष को तो यह जानता ही नहीं।

गुप्त-विद्या-रेखा पर अन्य रेखाओं का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ मे वृहस्पति-क्षेत्र और शनी-क्षेत्र के मध्य मे आरम्भ होने वाली एक सरल रेखा गुप्त-विद्या-रेखा को काटे तो वह हृदय रोग से पीडित रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ मे गुप्त-विद्या रेखा से सम्बद्ध दो खड़ी रेखायें गुरु-क्षेत्र पर स्थित हों वह व्यक्ति ख्याति और

सफलता प्राप्त करता है। यदि ये रेखायें भिन्न-भिन्न तथा लहरदार हों तो व्यक्ति अपने कामों में असफल हो कर क्षीण शक्ति होता है। उक्त रेखा यदि हृदय रेखा (Heart Line) को काट रही हो तो वह व्यक्ति के जीवन में दुर्भाग्य-पूर्ण प्रेम की सूचक है। बृहस्पति-क्षेत्र पर कई छोटी छोटी रेखायें या क्षेत्र रेखायें हों तो वे अपयश, हानि और अभाग्य की सूचक हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति क्षेत्र पर एक सीधी रेखा द्वारा हृदय रेखा कटी हो और गुरु क्षेत्र निम्न हो—साथ ही तर्जनी अंगुली छोटी हो तो वह व्यक्ति आजीवन अकर्मण्य, आलसी, कार्यहीन, निर्धन, पराश्रित, असफल, अपयश का भागी तथा दुखी होता है।

बृहस्पति क्षेत्र की उच्चता का प्रभाव

जिस व्यक्ति का बृहस्पति-क्षेत्र उच्च हो अर्थात् ऊंचा उठा हुआ तथा प्रशस्त हो उसकी मुखाकृति भाव-पूर्ण-प्रतिभा सम्पन्न, ओजस्वी, तेजोमय, लावण्ययुक्त तथा दर्शनीय होती है। यह व्यक्ति आद्योपान्त सुखमय जीवन व्यतीत करता है तथा अपने बाहुबल से ही अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। यह व्यक्ति विद्वान, धार्मिक, राज-सम्मानित जन-प्रिय, देवभक्त, पवित्र, काव्य-कुशल, कुल-दीपक, दानी, उदार, भाग्यवान, साहसी, निष्कपट, विनीत, दयावान, स्पष्ट वक्ता, क्लेश सहने वाला, शान्त स्वभाव, तपस्वी, अल्पभोजी, शक्तिशाली तथा शत्रु विजयी होता है। यह दुष्ट और छली को ताड़ना देने वाला, निर्मल बुद्धि, मधुर-भाषी, मितव्ययी,

धनाढ्य, अपने कार्यों में संलग्न, प्रसन्न बदन, चपल, अध्यात्मवादी, भविष्यवक्ता, धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न, वैभवशाली, तथा पुत्र-पौत्रादिकों से युक्त रहता है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः ज्योतिषी सम्पादक, कवि, मन्त्री, न्यायाधीश, धर्माचार्य, प्राध्यापक. महामहोपाध्याय, योगी, साहित्यिक तथा आध्यात्मिक विषयों के ज्ञाता होते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्तियों का जन्म प्रायः मार्गशीर्ष से पौष के दूसरे सप्ताह में होता है।

बृहस्पति क्षेत्र की अत्युच्चता का प्रभाव

बृहस्पति-क्षेत्र (अथवा किसी भी ग्रह-क्षेत्र) का अत्युच्च होना अशुभ होता है। वह कुटिल, लम्पट, धूर्त, विश्वासघाती, नीच, अनाचारी, अविचारी, दुराचारी, व्यभिचारी स्वार्थी, दम्भी, कपटी, प्रपंची. छली, अहंकारी, क्रोधी, मदान्ध तथा अपव्ययी होता है। यह व्यक्ति अत्यधिक कठोर भाव से अपनी प्रभुता का परिचय देता है। उत्तरदायित्व से यह सर्वथा हीन होता है। यह व्यक्ति प्रायः सभी कार्यों मे असफल रहता है तथा व्यर्थ की चिन्ताओं से घिरा रहता है। वह अल्प-बुद्धि होता है। उसके लिखने में गर्व झलकता है तथा उसके अक्षर बहुत बड़े होते हैं। वह सर्वथा विचार-हीन, अदूरदर्शी तथा मूर्ख होता है किन्तु अपना स्वार्थ-सिद्ध करने के लिए दूसरों को धोखा देने मे परम चतुर होता है।

इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री रूपवती, गुणवती तथा गृह-कार्य में दक्ष होती है, किन्तु कामातुर होकर पुत्र की कामना

से पर-पुरुष-गामिनी होना सम्भव है। ऐसे व्यक्ति के घर में पुण्य तथा धार्मिक कार्यों का एकान्त अभाव होता है। यह सदैव शत्रुओं द्वारा अपमानित होता है। किन्तु परिजन बन्धु-बान्धवों द्वारा इसे सदैव सहायता तथा सुख प्राप्त होता है। इसे समय-समय पर बृहस्पति कृत रोगों तथा कष्टों का आखेट होना पड़ता है।

बृहस्पति-क्षेत्र की निम्नता का प्रभाव

जिस व्यक्ति का बृहस्पति क्षेत्र निम्न हो वह प्रायः अनिद्रा, वात-रोग, अम्ल, श्लेष्मा, क्षय, चर्म रोग आदि बृहस्पति-कृत रोगों का आखेट बना रहता है। इसे स्वच्छ वायु सेवन तथा देश-भ्रमण करने की बड़ी इच्छा रहती है। निकृष्ट अन्न की ओर इसकी रुचि अधिक रहती है। यह प्रायः पराधीन रहता है तथा स्वभाव का चिड़चिड़ा, शंकालु तथा कुलघ्न होता है। यह प्रायः निकृष्ट जीविका से ही जीवन-यापन करता है इसकी स्त्री सुन्दर किन्तु विलास प्रिय, पर-पुरुपासक्त और पुत्र की कामनावाली होती है। इस लक्षणों वाले व्यक्ति का जन्म प्रायः फाल्गुण से चैत्र के दूसरे सप्ताह में होता है।

उच्च-बृहस्पति-क्षेत्र के इतस्ततः झुकाव का प्रभाव

कितने हाथों में देखा गया है कि बृहस्पति-क्षेत्र उच्च तो होता है किन्तु वह किसी ओर झुका हुआ सा रहता है। इसका अर्थ यह होता है कि वह अपने आस-पास वाले अन्य ग्रहों से प्रभावित होता है। इस प्रकार का उच्च बृहस्पति अपने शुभ

प्रभाव का फल तो देता ही है किन्तु वह जिस ग्रह क्षेत्र की ओर झुका होता है उसके प्रभाव को भी प्रकट करता है। यदि यह कहा जाय तो अधिक स्पष्ट होगा कि इस प्रकार के बृहस्पति-क्षेत्र के द्वारा बृहस्पति के उत्तम-प्रभाव तथा सम्बन्धित ग्रह के शुभाशुभ-प्रभाव का मिश्रण होता है। अब हम यहां पाठकों के लाभार्थ बृहस्पति-क्षेत्र की इस प्रकार की स्थितियों का शुभाशुभ परिणाम संक्षेप में लिखते हैं।

उच्च बृहस्पति-क्षेत्र के शनी-क्षेत्र की ओर झुकाव का फल

जिसके हाथ का उच्च बृहस्पति-क्षेत्र शनी-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो उसका स्वभाव कोमल होता है। वह आत्मनिष्ठावान, सुखी, शान्त, बुद्धिमान, परोपकारी, सर्व प्रिय तथा उदार होता है। किन्तु शत्रुओं को बड़ा ही भयदायक होता है। उसका मन सदैव परोपकार में लगा रहता है। वह प्रत्येक कार्य भली भांति करने में कुशल तथा सत्यवादी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री सच्चरित्र, गुणवती, सुशीला, आनन्द-प्रद, सुन्दर तथा लावण्यवती होती है। किन्तु उसके सन्तान अपेक्षा कृत कम होती है। इस लक्षण से युक्त स्त्री सुशीला, सत्यवादिनी तथा सुकर्मरत होती है, किन्तु वह लोभी होती है और सदैव रोगों से पीड़ित रहती है।

उच्च बृहस्पति-क्षेत्र के मंगल-क्षेत्र की ओर झुकाव का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में उच्च बृहस्पति-क्षेत्र द्वितीय मंगल-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो, वह अपने गुप्त विचारों को प्रकट करने वाला, लम्पट, पाखण्डी, अविवेकी, धूर्त, अनाचारी, तथा

लुच्चा होता है, अन्यथा उसकी मुख-मुद्रा सदैव उदास रहती है। यह व्यक्ति प्रायः फोड़ा फुन्सी, खाज-खुजली, दाद आदि चर्म रोगों से पीड़ित रहता है।

दैवयोग से यदि उपरोक्त योग स्त्री के हाथ में हो तो वह उपरोक्त अशुभ फलों से सर्वथा विपरीत एवं शुभ-फल प्राप्त करती है। इस लक्षण वाली स्त्री सत्यवादिनी, साध्वी, गम्भीर, सदैव प्रसन्न-मुद्रा में रहने वाली, गृह-कार्य में दक्ष, पति-परायण तथा सुशीला होती है, किन्तु यह स्त्री धन के अभिमान से मत्त होकर दूसरों को तुच्छ समझती है।

उच्च बृहस्पति-क्षेत्र के राहु-क्षेत्र (करतल) की ओर झुकाव का फल

जिस व्यक्ति का गुरु क्षेत्र उच्च होकर राहु-क्षेत्र अथवा हथेली की ओर झुका हुआ हो तो वह व्यक्ति भाग्यवान, पराक्रमी, उपकारी, उदार, शान्त-प्रकृति, प्रतिभा-सम्पन्न, तेजस्वी, शोभायुक्त धनाढ्य, कीर्तिमान, गुरुजनों से श्रद्धा रखने वाला, उच्च पदाधिकारी, धार्मिक, बहु-सन्तान-युक्त, तथा तीर्थ-यात्रा-प्रेमी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री उदार, सद्गृहणी और स्वभाव की कोमल, किन्तु अपव्ययी होती है।

ध्यान रहे कि उपरोक्त शुभ फल राहु-क्षेत्र (हथेली) के उच्च होने पर ही प्राप्त होते हैं। साथ ही हथेली के मध्य-स्थल रेखाओं तथा अन्य चिन्हों का शुभ होना भी अत्यावश्यक है। यों साधारणतः जिस क्षेत्र की ओर कोई क्षेत्र झुकेगा वह झुकने

वाले क्षेत्र की अपेक्षा निम्न ही होगा। किन्तु हथेली का निम्न होना अशुभ है। किन्तु शनि-क्षेत्र और द्वितीय मंगल क्षेत्र के उच्च होने पर प्रायः राहु क्षेत्र (हथेली) भी उच्च ही रहता है। इस प्रकार के उच्च मध्य हथेली की ओर बृहस्पति क्षेत्र का झुकाव सदैव शुभ-फल-प्रद ही होता है।

बृहस्पति-क्षेत्र के साथ अन्यान्य उच्च-क्षेत्रों का फल

जिस प्रकार उच्च बृहस्पति क्षेत्र के अन्यान्य क्षेत्रों की ओर झुकने पर उसके शुभाशुभ फल पर आश्चर्यजनक प्रभाव होता है ठीक उसी प्रकार उच्च बृहस्पति क्षेत्र के साथ-साथ अन्य ग्रह-क्षेत्रों के उच्च होने पर भी उसके प्रभाव में आकाश-पाताल का अन्तर हो जाता है। पाठकों के बोधार्थ तथा ज्ञान-वृद्धि के लिए हम इनका संक्षिप्त वर्णन निम्न पंक्तियों में करते हैं।

उच्च बृहस्पति-क्षेत्र तथा उच्च मगल-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति और मंगल दोनों ग्रहों के क्षेत्र उच्च हों वह विभूतियुक्त, कृपण, क्रोधी, पशु-संग्रह-शील, मतान्तर से पाप-कर्मी, मातृ-विरोधी, सन्तान द्वारा साधारण कष्ट से त्रस्त तथा उच्च पदस्थ होता है। इसका वक्षस्थल ऊंचा, नेत्र सुन्दर, स्वास्थ्य उत्तम तथा मेधा-शक्ति श्रेष्ठ होती है। इस व्यक्ति की ख्याति अत्यधिक होती है, जिसके प्रभाव से वह अभिमानी हो जाता है। इसकी आयु मध्यम होती है तथा मंगल-ग्रह के नेष्ट वर्षों में पीड़ा, दुर्घटना आदि का आखेट होना पड़ता है, किन्तु बृहस्पति के उच्च होने के कारण इनका शमन हो जाता है।

उच्च गुरु क्षेत्र तथा उच्च शुक्र क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति तथा शुक्र-दोनों ग्रहों के क्षेत्र उच्च हों,वह शक्तिशाली, असत्यवादी, शत्रुयुक्त, साहसी, बिना विचारे कार्य करने वाला, भोला-भाला किन्तु लोभी, बहु-कुटुम्बी जनों से सुखी, स्त्रियों के संग में रहने पर भी उनका अल्प-प्रेमी होता है। यह व्यक्ति प्रायः झगड़ालू और कुतर्की होता है। इसका शरीर लम्बा होता है और इसकी प्रकृति कफज होती है।

उच्च बृहस्पति क्षेत्र और उच्च चन्द्र-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ मे बृहस्पति और चन्द्र—दोनों ग्रहों के क्षेत्र उच्च हों वह नीतिज्ञ, दूरदर्शी, मेधावी, धन-धान्य-सम्पन्न, कुलीन, कीर्तिमान, वैभवशाली, उन्नतिशील, विचारवान तथा उत्साही होता है। यह व्यवहार कुशल तथा कुशल गृहस्थ होता है और आजीवन सुखी रहता है।

बृहस्पति-क्षेत्र-स्थ अन्यान्य चिन्हों का विचार

मानव हस्त-गत रेखाओं द्वारा कभी-कभी विशेष प्रकार की आकृतियां बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त अन्यान्य अनेक प्रकार के चिह्न भी मानव हस्त पर दृष्टिगोचर होते हैं। यदि मानव-जीवन-विज्ञान की दृष्टि से गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो इन सब प्रकार के चिह्नों का मानव-जीवन से गहरा सम्बन्ध होता है और वे मनुष्य के भविष्य की ओर अकाट्य संकेत करते हैं। इस प्रकार के चिह्न कभी-कभी जीवन की भूतकालीन घटनाओं

के रहस्य भी स्पष्टतया खोलकर रख देते हैं। अतः मानव-हस्त-गत ये चिह्न निस्सन्देह अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं और वे मनुष्य के जीवन के अध्ययन में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। हस्त-विज्ञान-वेत्ताओं ने इनका गम्भीर अध्ययन किया है और मानव-जीवन पर इनके शुभाशुभ परिणाम का व्यवहारिक अनुभव करके जन-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर उन्हें हस्त-विज्ञान-शास्त्र में अंकित किया है। मानव हस्त-गत ये चिह्न शुभ और अशुभ दोनों ही श्रेणियों के होते हैं और अपने-अपने अनुरूप ही शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। पाठकों के लाभार्थ हम यथा-सम्भव अधिक-से अधिक हस्त-गत चिह्नों पर इन पंक्तियों में प्रकाश डालेंगे। यहां हम केवल बृहस्पति-क्षेत्र गत शुभाशुभ चिन्हों की ही चर्चा करेंगे। शेष चिन्हों का वर्णन यथा-स्थान किया जायगा।

गुणक-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के बृहस्पति-क्षेत्र पर गुणक चिह्न (×) हो उसे कुलीन, प्रतिष्ठित एवं धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न व्यक्ति के यहां से धन-गृहादि के प्रलोभनों से युक्त विवाह की सूचना प्राप्त होती है, किन्तु यह सूचना केवल-मात्र सूचना ही रह जाती है। कार्य रूप में परिणित नहीं होती अर्थात् उस व्यक्ति के यहां विवाह-सम्बन्ध नहीं होता। वैसे इस लक्षण वाले व्यक्ति का जीवन सुखमय ही व्यतीत होता है। कर्म-क्षेत्र में इसे यत्किञ्चित बाधाओं का सामना अवश्य करना पड़ता है। यह व्यक्ति लावण्य-युक्त तथा

सुन्दर होता है और इसका स्वभाव कोमल एवं आकर्षक होता है; इस कारण से उस पर प्रायः स्त्रियां मोहित होती हैं, किन्तु वह जितेन्द्रिय होता है तथा अपने चरित्र की पवित्रता पर अडिग रहता है और फल स्वरूप जन-साधारण की श्रद्धा का भाजन होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के जीवन में सर्वोत्कृष्ट बाधा अथवा विशेष उल्लेखनीय घटना यही होती है कि कोई भावुक स्त्री इस पर आसक्त होकर अपना सर्वस्व निछावर कर देती है। यह व्यक्ति विदेश भ्रमण-प्रेमी, धार्मिक-क्षेत्र में प्रबल तथा उच्चस्तरीय सम्मान प्राप्त करने की इच्छा वाला शक्ति-सम्पन्न, तथा महान गुणज्ञ होता है। वह अपने अविवाहित जीवन को ही सुखमय समझकर धर्म-कर्म-क्षेत्रों में कार्यशील रहता है। किन्तु इस-शुभ फल के लिए यह आवश्यक है कि उक्त गुणक (x) चिन्ह को अन्य कोई रेखा न काटे तथा वह चिन्ह सुस्पष्ट एवं शुद्ध हो। यदि यह गुणक-चिह्न अस्पष्ट होगा तो सम्बन्धि व्यक्ति के मस्तक में आघात लाने की सम्भावना रहती है और यदि ऐसा नहीं हो तो वह व्यक्ति सदैव असम्भव-प्रायः विचारों में मग्न रहता है। यह गुणक-चिन्ह यदि तर्जनी अंगुली के सन्धि मूल में गुरु-क्षेत्र के ठीक ऊपर हो तो उस व्यक्ति का निश्चय ही किसी कुलीन, प्रतिष्ठित तथा धन वैभव-सम्पन्न व्यक्ति के यहां विवाह सम्बन्ध होता है और वह विवाहोपरान्त अपना शेष जीवन अपने श्वसुर-गृह में घर-जमाई बनकर व्यतीत करता है। ऐसे व्यक्ति धन-वैभव आदि से तो सर्वथा सम्पन्न रहते हैं किन्तु इन्हें अपने

जीवन में सन्तान-सुख अपेक्षाकृत न्यून ही होता है। ये प्रायः सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्तित ही रहते हैं। यदि दैवयोग से इन्हें सन्तान-लाभ हो भी जाता है तो वह अल्पायु ही होती है।

गुह्य-गुणक-चिन्ह विचार

बृहस्पति-क्षेत्र और मंगल-क्षेत्र के मध्य में जो गुणक चिन्ह होता है उसे शास्त्रकारों ने 'गुह्य-गुणक-चिन्ह' की संज्ञा प्रदान की है। इस चिन्ह वाले व्यक्ति स्वभावतः ही आध्यात्मिकता की ओर विशेष रूप से प्रवृत रहते हैं तथा सदैव ज्ञान-लाभ में संलग्न रहते हैं। इस लक्षण वाला व्यक्ति आत्मश्लाघी और अहंकारी भी होता है, किन्तु उसकी विचारधारा उदार होती है और परोपकार की भावना भी उसमें विशेष रूप से परिलक्षित होती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का बाल्यकाल प्रायः रुग्णावस्था में ही व्यतीत होता है। यह व्यक्ति साधारणतः बारहवें वर्ष में विद्याध्ययन आरम्भ करता है।

विशेष-ज्ञातव्य

यहां प्रसंगवश यह लिख देना असंगत नहीं होगा कि मानव-हस्त-गत गुणक चिह्न केवल बृहस्पति क्षेत्रस्थ होने पर ही शुभ फल प्रदान करता है। अन्य सभी स्थानों पर इसका प्रभाव अपेक्षाकृत अशुभ ही होता है। गुरु क्षेत्र पर गुणक-चिह्न हो और साथ ही विवाह सम्बन्धी अन्य चिन्ह भी अनुकूल तथा शुभ हों तो गुणक-चिह्न सम्बन्धी उपरोक्त घटना अर्थात् कुलीन प्रतिष्ठित तथा धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न परिवारमे विवाह सम्बन्ध अवश्यमेव होता है।

चतुष्कोण-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र पर चतुष्कोण का चिह्न हो वह अच्छे कार्यों का करने वाला, प्रतिदिन अपनी उन्नति देखकर प्रसन्न होने वाला, बुद्धिमान, गुणज्ञ, विचारशील तथा चतुर होता है। इस व्यक्ति को उच्च तथा उत्तरदायित्व पूर्ण पद प्राप्त होते हैं। जन-साधारण में इसकी कीर्ति प्रसारित होती है तथा वह लोक-प्रिय होता है। दुर्भाग्य से यदि बृहस्पति-क्षेत्र निम्न हो और उस पर सुस्पष्ट चतुष्कोण का चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति बृहस्पति क्षेत्र के निम्न होने से उत्पन्न अशुभ परिणामों से सर्वथा सुरक्षित रहता है। ऐसी स्थिति में सम्बन्धित व्यक्ति को रोग और चिन्ताओं से मुक्ति मिल जाती है और वह राज-दण्ड से भी बच जाता है तथा समाज में अपमानित अथवा उपेक्षित नहीं होता। चतुष्कोण उसे दुर्घटनाओं से भी मुक्त रखता है।

सौभाग्यवश यदि बृहस्पति-क्षेत्र उच्च हो और उस पर सुस्पष्ट एवं अक्षत चतुष्कोण का चिन्ह अंकित हो तो उस व्यक्ति को उपरोक्त शुभ फलों के साथ-साथ उसे कोई महान सिद्धि भी प्राप्त होती है। यह व्यक्ति किसी प्रकार के मन्त्र यन्त्र-तन्त्र में अलौकिक सफलता प्राप्त करता है अथवा इसके प्रभाव से वह आध्यात्मिकता की ओर संलग्न होता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका जीवन अत्यन्त सुख और सुविधापूर्ण होता है। यह चतुष्कोण यदि अस्पष्ट भी हो तो भी शुभ-फल-प्रद ही होता है।

यदि दैवयोग से किन्हीं रेखाओं के परस्पर कटने पर भी चतुष्कोण का चिन्ह बन जाय तो उसका परिणाम भी शुभ ही होता है।

विशेष-ज्ञातव्य

चतुष्कोण वास्तव में मानव-हस्त-गत रक्षा-चिन्ह अथवा कवच है। यह चिह्न जिस स्थान पर होता है उस स्थान के प्रायः सभी दुष्परिणामों का शमन करता है। चतुष्कोण को देखकर निःसंकोच होकर तत्सम्बन्धित स्थान के अशुभ परिणामों को समाप्त हुआ कर देना चाहिये।

नक्षत्र-चिह्न विचार

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-क्षेत्र पर नक्षत्र का चिह्न हो वह व्यक्ति सौभाग्यशाली, धन ऐश्वर्य-सम्पन्न, भाग्यवान, श्रीमान् उदार, परोपकारी तथा क्षमाशील होता है। उसे अपने परिजन बन्धु-बान्धवों से सुख प्राप्त होता है तथा अपने धन अथवा आर्थिक-स्थिति से सन्तोष होता है। उसका विवाह धन-धान्य सम्पन्न परिवार में होता है तथा उसे विवाह से स्त्री-पक्ष से अधिक धन प्राप्त होता है। उसकी अभिलाषायें बहुत बढ़ी चढ़ी होती हैं और उनकी पूर्ति के हेतु वह अनेकों मार्गों का अवलम्बन कर सफलता तथा कीर्ति एवं उन्नति-लाभ करता है। किन्तु इस व्यक्ति को अपने शत्रुओं से सदैव सावधान रहना चाहिये तथा साझेदारी में भी सचेत रहना चाहिये यदि नक्षत्र चिह्न बृहस्पति और शनी—दोनों ग्रहों के क्षेत्रों के मध्य मे हो तो परिजन बन्धु-बान्धवों की ओर से भी सावधानी बर्तना ही हितकर होगा।

विशेष-ज्ञातव्य

जहां तक हमारा अनुभव है नक्षत्र चिह्न मानव जीवन की ऐसी स्थितियों अथवा घटनाओं की ओर संकेत करता है जिन पर हमारा कुछ भी अधिकार नहीं होता। यह चिह्न हमारी उन्नति भी कर सकता है और अवनति का कारण भी बन जाता है—यहां तक कि यह हमारी मृत्यु का सूचक भी हो सकता है। मानव-हस्त पर विभिन्न स्थानों पर इसका परिणाम विभिन्न प्रकार का—शुभाशुभ होता है। अतः इसके परिणाम का निर्णय करने से पूर्व जिस स्थान पर यह स्थित हो उसका स्थान के सम्बन्ध में ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

द्वीप-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के वृहस्पति क्षेत्र पर द्वीप का चिह्न हो वह अपयश तथा तिरस्कार पाता है। यह चिह्न मान हानि तथा जेल यात्रा का सूचक है। इस चिह्न वाला व्यक्ति स्वार्थी तथा झगड़ालू होता है। यह स्वभावतः ही लम्पट, धूर्त, मिथ्याभाषी, प्रपंची, छली, कपटी, अविचारी, दुराचारी, कुमार्गी, अनाचारी, व्यभिचारी, अदूरदर्शी, विश्वासघाती तथा नीच प्रवृति वाला होता है। इस चिन्ह वाला व्यक्ति प्रायः पर स्त्री गामी, चौर-कर्म करने वाला द्यूत क्रीड़ा रत, व्यसनी, भक्ष्याभक्षी, अगम्यागामी तथा दुष्ट कर्मों का करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः कुल को कलंकित करने वाला होता है। किन्तु जब यह चिन्ह आड़ा होता है तब ही उपरोक्त अशुभ परिणाम प्रदान करता है। दैवयोग से यदि यह

चिन्ह खड़ा हुआ हो तो यह साधारणतया शुभ-फल प्रद हो जाता है। द्वीप चिन्ह के खड़ा होने पर व्यक्ति में अभक्षाभक्षी अगम्या-गामी, पर-स्त्री गमन, व्यभिचार, द्यूत क्रीड़ा, चौर-कर्म आदि दुर्गुण नहीं रहते। हां, शेप दुर्गुण फिर भी अवश्य रहते हैं।

दाग-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के बृहस्पति क्षेत्र पर दाग अथवा बिन्दु जैसा चिन्ह होता है वह साधारणतया अशुभ फल कारक होता है। इस चिन्ह के वर्ण (Colour) भेद से विभिन्न दुष्परिणाम होते हैं। हम उन्हें नीचे अंकित करते हैं—

श्वेत दाग—श्वेते दाग साधारणतया शुभ होता है।

काला दाग—काला दाग अपयश कारक होता है। इस चिन्ह वाले व्यक्ति की प्रतिष्ठा को हानि होती है तथा धन-नाश भी होता है। इसका जीवन सदैव दुःख पूर्ण रहता है।

लाल दाग—लाल दाग धन हानि, अपव्यय, कलह तथा चिन्ताओं का सूचक है।

जाली चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के हाथ में गुरु-क्षेत्र पर चित्रांकित मकड़ी के जाले के समान चिन्ह हो वह शक्ति-सम्पन्न होता है। किन्तु उसकी मृत्यु जल में डूबने से होती है। इस चिन्ह वाला व्यक्ति लौकिक जीवन में सभी क्षेत्रों में असफल रहता है तथा योगी हो तो योग-भ्रष्ट होता है। वह स्वभावतः ही नीच कर्म करने वाला होता है तथा अपने दुष्ट स्वभाव के द्वारा ही दूसरों पर

प्रभाव जमाता है। उसके वैवाहिक सुख में प्रायः बाधायें उत्पन्न होती हैं।

त्रिशूल-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के बृहस्पति-क्षेत्र पर त्रिशूल का चिन्ह हो वह मृगी-रोग से ग्रस्त रहता है तथा कृश-शरीर का होता है। इसकी विचार शक्ति अत्यन्त निर्बल होती है, किन्तु वह धन-ऐश्वर्य सम्पन्न होता है तथा उसके शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है।

त्रिभुज-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के बृहस्पति क्षेत्र पर त्रिभुज का चिह्न हो वह जन-हित कार्यों में रत, गणितज्ञ, राज्य-मन्त्री, राजदूत, दूरदर्शी, उच्च शासनाधिकारी, मेधावी, प्रतिभा-सम्पन्न, चतुर नीति-निपुण, विचारशील तथा विद्वान होता है। यह व्यक्ति स्वभावतः ही सात्विक होता है तथा इसे अपनी प्रतिष्ठा का अत्यधिक ध्यान रहता है।

वृत-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के बृहस्पति क्षेत्र पर शुद्ध तथा सुस्पष्ट वृत अथवा गोलाकार चिह्न हो वह प्रत्येक कार्य में शीघ्र ही सफलता तथा उन्नति प्राप्त करता है। यह व्यक्ति अच्छी ख्याति तथा सम्मान पाता है। यह स्वभावतः ही उदार, दयालु, उपकारी तथा दानशील होता है। सरल स्वभाव होने के कारण बन्धु-बान्धव तथा इष्ट-मित्रों सभी को हृदय खोलकर धन देता है। यह श्रेष्ठ साहित्यिक होता है।

अन्य-चिन्ह विचार

जिस व्यक्ति के बृहस्पति क्षेत्र पर अंग्रेजी के 'के' का उल्टा स्वरूप (ﾚ) जैसा चिह्न अंकित हो वह आचार-विचार हीन, निर्बुद्धि, अपव्ययी, कठोर स्वभाव, स्वार्थी, मूर्ख, अदूरदर्शी तथा दुर्गुणी होता है।

ग्रह चिन्ह विचार

मानव-हस्त पर जिस प्रकार चतुष्कोण, त्रिशूल, नक्षत्र, वृत्त आदि विविध प्रकार के अनेक चिह्न होते हैं, उसी प्रकार ग्रहों के भी अपने विशिष्ट चिन्ह होते हैं। यदि वास्तव में पूछा जाय तो इस प्रकार के विशेष ग्रह-चिन्ह प्रकारान्तर से ग्रहों के स्वरूपों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। इस चिह्न के द्वारा ग्रह-विशेष की मानव-हस्त पर सामयिक स्थिति का ज्ञान होता है। इन चिन्हों की एक विशेषता यह है कि ये मानव हस्त पर साधारणतः ग्रह-क्षेत्रों पर ही अंकित होते हैं। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि ये चिन्ह अपने व्यक्तिगत क्षेत्र पर ही हों ऐसा कोई नियम नहीं है। किसी भी ग्रह का चिन्ह किसी भी ग्रह-क्षेत्र पर परिलक्षित हो सकता है। उदाहरणार्थ बृहस्पति क्षेत्र पर बृहस्पति का चिन्ह भी हो सकता है और बृहस्पति का चिन्ह न होकर अन्य किसी ग्रह का चिन्ह भी हो सकता है। एक ग्रह-क्षेत्र पर एक ग्रह का चिन्ह ही हो यह भी निश्चित नहीं है। एक से अधिक चिन्ह भी एक ही ग्रह-क्षेत्र पर हो सकते हैं। हां, यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि ग्रह-चिन्ह अपने व्यक्तिगत क्षेत्र पर अपने क्षेत्र का

सम्पूर्ण शुभाशुभ प्रभाव में अपूर्व वृद्धि करता है। साधारण अपने क्षेत्रगत ग्रह-चिन्ह शुभ-फल ही प्रदान करता है। मित्र ग्रह के क्षेत्र में प्रत्येक ग्रह-चिन्ह सहयोगी बनकर लाभप्रद होता है, किन्तु शत्रु-ग्रह के क्षेत्र में प्रत्येक ग्रह-चिन्ह विपरीत परिणाम का द्योतक होता है।

बृहस्पति के चिन्ह का स्वरूप

बृहस्पति-ग्रह का चिन्ह दो रेखाओं के सम्मेलन से बनता है। एक रेखा खड़ी होती है और उसके लगभग मध्य भाग में दूसरी चक्र रेखा बांयी ओर आकर मिलती है। इसका स्वरूप कुछ कुछ हिन्दी वर्णमाला के 'भ' अथवा 'य' अक्षर से मिलता जुलता है। इसकी आकृति इस प्रकार की होती है—(भ) बृहस्पति ग्रह का व्यक्तिगत चिन्ह।

बृहस्पति-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के बृहस्पति क्षेत्र पर ही बृहस्पति का चिन्ह हो उसे बृहस्पति क्षेत्र जनित सभी शुभ फल तथा लाभ अनायास तथा अवश्यमेव प्राप्त होते हैं, क्योंकि अपने ही क्षेत्र मे स्थित होने के कारण उसे अपने क्षेत्र पर पूर्ण अधिकार तथा अबाध्य अनुशासन प्राप्त रहता है, जिसके फलस्वरुप वह अपने सद्गुणों का खुल कर उपयोग करता है।

शनी-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के शनी क्षेत्र पर बृहस्पति का चिन्ह अंकित हो वह पराक्रमी, विद्वान, काव्य मर्मज्ञ, साहित्यकार, सुकवि, मीमां-

सक, तत्व-ज्ञानी तथा यशस्वी होता है। यह व्यक्ति साधारणतः अध्ययन शील होता है तथा शिक्षा क्षेत्र में उच्चासन—जैसे प्राध्यापक, महा महोपाध्याय, आचार्य, कुलपति आदि के पद प्राप्त करता है। जन-साधारण में अपने गुणों का प्रसार करके यह लोक-प्रियता तथा लोक सम्मान एवं यश प्राप्त करना है।

सूर्य-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के सूर्य क्षेत्र पर बृहस्पति का चिन्ह अंकित हो वह वाक्-शक्ति सम्पन्न तथा पराक्रमी होता है। यह व्यक्ति दूर-दर्शी, विद्वान, मेधावी, प्रतिभा-सम्पन्न, नीति-निपुण, उदार, कार्य-कुशल, व्यवहार-पटु, बुद्धिमान धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न, दानी, सन्तोषी, परोपकारी, सव हितेच्छुक, अध्ययनशील, सफल राज-नीतिज्ञ, लोक-नेता, प्रभावशाली वक्ता, गणितज्ञ, यशस्वी, गुरु-जनों में श्रद्धा रखने वाला तथा लोक-प्रिय होता है। संक्षेप में वह सर्वगुण सम्पन्न होता है; तथा अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल पर राज्य-शासन, उच्च स्थान प्राप्त करके कीर्ति पाता है।

बुध-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति चिन्ह बुध क्षेत्र पर अंकित हो वह व्यक्ति व्यापार तथा व्यवसाय में अभूत पूर्व उन्नति करता है। इस क्षेत्र में उसे अमित धन ऐश्वर्य के साथ साथ यश तथा लोक प्रतिष्ठा भी अनायास ही प्राप्त हो जाती है। यह व्यक्ति दूरदर्शी, विचारशील, कार्य कुशल, व्यवहार पटु, मधुर भाषी तथा नीति निपुण होता है। यह कुशल कलाकार तथा

सर्व प्रिय होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री लावण्यवती, सुन्दरी, गृह कार्य निपुण, गुणवती साहित्य सेविका तथा लोक सेवा में रत रहने वाली होती है तथा उसके सत्संग से वह व्यक्ति भी तन-मन-धन से जनता-जनार्दन की सेवा में संलग्न होता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि बृहस्पति और बुध में परस्पर शत्रुता है। अतः बुध-क्षेत्रस्थ बृहस्पति चिन्ह उपरोक्त शुभ-फल उसी दशा में प्रदान करता है जब कि बुध क्षेत्र उच्च हो तथा बुधांगुलि अर्थात कनिष्ठका अंगुली अनामिका अंगुली के उर्ध्व पर्व तक लम्बी हो। ऐसी दशा में बुध और बृहस्पति का शत्रुत्व बाधक नहीं होता। इसके विपरीत यदि बुध क्षेत्र अत्युच्च हो अथवा निम्न हो तो इस स्थान पर बृहस्पति चिह्न अनिवार्य-रूप से अशुभ-फल ही प्रदान होता है।

प्रथम-मंगल-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के मंगल के प्रथम-क्षेत्र (ऊपर के क्षेत्र अर्थात् बुध-क्षेत्र तथा चन्द्र-क्षेत्र के मध्यस्थ-चिन्ह अंकित हो वह महा पराक्रमी तथा शत्रु-विजयी होता है। उस व्यक्ति के शत्रु अधिकांशतः उसके परिजन बन्धु-बान्धव ही होते हैं, किन्तु वह अपनी नीति-कुशलता तथा बुद्धि-चातुर्य से उन्हें अपने वश मे करने मे सफल होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति न्यायाधीश तथा कभी २ प्रधान न्यायाधीश अथवा न्याय-मन्त्री भी होता है। उसका उच्च सेनाध्यक्ष, राजदूत अथवा कुशल-चिकित्सक होना भी सर्वथा सम्भाव्य है।

द्वितीय-मंगल-क्षेत्रस्थ वृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के मंगल के द्वितीय-क्षेत्र (नीचे के क्षेत्र अर्थात् वृहस्पति क्षेत्र तथा शुक्र क्षेत्र के मध्यस्थल मंगल क्षेत्र) पर वृहस्पति का चिन्ह अंकित हो वह साधारणतया सम्बन्धित व्यक्ति के लिये अशुभ फलदायक होता है। इसका प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक हानि-प्रद होता है। वह व्यक्ति प्रायः आजन्म रोग ग्रस्त रहता है।

शुक्र-क्षेत्रस्थ वृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ पर शुक्र क्षेत्र पर वृहस्पति का चिन्ह अंकित हो वह उच्च-पद प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयत्न करता है तथा अपनी इस अभिलाषा में सफलता प्राप्त करने के लिये अत्यन्त परिश्रम करके विद्याध्ययन करता है। यह व्यक्ति प्रधानतः शिक्षा-क्षेत्र में उच्च पद—जैसे अध्यापक, महा महोपाध्याय, आचार्य कुलपति आदि बनने की अभिलाषा करता है अथवा उच्च सेना-ध्यक्ष बनने के लिये प्रयत्नशील रहता है। किन्तु अनेकों बार प्रयत्न करने पर भी वह अपने मन्तव्य में प्रायः असफल ही रहता है, क्योंकि वृहस्पति देव-गुरु हैं और शुक्र असुर गुरु हैं। अतः इनमें स्वभाविक शत्रुता है। अतः शुक्र-क्षेत्र-स्थ गुरु-चिन्ह मनुष्य की भावनाओं में तो परिवर्तन करने में सफल होता है किन्तु शुक्र उसे कार्य-क्षेत्र में सफल नहीं होने देता और अपना प्रभाव ही अधिक दिखाता है।

चन्द्र-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ पर चन्द्रमा के क्षेत्र पर बृहस्पति का चिन्ह अंकित होता है वह लौकिक-जीवन मे परम सुखी होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति धन-वैभव-सम्पन्न, बुद्धिमान,विचारशील, कार्य-दक्ष, व्यवहार कुशल, शास्त्र एव कलाओं मे निपुण, पुत्र-पुत्रादिकों से सम्पन्न, मधुर-भाषी, विविध-वाहनों से युक्त तथा सुखी होता है। इसकी स्त्री रूप-लावण्य-वती तथा सद्गुण सम्पन्न एवं सुशीला होती है। इस व्यक्ति को जनसाधारण में प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त होता है तथा वह अपने मनोवाञ्छित कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

राहु-क्षेत्रस्थ बृहस्पति चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ मे राहु क्षेत्र अर्थात् करतल के मध्य भाग मे बृहस्पति का चिन्ह अंकित हो वह विद्वान, बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, धन वैभव का स्वामी तथा मन्त्र-शास्त्र का अपूर्व ज्ञाता होता है। इस व्यक्ति का जीवन गुप्त विद्याओं के अनुशीलन में विशेषरूप से व्यस्त रहता है।

केतु-क्षेत्रस्थ बृहस्पति-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में केतु-क्षेत्र पर बृहस्पति का चिन्ह अंकित होता है उसका भाग्योदय निश्चित रूप से बीस वर्ष की आयु मे होता है और वह कोई उच्च एवं प्रतिष्ठित पद प्राप्त करता है।

बृहस्पति-क्षेत्र से सम्बद्ध अन्यान्य योग

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी अंगुली लम्बी हो; बृहस्पति क्षेत्र तथा चन्द्र-क्षेत्र उच्च हो; मस्तक-रेखा सुस्पष्ट, अक्षत, गम्भीर तथा चिकनी हो, तथा कनिष्ठका अंगुली नुकीली हो वह न्याय-वेदान्त का प्रकाण्ड विद्वान होता है। ऐसे योग वाले व्यक्ति न्यायाधीश, प्रधान न्यायाधीश, न्याय मन्त्री, उत्तम श्रेणी के बैरिस्टर, अध्यापक, आचार्य, महा-महोपाध्याय, कुलपति, न्याय-विधान-निर्माता, तत्वज्ञानी, ब्रह्मनिष्ठ तथा आत्मदर्शी होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथम तर्जनी अंगुली लम्बी तथा नुकीली हो और वृहस्पति क्षेत्र उच्च हो तथा उस पर तर्जनीके मूल से उद्भूत एक छोटी, सुस्पष्ट, अक्षत तथा खड़ी रेखा हो, वह दिव्य दृष्टि सम्पन्न तथा अन्तर्ज्ञानी होता है। उसकी बुद्धि तीव्र होती है वह इस योग वाला व्यक्ति उच्च पदाधिकारी होता है। सम्भव है वह विज्ञानवेत्ता तथा प्रभावशाली सुवक्ता भी हो।

जिस व्यक्ति का वृहस्पति क्षेत्र उच्च हो तथा उस पर एक सुस्पष्ट, अक्षत, गम्भीर तथा खड़ी रेखा हो और हृदय-रेखा (Heart Line) वृहस्पति क्षेत्र तथा शनी क्षेत्र के मध्य भाग में होकर तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों के मध्य में जाती हो, वह महान धर्मतत्वज्ञ अथवा धर्माचार्य होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में वृहस्पति क्षेत्र उच्च हो तथा उस पर गुणक (x) अथवा नक्षत्र (*) का चिह्न हो, साथ ही मंगल रेखा सुस्पष्ट, स्वच्छ, सुडौल, गम्भीर, अक्षत, सरल तथा

चिकनी हो तो वह व्यक्ति अपने श्वसुर पक्ष से विपुल धन प्राप्त करता है और उसका दाम्पत्य जीवन परम सुखमय व्यतीत होता है। उसे पुत्र पौत्रादि तथा इष्ट मित्रों से भी सुख-लाभ होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी के मूल से उद्भूत तथा उसके द्वितीय पर्व तक जाने वाली रेखा छोटी २ आड़ी २ शाखाओं द्वारा कटती हो साथ ही विवाह रेखा हृदय रेखा पर झुकी हुई हो तथा हाथ में अन्य अनेक भिन्न भिन्न एवं निरर्थक रेखायें हों वह (स्त्री पुरुष) निर्धन, धूर्त, विधुर अथवा विधवा होती हैं। इनका जीवन प्रायः संकटापन्न, रोग ग्रस्त तथा ग्लानि पूर्ण व्यतीत होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी अंगुली साधारणतः लम्बी हो और उसके द्वितीय पर्व पर तिल का चिन्ह हो, साथ ही अंगुष्ठ भी लम्बा और सुडौल हो उपदेशक होता है। ऐसा व्यक्ति अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, धन वैभव से सम्पन्न होता है तथा अपने परिजन बन्धु बान्धवों से सुखी रहता है किन्तु वह द्वेषी स्वभाव का होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ की तर्जनी अंगुली सीधी और नुकीली हो, कनिष्ठका अंगुली का ऊर्ध्व पर्व लम्बा हो तथा बृहस्पति क्षेत्र उच्च हो वह कुशल व्यापारी, धार्मिक, दयावान, धनवान, उदार तथा परोपकारी होता है।

अंगुलियों के अधो पर्व पर खड़ी सरल तथा सीधी रेखायें सांसारिक कार्यों में सहायक मित्रों की सूचक होती हैं। ऐसी रेखाओं वाला व्यक्ति मिलनसार और मित्रों से सुखी होता है।

वह मित्रों द्वारा अतुल सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा संकटापन्न स्थिति में उन्हीं से विचार-विमर्श भी करता है। एतदर्थ तर्जनी के अधो पर्व पर तीन खड़ी तथा सरल रेखायें होनी चाहियें तथा अन्य अंगुलियों के अधो पर्वों पर चार-चार खड़ी तथा सरल रेखायें होनी चाहिये। साथ ही ये आड़ी रेखाओं द्वारा कटी हों तो वह व्यक्ति निश्चय ही वाद-विवाद, मित्र-वियोग, कलह और व्यापार हानि प्राप्त करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति क्षेत्र उच्च हो और उस पर नक्षत्र का चिह्न हो और सूर्य-क्षेत्र पर आड़ी रेखायें (जिन्हें अगिनी रेखा कहते हैं) हों साथ ही सूर्य रेखा सुस्पष्ट, स्वच्छ, सरल, गम्भीर तथा अक्षत और चिकनी हो तथा सूर्य रेखा के छोर पर सूर्य-क्षेत्र पर ही नक्षत्र चिह्न हो, इसके साथ साथ शनी-क्षेत्र और चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो और भाग्य रेखा सूर्य क्षेत्र, शनी क्षेत्र तथा बृहस्पति क्षेत्र पर अवस्थित हो, मस्तक रेखा (Head Line) और हृदय-रेखा (Heart Line) सुस्पष्ट अक्षत, सरल, सुन्दर, गम्भीर तथा चिकनी हो तो वह व्यक्ति नराधिपति, पृथ्वी नाथ, राजा, महाराज, सम्राट्, उच्च कोटि का विद्वान, उच्च कोटि का लोक नेता, मण्डलेश्वर अथवा युग-प्रवर्तक होता है। ऐसे योग वाले व्यक्ति देश देशान्तरों में प्रख्यात होते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति को भौतिक सुखोपभोगों की कमी नहीं रहती। यह पराक्रमी, यशस्वी, ज्ञानी, तथा बहिनों से सुखी होते हैं, किन्तु चालीसवें वर्ष के पश्चात् यह पराश्रित हो जाता है। दैवयोग से

यदि पराश्रित नहीं हुआ तो इसी वर्ष इसे भगिनी-सम्बन्धी चिंता उत्पन्न होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ की तर्जनी अंगुली अधिक लम्बी हो और कड़े हों, लम्बे हों, तथा भद्दे हों, अंगुष्ठ का ऊर्ध्व पर्व उन्नत अथवा मेंढक की पीठ के समान हो, बृहस्पति क्षेत्र अत्युच्च, सुस्पष्ट, शुद्ध, सरल, गम्भीर, अक्षत तथा चिकनी मस्तक रेखा (Head Line) हाथ के इस छोर से उस छोर तक जाती हो, हृदय-रेखा (Heart Line) का अभाव हो अथवा हृदय रेखा (Heart Line) मस्तक-रेखा (Head Line) में ही सम्मिलित हो और जीवन-रेखा (Life Line) से अलग हो— (उपरोक्त लक्षणों में से कोई एक लक्षण हस्तगत दृष्टिगोचर हो) वह व्यक्ति लम्पट, कुटिल, निर्दयी, धूर्त, विश्वासघाती तथा कपटी होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति किसी की हत्या करने में भी संकोच नहीं करता। यह बर्बर, आततायी, अत्याचारी, दुराचारी, व्यभिचारी, अविचारी, अनाचारी, असद्मामची, अगम्यागामी, व्यसनी, भयानक और नराधम होते हैं। वे पहले सिरे के चुगलखोर होते हैं और अपने इस दुर्गुण के प्रभाव से कितने परिवारों को नष्ट कर देते हैं,

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी अंगुली और मध्यमा अंगुली के मध्य से एक गहरी, मोटी तथा काले रंग वाली रेखा निकलकर बृहस्पति क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य से होकर करतल के ठीक मध्य में अथवा राहु क्षेत्र पर जाकर ठहर जाय वह आजीवन

चिन्तातुर और कष्ट-ग्रस्त रहता है। ऐसा व्यक्ति पास में धन होने पर भी उसका सदुपयोग नहीं कर पाता। स्त्री से भी इसे अत्यधिक कष्ट, छल, कपट, तथा. अपमान सहना पड़ता है। परिजन, बन्धु-बान्धव तक इस व्यक्ति से घृणा तथा द्वेष रखते हैं। यदि सौभाग्य से यह रेखा अन्त में भाग्य रेखा (Fortime Line) अथवा जीवन रेखा (Life Line) से मिल जाय तो उपरोक्त परिणाम नष्ट होकर सर्वथा शुभ फल प्राप्त होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का उक्त रेखा के भाग्य रेखा अथवा जीवन रेखा से मिलन-स्थान पर वर्ष मान से प्राप्त वर्ष मे निश्चित रूप से भाग्योदय होता है, किन्तु इस समय से पूर्व इसे उपरोक्त अशुभ परिणाम भोगना ही पड़ता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति क्षेत्र के ठीक नीचे एक खड़ी, छोटी, सरल, सुस्पष्ट, गम्भीर, अक्षत तथा चिकनी रेखा हो वह पूर्ण स्वस्थ तथा स्वच्छ-हृदय होता है इस लक्षण वाला व्यक्ति स्पष्ट-वक्ता, सत्यवादी, निष्कपट तथा सच्चरित्र होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में गुरुक्षेत्र उच्च हो, तर्जनी अंगुली अनामिका अंगुली से छोटी हो और मध्यमा एवं तर्जनी के नीचे अन्तर हो वह सार्वजनिक कार्यकर्ता; सर्व-प्रियशासक; पाठशाला, मन्दिर (अथवा कोई देवस्थान), धर्मशाला, पौशाला, गौशाला, पुस्तकालय, वाचनालय आदि सार्वजनिक-उपयोग के स्थलों का निर्माता होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति जहां भी निवास करेगा वहीं लक्ष्मी इसके चरण चूमती रहेगी।।

स्त्री के गुरुक्षेत्र का विशेष विचार

गुरु-क्षेत्रीय स्त्रियों में साधारणतः वही गुण-दोष पाये जाते हैं जो गुरुक्षेत्रीय-पुरुषों में पाये जाते हैं तथा जिनका वर्णन उपरोक्त विवरण में दिया गया है। इनमें अन्तर केवल इतना ही होता है कि यह स्त्री बहु-पुत्र वाली होती है और इसका पति इसके वशवर्ती होता है। इस लक्षण वाली स्त्री स्वयं तो जितेन्द्रिय होती ही है किन्तु इसे अपने पति के आचरण के प्रति सर्वदा शंका बनी रहती है—यही कारण है कि यह अपने पति को वश में रखती है। यह स्त्री यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की ज्ञाता होती है तथा इसे आजीवन सन्तोष नहीं होता।

शनी-क्षेत्र का विवेचन

मानव-हस्त-गत-ग्रह-क्षेत्रों में एक क्षेत्र शनी-क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस क्षेत्र का स्वामी शनी देव है। शनी देव का व्यक्तित्व अत्यन्त भयानक तथा क्रूर है और तदनुसार उसका स्वभाव आचार-विचार आदि होते हैं। शनी देव अपनी वक्र-दृष्टि के लिये कुख्यात है, अतः साधारणतः इसके प्रसंग में अशुभ फल की ही आशंका की जाती है; किन्तु हस्त-विज्ञान के क्षेत्र में ऐसा नहीं है। इस विज्ञान के अन्तर्गत विचार करते समय यदि शनी-क्षेत्र उन्नत हो, उस पर शुभ-फल-प्रद चिन्ह स्थित हों तथा हस्तगत-अन्य रेखायें तथा लक्षण उसके शुभ-फल के अनुकूल हों तो शनीक्षेत्र अवश्यमेव लाभप्रद ही होता है। अतः इस सम्बन्ध में किसी की भ्रान्त-धारणा अथवा कुविचार को

स्थान देना मूर्खता है। अब हम पाठकों के लाभार्थ शनी-क्षेत्र के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन लिखेंगे।

शनी-क्षेत्र का परिचय

मध्यमांगुली के मूल में बृहस्पति क्षेत्र तथा सूर्य-क्षेत्र के मध्य का हृदय-रेखा तक विस्तृत क्षेत्र शनी-क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस क्षेत्र पर शनी देव का एकाधिकार है।

शनी क्षेत्रीय व्यक्ति की आकृति

शनि क्षेत्रीय व्यक्ति साधारणतः थोड़ा ऊंचा—लम्बा और कृश शरीर वाला होता है। इसके कंधे झुके हुए होते हैं। उसकी चाल मन्थर-गति की होती है तथा वह ढीले पैरों से चलता है। उसके पैरों की अंगुलियां नीचे की ओर झुकी होती हैं। उसका रंग पीलापन लिये हुए होता है। उसकी आंखें छोटी तथा अण्डाकृति की होती हैं; किन्तु गहरी होती हैं और आंख की पुतलियां काली होती हैं। भौंहें पास-पास जुड़ी हुई वृताकार तथा सुडौल होती हैं। उसकी नाक नुकीली होती है, किन्तु लम्बी होती है और नीचे की ओर झुकी रहती है। नासा पुट कुछ खुले होते हैं। चेहरा बड़ा और लम्बा होता है। गालों में गड्ढे पड़ते हैं। गालों की हड्डियां ऊंची होती हैं। ओष्ठ पतले होते हैं। दन्त पंक्ति बद्ध बारीक, छोटे, श्वेत तथा सुन्दर होते हैं, किन्तु जल्दी ही गिर जाते हैं और अत्यधिक कष्ट प्रद होते हैं। जबड़े बड़े और पुष्ट होते हैं। ठुडड़ी लम्बी होती है। कान बड़े बड़े होते हैं

तथा मस्तक के पास जुड़े से होते हैं। बाल काले, लम्बे और कड़े होते हैं। ग्रीवा पतली और लम्बी होती है। हाथ बड़े और उभरी हुई हड्डियों वाले होते हैं। अंगुलियां लम्बी होती हैं। अंगुष्ठ का उर्ध्व पर्व लम्बा किन्तु चपटा होता है। वाणी भद्दी और धीमी होती है। नख बारीक तथा छोटे होते हैं।

शनी-क्षेत्रीय व्यक्ति के वस्त्राभूषण

शनी क्षेत्रीय व्यक्ति काला या मटमैला रंग धारण करता है। उसे वस्त्र बहुत ही कम पसन्द आते हैं। अलंकारों के सम्बन्ध में भी वह इसी प्रकार की रुचि वाला होता है।

शनी-क्षेत्रीय व्यक्ति का स्वभाव

शनी-क्षेत्रीय व्यक्ति स्वभावतः गम्भीर प्रकृति का होता है। उसकी कल्पना शक्ति अत्यधिक तीव्र होती है। वह धैर्यवान् पराक्रमी, अध्ययनानुरागी, सच्चा-मित्र, कट्टर धार्मिक तथा असहनशील होता है। वह अपने विचारों में अत्यन्त दृढ़ एवं कट्टर होता है। वह मितव्ययी होता है तथा अपने घर का पक्का प्रेमी होता है। साधारणतः शान्त प्रकृति का होता है, किन्तु अविश्वासी होता है। बार-बार चेतावनी देने पर भी वह भूलें करता है और उन पर विचार नहीं करता। यद्यपि वह अपने लिये कठोर होता है किन्तु दूसरों के लिये उतना ही सहन शील भी होता है। वह अपना प्रत्येक कार्य वैधानिक पद्धति से नियमानुसार करता है। नित्य नूतनता अथवा दैनिक उलट-फेर उसे

तनिक भी पसन्द नहीं होता। उसे मित्र मण्डली से प्रीत नहीं होती और वह किसी की संगति भी नहीं करता। वह शकालु होता है। कदाचित् किसी से मैत्री करता है तो उसे प्रत्येक-स्थिति में निभा ले जाता है। इसका मित्र-क्षेत्र साधारणतः अत्यन्त संकुचित होता है। वह अधिकतर स्वतन्त्र ही रहता है। वह आज्ञाकारी नहीं होता और दूसरों को भी भड़काता रहता है। वह अपने ही मत में प्रसन्न रहता है। समयानुसार धार्मिक-विषयों पर वाद-विवाद भी करता है। वह गुप्त-विद्याओं का प्रेमी होता है। वह अल्पव्ययी तथा कृपण होता है। वह एकान्त प्रिय होता है। वह प्रायः सभी से वाद-विवाद करता है तथा सभी से घृणा करता है। कठोर स्वभाव वाला होने के कारण वह अपनी ही सन्तान को भी सताया करता है। यह सगीत और गणित का प्रेमी होता है तथा विद्वान भी होता है। वह प्रायः नवीन आविष्कार कर्ता होता है। इस क्षेत्र वाले व्यक्ति प्रायः गणितज्ञ, कृपक, अचल-सम्पति के व्यापार के मध्यस्थ, मुद्रक अथवा निम्न श्रेणी के धर्माचार्य भी होते हैं। यह पुरातत्व अथवा प्राचीन कालीन कंकालों, जिन से अत्याचार किये गये हों ऐसे शास्त्रों तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं में मग्न रहा करते हैं। इस की प्रकृति रुग्ण तथा आलस्य-युक्त होती है। सारंगी, सितार, मृदंग आदि प्राचीन वाद्य-यन्त्रों में उसे विशेष रुचि रहती है। यदि दैवयोग से ऐसा व्यक्ति चित्रकार हो तो वह धुंधले तथा उदासीनता पूर्ण चित्र अंकित करता है। वह शीघ्रगामी होता है, और गैरिकादि

धातुओं तथा उपधातुओं के क्रय-विक्रय में तत्पर होता है। वह पर-कार्य-विमुख, शठ, अनेकों मनुष्यों पर अधिकार रखने वाला, विषयासक्त, होता है। इसे वन, पर्वत, नदी तथा किलों से प्रेम होता है। यह मातृ-भक्त होता है। इसकी ऊंचाई ६२ से ६६ अंगुल तक होती है। अपने शत्रुओं की निर्बलताओं को यह खूब पहिचानता है। यह व्यक्ति वस्तु अथवा विषय का प्रचार करता है वह ठोस होता है। उसके हाथ तथा पैर में ढाल, असि, वीणा, शय्या, माला, मृदंग तथा त्रिशूल आदि के चिह्न और उर्ध्व गामी रेखायें होती हैं। यदि शनी क्षेत्र उच्च हो और उस पर शुभ-चिह्न हों तथा हस्त-गत अन्य लक्षण, चिन्ह तथा रेखायें अनुकूल हों तो इस लक्षण वाला व्यक्ति पर्वतों की गुहाओं में निवास करने वाला अथवा मांडलीक राजा होता है। इसके कूल्हों में स्राव होने की सम्भावना रहती है और यह शूलरोग से पीड़ित रहता है तथा इसी रोग से ७० वर्ष के लगभग आयु भोग कर भौतिक शरीर से विदा मांग लेता है। इस व्यक्ति के दांतों तथा पैरों में चोट लगती है अथवा पीड़ा रहती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः लंगड़े होते हैं। इन्हें अधिकतर उन्माद रोग का आखेट होना पड़ता है। मानव शरीर के अवयवों में शनीदेव का अधिकार कान, दन्त, तथा पीड़लियों पर होता है, अतः इसके कुप्रभाव से वात-पित्त-व्याधि, लकवा अथवा बधिरता का प्रकोप होता है। अधिक अशुभ होने पर शनीदेव कारागार की भावना भी प्रदान करता है।

शनी-क्षेत्र के आकृति-भेद-कृत प्रभाव

अन्य ग्रह-क्षेत्रों तथा हाथ के विभिन्न अंगों की गठन, बनावट, स्वरूप, आकृति आदि के अनुसार शनी-क्षेत्र की आकृति भी विभिन्न प्रकार की होती है। किसी हाथ में शनी क्षेत्र उच्च होता है, किसी में अत्युच्च होता है तथा किसी में अनुच्च होता है। इन विभिन्न आकृतियों के अनुसार इसके प्रभाव में भी अन्तर होता है। हम यहां पाठकों के ज्ञान लाभार्थ शनी-क्षेत्र के आकृति-भेद कृत प्रभाव का विस्तृत वर्णन करते हैं।

शनी का उच्च-क्षेत्र कृत प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी का क्षेत्र उच्च हो वह महापराक्रमी, एकान्त-प्रिय, स्थिर-प्रज्ञा, सावधान, शान्ति-प्रिय, मित-भाषी, अध्ययन शील, गुप्त-विद्या-विशारद, कर्त्तव्य-परायण, योग-ज्ञाता, गुह्य-तत्व-दर्शी, खगोलज्ञ, ज्योतिषी, रसायनिक, पर-हित उदासीन यशेच्छा रहित, तथा धार्मिक भावना-सम्पन्न होता है। वह स्त्रियों से अपेक्षा कृत कम प्रीति करता है। इसके अक्षर छोटे-छोटे तथा पास-पास लिखे होते हैं। यह दो टूक बात कहने वाला होता है। चाहे किसी को बुरा लगे अथवा भला, किन्तु किसी भी बात को स्पष्ट कह देने में वह कभी नहीं चूकता। यह प्रत्येक कार्य भली प्रकार विचार लेने के पश्चात् अत्यन्त तत्परता से करता है। अपने अपकारी तथा शत्रुओं से प्रतिशोध लेने में यह व्यक्ति अत्यन्त सावधान तथा तत्पर रहता है। अपने आश्रितों से काम लेने में यह प्रवीण होता है। इसकी अभिलाषा सदैव दूसरों को

ठगने की रहती है। अपनी मित्र-मण्डली अथवा परिचित क्षेत्र में यह व्यक्ति प्रमुखता, प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त करने का अत्यन्त अभिलाषी होता है तथा इस सम्बन्ध मे यावत्-प्रयत्न कार्यशील रहता है। यह व्यक्ति अपनी स्त्री से सदैव दुःखी रहता है। इसका जन्म प्रायः पौष अथवा माघ के दूसरे सप्ताह तक होता है।

स्त्री के शनी-क्षेत्र की उच्चता का प्रभाव

दैवयोग से यदि स्त्री का शनी-क्षेत्र उच्च हो उसमें धार्मिक भावना का प्राबल्य होता है। यह स्त्री विचारशील होती है तथा मितव्ययिता इसका स्वभाविक गुण होता है। इस लक्षण वाली स्त्री सत्य प्रिय होती है। उसके शत्रु शून्य-प्रायः होते हैं तथा वह सुविख्यात होती है। वह बहु-पुत्रवती होती है तथा कुलटा, दुराचारिणी, दुष्टा, व्यभिचारिणी आदि दुर्गुण सम्पन्न स्त्रियों से उसे घृणा होती है।

अनुच्च शनी-क्षेत्र का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र अनुच्च अथवा निम्न हो उसका मन चंचल, होता है तथा वह निरर्थक-भ्रमणशील होता है। वह प्रायः आपत्तियों से घिरा रहता है। वह राज्य द्वारा दण्डित भी होता है तथा व्यर्थ के लोकापवाद से दूषित रहता है। उसका जीवन अत्यन्त कष्ट-प्रद होता है। वह सर्वथा अदूरदर्शी तथा विचारहीन होता है। वह मिथ्याभाषी, द्यूत-प्रेमी, व्यसनी मूर्ख तथा व्यभिचारी होता है। इसकी मस्तिष्क शक्ति अत्यधिक

दुर्बल होती है। इस मानसिक दुर्बलता के फल स्वरूप उसमें उपरोक्त दुर्गुण अत्यल्प-मात्रा में ही परिलक्षित होते हैं, किन्तु वह कृपण, कायर तथा विश्वासघाती अवश्यमेव होता है। इसकी आयु अल्प होती है।

अत्युच्च शनी-क्षेत्र का प्रभाव

जिस व्यक्ति का शनी-क्षेत्र अत्युच्च हो वह प्रायः सभी प्रकार के दुर्गुणों का आगार होता है। वह सदैव नीच संगति का अभिलाषी होता है तथा नीच कार्यों के करने में लगनशील रहता है। यह आजीवन दुःखी तथा दन्त, वात और पाचन क्रिया सम्बन्धी रोगों का आखेट रहता है। वह शकालु, निर्दयी तथा आत्महत्या का अभिलाषी होता है। उदर-शूल तथा मूत्राशय सम्बन्धी रोग भी इसे प्रायः सताते रहते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति को जल में डूबने अथवा किसी ऊंचे स्थान पर से गिरने की अत्यधिक सम्भावना होती है। रक्त-संचालन-क्रिया की गति मन्द होने के फलस्वरूप उसकी पाक-स्थली और परिपाक यन्त्र दुर्बल होते हैं। इसको पैर, घुटने आदि में आघात का भी भय रहता है। वह प्रत्येक बात को बहुत समय तक विचारने का अभ्यस्त होता है। निराशा और उदासी उसके पीछे हाथ धोकर पड़ी रहती हैं। यहां तक कि वह कभी भी किसी से भी बात तक करना नहीं चाहता। उसके मन में कुविचारों की शृंखला सी बनी रहती है। वह तमोगुणी होता है। वीर-रस प्रधान संगीत में उसे परमानन्द प्राप्त होता है। यह क्रूर कर्मा होता है। भक्ष्य भक्ष्य

का इसे अधिक विचार नहीं होता। यह अनाचारी, दुराचारी, अत्याचारी तथा व्यभिचारी होता है गम्यागम्य की इसे तनिक भी चिन्ता नहीं होती। इसका जन्म प्राय माघ मास के उत्तरार्ध में अथवा फाल्गुण मास के पूर्वार्ध में होता है। इसका भाग्योदय ३८ वें अथवा ४२ वें वर्ष में होता है।

शनी-क्षेत्र की आकृति के सम्बन्ध में विशेष-ज्ञातव्य

शनी-क्षेत्र का मानव-जीवन में अपना विशिष्ट-स्थान होता है। क्योंकि यह मानव-चरित्र पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखता है। शनी-क्षेत्र जितना अधिक शुभ होगा उतना ही अधिक मनुष्य में चरित्र बल होगा और यह जितना अशुभ होगा मनुष्य उतना ही अधिक चरित्र-हीन होगा। आजकल शनी-क्षेत्र किसी बिरले हाथ में ही उच्च अथवा समुन्नत पाया जाता है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव यह है कि वर्तमान समय में अखिल विश्व में यद्यपि अन्य विविधि प्रकार की प्रगति हो रही हैं तथा मानव-जाति अपने ज्ञान अभ्युदय, प्रतिभा, विज्ञान आदि की चरम सीमा तक पहुंचने के लिये प्रयत्नशील है तथापि चरित्र-बल और नैतिकता मानव-समाज से शनैः शनैः लोप होती जा रही है। आज का मनुष्य प्रतिक्षण लम्पटता, धूर्तता, विश्वासघात, छल, कपट, लुच्चपन, अहंकार, नीचता, दुराचार, अनाचार, अविचार, आततायिता, निरंकुशता, स्वच्छन्दता, अनुशासनहीनता, अशिष्टता, अभक्ष्य-भक्षण, अगम्यागम, निर्दयता, द्यूत-क्रीड़ा, चौर-कर्म, राष्ट्र-द्रोह, जाति-द्रोह आदि कुकर्मों की ओर द्रुतवेग से बढ़ रहा है। अतः

शनी-क्षेत्र मानवहस्त में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, इस सत्य को स्मरण रखते हुए हस्त-परीक्षा-फल का निर्णय करते समय इसका गम्भीर मनन करना अत्यावश्यक है।

शनी-क्षेत्र यदि दैवयोग से छोटा और चपटा हो तथा उसका कोई भी भाग उन्नत न हो तो उसका दुष्परिणाम अत्यन्त भीषण होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति यदि सोना स्पर्श करता है तो वह भी मिट्टी में रुपान्तरित हो जाता है। इसीलिये ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह बेचारा अपने भाग्य का तो क्या खायगा दूसरों का दिया हुआ भी वह नहीं खा सकता। इस व्यक्ति का समस्त जीवन दुःख पूर्ण व्यतीत होता है, किन्तु उसकी प्रवृति सदैव धर्म की ओर रहती है। उसके दुर्भाग्य की पराकाष्ठा इससे भली प्रकार प्रकट हो जाती है कि अपनी स्वभाविक मनोवृति से प्रेरित होकर जब वह किसी प्रकार के धार्मिक कार्यों में संलग्न होता है तो बहुधा उसमें भी संकट ग्रस्त हो जाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति साधारणतः आजीवन दैवाधीन अथवा अपने आस-पास के वातावरण के वश-वर्ती रहते हैं। यद्यपि अवसर प्राप्त होते ही वे कर्म-क्षेत्र में लंगोट कस कर डट जाते हैं और यावत् प्रयत्न अपने प्रयास मे सफल होने के लिए अथक प्रयत्न करते हैं किन्तु दुर्दैव उनके पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता है और वे दैव के हाथों कठ पुतली बन कर मुंह ताकते रह जाते हैं। जन साधारण के हितार्थ काम करने में भी यह व्यक्ति बहुत अग्रसर होता है, किन्तु वहां भी चारों खाने चित्त ही आता

है। संक्षेप में यह व्यक्ति आजीवन असफल रह कर तड़पता हुआ ही पंच-भौतिक शरीर की लीला समाप्त करता है।

शनी-क्षेत्र से विचारणीय विषय

शनी क्षेत्र से मानव-जीवन के सम्बन्ध में निम्नलिखित विषयों का परिचय प्राप्त होता है—

आयु, मृत्यु-समय, मृत्यु-प्रकार, रोग, कष्ट, विविध प्रकार के दुःख, व्यसन, आध्यात्मिक भावनायें, तत्वज्ञान की रुचि, धैर्य्य गम्भीर, उत्साह, चातुर्य, सम्पत्ति तथा विपत्ति।

शनी-क्षेत्र के शत्रु-मित्रों का वर्णन

बुध-क्षेत्र तथा शुक्र-क्षेत्र शनी-क्षेत्र के मित्र हैं। बृहस्पति क्षेत्र शनी-क्षेत्र के लिए सम है। सूर्य-क्षेत्र, चन्द्र-क्षेत्र तथा मंगल-क्षेत्र शत्रु हैं। राहु-क्षेत्र तथा केतु-क्षेत्र से शनी-क्षेत्र की घनिष्ठ मित्रता है। शनी-क्षेत्र पच्चीसवें वर्ष में फल प्रदान करता है।

शनी-क्षेत्र का झुकाव

करतल गत ग्रह-क्षेत्र किसी विरल हाथ में ही शुद्ध-स्थिति में होते हैं। साधारणतः प्रत्येक-ग्रह-क्षेत्र किसी न किसी ओर न्यूनाधिक रूप में झुका होता है। ऐसी दशा में उसके शुभाशुभ परिणाम में झुकाव वाली दशा में स्थिति ग्रह के फलों का मिश्रण हो जाता है। ग्रह-क्षेत्रों के झुकाव के परिणाम पर विचार करते समय यह स्मरण रखना चाहिये कि जो ग्रह-क्षेत्र झुकेगा वह ऊंचा होगा और जिस ग्रह क्षेत्र पर वह झुकेगा वह नीचा होगा। अतः झुकने वाले ग्रह क्षेत्र के प्रभाव में जिस ग्रह-क्षेत्र पर वह झुकता है उसके शुभाशुभ फल का मिश्रण तो अवश्य होगा किन्तु सामान्यतः झुकने वाले ग्रह क्षेत्र के गुण व गुणों

का ही विशेष प्रभुत्व होगा। हां, इसके गुणों-दोषों में सन्तुलन अवश्य आ जायेगा। अब हम अपने पाठकों के बोधार्थ शनी-क्षेत्र के विभिन्न झुकावों का परिणाम सविस्तार लिखते हैं।

शनी-क्षेत्र के सूर्य-क्षेत्र पर झुकाव का फल

हम पहले लिख चुके हैं कि शनी-क्षेत्र तथा सूर्य-क्षेत्र में परस्पर शत्रुता है। शनी-क्षेत्र के सूर्य क्षेत्र पर झुकाव का शुभाशुभ परिणाम निश्चित करते समय इनके इस सम्बन्ध को नहीं भूलना चाहिये। इन दोनों की इस पारस्परिक शत्रुता का यह स्वभाविक परिणाम होगाकि शनी के गुणों में दुर्बलता आ जायगी और यदि शनी-क्षेत्र अत्युच्च हुआ तो उसके दोषों की वृद्धि होगी। इन सब तथ्यों को दृष्टि में रखते हुये शनी-क्षेत्र के सूर्य क्षेत्र पर झुकाव का शुभाशुभ परिणाम विचारते समय निम्न-लिखित सूत्रों का उपयोग करना लाभ-प्रद होगा—

१—शनी क्षेत्र की उच्चता अथवा अत्युच्चता (जैसी भी स्थिति हो) का शुभाशुभ फल।

२—सूर्य-क्षेत्र की निम्नता का फल।

३—शनी-क्षेत्र तथा सूर्य-क्षेत्र की पारस्परिक शत्रुता का इनके गुण दोषों पर प्रभाव।

हम-पहले ही लिख चुके हैं कि उच्च शनी क्षेत्र के प्रभाव से मनुष्य जितेन्द्रिय, सदाचारी, भावुक, गम्भीर, एकान्त-प्रिय, विद्वान ज्ञानी, दृढ़-स्वभाव वाला, स्थिर विचार वाला, कर्त्तव्य परायण, नियमित तथा पर-हित उदासीन आदि गुणों से सम्पन्न होता है।

इसके विपरीत अत्युच्च शनी क्षेत्र वाला व्यक्ति धूर्त, दुष्ट, लम्पट अनाचारी, व्यभिचारी, ठग, चोर आदि दुर्गुणों की खान होगा। अब यहां सूर्य क्षेत्र की निम्नता का फल भी विचारना चाहिये। जिस व्यक्ति का सूर्य-क्षेत्र निम्न होगा वह व्यक्ति आलसी, दुष्ट चरित्र, आमोद-प्रिय, विलासी, निर्दयी आदि दुर्गुणशील होगा। अब इनका समन्वय करने से हम निम्न परिणाम पर पहुचते हैं।

जिस व्यक्ति का शनी-क्षेत्र उच्च होकर सूर्य क्षेत्र पर झुकेगा वह उदास-प्रकृति, चिन्तातुर, अस्त व्यस्त जीवन वाला, किन्तु-उद्योगी, श्रमशील, चतुर तथा यशस्वी होगा। इसके विपरीत यदि शनी क्षेत्र अत्युच्च हुआ तो वह पूर्ण-रूपेण ठग, चरित्र हीन, धूर्त, लम्पट, अकर्मण्य निर्दयी तथा लुच्चा होगा।

शनी क्षेत्र के बृहस्पति क्षेत्र पर झुकाव का फल

उपरोक्त प्रकार से ध्यान पूर्वक विचारने से शनी क्षेत्र के सूर्य क्षेत्र पर झुकाव का फल निश्चित करने के लिये हमें निम्न-लिखित सूत्र प्राप्त होते हैं।

१—शनी क्षेत्र की उच्चता अथवा अत्युच्चता (जैसी भी स्थिति हो) का शुभाशुभ फल।

२—बृहस्पति-क्षेत्र की निम्नता का फल।

३—शनी क्षेत्र तथा बृहस्पति-क्षेत्र की समता का प्रभाव।

उपरोक्त सूत्रों पर विचार करके इनके परिणामों का समन्वित परिणाम इस प्रकार है—

जिस व्यक्ति का उच्च शनी क्षेत्र बृहस्पति-क्षेत्र पर झुकता है वह व्यक्ति कार्य कुशल और व्यवहार-कुशल का जीवन नहीं

हो सकता । वह जन्म भर उदास, चिन्तातुर तथा खिन्न रहता है। उसे प्राय: राज दण्ड का भय लगा रहता है और वह आजीवन अपने परिजन बन्धु बान्धवों द्वारा कष्ट भोगता है। किन्तु वह अपने जीवन के उत्तरार्ध मे पुत्र-पौत्रादिकों से सन्तोष प्राप्त करता है तथा अपना शेष जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत करता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन का उत्तरार्ध आध्यात्मिक विषयों, पठन-पाठन, देवाराधन, पूजा-पाठ, यज्ञ-होम-दानादि में तथा सत्संग में यापन होता है।

दैवयोग से यदि शनी क्षेत्र अत्युच्च हो और वह बृहस्पति क्षेत्र पर झुका हुआ हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन के किसी भी क्षण मे सुख, शान्ति तथा सन्तोष प्राप्त नही करता। वह सदैव दुःख, क्लेश आदि मे ही अपना जीवन खोता है।

निम्न-शनी-क्षेत्र तथा निम्न सूर्य क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र तथा सूर्य क्षेत्र—दोनों ही निम्न हों उसका जीवन संसार में व्यर्थ ही होता है। यदि दुर्भाग्यवश अन्य ग्रह क्षेत्र अथवा रेखायें अथवा हस्त-गत अन्य लक्षण शुभ न हों तो वह अपना जीवन आजन्म नीचवृत्ति द्वारा ही व्यतीत करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति कुटिल, लम्पट, धूर्त, काम चेष्टा-हीन, निर्धन तथा पुत्र-हीन होता है। वह आजीवन पुत्र-शोक से ग्रस्त रहता है तथा उसकी मृत्यु रोग-ग्रस्त होने से होती है।

उच्च शनी-क्षेत्र के साथ अन्यान्य उच्च ग्रह-क्षेत्रों का फल

उच्च शनी-क्षेत्र का परिणाम लिखते समय हम बता चुके हैं कि इस लक्षण वाला व्यक्ति जितेन्द्रिय, सदाचारी, एकान्त-प्रिय, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, कृषि-उद्यानादि का प्रेमी, स्त्रियों के प्रति उदासीन, मितभाषी, तत्वज्ञानी, आध्यात्मिक, शास्त्रीय संगीत का प्रेमी, अत्यन्त सावधान अथवा सतर्क, श्रमशील, तथा कृपण होता है। किन्तु पाठकों को यह ज्ञात है कि मानव हस्त पर यथा-स्थान अन्य ग्रहों के भी क्षेत्र हैं और उनकी स्थिति, आकृति, लक्षण, गठन, आदि का भी यथा अनुकूल प्रभाव मानव-जीवन पर घटित होता है। कितनी ही बार इन ग्रह-क्षेत्रों के व्यक्तिगत प्रभाव में असाधारण विशेषता अथवा वैपरीत्य भी देखने में आता है। इस सब का प्रधान कारण यह है कि मानव-हस्तगत सभी ग्रह-क्षेत्रों, रेखाओं, लक्षणों आदि का शुभाशुभ प्रभाव परस्पर सन्तुलित होकर ही मानव-जीवन में परिलक्षित होता है। इसी दृष्टिकोण को सामने रख कर हम अपने पाठकों की सुविधार्थ यहां उच्च शनी-क्षेत्र साथ ही अन्यान्य उच्च ग्रह-क्षेत्रों का समन्वयित फल सविस्तार लिखते हैं।

उच्च शनी-क्षेत्र और उच्च गुरू-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र तथा बृहस्पति-क्षेत्र दोनों हों वह व्यक्ति विचारशील, दूरदर्शी, मेधावी, विद्वान, यशस्वी, तथा कुशल तत्ववेत्ता होता है। उसकी भावनायें अतिशय पवित्र एवं धार्मिक होती हैं। वह अध्ययनशील, शास्त्रज्ञ तथा आध्यात्मिक

विषयों का ज्ञाता होता है। गुप्त विद्याओं तथा शास्त्रीय संगीत का वह अनन्य-प्रेमी होता है। धन-वैभव-सम्पन्न भी होता है।

यदि उपरोक्त शुभ लक्षण किसी स्त्री के हाथ में हों तो उसमें भी उपरोक्त गुणों का पूर्ण-रूपेण समावेश होगा। इस लक्षण वाली स्त्री साधारणतः उदार, साध्वी तथा भगवद्भक्त होगी। किन्तु उसे मस्तिष्क की दुर्बलता से उत्पन्न होने वाले भयंकर रोगों का अधिक भय रहेगा। उसे प्रायः मूर्छा अथवा गुल्म का आखेट रहना पड़ता है।

उच्च शनी-क्षेत्र और उच्च सूर्य-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र और सूर्य-क्षेत्र—यह दोनों ग्रह-क्षेत्र उच्च हों उसके जीवन का अधिकांश भाग प्रायः अन्धकार पूर्ण ही रहेगा, क्योंकि शनी देव और सूर्य-देव में परस्पर शत्रुता है। दोनों के सबल होने से दोनों ही ग्रह-क्षेत्रों के शुभ परिणाम शत्रुत्व-वातावरण में पड़ कर नष्ट प्रायः हो जाते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति को बन्धु-नाश तथा भार्या-शोक अवश्य ही भोगना पड़ता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के केवल एक ही सन्तान होती है और वह सन्तान पुत्र होता है उसका पुत्र प्रतापी, भाग्यशाली, सुख-ऐश्वर्य-सम्पन्न, बुद्धिमान तथा यशस्वी होता है। उस पुत्र के द्वारा ही उसका भाग्योदय होता है तथा उसकी ख्याति भी होती है। तब ही उसे लोक सम्मान प्राप्त होकर शेष जीवन सुखमय व्यतीत होता है। यह व्यक्ति केवल अपने पुत्र जनित सुख-ऐश्वर्य की आशा के आधार पर ही अपने जीवन में अनेकानेक कष्टों तथा बाधाओं को पार करता है।

उच्च-शनी-क्षेत्र तथा उच्च-बुध-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र और बुध क्षेत्र—यह दोनों क्षेत्र उच्च हों तो वह कुत्सित मनोवृत्ति वाला मानव होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति कुटिल, धूर्त, लुच्चा, प्रपञ्ची, झूंठा, अनाचारी, व्यभिचारी, लोभी तथा पापाचार में प्रसन्न रहने वाला होता है। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं शनी देव और बुध देव परस्पर मित्र हैं। अतः उपरोक्त दुर्गुणों के होते हुए भी वह व्यक्ति एकान्त-प्रिय, विद्वान, व्यवहारकुशल तथा सफल व्यापारी भी होता है। व्यवहार में यह व्यक्ति अन्य जातीय अथवा वर्ग वालों से सहयोग करता है। इसके सहयोगी अधिकांशतः निम्न-श्रेणी के व्यक्ति होते हैं।

उच्च शनी-क्षेत्र तथा उच्च मंगल-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र तथा मंगल क्षेत्र—यह दोनों क्षेत्र उच्च हों वह प्रायः दुर्गुणों का आगार होता है। हस्तगत अन्य शुभ लक्षणों के प्रभाव से उसके कुविचारों, दुष्कर्मों तथा अनाचारों में न्यूनता भले ही आ जाय, अन्यथा उसमें मानवोचित सद्गुण दीपक लेकर ढूंढने पर भी दृष्टिगोचर नहीं होते। शनी देव तथा मंगल देव—दोनों ही साधारणतः उग्र एवं तामसी प्रवृति के ग्रह हैं और दोनों में परस्पर शत्रुता है। अतः जिस हाथ में ये दोनों उच्च होते हैं वहां दोनों ही अपना पराक्रम खूब खुल कर दिखाते हैं और परिणाम यह होता है कि हाथी-हाथी लड़ते हैं, झाड़ों का नाश होता है—बेचारा सम्बन्धित

व्यक्ति मारा जाता है। वह कुकर्मों का अखाड़ा बन जाता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अत्यन्त क्रोधी, विषयासक्त, वृथाभिमानी, परम द्वेषी, आचार-विचार-हीन, क्रूर-कर्मा, लम्पट, कुचाली, विश्वाघाती तथा नीच होता है।

उच्च शनी-क्षेत्र तथा उच्च चन्द्र-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ मे शनी-क्षेत्र तथा चन्द्र-क्षेत्र—दोनों क्षेत्र उच्च हों वह व्यक्ति धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न, वाहनादि के सुखों का भोक्ता तथा सुखी होता है। इस मनुष्य में स्वाभिमान जागरूक रहता है। इसकी कल्पनायें उत्तम होती हैं; किन्तु इसे बाल्यकाल में शिक्षा-दीक्षा समुचित प्रकार मे प्राप्त नहीं होती।

उच्च शनी-क्षेत्र तथा उच्च शुक्र-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र तथा शुक्र क्षेत्र—केवल ये दोनों ही क्षेत्र उच्च हों वह व्यक्ति पराक्रमी, सुगठित शरीर वाला व्यायाम-प्रिय, योगाभ्यासी, गुप्त-विद्याओं का ज्ञाता, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नियमितता बरतने वाला, धर्मशील, एकाग्रचित्त वाला, रसिक,वेदान्त, तर्क, मीमांसा आदि का प्रकांड विद्वान शास्त्र के मर्म को जाननेवाला, मेधावी तथा प्रतिभा सम्पन्न होता है। इस लक्षणवाला व्यक्ति अपने जीवन में परम सुख ऐश्वर्य का उपभोग करता है तथा लोक-जीवन में कीर्ति एवं सम्मान पाता है।

उच्च शनी-क्षेत्र तथा उच्च राहु-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र तथा राहु-क्षेत्र अर्थात् करतल का मध्य भाग—केवल ये दो क्षेत्र उच्च हों वह बलशाली,

धन-धान्य-सम्पन्न, प्रतापी, विद्वान, कुशल, कलाकार तथा विज्ञान-वेत्ता होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान करता है इसे लोक-यश तथा सम्मान विपुल परिमाण में प्राप्त होता है।

विशेष-ज्ञातव्य

उच्च शनी क्षेत्र का अन्यान्य उच्च ग्रह-क्षेत्रों के साथ जो समन्वयित फल हमने ऊपर लिखा है उसमे यह ध्यान रखना चाहिये कि हमारा लिखा फल केवल उसी दशा मे घटित होता है जब यथा प्रसंग उच्च शनी क्षेत्र के साथ केवल एक ही अन्य ग्रह-क्षेत्र उच्च हो। इससे विपरीत होने पर फल में परिवर्तन होगा।

शनी, बुध तथा बृहस्पति के उच्च क्षेत्रों का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र तथा बृहस्पति क्षेत्र—केवल यह तीन ही क्षेत्र उन्नत एवं सुस्पष्ट हों और शेष सभी क्षेत्र साधारण स्थिति में हों—वह व्यक्ति उत्तम शोधक होता है। दैवयोग से यदि इस लक्षण वाले व्यक्ति के बुध-क्षेत्र पर तीन छोटी-छोटी, किन्तु सुस्पष्ट रेखायें हों तो वह व्यक्ति केवल शोधक ही होता है।

स्थान-भ्रष्ट शनी-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र स्थान-भ्रष्ट हो अर्थात् अपना निश्चित स्थान छोड़ कर इतस्ततः स्थित होकर व्यक्ति शिल्पकला के प्रति एकान्त उदासीन होता है।

शनी की मुद्रिका (Ring of Saturn) का परिचय

मनुष्य के हाथ में मध्यमा अंगुली के शनी-क्षेत्र पर मध्यमा अंगुली के उद्गम-स्थान को वेष्ठन करने वाली अर्द्धवर्तुलाकार किंवा अर्द्ध चन्द्राकार रेखा जो कि शनी के सम्पूर्ण क्षेत्र पर रहती है उसे शनी-मुद्रिका, शनी-वलय शनी का वर्तुल (Ring of Saturn) के नाम से सम्बोधित करते हैं।

शनी-मुद्रिका (Ring of Saturn) का फल

शनी-मुद्रिका (Ring of Saturn) वास्तव में अत्यन्त ही दुर्भाग्य पूर्ण चिह्न है। यह रेखा मनुष्य की उन्नति तथा सफलताओं के मार्ग में अति भयंकर अवरोध है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की असफलताओं का मुख्य कारण उनका स्वभाव होता है। यह व्यक्ति कदाचित ही आद्योपान्त लगनशील होकर उद्योग करता है। वह प्रायः प्रत्येक कार्य को अधूरा ही छोड़ देता है। फलतः इस लक्षणवाले व्यक्ति को अपने उद्योग में अथवा प्रयत्न में कभी-भी सफलता नहीं मिलती। इस रेखा की स्थिति को देखने ही से स्पष्ट हो जाता है कि यह रेखा वास्तव में शनी-क्षेत्र को काटती है। दूसरे शब्दों में यों भी कहा जा सकता है कि यह रेखा शनी-क्षेत्र को दबाती है। काटना और दबाना—दोनों ही उस क्षेत्र की शक्ति के लिए अभिशाप हैं। यहां पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिये कि शनी-क्षेत्र (Mount of Saturn) का दूसरा नाम भाग्य क्षेत्र (Mount of Fate) भी है। इस दृष्टिकोण से विचारने पर इस रेखा का उपरोक्त परिणाम स्वतः

सिद्ध हो जाता है। भला, जो भाग्य को काटे अथवा दबाये वह शुभ क्यों कर हो सकता है। यही कारण है कि जिस व्यक्ति के हाथ में शनी मुद्रिका (Ring of Saturn) हो वह आजीवन दुःख, क्लेश, दरिद्रता, आपति आदि का आखेट रहता है। इस चिह्न वाले व्यक्ति अपने साथियों से विचित्र-ढंग से विशृंखलित रहते हैं। इनका जीवन उदासीनता तथा एकान्तवास का विचित्रालय सा होता है। इनको यदि किसी प्रकार का परामर्श दिया जाता है तो इनको वह नहीं सुहाता। इस लक्षण वाले व्यक्ति एकाग्र-चित्त नहीं होते। आत्मविश्वास की तो उनमें गन्ध तक नहीं होती। पाश्चात् हस्त-विद्या-विशारदों के मतानुसार यदि किसी व्यक्ति के हाथ में केवल शनी और शुक्र के क्षेत्र उन्नत हों और उन पर कोई अशुभ अथवा अवरोध चिह्न न हो और शनी मुद्रिका भी हो तो वह सर्वथा शुभ होती है। उनके मतानुसार यह व्यक्ति ब्रह्मनिष्ठ, आत्मज्ञानी, भगवत्-साक्षात्कार करने वाला, अविचल ध्यान में निमग्न होकर विश्व-वैचित्र्य अथवा अलौकिक चमत्कार देखने वाला होता है। यह व्यक्ति सगुण और निर्गुण—दोनों मार्गों से भगवद्-आराधना करता है। इसे महापुरुषों के दर्शन प्राप्त होते हैं तथा उनके सत्संग का लाभ भी प्राप्त होता है दैवयोग से यदि यह शनी-मुद्रिका मध्यभाग में अथवा स्थान २ पर क्षत-विक्षत हो और शुक्र क्षेत्र पर फुली के सदृश्य चिह्न हों वह व्यक्ति स्त्रियों के मोह-पाश में आबद्ध होने के कारण आत्म ज्ञान के मार्ग से विचलित हो जाता है और योग भ्रष्ट भी हो जाता है।

शुक्र की मुद्रिका (Ring of Venus) का परिचय

शुक्र मुद्रिका भी एक अर्द्ध वर्तुलाकार किंवा अर्द्ध चन्द्राकार रेखा ही है। इसे शुक्र की मुद्रिका के अतिरिक्त शुक्र का कड़ा, शुक्रवलय, शुक्र-वर्तुल आदि विभिन्न नाम से भी सम्बोधित करते हैं। यह रेखा मनुष्य के हाथ पर तर्जनी अंगुली और मध्यमा अंगुली के उद्गम-स्थानों के मध्य से आरम्भ होकर धनुपाकार में विकसित होती हुई अनामिका अंगुली तथा कनिष्ठका अंगुली के उद्गम स्थानों के मध्य में जाकर समाप्त होती है। यह इसका शुद्ध एवं निश्चित स्थान है। कदाचित् स्थान-भ्रष्ट होने पर यह रेखा सूर्य क्षेत्र अथवा बुध क्षेत्र पर जाकर समाप्त हो जाती है। किन्तु ऐसे अवसर अत्यन्त ही विरले होते हैं।

शुक्र-मुद्रिका (Ring of Venus) का फल

इस रेखा का नाम शुक्र-मुद्रिका होने से साधारणतः मनुष्य इसे वासना प्रद, कामोत्तेजक अथवा इन्द्रिय-लोलुपता प्रदान करने वाली समझते हैं और जिस व्यक्ति के हाथ मे यह रेखा दृष्टि गोचर होती है उसे विषयी, विलास-प्रिय, कामासक्त, वासना-प्रिय इन्द्रिय-लोलुप आदि दुर्व्यसनों का आखेट समझने लगते हैं। इस रेखा के सम्बन्ध में यह अन्ध-धारणा वास्तव में सर्वथा अज्ञान-सूचक है। जब तक मनुष्य के हाथ में कामासक्ति-सूचक अथवा कामोत्तेजक अन्य लक्षणों अथवा चिह्नों का प्रादुर्भाव नहीं होता, तब तक शुक्र-मुद्रिका वाला व्यक्ति स्वप्न में भी कामासक्त नहीं पाया जाता। हां, यदि यह रेखा स्थान-स्थान पर क्षत-विक्षत

हो, अथवा हाथ छोटा और मोटा हो, अथवा शुक्र क्षेत्र अत्युच्च हो, अथवा हृदय-रेखा (Heart Line) मध्यमा अंगुली के मूल तक चली गई हो, अथवा स्वयंशनी का क्षेत्र ही अत्युच्च हो तो निस्सन्देह शुक्र-मुद्रिका डंके की चोट कामासक्ति की प्रधानता घोषित करती है।

शुक्र-मुद्रिका यदि विशुद्ध, अक्षत, सुस्पष्ट एवं सुडौल हो तो इसके प्रभाव से व्यक्ति बुद्धिमान्, विद्वान, दूरदर्शी, चतुर और मेधावी होता है, किन्तु उसका स्वभाव अस्थिर अवश्य होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में शुक्र-मुद्रिका के ऊपर शनी-मुद्रिका भी हो तो वह अत्यन्त शुभफल देने वाला होता है। दैवयोग से शुक्र-मुद्रिका और शनी-मुद्रिका—दोनों सुस्पष्ट, विशुद्ध, अक्षत तथा सम्पूर्ण हों और उन्हें कोई अवरोधक रेखा न काटती हो तथा बृहस्पति क्षेत्र पर गुणक अथवा फूली के आकार का चिन्ह हो अथवा हृदय-रेखा पर सूर्य-क्षेत्र के नीचे ही पालकी अथवा मन्दिर के सदृश्य चिन्ह हो अथवा ध्वजा का चिन्ह हो तो वह मनुष्य प्रकाण्ड तत्वदर्शी, भगवत्-साक्षात्कारी, त्रिकालज्ञ, ईश्वर परायण, वेदान्त वाचस्पति, अद्वितीय मीमांसक, वेदों का तत्व जानने वाला; विस्तृत भूमण्डल का अधिपति होकर राजर्षि होता है। शुक्र-मुद्रिका और शनी-मुद्रिका—दोनों के शुद्ध होने पर उपरोक्त शुभ चिन्हों का एक ही हाथ में दृष्टि-गोचर होना अत्यन्त कठिन है। ऐसा सुयोग तो शताब्दियों में किसी एकाध महापुरुष अथवा अवतारी पुरुष के हाथ में ही दृष्टि गोचर होता है। अतः

जिस सीमा तक ये चिन्ह प्राप्त हों उसी सीमा तक तत्सम्बन्धित व्यक्ति की योग्यता समझनी चाहिये। उपरोक्त चिन्हों में से कुछ चिन्ह शनी-क्षेत्र पर दृष्टि-गोचर होते हों और हृदय रेखा (Hert Line) तथा मस्तक रेखा (Head Line) दोनों विशुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा शुभ हों तथा इन दोनों रेखाओं के अन्त में शाखायें निकली हुई हों तो वह व्यक्ति उत्तमोत्तम ग्रंथों का रचयिता, वेद-वेदान्त का वेत्ता, ओजस्वी व्याख्यादाता, तथा समाचार-पत्रों का सम्पादक होता है। वह व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान, दूरदर्शी, मेधावी, विचारशील तथा प्रतिभा-सम्पन्न होता है और अपने जीवन में लौकिक तथा पारमार्थिक कार्यों को सफलता पूर्वक पूर्ण करके अन्त में सद्गति प्राप्त करता है। सौभाग्य से यदि शनी-क्षेत्र पर पारमार्थिक चिन्ह हों तो वह व्यक्ति आत्म तत्व का अनुपम ज्ञाता होता है। वह स्वयं को शरीर, मन और प्राण—तीनों से पृथक अनुभव करता है। जिस व्यक्ति के हाथ में उपरोक्त शुभ-चिन्ह होते हैं उसके हाथ में धन रेखा भी स्वतः ही उत्तम होगी, जिसके फल-स्वरूप उस व्यक्ति को आजन्म आर्थिक-सकट से मुक्ति रहती है और वह अपने मार्ग पर अविचल गति से अग्रसर होता चला जाता है।

शुक्र की मुद्रिका प्रायः दार्शनिक, विषम अथवा सूच्याकार हाथ में ही पायी जाती है, अन्य प्रकार के हाथों में यह अपेक्षाकृत कम ही दृष्टिगोचर होती है। दुर्भाग्यवश यदि शनी अथवा सूर्य क्षेत्र से आने वाली भाग्य रेखा अथवा सूर्य रेखा शुक्र

मुद्रिका को काटती हों तो शुक्र-रेखा का फल शुभप्रद नहीं रहता।

शुक्र-मुद्रिका से मानव स्वभाव में दो प्रधान दोष आ जाते हैं। एक तो उसका स्वभाव चंचल हो जाता है दूसरे उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्राय: छोटी छोटी बातों पर ही आवेश मे आ जाते हैं। स्वभाव की अस्थिरता के परिणाम-स्वरूप वह कभी उत्कृष्ट श्रेणी के उत्साही प्रतीत होते हैं तो कभी अत्यधिक उत्साह हीन तथा निराश दीख पड़ते हैं।

दैवयोग से यह शुक्र-मुद्रिका शुष्कता अथवा पीलापन लिये हो तो वह व्यक्ति में लम्पटता, तथा दुराचरण की वृद्धि करती है, किन्तु यदि इसका अन्तिम छोर नीचे की ओर जाकर मगल क्षेत्र की सीमा तक पहुंच जायतो उपरोक्त अशुभफल में अत्यधिक न्यूनता आ जाती है। ऐसा होने पर वह व्यक्ति किसी को सताने तथा अवैध भोग विलास मे लिप्त रहने के स्थान पर उचितानुचित का विशेष ध्यान रखता है और यदि इसका अन्तिम छोर बुध-क्षेत्र पर पहुंच कर ऊपर की ओर उठे तो वह व्यक्ति मिथ्याभाषी तथा विश्वासघाती होता है।

शुक्र-मुद्रिका के सम्बन्ध मे उपरोक्त शुभाशुभ विवरण पर भली प्रकार विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि यह रेखा स्वतः किसी भी प्रकार से अशुभ अथवा कामासक्ति उत्पन्न करने वाली नहीं होती। हां, यदि हाथ मे अन्य ग्रह क्षेत्र, चिन्ह, रेखा आदि

अशुभ लक्षण हों अथवा हाथ स्वयं ही अशुभ प्रकार का हो तो इसका फल अशुभ अवश्य हो जाता है। सो इस सम्बन्ध में केवल शुक्र मुद्रिका को ही इतनी अशुभ मानना इसके साथ निस्सन्देह अन्याय करना है। क्योंकि हस्त-गत अन्य अशुभ लक्षणों से तो प्रत्येक-रेखा तथा उत्तमोत्तम चिन्ह आदि तक अशुभ फल देने लगते हैं। काजल की कोठरी में किसे दाग न लगेगा। हम समझते हैं कि शुक्र-मुद्रिका के सम्बन्ध में हमारे उपरोक्त तर्कपूर्ण एवं युक्ति-युक्त विवेचन से पाठकों की भ्रान्ति निर्मूल हो गई होगी और वे शुक्र-मुद्रिका को उसकी स्थिति, आकार-प्रकार, गठन, आकृति, स्वरूप तथा हस्त-गत अन्य रेखाओं, चिन्ह, ग्रह-क्षेत्रों आदि के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ मानेंगे।

जिस व्यक्ति के हाथ में शुक्र-मुद्रिका के साथ-साथ अन्य अशुभ योगों का ही प्राधान्य हो तो यह शुक्र मुद्रिका अपने उत्तम फल को त्याग कर अत्यन्य अशुभ फल-प्रद हो जाती है। ऐसी स्थिति में इसका अशुभ परिणाम यहां तक बढ़ जाता है कि सम्बन्धित व्यक्ति हत्यारा बनकर मृत्यु दण्ड का भागी तक होता है। अतः इस सम्बन्ध में हस्त परीक्षक को अत्यन्त सावधानी से अपना निर्णय स्थिर करना चाहिये। क्योंकि इस रेखा के विषय में तनिक-सी असावधानी भी अत्यन्त भीषण भूल का कारण बन जाती है। इस परिच्छेद में प्रसंगवश शुक्र-मुद्रिका तथा शनी मुद्रिका का हम इतना ही विवरण लिखेंगे। इनका अधिक विस्तृत विवरण एक पृथक परिच्छेद मे दिया जायगा।

शनी का चिन्ह (Shield of Saturn)

जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं प्रत्येक ग्रह के स्वरूप का बोधक एक विशेष चिन्ह् होता है। मनुष्य के हाथ पर यह विशेष चिह्न जिस स्थान पर पाया जाता है वहां तत्सम्बन्धित ग्रह का विशेष प्रभाव होता है। साधारणतः यह् चिह्न ग्रह-क्षेत्रों पर ही परिलक्षित होता है, उस क्षेत्र पर उनका विशेष प्रभाव रहता है। फलतः उस क्षेत्र से मानव-जीवन के सम्बन्ध में जिन-जिन विषयों पर प्रकाश प्राप्त होता है उन सभी विषयों पर उस चिह्न से सम्बन्धित-ग्रह् का प्रभाव अवश्य होता है। ग्रह चिह्नों का हाथ पर उपस्थित होना अनिवार्य नही है। इसके अतिरिक्त यह भी कोई नियम नहीं है कि एक क्षेत्र पर एक ही ग्रह अथवा उस क्षेत्र के स्वामी का ही चिह्न हो। किसी भी ग्रह-क्षेत्र पर किसी भी ग्रह का चिह्न हो सकता है और एक क्षेत्र पर एक अथवा अधिक ग्रहों के चिन्ह् भी हो सकते हैं अतः हस्त परीक्षक को इस सम्बन्ध में स्थिति के अनुसार उचित विचार विमर्श-करना चाहिये।

प्रत्येक ग्रह् का अपना विशेष-चिह्न होता है। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है यह विशेष-चिह्न वास्तक में ग्रह का ही प्रतीक है। इसका मानव-हस्त पर उपस्थित होना मानों स्वयं ग्रह् का ही उपस्थित होना है। अतः इसका अत्यधिक ध्यान रखने की परमावश्यकता है। शनी-ग्रह् का स्वरूप बोधक चिह्न आंगल वर्ण माला के आठवें वर्ण अर्थात् एच (h) के स्वरूप से अत्यधिक समानता रखता है। यदि यह कहा जाय कि यह चिह्न एच (h) के आकार का ही होता है तो अनुचित न होगा।

शनी-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर किंवा स्व-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह हो वह अत्यन्त शुभ-फल-प्रद होता है। यह स्वभाविक भी है। अपने ही घर में अशुभ कौन होता है। सर्प अत्यन्त भयानक जन्तु है और जहां भी वह उपस्थित होता है उससे भय की आशंका रहती है। किन्तु अपने घर अर्थात् वांवी में सर्प भी अशुभ नहीं माना जाता है। हां, तो स्वक्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह मानव की प्रत्येक दशा में उन्नति करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति विचारशील, पराक्रमी, विद्वान, तीक्ष्ण बुद्धि, गुणज्ञ, मेधावी, नीति-निपुण तथा दूरदर्शी होता है। अपना स्वार्थ सिद्ध करने में वह अत्यन्त चतुर होता है। किसी न किसी साधन से अपना अभीष्ट कार्य बना ही लेता है। जन-साधारण को आकर्पित करने की उसमें अपूर्व शक्ति होती है। वह अत्यन्त अध्ययनशील होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, मेस्मैरेजम, हिप्नाटिज्म आदि गुप्त विद्याओं में वह सिद्ध-हस्त होता है। यह व्यक्ति अपने जीवनमें कभी असफल नहीं होता।

बृहस्पति-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-चिन्ह बृहस्पति-क्षेत्र पर स्थित हो उसकी विचार शक्ति अत्यन्त प्रबल होती है। यह व्यक्ति मान-अपमान के प्रति साधारणतः उदासीन रहता है। अपने कर्त्तव्य पालन में यह अत्यन्त दृढ़ रहता है। वह प्रायः जनता जनार्दन की सेवा में विशेष रूप से प्रवृत्त रहता है। इसका स्वभाव

सुशील, शान्त तथा सर्वप्रिय होता है। यह व्यक्ति विचारशील गुणवान, बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल तथा यशस्वी होता है। वह मन्त्र द्रष्टा तथा गुप्त विद्याओं का प्रेमी होता है।

सूर्य-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

सूर्य-क्षेत्रस्थ शनी चिह्न का प्रभाव लिखने से पूर्व हम अपने पाठकों का ध्यान पुनः इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि सूय और शनी में पारस्परिक शत्रुता है अतः वह अपने शत्रुत्व की भावना का व्यवहार करने से नहीं चूकता। इसका परिणाम यह होता है कि इस क्षेत्रस्थ शनी चिह्न का प्रभाव साधारणतः प्रत्येक दशा मे अशुभ-फल-दायक ही होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के हाथ में यदि सूर्य-क्षेत्र अवनत हो तो उस व्यक्ति के जीवन में शनी चिह्न का प्रभाव अत्यन्त अशुभ-सूचक ही समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति अत्यन्त दुर्बल होती है। सफलता तो उसे जीवन में कभी स्वप्न में भी नहीं प्राप्त होती। इसके अतिरिक्त वह परले-सिरे का अकर्मण्य, लम्पट, विश्वास-घाती, धूर्त, चरित्रहीन तथा नीच होता है। उसकी रुचि अधिकांशतः अभक्ष्य-भक्षण तथा अगम्यागमन की ओर ही अधिक रहती। उसकी संगत प्रायः नीचतम श्रेणी के व्यक्तियों से ही होती है। वह दुर्व्यसनी भी बहुत ज्यादा होता है। संक्षेप मे वह दुर्गुणों, कुकृत्यों तथा हीनता का भण्डार होता है। यह व्यक्ति आजीवन क्लेश, आपत्ति तथा दरिद्रता भोगता है। दैव-योग से यदि सूर्य-क्षेत्र उच्च हुआ तो उसे गुप्त विद्याओं में—

मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र, मैस्मेरेजम, हिप्नाटिज्म आदि में सफलता तो अवश्य मिल जाती है किन्तु अपनी कुटिल मनोवृति के प्रभाव से वह उनका प्रयोग नहीं अधिकांशतः दूसरों को सताने तथा अपने दुर्व्यसनों और भ्रष्टाचरण की पूर्ति के लिए ही करता है। ऐसा व्यक्ति एक प्रकार से मानव-जाति का कलंक होता है।

बुध-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

दैवयोग से जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-चिन्ह बुध-क्षेत्र पर स्थित होता है उसे बुध ग्रह तथा शनी ग्रह की मित्रता के कारण प्रायः अच्छा ही फल प्राप्त होता है। यदि ग्रह लक्षण उच्च-बुध क्षेत्र पर परिलक्षित हो तो वह व्यक्ति निस्सन्देह अपने जीवन में आशातीत सफलता प्राप्त करता है। वह व्यक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण-बुद्धि, विचारशील तथा मानसिक शक्तियों पर अनुशासन रखने वाला होता है। यह व्यक्ति हास्य-प्रिय, पर्यटक, कौतुकी तथा उत्तमोत्तम प्राकृतिक दृश्यों को देखने का प्रेमी होता है। साहस और पराक्रम की भी उसमें कमी नहीं होती। कल्पना करने तथा नवीन योजना बनाने में भी वह बहुत चतुर होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः चिकित्सक, अदृष्टवादी, ज्योतिषी, साहित्यकार, सुकवि, अभिनेता, शिल्पी, वैज्ञानिक आदि में से होता है। इसका विवाह छोटी आयु में ही हो जाता है। उसकी स्त्री सुन्दर होती है तथा विवाह से उसे यथेष्ट धन प्राप्त होता है। यदि यह व्यक्ति व्यवसायी हुआ तो उसे अपने काम में पूर्ण सफलता मिलती है। संक्षेप में उच्च बुध-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह सभी प्रकार से श्रेष्ठ होता

है। इसके विपरीत यदि बुध-क्षेत्र निम्न हो और उस पर शनी-चिन्ह अंकित हो तो वह व्यक्ति अपने व्यवसाय में अनेकानेक परिवर्तन करता है। स्थिर होकर एक ही व्यवसाय में लगे रहना उसे कभी-भी सम्भव नहीं होता। उसमें भी उसे बाधायें घेरे रहती हैं। उसकी बुद्धि प्रायः भ्रमित-सी रहती है। वह अत्यधिक लोभी, स्वार्थी तथा कामासक्त होता है। यह धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न भी होता है तथा अपने धन-ऐश्वर्य के कारण इतना मदान्ध रहता है कि उसे उचितानुचित का कुछ भी ध्यान नहीं रहता। अपना आगा पीछा कुछ भी नहीं सोचता, यहां तक कि कितनी ही सती-साध्वी स्त्रियों के सतीत्व नष्ट कर देता है। किन्तु इतना सब करने पर भी उसके लौकिक सम्मान तथा प्रतिष्ठा में कुछ अन्तर नहीं पड़ता। जन-समाज में उसका मान सम्मान ज्यों का त्यों बना रहता है। इस व्यक्ति के व्यक्तित्व की इस विशिष्टता का प्रधान कारण यह कि शनी ग्रह बुध ग्रह के साथ अपनी मित्रता के कारण उसके भ्रष्टाचार तथा कुटिलताओं को जन साधारण में प्रकट नहीं होने देता और उसे लोकापवाद से सदैव रक्षित रखता है। अनुच्च बुध क्षेत्रस्थ शनी ग्रह का चिन्ह अपना अशुभ फल तो अवश्य प्रदान करता है, किन्तु साथ ही उसके द्वारा उस व्यक्ति के जीवन में हानि नहीं होने देता। यही इसकी विशेषता है।

प्रथम-मंगल-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में प्रथम मंगल-क्षेत्र पर (अर्थात् बुध क्षेत्र तथा चन्द्र क्षेत्र के मध्यस्थ मंगल क्षेत्र पर) शनी चिन्ह

हो तो वह व्यक्ति उदास चित्त होता है तथा अपने परिजन बन्धु-बान्धवों द्वारा उसे अपमान एवं तिरस्कार प्राप्त होता है। स्पष्ट है कि मंगल ग्रह तथा शनी ग्रह की शत्रुता ही इस अपमान का मूल कारण है। इस अपमान से उसके मन में अत्यधिक शान्ति उत्पन्न होती है जिसके परिणाम स्वरूप उसमे प्रतिशोध की भावना बलवती हो उठती है। यह व्यक्ति प्रतिशोध बड़ा ही भयानक रूप से लेता है। प्रतिशोध के हेतु उससे सम्बन्धित व्यक्ति को विष देने अथवा उसकी हत्या करने की पाप बुद्धि उत्पन्न होती है और वह तदनुसार कार्य करता भी है। फलतः उसे राज दण्ड भोगना अनिवार्य होता है। इस लक्षण वालों का अधिकांश जीवन दुष्कर्म जनित राज दण्ड भोगने के हेतु कारा की काली कोठरी में ही व्यतीत होता है।

चन्द्रमा-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

मानव हस्त गत चन्द्र क्षेत्र पर शनी ग्रह का चिन्ह शत्रुवत ही है। इसके प्रभाव से चन्द्र क्षेत्र के शुभ परिणाम में अत्यधिक विषमता उत्पन्न हो जाती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वभाव का अत्यन्त कठोर, निर्दयी, करुणा हीन तथा कटु भाषी होता है। उसे माता का दुःख भोगना पड़ता है। वह आजीवन निर्धन रहता है चिन्ता तथा आपत्तियां स्वप्न में भी उसका पीछा नहीं छोड़तीं परिजन बन्धु-बान्धवों से उसे सदैव कष्ट तथा पीड़ा प्राप्त होती है। यक्ष्मा, उन्माद आदि रोगों का भी उस पर प्रकोप रहता है। दैव-योग से इस लक्षण वाले व्यक्ति का हाथ भी अशुभ प्रकार का

हो तो बस उसका भगवान ही रक्षक समझना चाहिये। इस व्यक्ति के दुखों, कष्टों, पीड़ाओं, आपत्तियों तथा यातनाओं की कोई सीमा नहीं रहती। वह अपने जीवन से अत्यधिक दु:खी हो जाता है और अन्त में कोई न कोई ऐसा अपराध अथवा पाप कर्म करता है जिसके फल स्वरूप मृत्यु दण्ड पाता है अथवा आत्म-हत्या करके अपने दारुण जीवन का अन्त कर लेता है।

शुक्र-क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में शुक्र-क्षेत्र पर शनी-ग्रह का चिह्न हो वह अस्वभाविक-प्रेम का सूचक है। ऐसा व्यक्ति स्वभावतः ही स्त्रियों की ओर अत्यधिक आकर्षित रहता है, किन्तु उसके प्रेम मे स्थिरता उड़द पर सफेदी के बराबर भी नहीं होती। इसका संस्कार-युक्त विवाह आजन्म नहीं होता। यदि यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि इस व्यक्ति के भाग्य में विवाह तथा वैवाहिक सुख होता ही नहीं। यदि दुर्भाग्यवश शुक्र-क्षेत्र अनुच्च अथवा निम्न हो तो उसे नित्य नये घाट का पानी पीने की पड़ता होती है अर्थात् आज इस स्त्री को मोहपाश में आबद्ध करता है तो कल उसको और परसों किसी तीसरी को। इसी प्रकार इसका जीवन चलता है। सिविल-मैरिज अथवा प्रेम-विवाह की सम्भावना इसके जीवन में अवश्य होती है, किन्तु वह भी सफल नहीं हो पाता। उसमें न्यायालय की शरण लेकर सम्बन्ध विच्छेद की नौबत आती है। हां यदि शुक्र-क्षेत्र उच्च हो तो सिविल-मैरेज अथवा प्रेम विवाह में सम्बन्ध-विच्छेद जैसी कलंकमय घटनाओं

को स्थान नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त वह व्यक्ति घाट-घाट का पानी भी नहीं पीता। वह सदाचारी और सत्यवक्ता होता है, किन्तु उसका आकर्षण उस दशा में भी विशेषकर स्त्रियों की ओर ही अधिक रहता है और बहुधा अनेकों स्त्रियों से वह प्रेम भी करता है, किन्तु उसके प्रेम में अपवित्रता अथवा वासना को स्थान नहीं मिलता।

दैवयोग से यदि यह लक्षण किसी स्त्री के हाथ में हों तो उस दशा में इसका फल शुभ होता है। वह स्त्री अपने पति से प्रेम करने वाली होती है। उसे सन्तान का पूर्ण-सुख प्राप्त होता है। धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की उसके घर में प्रचुरता होती है। वह विदूषी तथा सुकविय भी होती है। किन्तु उसकी प्रकृति चंचल अवश्य होती है।

द्वितीय मंगल क्षेत्रस्थ शनी-चिन्ह का प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-चिह्न द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर स्थित हो तो उसे वह शुभ फल-प्रद होता है। यह चिन्ह इस क्षेत्र पर यदि मस्तक-रेखा (Head Line) के समीप अथवा उसके ऊपर हो तो अत्यन्त शुभ होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति (चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष) राज द्वारा सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। वह प्रतिभा सम्पन्न होता है तथा उसे राजाओं के समान गौरव प्राप्त होता है। वह नगर अथवा ग्राम में प्रधान होता है तथा सेना में भी उसे उच्च-पद प्राप्त होता है। धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की उसे प्रचुरता रहती है। उसे सुगन्धित द्रव्यों से

विशेष प्रेम होता है तथा उनका सेवन करके वह सुखी होता है। वह व्यक्ति धन-ऐश्वर्यादि सुखोपभोग तथा पुत्र-पौत्रादिकों का सुख प्राप्त कर दीर्घ जीवन प्राप्त करता है। किन्तु इस व्यक्ति को कर्ण रोगों की अधिक सम्भावना रहती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः शीतला, मोतीझारा आदि से ग्रस्त होकर अपने कानों की शक्ति से हाथ धो बैठते हैं और बहरे हो जाते हैं।

दैवयोग से यदि शनी-ग्रह का चिन्ह द्वितीय मंगल-क्षेत्र के ठीक मध्य में हो तो उपरोक्त फल में वैपरीत्य आ जाता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति स्वभाव का कठोर तथा निर्दयी होता है। उसका जीवन बन्धन तथा ताड़ना युक्त होगा। उसकी प्रकृति चंचल होगी। इस व्यक्ति को विष, अग्नि और शस्त्र का भय होगा। वह शत्रुओं से पीड़ित, रोगों से आक्रान्त, अपव्ययी तथा सन्तान-सुख से वंचित रहेगा। इस व्यक्ति के नेत्रों में फूली, जाला, बिन्दु, कोंच, मोतीया बिन्दु प्रभृति रोगों का प्रभाव रहेगा।

मंगल-क्षेत्र का मध्य निर्णय

अन्यान्य-ग्रह-क्षेत्रों के समान मंगल-क्षेत्र भी अपने समीपस्थ गुरु-क्षेत्र, राहु-क्षेत्र अथवा शुक्र-क्षेत्र की ओर झुक सकता है। ऐसी स्थिति में यह निश्चित करना प्रायः कठिन हो जाता है कि मंगल-क्षेत्र का मध्य स्थान किस स्थान पर माना जाय? क्योंकि जहां तक दृष्टि का सम्बन्ध है इसका निर्णय करने में भ्रान्ति हो जाने की पूर्ण सम्भावना रहती है। इसका कारण यह है कि किसी अन्य क्षेत्र की ओर झुकाव होने पर मंगल क्षेत्र

स्थान-भ्रष्ट-सा प्रतीत होता है और परीक्षक उसके झुकाव से भ्रम में पड़ कर मंगल-क्षेत्र के मध्य स्थान के निर्णय में भूल कर बैठता है। वास्तव में इसका सही स्थान निश्चित करने के लिये वृहस्पति-क्षेत्र तथा शुक्र-क्षेत्र के मध्य स्थान को मंगल क्षेत्र (जो कि वास्तव में है भी) स्वीकार करके उसके मध्य बिन्दु को ही मंगल क्षेत्र का मध्य स्थान मानना चाहिये। जहां वह अपने समीपस्थ किसी ग्रह-क्षेत्र पर झुका हो उस स्थान से भ्रमित नहीं होना चाहिये।

करतल-गत प्रमुख रेखाओं का शनी-क्षेत्र पर प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ पर शनी-क्षेत्र पर एक खड़ा यव अर्थात् द्वीप का चिन्ह हो और उसमें से एक रेखा किंवा शाखा निकल कर तीव्र गति से मस्तक-रेखा (Head Line) और स्वास्थ-रेखा (Health Line) के संगम-स्थान पर जाकर उनसे संगम करे तो उस व्यक्ति के मस्तक की निश्चय ही शल्य-क्रिया (आप्रेशन) द्वारा चिकित्सा होगी और उसके मस्तक में से कीटाणु निकाले जायगे। इस प्रकार की चिकित्सा के पश्चात् वह व्यक्ति दस-बारह वर्ष और जीवित रहेगा। उसका यह शेष जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। किन्तु दैवयोग से उपरोक्त यव अर्थात् द्वीप से आने वाली रेखा मस्तक-रेखा (Head Line) और स्वास्थ-रेखा (Health Line) के संगम-स्थान को पार करके उस स्थान से आगे बढ़ जाय तो शल्य-चिकित्सा (आप्रेशन) में उस व्यक्ति की मृत्यु की पूर्ण सम्भावना रहती है।

जिस व्यक्ति के हाथ पर शनी-क्षेत्र से उद्भूत कितनी ही रेखायें हृदय-रेखा (Heart Line) को काट रही हों वह गठिया तथा अन्यान्य वायु रोगों से ग्रस्त रहता है। दुर्भाग्यवश यदि ये रेखायें लहरदार (सर्प-गति सदृश्य) हों और मस्तक-रेखा (Head Line) तक जाती हों तो अशुभ फल की सूचना देती हैं। दैवयोग से यदि वे जीवन रेखा (Life line) तक पहुंच जायं तो उन्नतिकारक हो जाती हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति को उपरोक्त रेखाओं के जीवन रेखा (Life line) से संगम-वाले स्थान पर, जीवन-रेखा (Life line) के वर्षमान से प्राप्त वर्ष में उन्नतिशील अनेक कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। किन्तु यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि ये रेखायें लहरदार (सर्प-गति-सदृश्य) होंगी तो सफलताओं मे आरम्भ में बाधायें उपस्थित होंगी तत्पश्चात् सफलता प्राप्त होगी—किन्तु सफलता निश्चय ही प्राप्त होगी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर उद्भूत एक सरल, शुद्ध, स्पष्ट तथा अक्षत रेखा हृदय-रेखा (Heart line) को स्पर्श करती हो तो उस व्यक्ति की भाग्योन्नति निश्चय ही होगी। उसे धार्मिक-क्षेत्र में ख्याति प्राप्त होगी तथा परिजन बन्धु-बान्धवों द्वारा सुख मिलेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय-रेखा (Heart line) बुध क्षेत्र से आरम्भ होकर ठीक शनी-क्षेत्र के नीचे आकर टूट जाय और फिर आरम्भ होकर शनी-क्षेत्र से उद्भूत एक सरल शुद्ध,

स्पष्ट तथा अक्षत रेखा के साथ विशाल कोण बनाये तथा इस कोण के अन्तर्गत आधा शनी-क्षेत्र तथा सम्पूर्ण गुरु-क्षेत्र को समेटे तो वह व्यक्ति बाल्यावस्था में ही ग्रह-त्याग कर उच्च कोटि का वीतरागी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अनेकों विद्याओं में पारंगत अद्वितीय महा-पुरुष होता है। लौकिक कामनायें तथा भौतिक भोगों की लालसा इस व्यक्ति को स्वप्न में भी स्पर्श नहीं करती। यह व्यक्ति अन्त में श्री हरिः के चरणों में मुक्ति लाभ करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र से उद्भूत एक सरल, स्पष्ट, अक्षत तथा सरल रेखा मध्यमांगुली के मूल को छूती हो और दूसरी ओर वही रेखा हृदय-रेखा (Heart line) को स्पर्श करके उसके साथ कोण बना रही हो—साथ ही हृदय-रेखा (Heart Line) वृहस्पति क्षेत्र को पार करके करतल किंवा आत्मतत्व का चिरन्तन ज्ञान प्राप्त करता है तथा वह अपने गुरु को भी त्याग देता है और उच्च कोटि की तपस्या में लीन हो जाता है। तपोन्नति के द्वारा अलौकिक शक्ति प्राप्त करके वह व्यक्ति अदृश्य रूप से लोक-कल्याण करता है। किन्तु इस फल की प्राप्ति के हेतु जीवन-रेखा Life line) का शुद्ध, सुस्पष्ट तथा अक्षत होना नितान्त अनिवार्य है।

शंका-समाधान

उपरोक्त पंक्तियों में हमने हृदय-रेखा (Heart line) के टूट जाने पर तथा उसके शनी-क्षेत्र से उद्भूत रेखा से पुनः

आरंभ होने पर जातक के वीतराग एवं अलौकिक महा पुरुष होने का अचूक योग बताया है। सैद्धान्तिक सूत्रों के आधार पर हस्त विज्ञान-शास्त्र के पाश्चात्य विद्वान इसका विरोध करते हैं। उनका विरोध निम्न प्रकार से है—

१—यह सैद्धान्तिक बात है कि हृदय-रेखा (Heart Line) जिस स्थान पर भंग होती है, वर्ष मान के आधार पर उस आयु को प्राप्त होने पर सम्बन्धित मानव की मृत्यु होना पूर्ण रूपेण निश्चित है। ऐसी दशा में वह चिरकाल तक लोक कल्याण किस प्रकार कर सकता है।

२—मानव-हस्त गत रेखाओं का शुभाशुभ फल उनकी स्थिति अन्यान्य रेखाओं के साथ उनका सम्बन्ध, उन पर स्थित अन्यान्य चिह्नों की स्थिति आदि के आधार पर वर्षमानान्तर्गत निश्चित आयु पर ही होता है। ऐसी दशा में शनी क्षेत्र के ठीक नीचे भंग होने वाली हृदय-रेखा (Heart Line) के शनी क्षेत्र से उद्भूत रेखा से पुनः आरम्भ होने के फल स्वरूप उससे सम्बन्धित व्यक्ति बाल्यावस्था में ही वीत राग होकर गृह त्याग क्योंकर करेगा ? हृदय-रेखा (Heart Line) के शनी क्षेत्र के ठीक नीचे भंग होने की अवधि तक तो उसे सैद्धान्तिक आधार पर सांसारिक कार्य करने ही होंगे। ऐसी दशा में उसे बाल-योगी घोषित करना कहां तक न्याय संगत है ?

पाठको ! पाश्चात्य विद्वानों की उपरोक्त शका वस्तुतः व्यर्थ है। यद्यपि सैद्धान्तिक सूत्रों के आधार पर उनके तर्क में सार प्रतीत

होता है, तथापि हमें यह लिखने में तनिक भी संकोच नहीं है कि कोरे सिद्धान्तों का ढोल पीटने से ही सब कुछ सत्य नहीं हो जाता साधारणतः सिद्धान्तों की पृष्ठ भूमि हमारे अनुभव ही होते हैं। अतः अनुभव जितना विशाल होगा, उस पर जितना अध्ययन, मनन तथा अनुशीलन किया गया होगा वह उतना ही पुष्ट होगा। हस्त-विज्ञान साधारण भौतिक विज्ञान नहीं है। जैसा कि हम पुस्तक के आरम्भ में लिख चुके हैं यह मानव-जीवन का विज्ञान है। अतः इसके सम्बन्ध में केवल स्थूल दृष्टि के आधार पर ही किसी सिद्धान्त की तूती अलापना सर्वथा सार-हीन है इस विज्ञान के आधार पर मानव-जीवन के सम्बन्ध में कुछ भी निर्णय करने से पूर्व उस पर स्थूल दृष्टि के साथ-साथ सूक्ष्म दृष्टि से भी पूर्ण मनन करना आवश्यक है। जब तक आन्तर तथा बाह्य—दोनों दृष्टि कोणों का समन्वय नहीं होगा, इस प्रकार की शंकाओं का समाधान सर्वथा असम्भव है। पूर्वापर की पृष्ठ भूमि पर आन्तर तथा बाह्य दृष्टिकोणों का विवेचनात्मक ही इसका एक मात्र साधन है। जिस व्यक्ति के हाथ पर उपरोक्त विशाल कोण बनता है उसके जीवन में सांसारिक कार्यों को कोई स्थान ही नहीं रहता। यह विशाल कोण उसके समस्त सांसारिक कार्यों की सम्भावनाओं को नष्ट कर देता है। रही हृदय रेखा (Heart Line) के भग्न होने से मृत्यु योग की बात सो वह योग उस व्यक्ति के तपो बल से स्वतः ही नष्ट हो जाता है। यहां यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि जिस व्यक्ति के हाथ में उपरोक्त विशाल कोण होगा उसका

बृहस्पति क्षेत्र और शनी क्षेत्र अवश्यमेव उच्च होगा। अब यदि तनिक भी विचार किया जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि जो विशाल कोण आधे उच्च शनी क्षेत्र को तथा समस्त उच्च बृहस्पति-क्षेत्र को अपने अंक में समेटता हो और उसके साथ ओत-प्रोत सम्बन्ध स्थापित करके हृदय-रेखा (पुनः आरम्भ होकर) मानव हस्त के बाहर तक जाती हो, वहां सांसारिक कार्यों की कौन सुनेगा ?

उपरोक्त अलौकिक योग हमें कितने ही महात्माओं के हाथ में देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। किन्तु विशुद्ध कोण अभी तक किसी भी हाथ मे देखने को नहीं मिला। प्रायः सभी हाथों में शनी-क्षेत्र से आने वाली रेखा कटी हुई ही दृष्टिगोचर हुई। यों भी यदि विशुद्ध विशाल कोण के फल की दृष्टि से विचार किया जाय तो इस योग का विशुद्ध स्वरूप किसी हाथ में दृष्टिगोचर होना महान पुण्य का प्रतीक ही है। क्योंकि जिस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार का विशुद्ध विशाल कोण होगा वह तो अलौकिक महा पुरुष ही होगा। अदृश्य होकर अदृश्य शक्ति द्वारा ही जन-कल्याण करेगा। फिर भला उसका दृष्टिगोचर होना किस प्रकार सम्भव हो सकता है। यों पुण्य-भूमि भारत में अभी भी ऐसे महात्मा विद्यमान है जिनके हाथ में इस प्रकार का योग है (चाहे वह पूर्ण रूपेण शुद्ध न हो)। ये महात्मा प्रायः बाल-योगी अथवा बालयती ही हैं और अविचल गति से लोक-कल्याण में रत है। इस प्रकार के एक-दो महात्माओं को हम खूब जानते हैं। यदि

पाठकों को हमारे कथन में शंका हो तो पत्र-द्वारा उन महा-पुरुषों का स्थान हमसे मालूम कर सकते हैं। तथा हमारे कथन के सत्यासत्य की पुष्टि स्वयं कर सकते हैं। हमारा पत्र-व्यवहार का पता निम्न लिखित है।

श्री रामेश्वर प्रसाद पोडिया
मोडिया-हाउस
राजगढ़-अलवर (राजस्थान)

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र तथा सूर्य क्षेत्र के मध्य-स्थल पर शुद्ध, सुस्पष्ट, सरल तथा अक्षत दो खड़ी रेखायें हों, किन्तु वे हृदय-रेखा (Heart line) को न छूती हों तो वह व्यक्ति वृद्धावस्था में सुखोपभोग करता है। इस व्यक्ति को पौत्र के सुख की लालसा होती है। यह बहु कुटुम्बी होता है। श्रम शील होता है तथा कल्पना करने में बहुत तीव्र होता है। औषधोपचार द्वारा अपने शरीर को शक्तिशाली बनाये रखता है। अपने भृत्य और सम्बन्धियों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के पुत्र सुयोग्य तथा उच्चाधिकारी होते हैं। जब इसकी आयु ४० वर्ष की होती है तब इसकी स्त्री का देहान्त हो जाता है। दैवयोग से यदि उपरोक्त रेखायें हृदय-रेखा (Heart line) को स्पर्श करें तो चालीस वर्ष की आयु के पश्चात् वह अवश्यमेव विवाह करता है, किन्तु इस विवाह से उसके सुखोपभोग मे कोई बाधा नहीं होगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र से उद्भूत एवं सुस्पष्ट शुद्ध और अक्षत सरल रेखा जीवन रेखा (Life Line) पर पहुंचे तो

वह उच्चाधिकारी और राज्य द्वारा मान तथा प्रतिष्ठता प्राप्त होता है वह अनेकों उन्नतिशील कार्य करता है। वह बहु कुटुम्बी तथा सुखी होता है। उसे मातृपक्ष (ननसाल ,, अथवा स्त्री-पक्ष (श्वसुरालय) से अतुल धन प्राप्त होता है उसका भाग्योदय जीवन-रेखा (Life Line) पर शनी क्षेत्र से आने वाली रेखा के संगम स्थान पर वर्ष मान से प्राप्त आयु में होगा। उसी वर्ष उसे उच्चपद, सम्मान, धनादि की प्राप्ति होगी दैवयोग से यदि शुक्र रेखा भी उसी स्थान पर आकर जीवन रेखा (Life Line) से मिले तो उसी वर्ष उसका विवाह भी अवश्य होगा। किन्तु उपरोक्त सभी प्रकार के शुभ फल की प्राप्ति तब ही होगी जब कि शनी-क्षेत्र से आने वाली उक्त रेखा हृदय रेखा (Heart Line) और मस्तक रेखा (Head Line) को छोड़ कर अन्य किसी भी रेखा द्वारा कटी हुई न हो।

जिस व्यक्ति के हाथ पर शनी-क्षेत्र के स्थान पर अथवा शनी-क्षेत्र और बृहस्पति-क्षेत्र के मध्य स्थल पर शुद्ध, सरल, अक्षत तथा सुस्पष्ट हृदय रेखा (Heart Line को स्पर्श करने वाली तीन रेखायें हों, वह व्यक्ति सौभाग्यशाली, सर्व सुख-सम्पन्न, धैर्य्यवान, शास्त्र-निपुण, वाद-विवाद-कुशल हास्य-प्रिय, कीर्तिमान, क्रय-विक्रय में चतुर तथा विद्वान होता है। दैवयोग से इसी स्थान से यदि एक ही रेखा शनी-क्षेत्र पर पहुचे तो वह अत्यन्त शुभ-कारक होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति किसी देश राष्ट्र अथवा प्रान्त का अध्यक्ष, उच्चाधिकारी अथवा मन्त्री होता है।

सम्भव है वह उच्च सेनापति भी हो जाय। ऐसे व्यक्ति की वाक् शक्ति अत्यन्त ओजस्वी तथा प्रभावशाली होती है। उसकी इस शक्ति का लोहा देश विदेश—सर्वत्र समान रूप से आच्छादित होता है। अपनी वक्तृता-शक्ति के बल पर वह जन साधारण को अपनी इच्छानुसार नचा सकता है। यह व्यक्ति अपने ओजपूर्ण सारगर्भित तथा प्रभावोत्पादक भाषणों के द्वारा जन-समूह को मन्त्र-मुग्ध करके अपना मन्तव्य सिद्ध करने में परम कुशल होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। वह सुलेखक होता है तथा व्यवहार-कुशल एवं नीति-निपुण होता है। उसमें चरित्र-बल भी यथेष्ट होता है तथा आत्मबल से भी वह सम्पन्न रहता है। वह भगवत् परायण होता है तथा ईश्वराराधन, सन्त-समाज और सत्-संग में पूर्ण श्रद्धा रखता है।

शनी-क्षेत्र-गत अन्यान्य रेखाओं का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर रेखा ज्ञात हो वह अत्यन्त भाग्यहीन, लम्पट, धूर्त, अविचारी, अनाचारी, व्यभिचारी तथा पाखंडी होता है। उसे जेलयातना अवश्य भोगनी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः डाकू होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर खड़ा पर्व (द्वीप) का चिह्न हो और उसमें से एक शाखा वक्रगति में स्वास्थ रेखा (Health Line की ओर झुक रही हो अथवा स्वास्थ्य-रेखा (Health Line) मिल गई हो—उस व्यक्ति का मस्तिष्क निर्बल होता है। वह जो काम करने का विचार करता है उसे

तुरन्त ही भूल जाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का मस्तिष्क सदैव चक्कर खाया करता है। हस्त गत यह लक्षण बधिरता का भी सूचक है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सीढ़ी के सदृश्य रेखा-समूह शनी-क्षेत्र से आरम्भ होकर बृहस्पति-क्षेत्र तक पहुंचे वह जन साधारण में शनै शनै: प्रतिष्ठा-लाभ करके सुयोग्य एवं कुशल जन-सेवक होता है। इसके आचार-विचार प्रायः सात्विक होते हैं तथा सहिष्णुता और धार्मिक-विश्वास भी यथेष्ठ-मात्रा में रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर कितनी ही छोटी २ रेखायें हों और इनमें आदि अन्तवाली रेखायें मध्यगत रेखाओं से अपेक्षाकृत बड़ी हों तो वह व्यक्ति दरिद्र होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अनाचारी, अविचारी व्यभिचारी दुर्व्यसनी आदि कितने ही दुर्गुणों का अखण्ड आगार होता है। यह महा-दुर्भाग्य का लक्षण है। यह रेखायें संख्या में जितनी होंगी और जिस स्थिति में होंगी वैसी ही और उतनी बार उस व्यक्ति की अवनति निश्चित है। कभी २ ये रेखायें अत्यन्त समीप होकर मध्यगत रेखा की ओर—दोनों सिरों से क्रमशः छोटी होती हैं और इस प्रकार उस स्थान पर डमरू (||||) जैसा चिह्न बन जाता है। ऐसी स्थिति में अशुभ रेखायें अत्यन्त शुभ हो जाती हैं और उनका फल उपरोक्त फल से पूर्णतया विपरीत होता है। तब वह व्यक्ति धन-धान्य-सम्पन्न तथा सद्गुणों का भण्डार होता है। अतः हस्त-परीक्षक को रेखाओं के फल का निर्णय करने में

असावधानी अथवा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। आरम्भ से पूर्ण सावधानी के साथ रेखाओं द्वारा उपस्थित योग का अध्ययन करना चाहिये। अन्यथा भयंकर भूल हो जाने की पूर्ण सम्भावना रहती है। प्राय:ऐसा भी देखने में आया है कि कितनी ही रेखायें प्रस्फुटित नहीं होती और त्वचा के आवरण में छिपी रहती हैं। अतः इन सबका पूरा २ ध्यान रखना चाहिए।

जिस व्यक्ति के हाथ मध्यमागुली के मूल में शनी क्षेत्रस्थ एक टेढ़ी रेखा हो, वह व्यक्ति व्यवहारहीन, अचार-विचार-शून्य तथा चिन्ता, उद्वेग और क्लेश-युक्त होता है। दैवयोग से यह रेखा छिन्न भिन्न हो तो वह व्यक्ति की मान हानि की सूचक है। यह व्यक्ति कारा की यातनायें भी भोगता है तथा सदैव रोगादि से पीड़ित रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर स्पष्ट किन्तु टेढ़ी रेखायें हों वह अनिच्छुक होने पर भी कोई भी कार्य करने को उद्यत रहता है पर उसमें हार्दिक लगन न होने से उसे उसमें सफलता प्राप्त नहीं होती। इसका एकमात्र कारण यह है कि ये रेखायें रक्त-प्रवाह की बाधाओं की सूचना देती हैं। रक्त-प्रवाह की बाधायें मानव शरीर में रोग उत्पन्न करती हैं। फलतः वह व्यक्ति रोगों से ग्रसित रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः श्वास रोग तथा हृदय रोग से ग्रस्त रहता है। यदि दैवयोग से ये रेखायें हृदय रेखा को स्पर्श करें तो वह अत्यन्त भयानक हो जाती है। इन रेखाओं का मानव जीवन पर प्रायः बहुत बुरा प्रभाव होता है। ये किसी भी दशा में ठीक नहीं होती।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र से उद्भूत एक गहरी और छोटी रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जाती हो उस व्यक्ति की बुद्धि पापमय होती है। वह अपने हिताहित का तनिक भी विचार नहीं रखता वह शुभ कामों का द्रोही होता है। सदैव दुर्व्यसनों में लिप्त रहता है तथा शत्रुओं से पीड़ित रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति उपरोक्त दुर्गुणशील होने पर भी धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। वह भोगी होता है तथा सन्मित्र-युक्त रहता है, किन्तु बुद्धि हीन अवश्य होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर दो टेढ़ी और खड़ी रेखाओं को बीच से एक सरल रेखा काट रही हो तो वह बहु-बान्धुवों से युक्त, श्रेष्ठ-बुद्धि, मित्र-युक्त, लक्ष्मी-सम्पन्न, विलासी और सौभाग्यशाली होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री धन-संग्रही, श्रेष्ठ, विलासिनी, भोगवती, और आनन्ददायिनी होती है। यह व्यक्ति प्रायः संग्रहणी रोग से ग्रस्त रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में भोग रेखा शनी-क्षेत्र के पास होती हुई छिन्न-भिन्न दशा में बुध-क्षेत्र पर पहुंचे वह नाना प्रकार की वस्तुओं का संग्रह करता है। वह भयभीत, मूर्ख, चंचल और कोमल स्वभाव होता है। इस लक्षण का व्यक्ति सदैव राज्यभय तथा शत्रुभय से संत्रस्त रहता है। साथ ही उसे व्यापारादि में विश्वासघात की भी पूर्ण सम्भावना होती है। यदि यह भोग रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे शुद्ध चन्द्राकार (अर्द्धवर्तुलाकार) अर्थात् टेढी हो गई हो तो वह व्यक्ति कार्य कुशल, नीति निपुण और

पराक्रमी होता है। उसे राज्य द्वारा मान सम्मानादि तथा भूमि आदि और धन धान्यों का लाभ होता है। दैवयोग से यह भोग रेखा यदि सूर्य क्षेत्र के नीचे, जहां हृदय रेखा बुध क्षेत्र पर जा रही हो, टूट जाय तो वह व्यक्ति अपनी चल और अचल सम्पत्ति का वारा न्यारा कर डालता है। सम्भव है उसे न्यायालय की भी शरण लेनी पड़े। किन्तु इतना अवश्य है कि उसकी मान और प्रतिष्ठा में तनिक भी बल नहीं पड़ेगा। उसमें और भी वृद्धि होगी। उसे तो केवल अपने बन्धु बान्धवों से ही दुःख प्राप्त होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर स्थित तीन टेढ़ी रेखाओं को मध्यमांगुली के मूल के पास दो रेखाये काटे तो वह प्रायः चौथिया ज्वर, प्लीहा, अजीर्ण, और बवासीर से पीड़ित रहता है। उक्त योग वाले पुरुष को कारावास भी भोगना पड़ता है। किन्तु दैवयोग से किसी स्त्री के हाथ में यह लक्षण उपस्थित हो तो वह कारागृह-वासिनी नहीं होती—हाँ व्यभिचारिणी अवश्य होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ मे शनिक्षेत्र-स्थ शनी-मुद्रिका या शनी रेखा को दो आड़ी रेखायें काट कर बृहस्पति-क्षेत्र पर पहुंचें तो वह धूर्त, चिन्ता-ग्रस्त, व्यसनी, और सम्पत्ति हीन होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः अपनी हठ के कारण मृत्यु प्राप्त करते हैं। ये शत्रुता भी प्रायः गुणी और सभ्यजनों से ही करते हैं। इन्हें स्त्री-पुत्र अथवा परिजन बन्धु-बान्धवों का सुख प्राप्त नहीं होता।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनि-क्षेत्रस्थ छोटी-छोटी, शुद्ध तथा सरल केवल छः रेखायें हों वह आलसी अथवा उत्साहहीन, दु खी और शंकालु होता है। वह शनी अधिकृत अंगों की पीडा से सदैव पीड़ित तथा चिन्ता ग्रस्त रहता है। सम्भव है मस्तिष्क पर भयानक आघात होने के फलस्वरूप वह अपनी पूर्व स्थिति को भी भू न जाय। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः क्लेश युक्त और दु खी रहते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में मध्यमा अंगुली के मूल में अर्थात् शनी-क्षेत्र पर तीन वक्र (टेढ़ी) रेखायें हो वह वात (बादी) रोग से ग्रस्त, बीमारी और विषयानुरक्त होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने परिवार के व्यक्तियों का प्रिय नही होता वह निर्धन होता है तथा शत्रुओं से पीड़ित होता है। वह मिथ्या-भाषी भी होता है। उसका व्यापार-व्यवसाय अथवा जीविकार्जन का साधन भी साधारण ही होता।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा को कई छोटी-छोटी आड़ी रेखायें काटती हों, वह व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था में दु ख भोगता है, दैवयोग से यह रेखा मध्यमा अंगुली के मूल में से उद्‌भूत हो तो वह व्यक्ति अवश्यमेव चिन्ता-ग्रस्त रहेगा तथा दरिद्री भी होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में मध्यमा अंगुली के मूल में अर्थात् शनी क्षेत्र पर दो छोटी सरल, सुस्पष्ट तथा अक्षत रेखायें हों और उन्हें कोई अन्य रेखा न काटती हो तो वे रेखायें सम्बन्धित व्यक्ति

के परिश्रमशील तथा उद्योगी होने की सूचना देती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने विचारों मे अत्यन्त दृढ़ होता है। तथा अनेकानेक प्रकार से धनार्जन करता है, दैवयोग से इन रेखाओं में से एक भी रेखा क्षत-विक्षत हो तो वह व्यक्ति शोकाकुल तथा सन्ताप युक्त रहता है। यह व्यक्ति प्रत्येक कार्य अपूर्ण ही छोड़ बैठता है।

जिस व्यक्ति के शनी क्षेत्र पर मध्यमा अंगुली के मूल में स्थित दो रेखाओं को अन्य दो रेखाओं द्वारा काटने से लघु जाल चिन्ह बन गया हो तो वह व्यक्ति विकल, निष्करुण और शूल ग्रस्त रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में मध्यमा अंगुली के अधोपर्व से आरम्भ होने वाली एक सुस्पष्ट तथा अक्षत रेखा ठीक सूर्य क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य में होती हुई चलकर शुक्र मुद्रिका को काट कर भाग्य रेखा से संगम करे, वह व्यक्ति धन ऐश्वर्य वैभव आदि से सम्पन्न तो अवश्य होता है किन्तु उसके वक्षः स्थल में पीड़ा रहती है और वह शिरोघात तथा अन्य अनेक राज रोगों से पीड़ित रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र से उद्भूत कई रेखायें हृदय रेखा (Heart line) तथा मस्तक रेखा (Head line) काटें और मस्तक रेखा (Head line) पर दाग या बिन्दु का चिह्न हो तथा सुस्पष्ट शुक्र मुद्रिका भी हाथ में विद्यमान हो, वह व्यक्ति गठिया रोग से ग्रस्त रहता है, किन्तु इस

दशा में भी वह सर्व-प्रिय, मधुरभाषी, साहसी तथा धन-धान्य ऐश्वर्य आदि से सम्पन्न होता है। उपरोक्त चिह्नों के साथ-साथ यदि शनी की अंगुली (मध्यमा-अंगुली) और बृहस्पति की अंगुली (तर्जनी-अंगुली)—दोनों ही लम्बी और सीधी हों तो उस व्यक्ति को प्रतिनिधि-पत्र (मुख्त्यार-नामा) प्राप्त होता है। दैव योग से यदि मस्तक-रेखा (Head Line)—जिस पर दाग का चिन्ह हो—सीधी और लम्बी हो तो वह व्यक्ति हुण्डी वाला होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में का शनी-क्षेत्र उच्च हो, शुक्र मुद्रिका पुष्ट हो, शनी-मुद्रिका को अनेक रेखायें काटती हों, सूर्य-क्षेत्र भी उच्च हो और मस्तक-रेखा (Head line)—ठीक शनी-क्षेत्र के नीचे टूटी हो वह व्यक्ति प्रत्येक दशा में अशुभ-फल प्राप्त करता है। वह आजीवन महान आपत्तियों का सामना करता है। उसे अन्तड़ियों में शोथ, वायु रोगों तथा उदर-रोगों से जर्जरित होकर मध्यमायु में ही अपनी इह लोक लीला समाप्त करनी पड़ती है। यों तो सूर्य क्षेत्र और शनी क्षेत्र के उच्च होने के फल स्वरूप उसका परिवार सुखी रहता है, किन्तु वास्तव में उसका परिवार भी उसकी मृत्यु के पश्चात ही सुखी होता है। उसके जीवन में तो उसके परिवार को भी आपत्तियों का ही सामना करते रहना पड़ता है।

जिस व्यक्ति के शनी क्षेत्र से उद्‌भूत एक रेखा शुक्र मुद्रिका और साथ ही हृदय-रेखा (Head line) को भी काटती है

वह व्यक्ति रोग, चिन्ता, कलह, दरिद्रता आदि का आखेट बना रहता है।

शनी क्षेत्रस्थ अन्यान्य चिन्हों का फल

अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों तथा हाथ के अन्य भागों की भांति शनी-क्षेत्र पर भी चतुष्कोण, त्रिकोण, गुणक, नक्षत्र आदि शुभाशुभ चिह्न होते हैं। इन चिह्नों के प्रभाव से प्रायः अनेक अशुभ फल शुभ अथवा शुभ फल अशुभ हो जाते हैं। हम पाठकों की ज्ञान-वृद्धि के लिये इनका शुभाशुभ फल यहां अंकित करते हैं।

चतुष्कोण

किसी भी व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर चतुष्कोण का चिह्न होना अत्यन्त शुभ-फल-प्रद होता है। इस चिह्न के होने से मनुष्य अनेक अशुभ फल तथा भयानक आपत्तियों से अनायास ही बच जाता है। दैवयोग से यदि चतुष्कोण को कोई आड़ी रेखा काट रहीहो अथवा स्वयं चतुष्कोण ही अस्पष्ट, क्षत-विक्षत या कोण रहित हो, तो मनुष्य के जीवन में अशुभ घटनायें अवश्य घटित होंगी किन्तु फिर भी प्रस्तुत चतुष्कोण (चाहे वह अस्पष्ट, क्षत-विक्षत आदि दशा में ही क्यों न हो?) उसकी मृत्यु से अवश्यमेव रक्षा करेगा। इस प्रकार पाठक देखेंगे कि चतुष्कोण अत्यन्त शुभ फल-प्रद होता है और उसका प्रभाव प्रत्येक दशा में किसी न किसी रूप से मानव-जीवन में हित-कारक ही होता है।

कभी-कभी चतुष्कोण के अन्दर नक्षत्र का चिह्न देखा जाता है। शनी-क्षेत्र पर नक्षत्र का चिह्न अत्यन्त भयानक दुर्घटनाओं

का सूचक होता है। इसका कुप्रभाव इतना अधिक भयंकर होता है कि कभी-कभी तो मनुष्य की अकाल-मृत्यु तक हो जाती है अथवा वह मृत्यु-दण्ड प्राप्त करता है। शनी-क्षेत्रस्थ नक्षत्र चिह्न मृत्यु-दण्ड की अत्यधिक सम्भावना का प्रतीक होता है। किन्तु यह चतुष्कोण उसकी सभी दुर्घटनाओं तथा अकाल-मृत्यु और मृत्यु-दण्ड से रक्षा करता है।

जिस प्रकार चतुष्कोण में नक्षत्र-चिह्न का कुपरिणाम नष्ट हो जाता है उसी प्रकार उसके द्वारा अन्यान्य कुलक्षणों तथा अशुभ चिन्हों के कुफल और दुष्परिणामों को भी नष्ट करने की अलौकिक-शक्ति होती है। कभी-कभी इस प्रकार शनी-क्षेत्रस्थ चतुष्कोण के कोणों पर लाल-दाग दृष्टि-गोचर होते हैं। ये लाल दाग अग्नि-भय की सूचना देते हैं। किन्तु चतुष्कोण उस व्यक्ति की अग्नि में जलने से रक्षा करता है। इस प्रकार पाठक देखेंगे कि चतुष्कोण मनुष्य की प्रत्येक स्थिति में अत्यधिक हित-कारक होता है तथा उसकी प्रत्येक प्रकार से रक्षा करता है।

गुणक

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर गुणक-चिह्न हो उस की उन्नति में अनेकानेक बाधायें उपस्थित होती हैं। इसके अतिरिक्त उस व्यक्ति का स्वास्थ्य भी चिन्ताजनक रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति सदैव रोग-ग्रस्त रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर दो गुणक-चिह्न हों वह सौभाग्यशाली और पराक्रमी होता है। धन-धान्य ऐश्वर्य-सम्पति

का उसके पास अटूट भण्डार रहता है। पाश्चात् हस्त-विज्ञान विशारदों के मतानुसार इस लक्षण वाले व्यक्ति लकवा प्रभृति असाध्य रोगों के आखेट होते हैं अथवा अकाल मृत्यु प्राप्त करते हैं अथवा किसी की हत्या करके मृत्यु-दण्ड पाते हैं—किन्तु भारतीय विद्वान इससे सहमत नहीं हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने अन्वेषण किये हैं तथा इस तथ्य पर पहुंचे हैं कि यदि शनी क्षेत्र पर दो गुणक चिह्न हों तथा मध्यमा अंगुली उर्ध्व पर्व पर भी गुणक चिह्न हो और शनी क्षेत्र के ठीक नीचे हृदय-रेखा क्षत-विक्षत हो तो निस्सन्देह पाश्चात् विद्वानों का फलादेश-सटीक घटित होगा। अन्यथा केवल शनी क्षेत्र पर ही दो गुणक चिह्न और उपरोक्त अन्य कोई भी चिह्न न हो तो भारतीय मतानुसार शुभ फल अवश्यमेव होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में गुणक चिन्ह शनी क्षेत्र के ठीक नीचे मस्तक रेखा (Head Line) पर हो तो भारी घातक का लक्षण है।

शनी क्षेत्रस्थ गुणक चिन्ह जातक पर विद्युत आघात, सर्प-दंश भय तथा लकवे का सूचक है। हां, यदि सौभाग्यवश चतुष्कोण चिन्ह भी हो तो उपरोक्त आपत्तियों से अनायास ही रक्षा हो जाती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर भाग्य रेखा (Fate line) के समीप गुणक चिन्ह हो तो उसे भारी अपमान प्राप्त होता है तथा उसकी मृत्यु आवेश में आकर होती है।

वृत

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर वृत चिन्ह हो वह खनिज पदार्थों के व्यापार द्वारा धनार्जन करता है। इसके अतिरिक्त इस लक्षण वाले व्यक्ति को अनेकों मनोवांछित-कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। किन्तु इस शुभ फल की प्राप्ति उसी दशा में होती है जब कि यह वृत चिन्ह शनी क्षेत्र पर क्षेत्र के मध्य में स्थित हो। इसके विपरीत यदि यह वृत चिन्ह शनी क्षेत्र पर मध्यमांगुली के मूल में अर्थात शनी क्षेत्र के ऊर्ध्व-भाग में स्थित हो तो अशुभ होता है। दैवयोग से यदि यह चिन्ह शनी-क्षेत्र के ठीक नीचे हृदय रेखा पर अर्थात् शनी-क्षेत्र के अधो-भाग पर स्थित हो तो उस व्यक्ति को अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। यह व्यक्ति हृदय रोग से भी पीड़ित रहता है हां, इतना अवश्य है कि अधिक परिश्रम तथा योग्य व्यक्ति की उचित सम्मति से आगत आपत्तियों से मुक्त होने में समर्थ होता है।

नक्षत्र

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र और सूर्य क्षेत्र के मध्य स्थान पर नक्षत्र-चिन्ह अंकित हो वह व्यक्ति विद्युत-शक्ति से आघात प्राप्त करता है। उसे सर्प-दंश और लकवे का भी भय रहता है। दैवयोग से इस नक्षत्र-चिन्ह के ठीक बराबर शनी-क्षेत्र पर चतुष्कोण-चिह्न भी हो तो निश्चय ही उपरोक्त सकटों से उस व्यक्ति की रक्षा हो जाती है और उसका जीवन सुख पूर्ण व्यतीत होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो उस व्यक्ति के जीवन में अनेकानेक अशुभ एवं दुर्भाग्य पूर्ण घटनायें घटित होती हैं। किन्तु यदि दैवयोग से करतल-गत धन-रेखा शुद्ध स्पष्ट तथा अक्षत होकर शनी क्षेत्र पर आती हो तो इस नक्षत्र-जन्य अशुभ परिणामों का शमन हो जाता है और उसके सभी संकट किंवा आपत्ति टल जाती हैं। इसके साथ साथ उस व्यक्ति के स्वभाव में भी सुधार हो जाता है।

त्रिभुज

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर स्पष्ट, शुद्ध तथा अक्षत त्रिभुज चिन्ह हो वह व्यक्ति प्रख्यात होता है। वह श्रद्धालु तथा दयालु भी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः तत्व दर्शी, आध्यात्मवादी तथा गुप्त विद्याओं में पारंगत होते हैं। सम्मोहन तथा अन्य ऐन्द्र जालिक विद्याओं में पारदर्शी होते हैं। यह स्वाभिमानी और तार्किक भी होता है। दैवयोग से यदि इस त्रिभुज में नक्षत्र का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति की हत्या का प्रसंग उपस्थित होगा, किन्तु त्रिभुज के प्रभाव से उसकी रक्षा अवश्यमेव हो जायगी।

शङ्ख चक्र और ध्वजा

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र पर शंख, चक्र और ध्वजा के सदृश्य चिन्ह हों तो वह व्यक्ति विद्वान, धार्मिक, राज्य-सम्मानित पवित्र, जनप्रिय, देव-भक्त, संस्थाओं का संचालक, कुशल प्रवक्ता, काव्य कुशल होता है, किन्तु उपरोक्त गुणो के साथ २ वह ढीठ

भी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति दानी, भाग्यवान, साहसी निष्कपट, विनीत, शान्त, दयावान, स्पष्ट-वक्ता, सहिष्णु, तपस्वी, अल्प-भोजी, पराक्रमी, निर्मलबुद्धि, मधुरभाषी, मितव्ययी, धन ऐश्वर्य सम्पन्न, कार्यशील तथा प्रेम से वश में होनेवाला होता है। यह भविष्य की अनेक घटनाओं को जानने वाला तथा भविष्य-वक्ता भी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति शक्ति-प्रयोग से किसी के वश में नहीं होता वह अनेक प्रकार के व्यापार व्यवसाय करता है और कला-कुशल होता है। नौकरी से उसकी उन्नति कदापि नहीं होती। यह व्यक्ति साधारणतः उद्योगपति होता है अथवा उद्योग-धन्धों के हिस्सों (Shares) का स्वामी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति बहुधा मकान के किराये से अपनी जीविका चलाते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिकांशतः शासन-सत्ता के कटु-आलोचक होते हैं तथा राज्य की त्रुटियों को जन-साधारण के सम्मुख रखते हैं। कभी कभी वे अपना एक भिन्न राजनैतिक दल अथवा संस्था भी स्थापित कर लेते हैं और उस दल अथवा संस्था का सुचारू संचालन ही उनके जीवन का एक मात्र ध्येय हो जाता है। इस संस्था के द्वारा वे अपना जीवन लोकोपकारी कार्यों मे लगा देते हैं और उसके द्वारा राज्य की बुराइयों में अनेक सुधार कराने में सफल होते हैं।

सूर्य-क्षेत्र का विवेचन

मानव-हस्त ग्रह-क्षेत्रों में एक क्षेत्र सूर्य-ग्रह का है। इस क्षेत्र का स्वामी सूर्य है। अतः सूर्य-देव के गुण तथा स्वभाव के

अनुरूप ही इस क्षेत्र का शुभाशुभ फल होता है। अब तक हम दो क्षेत्रों—बृहस्पति-क्षेत्र तथा शनी क्षेत्र का शुभाशुभ फल पूर्ण विस्तार के साथ लिख चुके हैं। यहां हम सूर्य-क्षेत्र का सविस्तार वर्णन तथा उसका शुभाशुभ फल वर्णन करेंगे।

सूर्य-क्षेत्र का परिचय

मानव-हस्त में सूर्य-ग्रह का स्थान अनामिका अंगुली के मूल में शनी-क्षेत्र और बुध क्षेत्र के मध्य में तथा हृदय-रेखा के ऊपर स्थित है। अधिक स्पष्ट रूप से—हृदय-रेखा (Heart Line) के ऊपर, अनामिका अंगुली के मूल पर्यन्त तथा शनी-क्षेत्र और बुध क्षेत्र की सीमाओं तक का सम्पूर्ण-क्षेत्र सूर्य क्षेत्र कहलाता है। इसी स्थान को सूर्य-पर्वत (Mount of the Sun) सूर्य का उभार आदि भी कहते हैं।

सूर्य-ग्रह का स्वरूप

सूर्य-ग्रह अत्यन्त तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पंन्न, कांतियुक्त चमकीला सुदृढ़ शरीर, कृष्ण अथवा रक्तवर्ण, मधु-सदृश्य नेत्र वाला, शान्त, अल्प केश वाला; तथा देदिप्यमान है।

सूर्य-ग्रह का गुण तथा स्वभाव

सूर्य-ग्रह धार्मिक प्रवृति का है। आदर्शवाद की ओर तथा परम्परागत शास्त्रीय विधान की ओर इसकी श्रद्धा विशेष रूप से रहती है। इसकी मानसिक शक्ति अत्यन्त तीव्र है। यह स्पष्टवादी, अध्ययनशील तथा प्रायः सभी विद्याओं का ज्ञाता है इसका स्वभाव सतोगुण प्रधान है।

सूर्य-ग्रह का फल

सूर्य-ग्रह मनुष्य को राज्य, सम्मान, प्रतिष्ठा, कला-कौशल, विद्या, तथा कीर्ति प्रदान करता है। यह मनुष्य का प्रेम तथा प्रवृति उत्तमोत्तम सुन्दर वस्तुओं और पदार्थों से, तीर्थों से तथा धर्म मे कराता है। इसके प्रभाव से मनुष्य साहित्य, कविता, चित्रकला, रत्नाभूषण-निर्माणकला, शिल्पकला आदि में पारंगत होता है। यह मनुष्य की रुचि सत्संग और उच्चाकांक्षाओं की ओर प्रवृत्त करता है।

सूर्य ग्रह के शत्रु-मित्रादि

चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति ग्रह सूर्य ग्रह के मित्र हैं। बुध ग्रह सम है अर्थात् न तो शत्रु है और न मित्र—तटस्थ है। शुक्र और शनी ग्रह शत्रु हैं तथा राहु और केतु के साथ सूर्य ग्रह की प्रचण्ड शत्रुता है।

सूर्य ग्रह के अधिकृत-द्रव्य

सूर्य-ग्रह का ताम्र तथा माणिक्य पर पूर्ण अधिकार रहता है।

सूर्य-क्षेत्र से विचारणीय विषय

सूर्य क्षेत्र से साधारणतः आत्मा, पितृ प्रभाव, आरोग्य शक्ति, सम्पत्ति, वैभव, रोगवृद्धि तथा क्षय आदि का विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्यान्य रेखाओं तथा चिन्हों के प्रसंगानुसार मानव जीवन सम्बन्धी विशेष विषयों का भी विचार किया जाता है। सूर्य ग्रह बाइसवें वर्ष में फलप्रद होता है।

सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति की आकृति

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति पुरुषत्व-सम्पन्न तथा सुन्दर होता है। उसकी ऊँचाई साधारणतः मध्यम श्रेणी की होती है। वह ऊंचाई में प्राय. शनी और बृहस्पति क्षेत्रीय व्यक्ति की ऊंचाई का माध्यम होता है। डील डौल में भी वह न तो बृहस्पति-क्षेत्रीय व्यक्ति की भांति अत्यन्त स्थूल काय होता है और न शनी क्षेत्रीय-व्यक्ति के सदृश्य कृश ही होता है– वरन् सुडौल, सुगठित शरीर वाला तथा दर्शनीय मांस-पेशियों वाला होता है। इसके शरीर मे चर्बी अपेक्षाकृत न्यून मात्रा मे होती है। सक्षेप में इसका शरीर बलिष्ठ तथा व्यायामशील (कसरती) होता है। उसका शरीर भार-हीन (Light Weight) तथा लचीला होता है। शरीर की नाड़ियां तथा धमनियां सुन्दर मुडावों में बनी हुई होती हैं। उसकी मुखाकृति प्रशस्त, प्रभावोत्पादक तथा प्रतिभा-सम्पन्न होती है और अस्थियां पुष्ट होती हैं। उसकी त्वचा का वर्ण प्रायःश्वेत, सुन्दर, अथवा सुनहला और चमकीला होता है तथा भराव में ठोस होता है। उसका मस्तक प्रशस्त और भरा हुआ होता है, किन्तु उन्नत नहीं होता। आखें विशाल बादाम की आकृतिवाली, चमकदार, सुन्दर, भावाभिव्यजक तथा पुतलियां भूरे अथवा नीले रंग की होती हैं। पलके लम्बी और अन्त में मुड़ी-हुई होती हैं। उसकी आंखों से स्पष्टवादिता टपकती है तथा उदारता और नैतिकता का स्रोत उमड़ता-सा प्रतीत होता है। उसकी आंखों से तरंग के समय माधुर्य तथा सहानुभूति छलकती दृष्टिगोचर होती है।

उसकी बरौनियाँ लम्बी होती हैं। उसकी नाक सीधी, सुडौल तथा लम्बी होती है और नासापुट अत्यन्त सुन्दर बने होते हैं। तरंग के समय उसके नासापुट अतीव सुन्दरताके साथ फूलते हैं। उसके गाल गोल गोल उभरे हुए (फूले हुये) स्वस्थ, सुदृढ़, पुष्ट और गुलाबी रंग के होते हैं तथा उनमें विचित्र आकर्षण होता है। कान लम्बे आकार-प्रकार में सुन्दर, रोमयुक्त तथा गुलाबी रंग के होते हैं और वे प्रायः मस्तक के निकट होते हैं। सिर के बाल मोटे, घने और काले होते हैं। वे अत्यन्त सुन्दर होते हैं और प्रायः रेशम के सदृश्य कोमल होते हैं। दाढ़ी के बाल भी इसी प्रकार के होते हैं। वे दाढ़ी पर, गालों पर, तथा ओठों पर—सब स्थानों पर समान रूप से होते हैं। दूसरे शब्दों में दाढ़ी-मूंछ गहरी और घनी भरी-हुई होती है।

मुखाकृति सुन्दर होती है। ओष्ठ दर्शनीय ढंग से मुड़े हुये समान तथा सुन्दर होते हैं। वे न तो अधिक पतले होते हैं और न अधिक मोटे ही होते हैं। दन्त पंक्ति-बद्ध सुन्दर, सुदृढ़, सुडौल, समानाकार, श्वेत तथा स्वस्थ होते हैं और वे लाल मसूड़ों में सुन्दरता-पूर्वक जड़े-से रहते हैं। वाणी स्वच्छ और मधुर तथा कर्ण प्रिय होती है। ठोड़ी गोल, सुडौल, अन्दर की ओर मुड़ी हुई होती है। ग्रीवा लम्बी, भरी हुई, सुडौल तथा सुन्दर रेखाओं से युक्त होती है। स्कन्ध सुदृढ़ तथा सुडौल होते हैं।

वक्षस्थल भरा हुआ तथा प्रशस्त होता है जो श्वासोच्छ्वास से भली प्रकार विकसित होता है जिसके कारण रक्त संचालन-

क्रिया अच्छी रहती है। शरीर का वर्ण गुलाबी होता है तथा वह उत्तम स्वास्थ्य का उपयोग करता है। इसके शरीर पर लोम नहीं होते। हथेली और अंगुलियों की लम्बाई प्रायः सन्तुलित होती है और अनामिका अंगुली विशेष गठीली होती है।

शरीर के अधोभाग के अवयव भी सुन्दर, सुडौल तथा सुदृढ़ होते हैं। पैर मध्यम आकार के होते हैं तथा भीतर की ओर से धनुषाकृति के और ऊंचे होते हैं जो कि चलने में लचकते हैं और स्प्रिंग का काम देते हैं। संक्षेप में सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति प्रत्येक प्रकार से तेजस्वी, सुन्दर, सुदृढ़, तथा सुडौल होता है।

सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति के रोग

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति प्रायः हृदय-रोगों से ही पीड़ित होता है। इसके अतिरिक्त उसे नेत्र-रोगों का भय होता है। धूप लग जाने अथवा लू लग जाने की भी सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति को अधिक आशंका होती है। इनके अतिरिक्त सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ती के सन्धि स्थानों में रीढ़ में तथा रीढ़ से सम्बन्धित अन्य अस्थियों में पीड़ा रहा करती है। इनके अतिरिक्त अन्य रोगों का इस लक्षण वाले व्यक्ति को जब तक कोई विशेष कारण उपस्थित न हो भय नहीं के बराबर होता है। साधारणतया यह व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति का स्वभाव

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति साधारणतः प्रसन्नचित्त, विनम्र, सौन्दर्य-उपासक, कला-प्रेमी तथा विनोदी होता है। वह आदर्शवादी तथा आशावादी होता है। यह व्यक्ति स्वभावतः किसी दुष्कर्म की

और प्रवृत नहीं होते। इनकी मानसिक शक्ति तथा अन्तर्ज्ञान प्रवल होता है। इसके विचार सदैव उत्तम और प्रकाशमय होते हैं किन्तु यह स्वेच्छाचारी होता है। यह व्यक्ति वेष-भूषा में, रहन-सहन मे—क्या घर में और क्या बाहर, सर्वत्र सुन्दरता, नवीनता कला और आकर्षण का अनन्य प्रेमी होता है। यहां तक कि व्यापार-व्यवसाय . अथवा जीविकार्जन के वातावरण मे भी इसकी सौन्दर्य-उपासना अविचल रहती हैं। संक्षेप मे—जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक प्रवृति में यह व्यक्ति सुन्दरता, नवीनता, कला और आकर्षण का रचनात्मक-प्रेमी होता है।

यह व्यक्ति अल्प-श्रम से ही प्रत्येक विद्या तथा कला को हस्तगत करने के अभिलाषी होते हैं। किसी नूतन प्रयोग में यह अत्यन्त कुशलता और लगन से कार्य करते हैं। यह सदैव सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त-करने के इच्छुक होते हैं। किसी भी व्यक्ति को शीघ्र ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेना इनके लिये साधारण-सी वात है। इस लक्षण वाले व्यक्ति मित्र और शत्रु-दोनों अनायास ही पैदा कर लेते हैं। इनके शत्रु इनकी स्पर्धा करते हैं, किन्तु साधारणतः वे इनको हानि नहीं पहुंचा पाते।

यह व्यक्ति अत्यन्त कुशाग्र-बुद्धि और विचार-शील होते हैं, फलतः वह प्रत्येक विषय को—चाहे वह किसी-भी व्यक्ति से सम्बन्ध रखता हो और कितना ही उलझा हुआ क्यों न हो—अनायास ही मर्म-स्थान तक समझ लेते हैं और अत्यन्त योग्यता के साथ उसको हल कर लेते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः उच्चाधिकारी

होते हैं और अपने पद के दायित्व को योग्यता तथा कुशलता से सम्पादित करते हुये विपुल ख्याति, प्रतिष्ठा, सम्पन्न, यश और साथ ही साथ अतुल धन-धान्य-ऐश्वर्य आदि प्राप्त करते हैं। यह व्यक्ति स्वभावतः ही धार्मिक तथा अत्यन्त विश्वासी होता है किन्तु इसमें यह प्राकृतिक दुर्बलता होती है कि अपने विचारों को अत्यन्त शीघ्र तथा स्पष्ट रूप से प्रकट कर देते हैं। अपनी किसी भी धारणा अथवा विचार को समय की गति के अनुसार अपने हृदय में दबाये रखने में यह व्यक्ति असमर्थ ही सा होता है।

यह व्यक्ति अपने ऐच्छिक-स्वभाव की शक्ति से अपने जीवन में पूर्णानन्द भोगते हैं और अपने वातावरण में रहने वालों को—इष्ट-मित्र, परिजन-बन्धु-बान्धवों को भी अपने उक्त आनन्द में हृदय खोलकर सम्मिलित करते हैं। प्रत्येक सुन्दर, नवीन तथा कलापूर्ण वस्तुयें उन्हें आकर्षित करती हैं। हमारे इस कथन का यह आशय कदापि नहीं है कि सौन्दर्य और कला का यह आकर्षण उन्हें कलाकार बना देता है अथवा वे कलाकार होते हैं; किन्तु हमारा आशय केवल इतना ही है कि वे उससे प्रेम रखते हैं। कलाकार और कला-प्रेमी—दोनों ही आकाश-पाताल का अन्तर होता है। अतः सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति के स्वभाविक गुणों का विचार किंवा विवेचन करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये। हमने देखा है कि हस्त-परीक्षक प्रायः इस सम्बन्ध में भयानक भूल कर बैठते हैं और सूर्य-क्षेत्र प्रबल देख कर तुरन्त

ही उस व्यक्ति को कुशल कलाकार कह डालते हैं। यह निर्विवाद है कि सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति सदैव कला का उपासक होता है, किन्तु कला के प्रति उसकी यह श्रद्धा हमे किसी भी दशा में उसे कलाकार होने की सूचना नहीं देती। हां, हस्त-गत अन्य रेखायें अथवा चिह्न अथवा अन्यान्य लक्षण उसके अनुकूल हों तो वह कलाकार हो भी सकता है, किन्तु यह कोई सिद्धान्त नहीं है कि प्रत्येक सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति कलाकार अवश्य ही हो। अतः पाठकों को इस सम्बन्ध मे सावधानी रखनी चाहिये। साधारणत. सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति कलाकार तब होता है जब उसके हाथ में निम्नांकित लक्षणों का समावेश हो—

सूर्य क्षेत्र सुस्पष्ट, प्रशस्त तथा समुन्नत हो, विशेषतः, उसका मध्य भाग भली प्रकार उन्नत हो, सूर्य की अंगुली अर्थात् अनामिका अंगुली लम्बी हो—साधारणतः वह शनी की अंगुली अर्थात् मध्यमा अंगुली के उर्ध्व पर्व के मध्य भाग से ऊंची हो, अनामिका अंगुली का उर्ध्व पर्व शेष दो पर्वों से अपेक्षाकृत अधिक लम्बा हो. सूर्य क्षेत्र पर एक सरल सुन्दर, सुस्पष्ट, सुडौल तथा अक्षत खड़ी रेखा हो—इन लक्षणों के उपस्थित होने पर ही यह व्यक्ति कलाकार हो सकता है।

सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति साधारणतः अनेक विद्याओं में पारंगत होकर सुखानन्दमय जीवन व्यतीत करता है। इसकी स्मरण शक्ति इतनी तीव्र होती है कि वर्षो की बात भी नहीं भूलता। यह व्यक्ति सदैव प्रसन्न चित्त होकर अपने परिवार को भी

प्रसन्न रखने के लिये प्रयत्नशील रहता है। भिक्षुकों, अपाहिजों, दरिद्रों, अनाथों, विधवाओं तथा अन्यान्य हीन व्यक्ति के प्रति इसके हृदय में करुणा, दया और सहानुभूति का स्रोत सदैव अविरल गति से प्रवाहित रहता है।

सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति धार्मिक समारोहों का आयोजन करने में अत्यन्त उत्साह और लगन से भाग लेता है। इस प्रकार के आयोजनों में संगीत—गायन-वादन-नृत्य का समावेश करना इनकी प्राकृतिक विशेषता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्रियां उनके सरल स्वभाव से निशंक होकर उनके साथ प्रायः छेड़-छाड़ करती और उपालम्भ भी देती हैं। यह व्यक्ति कभी-कभी क्रोधित भी हो जाता है, किन्तु थोड़े ही समय में प्रकृतिस्थ होकर शान्त हो जाता है। उसके स्वभाव की यह विशेषता ही उसे प्रायः व्यर्थ की शत्रुता से दूर रखती है और वह अपने शत्रुओं को भी अपने बुद्धि-कौशल से अपना मित्र बनाने में सफल हो जाते हैं। इतना होने पर भी इस व्यक्ति के मित्रों की संख्या अपेक्षाकृत न्यून ही होती है।

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति स्वच्छ वायु, व्यायाम और यात्रा का विशेष प्रेमी होता है। सौन्दर्योपासक होने के फल-स्वरूप वह प्राकृतिक दृश्यों की रमणीयता तथा उनकी चित्ताकर्षक, मनो-मुग्धकारी सौन्दर्य-सुधा का जी-भरकर पान करता है। इस व्यक्ति में अभिमान का लेश मात्र भी नहीं होता। यह व्यक्ति दुर्भावनाओं को अपने हृदय में कभी भी नहीं पनपने देता।

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति को व्यापार में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। अपनी सौन्दर्योपासना की प्रवृति का यह व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय में भी खुल कर उपयोग करता है। सूर्य-ग्रह की अनुकम्पा से जनता स्वतः ही उनकी ओर आकर्पित रहती है और वे अपने प्रति जनता के इस अनायास आकर्पण का पूरा २ सदुपयोग करते हैं। अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और सुशील स्वभाव से वे जन-साधारण पर अपना अधिकार कर लेते हैं, साथ ही साथ समयानुकूल अपने ग्राहकों किंवा उपभोक्ताओं की रुचि और मांग के अनुसार द्रव्य संग्रह करके उसके विक्रय से यथेष्ठ लाभ उठाते हैं। क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में यह व्यक्ति समय और जन-साधारण की रुचि का समन्वयित-निरीक्षण करके अर्थोर्जन करने मे अत्यन्त कुशल होते हैं।

सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति साधारणतः भाग्यशाली होता है। उसे अपने जीवन में पर्याप्त धन-धान्य-ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, सम्मान, यश, उच्चपद, अधिकार आदि प्राप्त होते हैं। किन्तु यह व्यक्ति अध्ययन से अथवा किसी विद्या-गुण या वस्तु के सीखने में विशेष परिश्रम नहीं करते। इसका परिणाम यह होता है कि वे किसी भी विषय में विशेषज्ञ तथा गम्भीर नहीं होते। हां, अपनी योग्यता को प्रतिभा-सम्पन्न एवं प्रभावशाली रूप में प्रकट करने की उनमें अलौकिक योग्यता तथा क्षमता अवश्य होती है। यही कारण है कि उनकी गुण-गरिमा का वास्तविक रहस्य किसी पर प्रकट नहीं होता और वे प्रायः उच्चकोटि के विद्वान, अनुभवी तथा

योग्यता-सम्पन्न व्यक्ति समझे जाते हैं। और जन-साधारण उनकी विद्वत्ता तथा अन्वेषणशक्ति और अनुभव की गंभीरता, अलौकिकता और प्रौढ़ता को अनुभव करके आश्चर्यचकित हो जाता है। यह सब बातें उनके आश्चर्यजनक परिवर्तनशील स्वभाव तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचार को भी अत्यन्तशीघ्रता पूर्वक ग्रहण करके उसे विशाल एवं वि.तृत स्वरुप प्रदान कर देने की कुशलता के कारण ही उत्पन्न होती हैं। सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति आविष्कारक तथा अनुकरणशील भी होते हैं। किसी भी प्राचीन अथवा रूढ़िगत विचार किवा धारणा को नवीनतम आवरण में प्रकाशित करने में वह सिद्ध-हस्त होता है। अपने इस अद्भुत बुद्धि-चातुर्य के कारण उसे बहुधा बहु-विज्ञ होने का सम्मान प्राप्त होता है, जिसका वह वास्तव मे अधिकारी नहीं होता।

किसी भी विषय, विचार, धारणा, सिद्धान्त आदि को सफलता-पूर्वक ग्रहण करने की शक्ति सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति में अत्यन्त प्रबल होती है और अपनी इस प्रतिभा के फल-स्वरुप वह व्यक्ति अपने आपको प्रत्येक परिस्थिति, संयोग तथा मनुष्य के अनुकूल अनायास ही बना लेता है। मानव-जीवन के प्रत्येक-क्षेत्र में वह सफलता-पूर्वक जीवन-यापन कर सकता है। वैज्ञानिकों के साथ रह कर वह आविष्कार अथवा अनुसन्धान के प्रत्येक क्षेत्र मे कार्य कर सकता है और कुछ ही दिनों बाद वह उस क्षेत्र मे सफलता के साथ प्रतियोगिता भी कर सकता है। इसी प्रकार किसी पूर्व-विचार अथवा तैयारी के अभाव में राजनतिज्ञों, कलाकारों, चिकित्सकों, न्याय-शास्त्रियों, राजद्रोहियों अथवा किसी

भी प्रकार के व्यवसायियों, पर्यटकों आदि के साथ समान अनुकूलता से अपना जीवन-क्षेत्र निर्माण कर सकता है। साथ ही वह सम्बन्धित विषय में अपनी योग्यता, अनुभव तथा निपुणता से (जो कि यथार्थ में आरम्भ में शून्य ही होती है) आश्चर्य-चकित कर देता है। उनकी इस अलौकिक शक्ति को प्रकट करने के लिये केवल प्रतिभा ही एक शब्द ऐसा है जो उनके स्वभाव के सम्बन्ध में प्रयुक्त किया जा सकता है। वास्तव में उनकी प्रतिभा सर्वोत्कृष्ट साथ ही सर्वतोमुखी होती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वे अग्रगामी प्रतीत होते हैं।

सूर्य-क्षेत्रीय स्त्री के स्वाभाव का विशेष-विचार

सूर्य-क्षेत्रीय स्त्री में साधारणतः वे सभी गुण विद्यमान होते हैं जो कि सूर्य-क्षेत्रीय पुरुष में पाये जाते हैं और जिनका वर्णन हम उपरोक्त पंक्तियों में कर चुके हैं। सूर्य-क्षेत्रीय स्त्री में विशेषता केवल इतनी ही होती है कि उसे अपने सौन्दर्य पर अभिमान होता है और अपेक्षाकृत साधारण-मात्रा में इसमें कलह और द्वेष की भावनाओं को भी स्थान होता है। इसके मित्र और शत्रु—दोनों ही अधिक होते हैं। इसका स्वभाव कठोर होता है, किन्तु पति-गृह के सभी व्यक्तियों से प्रेम मय व्यवहार करती है।

सूर्य-क्षेत्र की उच्चता का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य क्षेत्र उच्च हो वह व्यक्ति सुन्दर, रूप-लावण्य-युक्त, तथा सर्वजन मोहक होता है। यह व्यक्ति अपने विरोधियों तथा शत्रुओं पर विजय पाता हुआ सुख

और आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करता है। यह स्पष्टवादी, निष्कपट तथा मन-वचन-कर्म से पवित्र होता है। यह व्यक्ति नीच कर्म से, कुविचारों से तथा दुर्भावनाओं से हार्दिक घृणा करता है। यह धैर्य्यवान, परोपकारी तथा उदार होता है। प्रत्येक कार्य को यह व्यक्ति ईमानदारी और पूर्ण योग्यता से करता है।

यह व्यक्ति अपने गुणों, धैर्य तथा साहस के द्वारा अपने जीवन में अनेकों विघ्नों, बाधाओं तथा अपराधों पर सफलता प्राप्त करता है। नीच वृत्ति, नीच कर्म तथा नीच विचारों से यदि लाभ होने की भी सम्भावना हो तो यह उससे घृणा करता है और यथा-सम्भव उनसे अपने आपको सदैव दूर रखने के लिये प्रयत्न-शील रहता है।

यह व्यक्ति अपनी कुल-मर्यादा तथा पूर्वजों की प्रतीष्ठा के पालनार्थ तथा उसमें उन्नति करने के लिए प्रतिक्षण जागरूक तथा प्रयत्न शील रहता है। इसकी वेष-भूषा, रहन-सहन, आचार-विचार तथा व्यवहार से बड़प्पन टपकता है। मित्रता का जहां तक सम्बन्ध है, यह व्यक्ति सच्चा, लगनशील, जागरूक, हिता-कांक्षी, शुद्ध तथा विश्वस्त मित्र होता है। आवश्यकता पड़ने पर मित्र के हेतु अपना बलिदान करने में भी यह व्यक्ति आगा-पीछा नहीं सोचता। यह व्यक्ति पीड़ितो, अपाहिजों, अनाथों, विधवाओं रोग-ग्रस्तों, दरिद्रों, भिक्षुकों तथा अन्यान्य हीन व्यक्तियों के प्रति अत्यन्त दयावान, करुणापूर्ण तथा सहानुभूति से ओत-प्रोत रहता है। इसकी करुणा, दया अथवा सहानुभूति केवल मौखिक

या प्रदर्शन-मात्र की नहीं होती; वरन् सत्पात्र के हेतु यह प्रत्येक प्रकार से सहायता, शरण या रक्षा प्रदान करने को प्रस्तुत रहता है।

शत्रुओं के साथ यह व्यक्ति व्यर्थ का वाद-विवाद, झगड़ा, कलह आदि न करके धैर्यपूर्वक शान्ति से व्यवहार करता है। यावत प्रयत्न यह अपने शत्रुओं को बुद्धिवल से अपने अनुकूल बनाकर मित्र ही बना लेता है। आलसी, निरुद्यमी, व्यसनी, असंयमी, तथा दुष्टों के प्रति इसे स्वभाविक कुरुचि होती है। इस लक्षणवाले व्यक्ति से जन-साधारण अनायास ही अत्यन्त प्रभावित रहते हैं, अतः यह व्यक्ति अन्य मनुष्यों को अपनी इच्छानुकूल, अपने निर्दिष्ट-मार्ग पर अपनी आज्ञा और अनुशासन में चलने में कुशल एवं सफल होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के जीवन का उत्तरार्द्ध विशेष रूप से सुख-ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। यदा-कदा यह व्यक्ति प्रवासी जीवन भी व्यतीत करता है।

इस व्यक्ति के सन्तान अपेक्षाकृत न्यून होती हैं। यह व्यक्ति प्रायः साहित्यकार सुवक्ता, देश-भक्त, राष्ट्र-सेवक, पत्रकार तथा सुलेखक होते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति का जन्म श्रावण मास में अथवा भाद्रपद के द्वितीय सप्ताह (पूर्वार्द्ध) में होता है।

उच्च सूर्य-क्षेत्रीय स्त्री का विशेष विचार

जिस स्त्री के हाथ में सूर्यक्षेत्र उच्च हो, वह स्त्री इस लक्षण वाले पुरुष की अपेक्षा विशेष गुण-दोष सम्पन्न होती है। यह प्रायः रोगिणी रहती है। इसका स्वभाव साधारणतः चिड़चिड़ा

होता है तथा यह झगड़ालू भी होती है। किन्तु वह स्वभावतः ही दानशील होती है। यह व्ययशील होती है। किसी भी कार्य में परामर्श देने में विशेष योग्यता रखती है। इसको प्रायः राज-सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। लोक-हितकारी तथा सार्व-जनिक कार्यों में इसे विशेष रुचि होती है। इसके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है। इनके अतिरिक्त शेष गुण-दोष उसी प्रकार होते हैं जैसे सूर्य क्षेत्रीय पुरुष में पाये जाते हैं।

अनुच्च अथवा निम्न सूर्य-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र अनुच्च अथवा निम्न हो अर्थात् जिसके सूर्य-क्षेत्र पर गढ्डा सा हो वह व्यक्ति स्वभावतः ही आलसी, दुष्चरित्र, आमोद-प्रमोद रत, निर्दयी तथा विलास-प्रिय होता है। यह व्यक्ति प्रायः सभी विषयों अथवा मनुष्योचित कार्यों के प्रति उदासीन होता है। इस व्यक्ति की सम्पत्ति अपेक्षाकृत न्यून होती है तथा आय भी प्रायः काम-चलाऊ ही होती है।

यह व्यक्ति सदैव मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है। अकारण ही वाद-विवाद करना अथवा झगड़ा करना इसके स्वभाव का प्रधान अंग होता है। इस व्यक्ति को अपने आत्मीय-जनों से प्रायः घृणा होती है। यह व्यक्ति दुरभिमानी, धूर्त, लम्पट, कपटी, संग्राम में पीठ दिखाने वाला, आवारा, दुराचारी, कुविचारी तथा व्यभिचारी होता है। यह भ्रमणशील होता है तथा अनेकों स्त्रियों को भोगता है। इसे सदैव अपने बन्धु-

बान्धवों, आत्मीयों, परिजनों, चलाचल-सम्पत्ति तथा वाहनादि के नाश का भय बना रहता है।

इस व्यक्ति को बाल्यावस्था में साधारणतः अनेकानेक आपत्तियों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसकी स्त्री का प्रायः गर्भपात होता रहता है जिसके फल-स्वरूप सके सन्तान बहुत अल्प होती है। कामान्ध होकर पर-स्त्रियों, कुमारी कन्याओं तथा छोटी आयु की लड़कियों के साथ अत्यन्त निर्दयता पूर्वक बलात्कार करता है। अप्राकृतिक मैथुन तथा पशु-मैथुन करने से भी यह व्यक्ति आगा-पीछा नहीं देखता। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति विश्वास करने योग्य नहीं होते। यह व्यक्ति अपनी आयु के बत्तीसवें वर्ष में सर्व कार्य करने योग्य होते हैं। प्रायः माघ के उत्तरार्ध अथवा फाल्गुण के पूर्वार्द्ध में इसका जन्म होता है।

अत्युच्च सूर्य-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र .अत्युच्च अर्थात् बहुत अधिक ऊंचा उठा हुआ हो उस व्यक्ति में उपरोक्त अनुच्च अथवा निम्न सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति के गुण-दोष तो अत्यधिक रूप में विद्यमान होंगे ही साथ ही साथ वह व्यक्ति महान आडम्बरी चाटुकार, खुशामदी, वाचाल, अविवेकी, निष्ठुर और कृपण भी होगा। यह व्यक्ति अपनी पैतृक सम्पत्ति के लिये साक्षात् काल ही होता है। प्रत्येक व्यक्ति के साथ द्वेष करना इसके स्वभाव का प्रधान अंग होता है।

इस लक्षण वाला व्यक्ति कान का अत्यन्त कच्चा होता है। इस सम्बन्ध में इसे ढपोल-शंख कहा जाय तो कुछ भी अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि जैसी फूंक इसके कान में पड़ जाती है, वैसे ही चलने अथवा काम करने लगता है। कान के इस कच्चेपन से यह कितनी ही बार भीषण दुर्घटनायें भी कर बैठता है। यह आराम-पसन्द भी अत्यधिक होता है। इसके सन्तान अत्यल्प होती हैं।

यह व्यक्ति अपने बन्धु-बान्धवों, आत्मीयों तथा परिजनों से मनोमालिन्य रखने वाला, विपरीत बुद्धि तथा पापी और पतित होता है। इसके चोर होने की भी अत्यधिक सम्भावना होती है। यह व्यक्ति प्रायः पर-स्त्री-गामी; नेत्र रोगी, दरिद्री और लोक-विरोधी होता है। इस व्यक्ति को प्लीहा, यकृत, मूत्राशय सम्बन्धी रोग, हृदय-रोग, मस्तिष्क-रोग, नेत्र रोग, अस्थि रोग तथा मांस पेशियों के रोग होते रहते हैं। इसके अतिरिक्त सूर्य-ग्रह-जनित अन्यान्य रोगों से भी यह व्यक्ति प्रायः ग्रसित ही रहता है। बत्तीसवें वर्ष में इसको मूत्राशय तथा नेत्र रोगों से पीडित होना पड़ता है। पैंतीसवें वर्ष में इस व्यक्ति का धन-नाश हो जाता है और चालीसवें वर्ष में यह कोई भयानक अपराध करके राजदण्ड प्राप्त करता है तथा उसी वर्ष में हृदय रोग से भी पीड़ित होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की आयु साठ वर्ष से अधिक नहीं होती तथा उसकी मृत्यु प्रायः रोगों से ही होती है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र का अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों पर झुकाव का फल

उपरोक्त पंक्तियों से हमने सूर्य-क्षेत्र की उच्चता, अनुच्चता अथवा निम्नता तथा अत्युच्चता का फल सविस्तार लिखा है।

अब हम उच्च सूर्य-क्षेत्र का अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों की ओर झुकाव का फल लिखेंगे। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि किसी भी हाथ में एक ग्रह-क्षेत्र का दूसरे ग्रह क्षेत्र की ओर झुक जाने से दोनों ग्रह-क्षेत्रों के गुण-दोषों का परस्पर सम्मिश्रण हो जाता है और इस प्रकार मानव-स्वभाव में विलक्षणता आ जाती है। अतः हस्त परीक्षक को इस सम्बन्ध में पूरा-पूरा विचार करके ही अपना निर्णय प्रकाशित करना चाहिए।

उच्च-सूर्य क्षेत्र का बुध-क्षेत्र की ओर झुकाव का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में उच्च सूर्य-क्षेत्र बुध क्षेत्र की ओर झुक रहा हो उसके स्वभाव में विलक्षण नम्रता आ जाती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति गोधन से धनार्जन करने वाला होता है। वह अपने व्यापार-व्यवसाय को ईमानदारी के साथ व्यवस्थित रूप से चलाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति अर्थ-शास्त्र के अद्वितीय विद्वान होते हैं। इनका मन स्थिर होता है, किन्तु इनका व्यवहार खराब नहीं होता। यह व्यक्ति प्रायः अधीर तथा करुणामय होते हैं। इन्हें रोगादि से भय नहीं होता। यह प्रायः निरोग रहते हैं।

दैवयोग से यदि स्त्री के हाथ में यह लक्षण उपस्थित हो तो अत्यन्त रूपवती, लावण्यमयी, सुखी तथा हंसमुख होती है। वह सदैव विनोद-वार्ताओं से दूसरों को हंसाती रहती है। यह स्त्री अपने पति की सेवा में सदैव तन मन धन से तत्पर रहती है। यह स्वभाव से ही अत्यन्त सुशील होती है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र का निम्न शनी क्षेत्र की ओर झुकाव का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में उच्च सूर्य क्षेत्र निम्न शनी क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो वह व्यक्ति धन धान्य ऐश्वर्य सम्पन्न होता है तथा वह अनेकों प्रकार के भोग विलासों में रत रहता है। इतना होते हुए भी वह देवता, पितरों तथा गुरुजनों में श्रद्धा-भक्ति रखता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के यहां नौकर चाकरों की कमी नहीं होती। वह श्रमशील, साहसी, चंचल, धार्मिक, प्रत्येक प्रकार के कार्यों तथा प्रत्येक विषय का शीघ्र ही अनुमान लगाने वाला, बड़े बड़े कार्यों में हाथ डालने वाला तथा राज्य से पूर्ण सम्पर्क रखने वाला होता है। यदि यह व्यक्ति राजकीय रक्षा विभाग का उच्चाधिकारी भी हो तो कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु इतना होने पर भी वह स्त्री मे आसक्त तथा विलास प्रिय और कामी होता है।

इस व्यक्ति की वाणी मेघ गर्जना के सदृश्य गम्भीर तथा भयप्रद होती है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति अपना प्रभाव सर्वत्र अक्षुण्ण रखते हैं और अनेक लोगों के अनेक प्रकार से विभिन्न कार्य करवाते रहते हैं। यह व्यक्ति अपना शरीर सुन्दर और स्वस्थ बनाने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। यही कारण है कि प्रायः स्त्रियां इनके शारीरिक सौन्दर्य पर मोहित होकर अपना सर्वस्व इन पर लुटा बैठती हैं। रति क्रिया में यह व्यक्ति परम कुशल होता है। उपरोक्त उच्च पद तथा गुणों से सम्पन्न होकर भी इस लक्षण वाले व्यक्ति प्राय. वेश्यागामी होते हैं।

दैवयोग से यह लक्षण स्त्री के हाथ मे हों तो वह उदार नही होती। वह क्रोधिनी होती है तथा प्रत्येक कार्य मे असफल रहती है। किन्तु इतना होने पर भी चतुर और पति परायणा होती है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र का अन्यान्य उच्च ग्रह-क्षेत्रों के साथ फल

पाठकों के बोधार्थ हमने उपरोक्त पंक्तियो मे उच्च सूर्य-क्षेत्र का अन्यान्य ग्रह क्षेत्रों की ओर झुकाव का फल सविस्तार वर्णन किया है। उक्त वर्णन को गम्भीरता पूर्वक अध्ययन और मनन करने से स्वतः यह सिद्ध हो जाता है कि उच्च-सूर्य क्षेत्र का अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों की ओर झुकाव होने से उसके शुभ-फलों में कितना विलक्षण अन्तर आ जाता है। पाठकों ने देखा होगा कि इस अन्तर का एक-मात्र कारण उच्च सूर्य क्षेत्र का झुकाव ही है। व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाय तो इस मे कोई विभिन्नता अथवा रहस्य प्रतीत नहीं होता। यह तो साधारण प्राकृतिक नियम ही है उच्च ग्रह-क्षेत्र के किसी भी ग्रह की ओर झुकाव का स्पष्ट अर्थ यही है कि उच्च ग्रह क्षेत्र ने जिस ग्रह की ओर वह झुका है उससे सहयोग स्वीकार कर लिया है अथवा उसका लोहा मानकर उसे आत्म समर्पण कर दिया है। ऐसी स्थिति मे उसके अपने स्वभाव-कृत गुण-दोषों मे उक्त अन्य ग्रह के स्वभाव कृत गुण-दोषों का समन्वय होना प्राकृतिक है। किसी विद्वान ने ठीक ही तो कहा है।

'जैसी संगत कीजिये तैसो ही फल दीन'

अब हम अपने पाठकों को उच्च ग्रह-क्षेत्र के साथ-साथ एक ही व्यक्ति के हाथ में—किसी अन्य ग्रह क्षेत्र के उच्च होने पर,

उन दोनों के समन्वयित फल का बोध करायेंगे। जिस प्रकार उपरोक्त परिस्थिति में उच्च सूर्य-क्षेत्र के झुकाव के कारण उसके शुभाशुभ परिणामों में न्यूनता आ जाती है और उसके परिणाम स्वरूप उच्च सूर्य-क्षेत्र के शुभ फल भी साधारणतः मध्यम हो जाते हैं, उसी प्रकार यहां भी एक साथ दो ग्रह-क्षेत्रों के उच्च होने के कारण मानव के जीवन में दोनों ही शुभाशुभ फलों का विलक्षण समन्वय होता है। अन्तर केवल इतना ही है कि उच्च सूर्य क्षेत्र के झुकाव के कारण उसके शुभ-फलों में न्यूनता तथा अशुभ-फलों में वृद्धि होती है, किन्तु यहां दोनों के समान रूप से उच्च होने के कारण दोनों में से जो अधिक बलवान होता है उसी के प्रभाव की विशेषता रहती है।

उच्च सूर्य क्षेत्र और उच्च बृहस्पति क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य क्षेत्र और बृहस्पति क्षेत्र—दोनों ही उच्च हों वह व्यक्ति दयावान, सत्यनिष्ठ, न्यायशील, परोपकारी, उदार, विद्वान, गुणज्ञ, मेधावी तथा सतोगुणी होता है। यह व्यक्ति स्वभावतः ही धार्मिक प्रवृत्ति का होता है और माता-पिता तथा गुरुजनों का आज्ञाकारी एवं उनकी सेवा मे तत्पर रहता है। इस व्यक्ति की आजीविका के साधन प्रायः विद्या पर आश्रित होते हैं। यह व्यक्ति व्यवहार कुशल, मधुर-भाषी तथा लोक-प्रिय होता है। इसे अपने जीवन में सच्चे सुख का अनुभव होता है। इसकी आकृति तथा शारीरिक गठन सुडौल, सुदृढ़, तथा सुन्दर होती है। यह बुद्धिमान होता है तथा

कला-कौशल के विकास में अभिरुचि रखता है। यह व्यक्ति अधिकांशतः अध्ययनशील, शास्त्रों का ज्ञाता तथा काव्य प्रेमी होता है। इसकी रुचि विशेषतः साहित्य-सृजन अथवा पठन-पाठन की ओर रहती है। यह अपने जीवन में साधारणतः सरल और सुगम कार्य-कर्मों को ही स्थान देने का प्रयत्न करता है। ऐसे कार्य, जिनमें बाधायें उपस्थित हों अथवा जिनकी सफलता में शंका हो, यह व्यक्ति अपने हाथ मे यावत् प्रयत्न नहीं ही लेता है। यह व्यक्ति जिस किसी काम को आरम्भ करता है उसे सुव्यवस्थित ढंग से लगनशील होकर अत्यन्त परिश्रम के साथ करता है। प्रायः प्रत्येक कार्य को यथा शीघ्र कर डालने का इसका स्वभाव ही होता है। यह व्यक्ति कर्त्तव्य निष्ठ और श्रमशील होता है। इस व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि यह न्याय और दया को एक साथ अत्यन्त सुन्दर ढंग से निभाता है। दैवयोग से यदि यह व्यक्ति शासक हो तो अत्यन्त लोक-प्रिय, यशस्वी तथा सुयोग्य शासक होता है।

उच्च सूर्य क्षेत्र और उच्च बृहस्पति-क्षेत्र वाली स्त्री की विशेषता

जिस स्त्री के हाथ में सभी ग्रह-क्षेत्रों में केवल सूर्य क्षेत्र और बृहस्पति क्षेत्र ही उच्च हों, उसमें इस लक्षण वाले पुरुष के सभी गुणों का विद्यमान होना तो निश्चित है ही, साथ ही साथ उसमें निम्नांकित विशेष गुण होते हैं।

इस लक्षण वाली स्त्री का पति अवश्य ही उसके अनुकूल लक्षणों वाला ही होगा। साधारणतः इस स्त्री के पति के हाथ में

भी सभी ग्रह-क्षेत्रों में केवल सूर्य क्षेत्र और बृहस्पति ही उच्च होंगे और उसके फल स्वरूप उसमें उपरोक्त गुणों का समावेश होगा। इसके अतिरिक्त इस स्त्री को अपने पिता की सम्पत्ति प्राप्त होती है। हां एक बात यह अवश्य है कि इस लक्षण वाली स्त्री प्रायः चालीस वर्ष की आयु तक ही लौकिक जीवन में अभिरुचि रखती है। इसके पश्चात् सांसारिक-जीवन, गृहस्थ, परिवार आदि से उसे अनायास ही विरक्ति हो जाती है और उसके जीवन में आध्यात्मिक वातावरण का प्रादुर्भाव होता है। इस आयु के पश्चात् यह स्त्री एकान्त रूप से भगवद्-निष्ठ होकर भगवत् प्राप्ति की ओर अग्रसर होती है। उसका शेष जीवन पूर्ण-रूपेण धर्म-परायण हो जाता है और वह ईश्वराराधन तथा तीर्थाटन और व्रत उपवासादि में संलग्न होकर अपना जीवन यापन करती है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र और उच्च शनी-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल सूर्य क्षेत्र और शनी-क्षेत्र ही उच्च हों उस व्यक्ति को दोनों क्षेत्रों के उच्चता-जनित शुभ फल तो प्राप्त होंगे ही, किन्तु सूर्य-ग्रह और शनी-ग्रह की पारम्परिक शत्रुता के फल स्वरूप दोनों क्षेत्रों के शुभ फलों में अपेक्षा कृत न्यूनता अवश्य ही आ जायगी। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वभावतः ही दुष्ट प्रकृति का होगा, किन्तु उच्च सूर्य-क्षेत्र के प्रभाव से उसकी प्राकृतिक दुष्टता का दुष्परिणाम साधारणतः उसके जीवन में हानिप्रद रूप में प्रकट नहीं होगा और वह प्रायः सभ्य ही बना रहेगा। यह व्यक्ति नर-हत्या तक कर बैठता है किन्तु

उसका बाल भी बांका नहीं होता। कभी कभी यह व्यक्ति भयानक चोरी भी कर डालता है और उसकी चोरी प्रकाशित भी हो जाती है, किंतु फिर भी उस पर उसका कोई प्रभाव नही होता। वह तो अपने स्वभाव के अनुसार पूर्ण स्वतन्त्र तथा स्वच्छन्द रूप से विचरता रहता है। शासन सत्ता अथवा समाज की ओर से उसे किसी प्रकार का अवरोध अथवा दण्ड प्राय: नहीं ही मिलता है। हमारे अनुभव में यहां तक आया है कि इस लक्षण वाला व्यक्ति जन-साधारण के साथ अनेकानेक अत्याचार तथा अनाचार करते रहते हैं, किन्तु शासन-सत्ता इनका कुछ भी नही बिगाड़ती। अधिक से अधिक साधारण सा दण्ड देकर चुप हो जाती है। पाठको, इस व्यक्ति की इस 'चोरी और सीना जोरी' का रहस्य सूर्य-क्षेत्र तथा शनी-क्षेत्र की उच्चता का फल ही है। शनी-ग्रह उच्च होकर सूर्य-ग्रह से शत्रुता होने के कारण उस व्यक्ति को दुष्ट-स्वभाव प्रदान करता है और वह उपरोक्त प्रकार के महा भयङ्कर-काण्ड करता है, किन्तु सूर्य देव अपनी उच्च स्थिति के प्रभाव से उक्त भयङ्कर-काण्डों के दुष्परिणाम से उसकी रक्षा करते हैं।

उच्च सूर्य-क्षेत्र और उच्च शनी-क्षेत्र का स्त्री-जीवन में फल

दैवयोग से यदि किसी स्त्री के हाथ में केवल सूर्य-क्षेत्र और शनी-क्षेत्र ही उच्च हों तो उसका नैतिक-पतन स्वभाव-सिद्ध है इस लक्षण वाली स्त्री अत्यन्त भयंकर कुलटा होती है। इस स्त्री की काम-लिप्सा अत्यधिक तीव्र होती है। यह स्त्री अवश्यमेव

पर-पुरुष गामिनी होती है। इसकी व्यभिचाराशक्ति इतनी प्रबल होती है कि वह अनेकों पुरुषों को भोगती है। यह काम-क्रीड़ा में निश्शंक तथा निर्द्वन्द्व होकर लीन होती है। इस लक्षण वाली स्त्रियां प्रायः वेश्या हो जाती हैं, यदि वेश्यावृति स्वीकार न भी करें तो भी उनका जीवन उन्हीं के समान नारकीय होता है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र और उच्च बुध-क्षेत्र का फल

जिस (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में सूर्य क्षेत्र और बुध-क्षेत्र—केवल ये दो ही क्षेत्र उच्च हों वह तेजस्वी, लावण्यवान, रूपवान तथा सुन्दर होता है। इसका शरीर अपेक्षाकृत सुडौल एवं सुदृढ़ होता है। यह ओजस्वी और प्रभावशील सुवक्ता होता है। यह व्यक्ति व्यापार तथा विद्या द्वारा अत्यधिक धनार्जन करके धन-धान्य-ऐश्वर्य तथा वैभव का स्वामी होता है। यह प्रायः व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के लिए चिन्तित रहता है। यह कार्य-कुशल तथा नीति-निपुण होता है। यह व्यक्ति अनेकानेक आशायें रखता है। यह लोकप्रिय तथा यशस्वी होता है। इस लक्षण वाले पुरुष (अथवा स्त्री) में जहां उपरोक्त सद्‌गुण होते हैं वहां ही वह किञ्चित् कृपण भी होता है और क्रोधी भी होता है। यद्यपि इसके शत्रुओं की संख्या अधिक नहीं होती तथापि शत्रु-बाधा से यह प्रायः पीड़ित ही रहता है। यह स्वयं अत्यन्त सभ्य, चतुर, व्यवहार-कुशल, विचारशील, तथा विद्वान होता है और इसके मित्र भी प्रायः इसी के समान सभ्य और चतुर होते हैं। इसके मित्र मण्डल में अधिकांशतः विद्वान होते हैं।

उच्च सूर्य-क्षेत्र और मंगल-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल सूर्यक्षेत्र और मंगलक्षेत्र ही उच्च हों वह व्यक्ति सत्यवादी, सदाचारी, धर्म-निष्ठ, बुद्धिमान और ज्ञानी होता है। वह उच्च-कोटि का साहित्यकार, पत्रकार, शिल्प-कला-विशारद, रसायनिक, शल्य-चिकित्सा-निपुण अथवा चिकित्सक होता है। चिकित्सा-क्षेत्र में इस लक्षण वाला व्यक्ति दन्त-रोगों का विशेषज्ञ होता है। यह व्यक्ति प्रायः उपरोक्त विषयों के व्यापार-व्यवयास द्वारा ही धनोपार्जन करते हैं। इनको अपने कार्यों में अपने जन्म-स्थान पर प्रायः सफलता नहीं मिलती। इसके फल स्वरूप इन्हें अपना जन्म-स्थान त्याग कर परदेश में ही अपनी जीविकार्जन का कार्य करना पड़ता है और वहीं यह अपने व्यापार-व्यवसाय में सफलता तथा यश प्राप्त करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति बहु-कुटुम्बी और स्त्री-धन का उपयोग करने वाले होते हैं। इनके सन्तानें बहुत अधिक होती हैं, किन्तु इनकी सन्तान सदैव रोगों में ग्रस्त रहती हैं। इस व्यक्ति को रुधिर-विकार जन्म रोगों तथा त्वचा रोगों से बहुधा पीड़ित रहना पड़ता है। दादा, खाज, खुजली फोड़े, फुन्सी, रक्तार्श, नकसीर आदि रोगों का इस लक्षण वाले व्यक्ति पर प्रायः आक्रमण होता रहता है। इन व्यक्तियों का सबसे प्रबल अवगुण यह है कि यह अपनी स्वयं की तथा अपने परिवार के सदस्यों की बीमारियों की ओर से साधारणतः उदासीन रहते हैं और जब तक वह साधारण स्थिति अथवा सुगम होती हैं उनकी उपेक्षा करते रहते हैं; किन्तु जब रोग सीमा का अतिक्रमण

करके भयंकर-रूप धारण कर लेता है तब ये दौड़-धूप करते हैं तथा उस पर विजय प्राप्त करने के हेतु धन, औषधि और दूसरे व्यक्ति की सहायता अथवा उत्तमोत्तम चिकित्सा का आश्रय लेते हैं। रोगों के प्रति अपेक्षा भाव का कारण इनका अपने कार्यों में उलझे रहना ही होता है। यह इनका उपार्जित दोष नही है, किन्तु स्वभाव-सिद्ध अवगुण ही है। साहित्यकार, पत्रकार, शिल्पकार, रसायनिक आदि प्रायः अपने कामों में इतने मस्त रहते हैं कि इन्हें अपने काम का रोग-सा होता है। जब तक कि कोई विशेष स्थिति इन पर दबाव नहीं डाले यह अपना काम क्षण-मात्र को भी छोड़ना नहीं चाहते। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री परिश्रमी, कुशल-गृहणी, धम-परायण, सुशीला, स्नेहशीला, साध्वी तथा पति-परायण होती हैं।

उच्च सूर्य-क्षेत्र और उच्च मंगल क्षेत्र का स्त्री-जीवन पर फल

दैवयोग से यदि किसी स्त्री के हाथ में सूर्य-क्षेत्र और मंगल-क्षेत्र केवल ये दो ही ग्रह-क्षेत्र उच्च हो तो उसमें उपरोक्त शुभाशुभ गुण-दोषों का समावेश तो होगा ही, किन्तु उसमें यह विशेषता होगी कि वह रोगों से अपेक्षाकृत शीघ्र ही मुक्त हो जाती है। इस लक्षण वाली स्त्री शल्य-चिकित्सा (Surgery) में महान निष्णात् होती है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र और उच्च चन्द्र-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल सूर्य-क्षेत्र और चन्द्र क्षेत्र ही उच्च हों वह अत्यन्त विलक्षण होता है। उसके स्वभाव तथा

मनोवृत्ति में सूर्य और चन्द्रमा की प्रकृति तथा गुणों का अधिक स्पष्ट किन्तु विचित्र सम्मिश्रण दृष्टि-गोचर होता है। कभी तो वह उग्र हो उठता है और कभी शान्त हो जाता है। उग्र होने के समय वह अत्यन्त विकराल साक्षात् काल के समान भयंकर प्रतीत होता है तो शान्त होने पर अत्यन्त सौम्य, मधुर तथा साक्षात् शान्ति का अवतार-सा प्रतीत होता है। यह व्यक्ति शरीर से सुडौल, सुगठित, सुदृढ़, पुष्ट, रूपवान, लावण्ययुक्त तथा चित्ताकर्षक होता है। इसके नेत्र विशाल किन्तु चंचल होते हैं। अपनी बाल्यावस्था में यह व्यक्ति दो स्त्रियों के स्तन-पान करता है। इसे प्रयः उदर, शिर, कण्ठ, दन्त आदि रोगों से ग्रस्त होना पड़ता है।

इस लक्षण वाला व्यक्ति-धन-धान्य, तथा ऐश्वर्य, वैभव और सम्पत्ति से सम्पन्न रहता है। यह बुद्धिमान, सर्वकलाविद्, सुशील, सत्यवक्ता तथा पर्यटक अर्थात् विदेशों की यात्रा करने वाला होता है। वन-पर्वतादि में भ्रमण करने की इसे बहुत रुचि होती है। यह व्यक्ति उदार, दानशील, पराक्रमी, प्रतिभा सम्पन्न, स्थिर बुद्धि, विद्वान तथा मेधावी होता है। यह सदैव अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। संग्राम से इसे विशेष रुचि रहती है। यह स्वाभिमानी निष्कपट और मातृ-प्रेमी होता है। सुन्दर वस्त्रालंकार तथा सुगन्धित द्रव्यों से इसे विशेष प्रेम होता है। यह व्यक्ति सदैव उच्च-पद-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। यह व्यक्ति साहित्य तथा शिल्प में उन्नति करता है। यह विचारशील तथा न्याय-प्रिय होता है।

उपरोक्त सद्गुणों के साथ-साथ इस व्यक्ति में कतिपय अवगुण भी होते हैं। यह स्वभावतः ही कोडा-कृपण होता है। यह अभिमानी और निष्ठुर भी होता है। इसका स्वभाव विशेषतः तीक्ष्ण होता हैं और यह निरर्थक ही बहुत समय तक क्रोध करने वाला होता है। यह वाचाल होता है। मांस इसे प्रिय लगता है। यह व्यक्ति मानसिक दुःखों से पीड़ित रहता है।

इस लक्षण वाले पुरुष की स्त्री सुन्दर और सुशील होती है, किन्तु पति पत्नी में प्रायः परस्पर अनबन ही रहती है। इसे सन्तान अपेक्षाकृत कम होती हैं इसका धन चोर या अग्नि द्वारा नष्ट होता है। इस व्यक्ति के लिए रविवार प्रत्येक कार्य के लिये शुभ है, किन्तु तृतीया, अष्टमी तथा चतुर्दशी ये तीन तिथियां अशुभ हैं। इस व्यक्ति को जल से सदैव सावधान रहना चाहिये क्योंकि जल ही इसका मारक-तत्व है।

उच्च सूर्य-क्षेत्र तथा उच्च शुक्र क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ मे सूर्य-क्षेत्र और शुक्र-क्षेत्र—केवल ये दो ही ग्रह-क्षेत्र उच्च हों वह शक्तिशाली, पराक्रमी, साहसी तथा संग्राम में विजय की अभिलाषा रखने वाला होता है। यह व्यक्ति तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पन्न तथा धैर्यशील भी होता है। किन्तु इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः स्त्री के वशीभूत रहते हैं। यह व्यक्ति अपने आश्रितों से अत्यन्त उदार तथा कृपापूर्ण व्यवहार करते हैं। यह संगीत—नृत्य-गायन-वादन के उत्कट प्रेमी होते हैं। इनकी मनोवृति सरल और शुद्ध होती है। उनकी इस सरलता का

खुशामदी और चाटुकार विशेषरूप से दुरुपयोग करते हैं, जिसके फलस्वरुप उनको प्रायः धन-हानि का आखेट होना पड़ता है।

इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः राज्य द्वारा सम्मानित और प्रतिष्ठा-प्राप्त होते हैं अथवा राज्यवंश में ही जन्म लेते हैं। उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण धारण करने की इन्हें विशेष रुचि होती है। ये नित्य नवीन-पक्वान्नों तथा षट्-रसव्यञ्जन के प्रेमी होते हैं। व्यायाम से इन्हें विशेष प्रेम होता है। सामयिक वाहनों का सुखोपभोग भी इन्हें यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। इन्हें कृषि द्वारा अतुल सम्पत्ति का लाभ होता है। साथ ही राज्य की ओर से भी इन्हें धन-वैभवादि प्राप्त होते हैं। अपनी प्रतिष्ठा तथा यश-विस्तार के हेतु यह व्यक्ति उत्तमोत्तम कार्य करता है। यह व्यक्ति प्रायः शान्ति-प्रिय, उदार, परोपकारी तथा सज्जन होते हैं।

इस लक्षण वाले व्यक्ति के शत्रु बहुत ही कम होते हैं। इनके शत्रु विशेषतः इनके परिजन, बन्धु-बान्धव ही होते हैं और वे ही इनको समय-समय पर छेड़ते रहते हैं। किन्तु ये इस प्रकार के वातावरण से विचलित नहीं होते। यह व्यक्ति अपनी भूलें प्रायः सुधार लेता है। यह व्यक्ति व्यसनी भी होता है। मादक-द्रव्यों के सेवन का व्यसन इस लक्षण वाले व्यक्ति में विशेष रूप से पाया जाता है। इसका प्रिय मादक द्रव्य सुरा होती है।

सूर्य-चिन्ह-स्थ ग्रह-क्षेत्रों का फल

जिस प्रकार बृहस्पति और शनी ग्रह का अपना एक विशेष चिह्न हम उनके प्रसंग में बता आये हैं उसी प्रकार सूर्य-ग्रह का

भी अपना एक विशेष चिन्ह होता है। प्रकारान्तर से सूर्य का पद चिन्ह मानव-हस्त पर सूर्य का स्वरूप ही समझना चाहिये। इस की आकृति वृत्ताकार होता है। प्रत्येक हाथ में इसका होना अत्यावश्यक नहीं है। किन्तु जिस किसी भी हाथ में यह चिह्न उपस्थित होता है उस व्यक्ति के गुण स्वभाव आदि इसका विशेष प्रभाव होता है। इसका प्रभाव हाथ के प्रत्येक भाग पर स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। हम अपने पाठकों के बोधार्य विभिन्न ग्रह-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिह्न का सविस्तार वर्णन निम्नांकित पक्तियों में करते हैं।

सूर्य-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिन्ह का-प्रभाव

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-चिन्ह सूर्य-क्षेत्र पर ही स्थित हो अर्थात् जिसके हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर एक वृताकार चिन्ह हो, वह व्यक्ति अत्यन्त पराक्रमी, तेजस्वी, प्रतिभा सम्पन्न तथा यशस्वी होता है। सूर्य-चिन्ह के अपने ही क्षेत्र पर स्थित होने से उन व्यक्ति के जीवन में सूर्य-ग्रह के शुभ-फलों का अत्यधिक बाहुल्य रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। धन, धान्य, ऐश्वर्य, वैभव तथा सामयिक वाहनों का उसे पूर्ण सुख प्राप्त होता है। स्त्री-पुत्रादि से सम्पन्न होकर उसका जीवन सुखमय व्यतीत होता है। उसकी लेखनशैली उच्च-कोटि की होती है। वह प्रकाण्ड विद्वान्, मेधावी, साहित्य-कार, विलक्षण पत्रकार, प्रतिभाशाली लेखक, महान ज्ञानी तथा चतुर होता है।

बृहस्पति-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिन्ह का फल

जिस व्यक्ति के बृहस्पति-क्षेत्र पर सूर्य-ग्रह का चिन्ह होता है वह व्यक्ति विद्वान, उदार, परोपकारी, दयालु, दानशील तथा यशस्वी होता है। इस व्यक्ति को अपने जीवन में धन, धान्य, ऐश्वर्य, वैभव, भृत्य तथा सामयिक वाहनादि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। इसे स्त्री तथा सन्तान सुख भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है। यह व्यक्ति सत्कर्म-निष्ठ तथा संगीत (वादन-गायन-नृत्य) का प्रेमी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति धर्मज्ञ तथा शास्त्रज्ञ होकर लोकप्रियता का पात्र होता है तथा जन-समूह अथवा सभादि में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करता है। यह व्यक्ति आध्यात्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत रहते हैं तथा मुक्ति की इच्छा से भगवदाराधन में लीन होते हैं। इनकी कीर्ति विश्व-विख्यात होती है।

शनी-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिन्ह का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी-क्षेत्र पर सूर्य-चिह्न होता है वह व्यक्ति धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर खनिज पदार्थों के व्यापार व्यवसाय में संलग्न होता है। इस कार्य से उसे यथेष्ट धन प्राप्त होता है। किन्तु इस लक्षण वाले व्यक्ति पर सूर्य-ग्रह और शनी ग्रह की शत्रुता के फल-स्वरूप कितने ही दुर्गुणों का भी प्रभाव रहता है। यह व्यक्ति अत्यन्त अहंकारी होता है। यह अपने को सर्वोत्कृष्ट समझता है और सब को हीन करके मानता है। इसका स्वभाव तामस-प्रधान होता है। साधारणतः यह उग्र और

क्रोधी होता है। इसके हृदय में दया को कोई स्थान नहीं होता। यह क्रूर-बुद्धि होता है और किसी भी क्रूर-कर्म में इसे अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है।

बुध-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिन्ह का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-ग्रह के क्षेत्र पर सूर्य ग्रह का चिन्ह होता है उसे पुत्रशोक प्राप्त होता है और अन्तत. वह पुत्र-हीन होकर पोष्य-पुत्र का अवलम्बन ग्रहण करता है। यह व्यक्ति आजीवन पाप कर्मों में संलग्न रहता है। साधारणतः यह व्यक्ति दुराचारी, अनाचारी, अविकारी, व्यभिचारी, कुमार्गी, व्यसनी तथा कुकर्मी होता है। ऐसे लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः वेश्यागामी होता है और इसकी मृत्यु विषपान से होती है। दैवयोग से यह चिन्ह यदि हृदय रेखा के समीप स्थित हो तो उसकी अकस्मात् हृदय-गति रुक जाने से मृत्यु की सम्भावना होती है।

मंगल-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिन्ह का फल

जिस व्यक्ति के हाथ मे मंगल-क्षेत्र पर सूर्य-ग्रह का चिन्ह हो वह (यदि मंगल-ग्रह के प्रथम-क्षेत्र पर हो तो) मूर्ख, नीच कर्म-रत, भ्रष्टाचरण, कुकर्मी, दुराचारी, कुविचारी, नीच, व्यभिचारी, अनाचारी तथा अपने आत्मीयों से विरोध करने वाला होता है। दैवयोग से यदि सूर्य ग्रह का चिन्ह मंगल-ग्रह के द्वितीय क्षेत्र पर हो तो वह व्यक्ति बुद्धिमान, विचारशील, उदार, शीलवान तथा उत्तम स्वभाव वाला होता है। इस व्यक्ति के जीवन मे धन-धान्य की प्रचुरता रहती है। वह सदैव मंगल-कार्यों मे सलग्न

रहता है। उसकी स्त्री सुशील, कुशल-गृहणी, धर्म-परायण तथा पतिव्रता होती है। इस व्यक्ति को अपने जीवन में प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है और वह सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

चन्द्र-क्षेत्रस्थ सूर्य-चिन्ह का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-ग्रह के क्षेत्र पर सूर्य ग्रह का चिन्ह हो वह अत्यन्त शुभ-फल प्रदान करने वाला होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अत्यन्त तेजस्वी, प्रतिभा सम्पन्न गुणज्ञ, विद्वान् तथा विचारशील होता है। यह अनेक विद्याओं में पारंगत होता है। इसे धन धान्य, ऐश्वर्य वैभव, भृत्य-वाहन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यात्रा का इसे विशेष प्रेम होता है। कभी-कभी इस लक्षण वाला व्यक्ति पर्यटक होता है और सुदूर विदेशों की यात्रा करता है। प्राकृतिक-सौन्दर्य-सुधा का पान करने के हेतु यह व्यक्ति वन-पर्वतादि का भी भ्रमण करता है। यह बहु कुटुम्बी होता है। इसका शरीर सुदृढ़, सुडौल, लावण्य युक्त तथा सुन्दर होता है। इसे साहित्य से विशेष प्रेम होता है। यह प्रायः अध्ययन तथा पठन-पाठन में संलग्न रहता है। स्त्रियों के प्रति इसे विशेष आकर्षण होता है। स्वभावतः ही यह सौंदर्य प्रेमी होता है। किन्तु यह सच्चरित्र और इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः उच्चकोटि का साहित्यकार, पत्रकार, लेखक अथवा वक्ता होता है। इसकी वाणी ओजस्वी तथा प्रभाव पूर्ण होती है। इसे

कवित्वशक्ति भी प्राप्त होती है और यह उत्तम कवि भी होता है। इसे सुन्दर, सुशीला, गृह-कार्य में दक्ष तथा पति परायणा स्त्री प्राप्त होती है। इसे सन्तानादि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। किन्तु उपरोक्त सभी गुणों के साथ-साथ इसका स्वभाव कभी अत्यन्त नम्र और कभी उग्र होने वाला होता है।

शुक्र-क्षेत्र-स्थ सूर्य-चिन्ह का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शुक्र-ग्रह के क्षेत्र पर सूर्य-ग्रह का चिह्न होता है वह व्यक्ति अत्यन्त विनम्र, प्रेमी, तथा आनन्दित होता है। इस स्थान पर यह चिह्न प्रायः अत्यन्त शुभ-प्रभाव प्रदान करने वाला होता है। अपने मित्रों और स्त्रियों से यह अत्यधिक प्रेम करता है। यह व्यक्ति शक्तिशाली, प्रतिभा-सम्पन्न तथा विचारशील होता है। स्वभावतः ही यह व्यक्ति सौन्दर्यो-पासक होता है। उत्तमोतम वस्त्राभूषण का इसे अत्यधिक प्रेम होता है। इसे राज्य से सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव, भृत्य-वाहन आदि सुखोपभोग की सभी सामग्रियां इसे प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं। अपने विचारों का यह दृढ़ होता है। धनार्जन के हेतु यह व्यक्ति अत्यधिक परिश्रम करने वाला होता है। इसे संगीत (गायन-वादन तथा नृत्य) से विशेष प्रेम होता है। सौन्दर्योपासक होने के नाते यह व्यक्ति प्राकृतिक दृश्यों का प्रेमी होता है। कला पूर्ण तथा सुन्दर वस्तुओं के संग्रह में इसे विशेष आनन्द प्राप्त होता है। घर और बाहर सर्वत्र साज-सज्जा का प्रेमी होता है। यह व्यक्ति स्वभाव से

ही आत्माभिमानी होता है तथा किसी भी व्यक्ति के आश्रित रहना इसे तनिक भी स्वीकार नहीं होता। यह स्वावलम्बी होता है। अपने विचारों तथा कार्यों में इस लक्षण वाला व्यक्ति पूर्ण रूपेण स्वतन्त्र एवं स्वच्छन्द होता है। इसे सुन्दर तथा गुणवान, सुशील, धर्म परायण और साध्वी स्त्री प्राप्त होती है और सन्तान सुख भी यथेष्ट होता है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) का विवेचन

जिस प्रकार अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों पर विभिन्न रेखायें होती हैं, उसी प्रकार सूर्य-क्षेत्र पर भी विभिन्न रेखायें पायी जाती हैं। ग्रह क्षेत्र-गत इन रेखाओं का ग्रह-क्षेत्रों के फल पर अत्यधिक प्रभाव होता है। शुभ रेखायें किसी भी ग्रह क्षेत्र के प्रभाव को विशेषता प्रदान कर देती हैं तो अशुभ रेखायें उनके साधारण शुभ-फल को नष्ट करके उन्हें कभी २ अत्यधिक अशुभ-फल-दायक तक बना देती हैं। अतः ग्रह-क्षेत्र-गत रेखाओं का विचार अत्यावश्यक है, ताकि उनकी उपेक्षा हस्त-परीक्षा के निर्णय में घातक सिद्ध न हो।

साधारणतः ग्रह-क्षेत्र गत रेखायें साधारण ही होती हैं। उनका कोई विशिष्ट स्वरूप अथवा नाम नहीं होता। इसके अतिरिक्त उनका कोई विशेष स्थान भी प्रायः निश्चित नहीं ही होता है। क्योंकि जब विशिष्ट-स्वरूप और नाम ही नहीं होगा तो स्पष्ट है कि स्थान निश्चित क्यों कर होगा। किन्तु इस स्थिति में भी प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र से सम्बन्धित एक-दो अथवा अधिक रेखायें अपना विशिष्ट नाम, स्थान तथा प्रभाव रखती हैं। यदि सच पूछा जाय

तो इन विशिष्ठ-रेखाओं का प्रभाव इतना व्यापक होता है कि कभी-कभी तो महान से महान शुभाशुभ फलों में आकाश-पाताल का परिवर्तन कर देती हैं। बृहस्पति-क्षेत्र गत दीक्षा-रेखा तथा शनी-क्षेत्र गत शनी मुद्रिका और शुक्र-मुद्रिका इसी प्रकार की रेखाओं में से हैं। इसी प्रकार अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों पर भी प्राय: कोई न कोई अपनी विशेष रेखा अवश्य ही होती है। प्रस्तुत सूर्य-क्षेत्र पर भी इसी श्रेणी की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रेखा पाई जाती है। इस रेखा को सूर्य (Line of Sun) कहते हैं।

सूर्य रेखा (Line of Sun) का परिचय

सूर्य रेखा (Line of Sun) को 'रवि-रेखा' 'आदित्य रेखा' 'भास्कर-रेखा' मार्तण्ड-रेखा आदि विभिन्न नामों से भी सम्बोधन करते हैं। ये नाम प्राय: सूर्य के अन्यान्य (पर्यायवाची) नामों के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। हां, इस रेखा के कुछेक नाम ऐसे भी हैं जो सूर्य के नामों से सर्वथा भिन्न हैं और वे इस रेखा के विशिष्ठ गुणों अथवा शुभ फलों के ही प्रतीक हैं। इस प्रकार के नामों में एक नाम 'तेजस्वी-रेखा' है। 'सूर्य रेखा' को 'तेजस्वी रेखा' यह नाम प्राप्त होने का एक मात्र कारण यही है कि जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा विद्यमान होती है उसके उज्जवल भविष्य का प्रकाश अत्यन्त प्रखर होकर उसके जीवन को असाधारण रूप से प्रकाशित कर देता है। दैवयोग से किसी व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा अत्यन्त शुभ हो और साथ ही 'सूर्य रेखा' किंवा 'तेजस्वी रेखा' भी विद्यमान हो तो उसका भविष्य तथा

सौभाग्य अवश्य ही उसी भांति प्रकाशित हो उठेगा जिस प्रकार उषा-काल के संयोग से अमावस्या की काल-रात्रि का प्रगाढ़तम अन्धकार भी नष्ट हो जाता है और अरुणोदय की सूचना देता है।

पाठको, हमारे उपरोक्त कथन का यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि 'तेजस्वी-रेखा' के विद्यमान होने पर ही मनुष्य का भाग्य चमकता है और इसके अभाव में शुभ-भाग्य रेखा कोई महत्व नहीं रखती अथवा उसका प्रभाव अपेक्षा कृत न्यून हो जाता है। 'तेजस्वी-रेखा' की उपस्थिति भाग्य-रेखा के शुभ फल को असाधारण रूप से प्रकाशित अवश्य करती है, किन्तु इसका अभाव भाग्य-रेखा के शुभ-फल को किंचित्-मात्र भी प्रभावित अथवा न्यून नहीं करता है। हां, शुभ भाग्य-रेखा के साथ-साथ शुभ-तेजस्वी-रेखा अथवा शुभ-सूर्य-रेखा भी विद्यमान हो तो सोने में सुगन्ध अवश्य हो जायगी अर्थात् यदि शुभ भाग्य-रेखा किसी व्यक्ति को 'नराधिप' बना रही हो तो शुभ तेजस्वी रेखा के सहयोग से वह 'सम्राट' हो जायगा। इसके विपरीत यदि केवल शुभ भाग्य रेखा ही विद्यमान हो और 'तेजस्वी रेखा' अथवा 'सूर्य रेखा' का सर्वथा अभाव हो तो इस दशा में शुभ भाग्य-रेखा के शुभ फल में किंचित्-मात्र भी अन्तर नहीं आयेगा। हमारे उपरोक्त कथन का केवल यही अभिप्राय है।

सूर्य-रेखा का एक नाम 'प्रतिभा रेखा' भी है। इसका यह नाम इसके इस गुण का प्रतीक है कि इस रेखा वाला व्यक्ति

प्रतिभा-सम्पन्न अवश्य होगा। यदि किसी व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में भाग्य रेखा निर्बल हो अथवा उसका सर्वथा ही अभाव हो, किन्तु सुस्पष्ट शुद्ध तथा शुभ रेखा (प्रतिभा रेखा) विद्यमान हो, तो वस्तुतः उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को पूर्ण सौभाग्य चाहे प्राप्त न हो किन्तु वह प्रतिभा सम्पन्न अवश्य ही होगा। उसमें रजोगुण विशिष्ठ मात्रा में विद्यमान होगा, उसकी आर्थिक स्थिति भी समृद्ध ही होगी, जन साधारण में उसे यथेष्ठ मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त रहेगी और वह जनता का नेतृत्व भी करेगा। कला-कौशल में वह व्यक्ति पारंगत चाहे न हो किन्तु उसका प्रेमी अवश्य होगा। संक्षेप में—इस लक्षण वाला व्यक्ति किसी भी विषय में कितना ही न्यूनाधिक ज्ञान क्यों न रखता हो, किन्तु उसे प्रकाशित करने की प्रतिभा उसमें अत्यन्त विशिष्ठ होगी वह अपने अल्प ज्ञान को भी गम्भीरतम रूप में उपस्थित करने में समर्थ रहेगा। सूर्य रेखा के इस विलक्षण प्रभाव तथा प्रतिभा सम्पन्न शुभ फल के कारण ही हस्त विज्ञान के द्रष्टाओं तथा आचार्यों ने उसे 'प्रतिभा रेखा' के नाम से भी सम्बोधित किया है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) साधारणतः भाग्य रेखा के साथ होने पर अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। यह निर्विवाद है कि जिस समय सूर्य रेखा मनुष्य (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में आरम्भ होती है, उसी समय से उसके जीवन में सुधार आरंभ हो जाता है और इसकी वृद्धि के साथ-साथ शनैः शनैः उसका

जीवन विकासोन्मुख होकर सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न हो जाता है। उपरोक्त दो विशेष-नामों (तेजस्वी-रेखा और प्रतिभा-रेखा) के अतिरिक्त सूर्य रेखा के अन्यान्य कितने ही विशिष्ट नाम और हैं। इसे कोई कोई विद्वान 'सम्पत्ति-रेखा' और कोई कोई 'विद्या रेखा' भी कहते हैं। इसके ये नाम भी उपरोक्त नामों के अनुसार ही अपना अपना विशेष महत्व रखते हैं। पुस्तक का कलेवर अधिक स्थूल हो जाने की आशंका से हम इनका यहां सविस्तार वर्णन करना उचित नहीं समझते। पाठक अपने सम्यक् ज्ञान (Common Sense) के आधार पर इसे स्वयं समझ सकते हैं।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) का उद्गम-स्थान

सूर्य-रेखा अपने विविध गुणों के अनुरूप मानव-हस्त पर विविध-स्थानों से आरम्भ होती है। हस्त-विज्ञान-वेत्ताओं के मतानुसार मानव-हस्त पर इसके उद्गम-स्रोत सात हैं। ये स्रोत निम्नलिखित हैं—

(१) मणिबन्ध अथवा उसके समीप का स्थान
(२) चन्द्र-क्षेत्र (Plain of Luna)
(३) जीवन-रेखा (Line of Life)
(४) भाग्य-रेखा (Line of Fate)
(५) मङ्गल-क्षेत्र (Plain of Mars)
(६) मस्तक-रेखा (Line of Head)
(७) हृदय-रेखा (Line of Heart)

सूर्य-रेखा (Line of Sun) का शुभाशुभ फल

उपरोक्त सात स्थानों से आरम्भ होने वाली सूर्य रेखा-(Line of Sun) मानव (स्त्री अथवा पुरुष) के जीवन में समय-समय घटित होने वाली घटनाओं तथा उसके भाग्य-सम्बन्धी अन्यास अनेक गम्भीर समस्याओं पर पूर्ण प्रकाश डालती है। हम अपने पाठकों के बोधार्थ यहां इसके सातों स्वरूपों का शुभाशुभ फल सविस्तार वर्णन करते हैं।

सूर्य रेखा के मणिबन्ध से आरम्भ होने का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) मणि-बन्ध अथवा उसके समीप से आरम्भ होकर भाग्य-रेखा (Line of Fate) के समान्तर तथा निकट चलती हुई अनामिका अंगुली के मूल स्थान में सूर्य-क्षेत्र पर जाती हो वह अन्य सभी स्थानों से आरम्भ होने वाली सूर्य-रेखा से विशेष उत्तम मानी गई है। यदि सच पूछा जाय तो सूर्य-रेखा (Line of Sun) का वास्त-विक अधिकृत स्थान यही है। इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों से आरम्भ होने वाले सूर्य-रेखा (Line of Sun) को यदि स्थान भ्रष्ट भी कहा जाय तो अनुचित न होगा। इस प्रकार की सूर्य रेखा को ही प्रतिभा रेखा कहा जा सकता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में उपरोक्त प्रकार की सूर्य रेखा (प्रतिभा रेखा) विद्यमान हो सफलता उसकी ठोकरों में फिरती है। सौभाग्यवश इस रेखा के साथ साथ यदि सुस्पष्ट, निर्दोष, शुद्ध- अक्षत तथा सुन्दर भाग्य रेखा (Line of Fate) भी

विद्यमान हो तो उसके भाग्य का वर्णन कौन कर सकता है। प्रतिभा और भाग्य का अद्वितीय संगम होने से यह व्यक्ति जिस किसी भी कार्य मे हाथ डालता है वह अनायास ही सिद्ध हो जाता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने जीवन में स्वप्न में भी दुःख नहीं भोगता। उसे सभी प्रकार के लौकिक सुख, धन-धान्य ऐश्वर्य-वैभव, भृत्य-वाहन, स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव, इष्ट-मित्र, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा-कीर्ति आदि अनायास ही प्राप्त हो जाती हैं। लोक-जीवन के प्रत्येक-क्षेत्र में उसे यथेष्ट सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इसका प्रभाव सर्वत्र समान-रूप से व्यापक रहता है। शासन-सत्ता की ओर से भी उसे अत्यधिक प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है।

इस लक्षण वाला व्यक्ति यदि सार्वजनिक-क्षेत्र को अपना कार्य क्षेत्र चुनता है तो वह उच्च कोटि का लोक-नेता बनता है। इस क्षेत्र के राजनैतिक-भाग में उसे जन-समूह का अभूत-पूर्व समर्थन प्राप्त होता है। जिस किसी भी विचार-धारा अथवा आन्दोलन को वह अपने हाथ में लेता है उसमें उसे अनायास ही सफलता प्राप्त हो जाती है। उसकी इस विलक्षण प्रतिभा के सामने उसके सभी सहयोगियों को उसका लोहा स्वीकार करना पड़ता है और उसे अपना पथ-प्रदर्शक नियुक्त करने के लिये विवश होना पड़ता है। यह व्यक्ति अपने उद्देश्य में आशातीत सफलता प्राप्त करता है। अपने मत की शासन-सत्ता में प्रधान-मन्त्रित्व अथवा उसी के समकक्ष अन्य कोई पद प्राप्त करता है।

राजनैतिक क्षेत्र के विपरीत यदि यह व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र में पदार्पण करता है तो वहां यह एक प्रकार से युगान्तर ही उपस्थित कर देता है। समाज के विधान में यह अपनी अभिलाषा के अनुकूल परिवर्तन करने में सफल होता है और वहां भी इसे जन-साधारण का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह व्यक्ति जिस काम को हाथ में लेता है उसी में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है।

दैवयोग से यदि यह व्यापार-व्यवसाय में संलग्न होता है तो अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पीछे छोड़ कर आप बहुत आगे बढ़ जाता है। विविधि प्रकार के व्यापार-व्यवसाय से यह व्यक्ति अत्यधिक धन-वैभव तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है। इस क्षेत्र में इस लक्षण वाले व्यक्ति को धन-लाभ की कुछ भी कमी नहीं रहती। लक्ष्मी इसकी दासी रहती है।

उपरोक्त विवरण से पाठकों को ज्ञात हो गया होगा कि मणिबन्ध से अथवा उसके समीप से आरम्भ होकर शुद्ध, सुस्पष्ट, निर्दोष तथा अक्षत भाग्य-रेखा (Line of Fate) के समानान्तर होकर अनामिका अंगुली के मूल-स्थान पर सूर्य-क्षेत्र पर जाने वाली 'प्रतिभा' नाम की 'सूर्य-रेखा' यदि स्वयं सुस्पष्ट निर्दोष, शुद्ध तथा अक्षत हो तो वह मनुष्य (स्त्री अथवा पुरुष) को सर्व-सुख-सम्पन्न तथा सर्व-सफलता प्रदायिनी सिद्ध होती है।

सूर्य-रेखा के चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ होने का फल

चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली सूर्य-रेखा के दो स्वरूप हैं और उन दोनों ही स्वरूपों के अपने-अपने भिन्न-भिन्न फल हैं। उसके यह दोनों स्वरूप निम्न-लिखित हैं—

(क) चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर सीधी अनामिका अंगुली के मूल में सूर्य क्षेत्र पर जाने वाली सूर्य-रेखा।

(ख) चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर भाग्य-रेखा के समानान्तर चलती हुई अनामिका अंगुली के मूल मे सूर्य क्षेत्र पर पहुंचने वाली सूर्य-रेखा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होती है उसका भाग्योदय होता तो अवश्य ही है, किन्तु उसकी उन्नति स्वकीय अर्थात् उसके स्वयं के परिश्रम का फल नहीं होती। जैसा कि हमने 'प्रतिभा' नाम की 'सूर्य-रेखा' के वर्णन मे बताया है सूर्य रेखा का अधिकृत उद्गम स्थान मणिबन्ध अथवा उसके समीप का स्थान है। अतः इस तथ्य को दृष्टि में रख कर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होने वाली सूर्य रेखा स्वतः ही स्थान भ्रष्ट है। अतः यह व्यक्ति अपने जीवन में सदैव दूसरों के आश्रय पर ही उन्नति करता है। आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि चन्द्रमा में अपना प्रकाश नहीं है, वरन् वह सूर्य के प्रकाश की प्रतिच्छाया से ही प्रकाशित होता है। बस, यही दशा चन्द्र स्थान से उद्भूत सूर्य-रेखा वाले व्यक्ति की होती है। वह भी सदा दूसरों के प्रकाश से ही प्रकाशित

होता है अर्थात् दूसरों की इच्छा और अभिलाषा पर ही उसका जीवन उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता है। इस सम्बन्ध में यदि उसे किसी स्थान से सक्रिय सहायता न भी मिले, तो भी कम से कम शुभ परामर्श अथवा पथ-प्रदर्शन की सहायता तो अवश्य ही प्राप्त होगी—तब ही उसकी उन्नति सम्भव है अन्यथा उसके उज्ज्वल भविष्य की आशा करना ही व्यर्थ है। हमारे कहने का यह तात्पर्य नहीं है कि इस लक्षण वाले किसी व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) की उन्नति होती ही नहीं है। उसकी उन्नति अवश्य होती है, किन्तु वह किसी न किसी रूप में पराश्रित होकर ही, अपने प्रयास मे नहीं और यह बात भी निर्विवाद है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति को सहायक अथवा परामर्शदाता अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं। फिर भी जिस व्यक्ति का भाग्योदय दूसरों की सहायता अथवा विचारों पर आश्रित हो उसे उत्तम नहीं कहा जा सकता।

हां, यदि यह सूर्य-रेखा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होकर 'प्रतिभा' नाम वाली 'सूर्य रेखा' की भांति भाग्य रेखा के समानान्तर चलती हुई अनामिका अंगुली के मूल स्थान में सूर्य क्षेत्र पर पहुंचती हो तो वह प्रथम प्रकार की रेखा से विशेष शुभ हो जाती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का जीवन अवश्य ही भाग्यशाली और सफल होता है। इस व्यक्ति का जीवन यद्यपि उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक और आनन्दप्रद होता है किन्तु इस व्यक्ति की प्रकृति मे एक गम्भीर तथा ठोस अवगुण होता है। वह यह कि उसके विचार

स्थिर नहीं होते। सर्व साधारण (स्त्री अथवा पुरुष) के प्रभाव से, अथवा वातावरण के प्रभाव से अथवा प्रभावोत्पादक अन्यान्य विषयों या वस्तुओं के प्रभाव से यह व्यक्ति अपनी विचार धारा बदल देता है। अपने जीवन को यशस्वी तथा महत्त्वपूर्ण बनाने की इस लक्षण वाले व्यक्ति को अत्यधिक आकांक्षा रहती है, किन्तु यह अपने विचारों में दृढ संकल्प नहीं होता और अपनी योजनाओं को कदाचित् ही सुचारु रूप से निभाता है। अतः अपने प्रयत्नों में असफल रहने के कारण उसकी आकांक्षायें पूरी नहीं हो पाती। हां इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने विचारों में कृत संकल्प रहे अर्थात दृढ़ रहे और प्रेम उसके पथ में बाधक न बनें साथ ही मस्तक रेखा भी शुभ हो तो इस व्यक्ति को अवश्यमेव सुख और सफलता प्राप्त होती है।

चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होकर अनामिका अंगुली तक पहुचने वाली गहरी सूर्य रेखा के सम्बन्ध में यह अवश्य ही स्मरण रखना चाहिये कि इस जीवन मे अनेकानेक घटनाओं का रंग स्थल होगा और परिवर्तनों तथा अनिश्चितताओं का भण्डार होगा। ऐसा जीवन साधारणतः सदैव सन्देह पूर्ण होता है।

चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली सूर्य-रेखा यदि अत्यधिक शुभ हाथ में स्थित हो तो उस व्यक्ति का जीवन सफल तथा महत्त्वपूर्ण हो सकता है, किन्तु जैसा कि आरम्भ ही मे हम लिख चुके हैं यह व्यक्ति पराश्रय के आधार पर ही उन्नति करता है। अतः इसे निराश होकर प्रसंगानुकूल अपने विचार और

कार्य-क्रम में परिवर्तन करना पड़ता है। इस प्रकार उसकी उन्नति में स्थायित्व नही होता।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के जीवन-रेखा से आरम्भ होने का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of the Sun) जीवन रेखा (Life line) से आरम्भ होतीहै, वह सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन में उन्नति तथा यश में वृद्धि करने वाली सिद्ध होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने ही परिश्रम और योग्यता द्वारा उन्नति करता है। एक व्यवसायिक हाथ (Artistic Hand) के अतिरिक्त शेष सभी प्रकार के हाथों में सूर्य-रेखा (Line of Sun) यदि जीवन-रेखा (Life-line) से उद्भूत हो तो वह व्यक्ति इसके प्रभाव से अपने मनोनुकूल किसी भी कला में पूर्ण उन्नति कर सकता है। इस सम्बन्ध में यह सर्वोत्तम लक्षण है। किन्तु इस लक्षण वाला व्यक्ति वस्तुतः भावुक मनोवृत्ति का होता है। वह सौन्दर्य का उपासक होता है और अपना समस्त जीवन सौन्दर्योपासना में ही व्यतीत करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने जीवन का उतना उपभोग अथवा सदुपयोग नही कर पाते जितना वह व्यक्ति करता है जिसकी सूर्य रेखा स्वयं भाग्य-रेखा (Line of Fate) से ही उद्भूत होती है।

जीवन-रेखा (Life line) से आरम्भ होनें वाली सूर्य-रेखा (Line of Sun) के सम्बन्ध में यह विशेष रूप से स्मरण

रखना चाहिये कि इस लक्षण वाले व्यक्ति की सफलताओं का आधार पूर्ण-रूपेण उसके जीवन के कार्य ही होते हैं। इस व्यक्ति को अकस्मात् अथवा भाग्यवश सफलता अथवा उन्नति का अवसर प्रायः नहीं ही प्राप्त होता है, वरन् अपने जीवन में अपनी कर्तृत्व शक्ति के आधार पर कर्म-क्षेत्र में वह जो कुछ कर्म करता है अथवा अपना मार्ग निर्माण करता है एक-मात्र उसी के द्वारा उसे सफलता अथवा उन्नति प्राप्त होती है। अतः इस लक्षण वाले व्यक्ति सदैव अपने कर्त्तव्य-पथ पर जागरूक होकर क्रिया शील रहना चाहिये। अकर्मण्यता, आलस्य, उपेक्षा, उदासीनता, प्रमाद आदि दुर्गणों का आखेट हो जाने पर इस व्यक्ति का जीवन अवश्य ही अन्धकार पूर्ण हो जायगा, इसमें यत्-किंचित भी सन्देह नहीं है।

इस लक्षण वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में एक विशेषता यह और है कि उसकी उन्नति अथवा सफलता जितनी उसकी कर्तृत्व शक्ति पर निर्भर करती है उतनी ही प्रेम पर भी आश्रित है। इस के जीवन में प्रेम और कर्त्तव्य का विलक्षण समन्वय होता है। यदि सच पूछा जाय तो इस लक्षण वाले व्यक्ति की कर्तृत्व शक्ति की प्रेरणा शक्ति वस्तुतः प्रेम ही है। यदि प्रेम का आधार उसे प्राप्त न हो तो वह निश्चय ही अकर्मण्य हो जायेगा। अतः इसका जीवन प्रेममय तथा कर्त्तव्य-परायण अवश्य ही होता है। यह उपरोक्त विशेषता उस ही व्यक्ति को प्राप्त होती है जिसकी सूर्य रेखा (Line of Sun) जीवन-रेखा (Life line)

के अन्तर्भाग में अर्थात् शुक्र-क्षेत्र पर मंगल-क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन-रेखा (Life line) के लगभग समानान्तर आने वाली मंगल-रेखा (Line of mars) [जिसे जीवन रेखा (Life line) की सहायक-रेखा भी कहते हैं] से अथवा उसके समीप से आरम्भ होती हो। हमारे इस स्पष्टी-करण से पाठकों को स्वतः ही हमारे उक्त कथन की सत्यासत्यता प्रकट हो गई होगी। शुक्र-क्षेत्र प्रेम का स्थान है। अतः उस स्थान से अथवा उस स्थानगत किसी भी रेखा से आरम्भ होने के कारण मानव-जीवन पर अत्यधिक महत्व पूर्ण प्रभाव रखने वाली सूर्य रेखा (Line of Sun) का यह प्रेम-युक्त फल होना स्वभाविक ही है। इस व्यक्ति को प्रायः अपनी प्रेमिका से अथवा अपनी परिणीता-पत्नी से ही कर्त्तव्य की प्रेरणा प्राप्त होती है और उसके द्वारा उस व्यक्ति को समुचित द्रव्य-लाभ अवश्य ही होता है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के भाग्य-रेखा से आरम्भ होने का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) भाग्य-रेखा (Fate-line) से उद्भूत हो वह भाग्य-रेखा के शुभ-फलों को द्विगुणित कर देती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के भाग्य-रेखा (Fate line) इस प्रकार की सूर्य-रेखा (Line of Sun) के प्रभाव से निस्सन्देह आशातीत शक्ति-सम्पन्न हो जाती है। इस व्यक्ति की भाग्य-रेखा जो भी शुभ-फल प्रदर्शित करती है वे सभी इस प्रकार की सूर्य-रेखा का आश्रय-प्राप्त करके

विलक्षण शक्ति प्राप्त कर लेते हैं। वर्षमान के अनुसार मनुष्य आयु में जिस पर इसका भाग्य-रेखा से उद्गम निश्चित होता है उसी वर्ष से (यदि यह कहा जाय तो कुछ भी अतिशयोक्ति न होगी कि उसी क्षण से) मनुष्य के जीवन में विलक्षण प्रतिभा तथा प्रकाश से युक्त परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि यह सूर्य-रेखा जितनी शुद्ध, सुस्पष्ट, निर्दोष, अक्षत तथा पूर्ण होगी यह प्रभाव उतना ही अधिक श्रेष्ठ और प्रशस्त होगा।

हमारे विचार से इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा (Line of Sun) को प्रतिभा-सूचक और सफलता-सूचक रेखा कहना अधिक युक्ति-युक्त, न्याय-संगत, उचित तथा भ्रम निवारक होगा। क्योंकि इस प्रकार की सूर्य रेखा (Line of Sun) प्रायः ऐसे व्यक्तियों के हाथों में भी दृष्टिगोचर होती है सीधी-रेखा तक खींचना नहीं जानते और रंग-भेद के सम्बन्ध में वे इतने बुद्धू होते हैं कि लाल और नीले रंग तक में अन्तर नहीं समझते। ऐसी दशा में वह व्यक्ति कुशल कलाकार अथवा अन्य विषय में विशेष योग्यता अथवा सफलता का भागी किस प्रकार हो सकता है। हां, इस रेखा के प्रभाव से वह व्यक्ति (चाहे वह कितना ही मूर्ख अथवा बुद्धू क्यों न हो) भावुक तथा सौन्दर्योपासक अवश्य ही होगा।

इस लक्षण वाला व्यक्ति उत्तमोत्तम वस्त्रालंकार को चाहने वाला, कलात्मक वस्तुओं का प्रेमी, सुन्दर तथा लावण्ययुक्त

पदार्थों का प्रेमी, उत्तमोत्तम तथा हृदय स्पर्शी प्राकृतिक दृश्यों का भक्त तथा भावुक मनोवृत्ति का होगा। इसके विपरीत यदि यह लक्षण अन्यान्य शुभ लक्षणों से युक्त हाथ में विद्यमान हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपनी ही योग्यता तथा परिश्रम अथवा बुद्धि-बल से अभूत पूर्व सफलता प्राप्त करके उन्नति, मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति, सम्मान तथा यश प्राप्त करेगा।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के मंगल-क्षेत्र से आरम्भ होने का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of sun) मंगल क्षेत्र से आरम्भ होती है वह व्यक्ति अपने जीवन में अनेकानेक विघ्नों, बाधाओं तथा आपत्तियों को पार करके उन्नति और सफलता प्राप्त करते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति के मंगल-ग्रह जन्म कष्ट, व्याधा, रोग तथा आपदायें अवश्यमेव भोगनी पड़ती है। इनके पश्चात् ही उसकी उन्नति होती है। हां, मंगल-क्षेत्र से आरम्भ होने के फल-स्वरूप उसे मंगल-ग्रह की अनुकम्पा अनायास ही प्राप्त रहती है। दैवयोग से यदि मंगल-क्षेत्र उन्नत हो तो वह व्यक्ति समय आने पर अत्यधिक उन्नति करता है तथा उसे अपने जीवन में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। इस व्यक्ति को धन के सम्बन्ध में झगड़ा करने की सम्भावना अवश्य रहती है, किन्तु इसमें उसे सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

दैवयोग से यदि सूर्य-रेखा (Line of Sun) का उद्गम-स्थान बुध और चन्द्रमा के मध्य-स्थ मंगल-क्षेत्र हो और वहां से उद्गम होकर वह सीधी अपने निर्दिष्ट-स्थान पर अनामिका अंगुली के मूल में सूर्य क्षेत्र पर गई हो तो उस व्यक्ति को यह विशेष रुप से शुभ फल प्रदायक सिद्ध होती है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के मस्तक रेखा से आरम्भ होने का फल

जिस व्यक्ति हाथ में सूर्य-रेखा (Line of the Sun) मस्तक रेखा (Head Line) से उद्भूत हो तथा सुस्पष्ट, सुन्दर, अक्षत, शुद्ध तथा सुडौल हो वह व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत योग्यता तथा मस्तिष्क शक्ति के द्वारा उन्नति करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को अपने जीवन के मध्य काल में अर्थात् लगभग पैंतीस वर्ष की आयु में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। इस प्रकार की सूर्य-रेखा (Line of Sun) प्रायः साहित्यक, पत्रकार, वैज्ञानिक लेखक, किसी विशेष विषय का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी तथा मस्तिष्क से काम करने वाले व्यक्तियों के हाथ में ही अधिकांशतः दृष्टिगोचर होती है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के हृदय रेखा से आरम्भ होने का फल

जिस व्यक्ति के हाथ मे सूर्य-रेखा (Line of Sun) हृदय-रेखा (Heart Line) से आरम्भ होती है उस व्यक्ति की उन्नति उसके जीवन के उत्तरार्द्ध में होती है। जीवन के

उत्तरार्द्ध से हमारा तात्पर्य आधुनिक काल में लगभग साठ वर्ष की आयु से अथवा वृद्धावस्था से है। किन्तु इस फल की सटीक प्राप्ति के लिये सूर्य-रेखा का शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा सुन्दर होना अत्यावश्यक है। इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) का चौथापन (वृद्धावस्था) सुख-पूर्ण रहता है। कम से कम उसे अपनी वृद्धावस्था में किसी प्रकार की चिन्ता, आपदा तथा दुःख आदि प्राप्त नहीं होते, वरन् प्रायः सौभाग्य पूर्ण ही रहता है। इसके विपरीत यदि सूर्य रेखा का एकान्त अभाव हो अथवा वह (सूर्य-रेखा) हृदय रेखा से ऊपर केवल छोटे छोटे खरोंचों की शृंखला-मात्र अर्थात क्षत-विक्षत हो तो इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) की अन्तिम अवस्था चिन्ता पूर्ण अन्धकारमय तथा निराशा जनक ही व्यतीत होती है। हां, यदि हस्त गत अन्यान्य लक्षण शुभ हों अथवा भाग्य रेखा प्रशस्त हो तो दूसरी बात है।

उपरोक्त लक्षण वाली शुभ सूर्य-रेखा (line of Sun) के सम्बन्ध में यह विशेष रूप से स्मरण रखना चाहिये कि जिस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार की सूर्य रेखा (Line of Sun) होगी उसका विवाह यद्यपि सुख पूर्ण होगा, किन्तु होगा प्रायः विलम्ब से। वैसे साधारणतया इस व्यक्ति को अपने जीवन में प्रत्येक प्रकार की सुलभता, प्रसन्नता, सुख तथा आसानी ही रहेगा उसे अपेक्षा कृत सभी प्रकार के सांसारिक सुख प्राप्त रहेंगे और उसके जीवन में प्रायः किसी भी प्रकार की आपदायें, विघ्न तथा संकट नहीं ही आयेंगे। दैवयोग से यदि किसी प्रकार की आपत्ति

पूर्ण घटना का सामना भी हो जायगा तो वह भी अनायास ही अनुकूल फल प्रदान करेगी।

सूर्य रेखा (Line of Sun) का अन्यान्य प्रमुख रेखाओं के साथ शुभाशुभ फल

जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य-रेखा (Fate Line) और सूर्य रेखा (Sun Line)—दोनों ही शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा शुभ हों और एक दूसरे के समानान्तर हों साथ ही मस्तक रेखा (Head Line) भी शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा शुभ होकर सीधी हो तो यह धन-धान्य, ऐश्वर्य वैभव, भृत्य-वाहन आदि का सर्वोत्कृष्ट शुभ लक्षण है। इस योग वाले व्यक्ति की सीधी मस्तक रेखा (Head Line) उसकी व्यवहार कुशलता की विशेषता प्रदर्शित करती है और शेष दोनों रेखायें—भाग्य-रेखा (Fate Line) और सूर्य रेखा (Sun Line) उसके प्रत्येक कार्य में अत्यधिक सौभाग्य की सूचक हैं। इस लक्षण वाला व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान, मेधावी, विचारशील, दूरदर्शी नीति-निपुण, व्यवहार कुशल तथा परिश्रमी होता है। फलतः वह जिस किसी भी कार्य में हाथ डालता है उसी में उसे आशातीत सफलता प्राप्त होती है। इस व्यक्ति का अपने क्षेत्र में अत्यधिक प्रभाव रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथमें सूर्य-रेखा (Line of Sun) हृदय रेखा (Heart line) से ही आरम्भ होती है वह सरल-स्वभाव, उदार तथा सहानुभूति पूर्ण होता है। यह व्यक्ति अपनी सरलता और उदारता के कारण ही लोक-प्रिय होता है। और मान-सम्मान भी प्राप्त करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ मे सुस्पष्ट, शुद्ध, उत्तम, अक्षत, शुभ तथा प्रमाणानुसार आयु रेखा किंवा जीवन रेखा (Life line) और अन्तःकरण रेखा किंवा हृदय रेखा (Heart line) के साथ साथ उत्तम, शुद्ध, सुस्पष्ट, तथा अक्षत सूर्य रेखा (Line of Sun) अपने अधिकृत स्थान पर (मणिबन्ध से उद्भूत होकर) स्थित हो और इन तीनों रेखाओं को कोई अवरोध रेखा स्पर्श न करती हों अथवा काटती न हो तो अन्यान्य रेखाओं अथवा शुभ लक्षणों के एकान्त अभाव होने पर भी वह व्यक्ति दीर्घायु, स्त्री पुत्र पौत्र सम्पन्न धन धान्य सम्पन्न, ऐश्वर्य वैभव प्राप्त, भृत्य वाहन-युक्त, सम्मानित, प्रतिष्ठित, प्रभावशाली तथा जीवन में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति राज्य और समाज—दोनों क्षेत्रों में यथेष्ट मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठ प्राप्त करता है। यह व्यक्ति अवश्य ही उच्चासन प्राप्त करता है अथवा राज्य का उच्चाधिकारी होता है। शासकों, धनाध्यक्षों उच्च पदाधिकारियों तथा लोक-नेताओं, ग्राम-विशेषाधिकारियों आदि के हाथ में इस प्रकार के लक्षण प्रायः दृष्टिगोचर होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) चन्द्र-क्षेत्र (Mount of the Moon) से उद्भूत होकर अनामिका अंगुली के मूल में सूर्य-पर्वत पर अधिकृत-स्थान पर जावे और मस्तक-रेखा (Head line) का झुकाव चन्द्र क्षेत्र की ओर हो तो वह व्यक्ति कवित्व शक्ति सम्पन्न होता है। इस

लक्षण वाले व्यक्ति की रुचि विशेषतः गायन तथा वादन की ओर अधिक आकर्षित रहती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Sun line) और मस्तक-रेखा (Head line)—दोनों उत्तम, शुद्ध, सुस्पष्ट तथा अक्षत हों तो व्यक्ति विशाल-दृष्टि, विचारशील तथा दूरदर्शी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति साधारणतः नीति निपुण, व्यवहार कुशल तथा लोक-प्रिय होता है। दैवयोग से किसी व्यक्ति के हाथ में इन रेखाओं का एकान्त अभाव हो तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति दरिद्री होगा। इनके सर्वथा न होने से वह व्यक्ति अति व्ययी किंवा अप व्ययी होगा इस लक्षण वाला व्यक्ति धन की तनिक भी चिन्ता नहीं करता। धन का सदुपयोग करने का विचार तो वह स्वप्न में भी नहीं करता। फलतः उसके पास धन-संग्रह अत्यल्प होता है। यहां पर विशेष रूप से स्मरण रखना चाहिये कि आयुमान के आधार पर जिस २ आयु वर्ष में इस लक्षण वाले व्यक्ति की सूर्य रेखा (Line of Sun) विशेष रूप से अत्यधिक गहरी हो उस २ आयु-वर्ष में उसे आर्थिक आपत्ति का विशेष रूप से आखेट रहना होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) और भाग्य-रेखा (Fate line) दोनों अपने मध्य-भाग में मिलकर एकाकार हो गई हों और कुछ दूर इस प्रकार चलकर फिर अपने अपने स्थान को क्रमशः सूर्य और शनी क्षेत्र को गई हों। इस लक्षण वाले व्यक्ति का भाग्योदय किसी कला के द्वारा होता है।

यह व्यक्ति धनाढ्य तो अवश्य होता है कि यदि ये दोनों रेखा परस्पर एक दूसरे को काटती हुई जाती हों तो उसके महत्वपूर्ण कार्यों में बड़ी-बड़ी आपदाओं के पश्चात् सफलता प्राप्त होती है।

सूर्य-रेखा (Sun Line) का विविध रेखाओं के साथ फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा के साथ-साथ सूर्य-क्षेत्र पर अन्यान्य रेखायें भी आ रही हों (देखो चित्र) तो इस लक्षण वाले व्यक्ति की उन्नति तथा कीर्ति अनेकानेक प्रकार से हो सकती है। इसकी उन्नति तथा कीर्ति के साधन विचित्र ग्रह-क्षेत्रों, करतल गत शुभाशुभ लक्षणों अथवा अंगुलियों के शुभाशुभ परिणामों पर अवलम्बित होते हैं। किन्तु उपरोक्त अन्यान्य रेखाओं को अवरोध रेखायें काट रही हों तो ऐसी दशा में उक्त व्यक्ति की रुचि तो बहु-मुखी अवश्य होती है, किन्तु निर्धनता, घृणा, स्पर्धाभाव, उदासीनता, अनुदारता और अत्याधिक कृपणता उसके मार्ग में बाधक सिद्ध होती है। यह व्यक्ति किसी प्रकार का उद्योग अथवा प्रयास करने का साहस तो अवश्य करता है, किन्तु वह अपनी प्रकृति से विवश होता है। फलतः उसे सफलता प्राप्त नहीं होती। इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को हमारी यही सत्सम्मति है कि वह अपने विचारों की भिन्नता तथा मनोवृति की अस्थिरता का आखेट न बने और अपनी समस्त शक्ति को दृढ़ निश्चय के साथ एक ही उद्योग में संलग्न करदे। इसके अतिरिक्त अपनी कर्तृत्वशक्ति को भी घृणा, स्पर्धा, उदासीनता तथा अनुदारता का आखेट होने

से रक्षा करे। केवल मात्र इसी मन्त्र की शक्ति से वह अपने जीवन को शान्तिमय तथा सरल बना सकता है। अन्यथा—"कर्म गति टारैं नहीं टरै।"

जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) सूर्य-क्षेत्र पर सर्प जिह्वाकार (Y) अथवा त्रिशूलाकार हो जाती है। वह व्यक्ति प्रसिद्धि तो अवश्यमेव प्राप्त करता है; किन्तु उस प्रसिद्धि से उसे लाभ अणु-मात्र भी नहीं होता। इसका एक मात्र कारण यह है कि रेखा के स्व-ग्रह-स्थान पर सर्प-जिह्वाकार अथवा त्रिशूलाकार होने के फल-स्वरुप उस (सम्बन्धित) व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) की मनोवृत्ति अत्यधिक चंचल हो जाती है। वे एकाग्र-चित्त नहीं होते। उनकी यह चंचलता ही उनके अभ्युदय का रोड़ अथवा अवरोधक का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को भी हमारी उपरोक्त सम्मति के अनुसार ही अपना भविष्य उज्ज्वल करना चाहिये।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) आरम्भ ही से भाग्य-रेखा (Line of Fate) के साथ एकाकार हो और इस प्रकार की भाग्य-रेखा में कोई द्वीप आदि अशुभ लक्षण न हो तथा वह अन्यान्य सभी प्रकार से निर्दोष हो तो इस लक्षण वाले व्यक्ति को उन्नति के मार्ग में कभी भी किसी भी प्रकार की बाधा नहीं उपस्थित होगी। हाँ, इतना अवश्य है कि जिस स्थान पर सूर्य-रेखा भाग रेखा से अलग होगी, वर्षमान के

आधार पर उस स्थान पर व्यक्ति की आयु के प्रमाण वाले वर्ष में ही उस (स्त्री अथवा पुरुष) को अपने कामों में सफलता प्राप्त होने लगेगी) ।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) की कोई शाखा किसी अन्य ग्रह-क्षेत्र को जाती हो तो उस व्यक्ति की उन्नति और भाग्योदय उस ग्रह के गुणों के अनुरूप ही होगा, जिसके क्षेत्र को वह शाखा जाती हो। (देखो चित्र) यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि वर्षमान के आधार पर आयु के जिस वर्ष में जीवन-रेखा से यह शाखा निकल रही होगी उसी आयु से उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) में उक्त सम्बन्धित ग्रह के गुण-दोष परिलक्षित होने लगेंगे और उसके जीवन पर उनकी छाप पड़ने लगेगी। दूसरी बात जो स्मरण रहनी चाहिए वह यह है कि यदि दैवयोग से इस प्रकार की शाखायें एक से अधिक ग्रह-स्थानों को जाती हों तो उस व्यक्ति में क्रमशः उन सभी ग्रहों के गुण-दोषों का समावेश होता जायगा जिन-जिन पर सूर्य-रेखा की शाखायें क्रमशः जायेंगी। इन शाखाओं का निकलना जब समाप्त हो जायगा तब उस व्यक्ति में उन सब ग्रहों के गुण-दोषों का विलक्षण समावेश होगा, किन्तु तत्सम्बन्धित व्यक्ति के हाथ में जिस ग्रह का क्षेत्र जितना प्रबल होगा उसका प्रभाव भी उतना ही प्रबल होगा और वह अपने अनुकूल ही लाभ और हानि प्रदान करेगा। हम अपने पाठकों के लाभार्थ विभिन्न ग्रहों को जाने वाली शाखाओं के पृथक-पृथक गुण-दोष निम्नांकित पंक्तियों में अंकित करते हैं—

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा की शाखा बुध ग्रह के क्षेत्र को जाती हो वह व्यक्ति व्यापार, विज्ञान, साहित्य तथा अन्यान्य व्यवहारिक कार्यों में उन्नति करेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा की शाखा मंगल ग्रह के क्षेत्र की ओर जाती हो उस व्यक्ति को पर्यटन अथवा प्रवास ही विशेष रुचिकर होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः सैनिक, नाविक, पृथ्वी के नवीन मार्गों अथवा नवीन देशों की खोज करने वाला अथवा क्रीड़ा-विशेषज्ञ ही अधिक होता है। यह व्यक्ति घुड़ दौड़ अथवा घोड़ों से सम्बन्धित ही कोई अन्य कार्य करता है। यह स्वभाव से ही दुस्साहसी होता है और जिस किसी भी काम में भय प्रतीत होता हो उसे हठ-पूर्वक अग्रसर होकर करता है। इसे अत्यन्त भड़कीले रंगों से प्रेम होता है। चमकीला लाल और नीला रंग उसे अधिक प्रिय होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति शिरस्त्राण, कवच, शस्त्रास्त्र तथा अन्यान्य युद्धोपयोगी उपकरणों तथा वस्तुओं का संग्रह करने का प्रेमी होता है और ऐतिहासिक-युद्ध गाथाओं का लगन के साथ अध्ययन करता है। कविता और संगीत में उसे वीर रस प्रधानता से प्रिय है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) की शाखा चन्द्र-क्षेत्र (Lunar) को जाती हो वह व्यक्ति स्वभावतः ही प्रेमी होता है और एकान्तवास उसे अधिक प्रिय होता है। यह व्यक्ति कल्पना-लोक में विचरने वाला होता है तथा प्रायः दिवा-स्वप्न देखा करता है। वह बहुधा उदासीन रहता है और

कविता-जनित मनोविकारों का आखेट रहता है। वह प्रायः गुप्त रहना पसन्द करता है और बहुधा भविष्य के गर्भ में शुभ-सूचना प्राप्त करने की आशा में रहता है। यह व्यक्ति अधिकांशतः विचारों में तन्मय रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति भौतिक-वादी (मायावादी) काव्यानुरागी, वीर, सज्जन, और लहरी होता है किन्तु उदारता, दानशीलता तथा सहानुभूति इनके स्वभाव के प्रधान अंग होते हैं और यह व्यक्ति अत्यन्त सभ्य होते हैं। यह प्रायः भाग्य के भरोसे रहा करते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) की शाखा शुक्र-स्थान को जाती है उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को यात्रा से विशेष प्रेम होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति संगीत, अभिनय, चित्रकला आदि का प्रेमी होता है। यह व्यक्ति व्यापार, व्यवसाय में अधिक रुचि रखता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Sun line) की शाखा बृहस्पति-क्षेत्र को जाती हो उस व्यक्ति की भाग्य-रेखा की शक्ति अनायास ही द्विगुणित हो जाती है। दैवयोग से यदि इस लक्षण वाले व्यक्ति के हाथ में भाग्य-रेखा का सर्वथा अभाव हो अथवा वह आकार में छोटी होने के कारण अपने अधिकृत-क्षेत्र अर्थात् शनी-क्षेत्र तक न जाती हो तो उसकी यह कमी इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा से पूर्ण हो जाती है। इस व्यक्ति पर सौभाग्य की विशेष अनुकम्पा रहती है। यदि भाग्य रेखा भी शुद्ध, सुस्पष्ट तथा शुभ हो तो उस व्यक्ति के भाग्य की सीमा कौन आंक सकता है।

जिस व्यक्ति की सूर्य-रेखा (Line of Sun) की शाखा बृहस्पति-क्षेत्र को जाती हो वह व्यक्ति अनायास ही दूसरों पर अधिकार प्राप्त कर लेता है। शासन-क्षेत्र में इसे विशेषरूप से उन्नति प्राप्त होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अवश्य ही यशस्वी होता है। उसे अपने जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव, भृत्य-वाहन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में करतल के मध्य भाग से आरम्भ होने वाली अनेक छोटी-छोटी रेखायें सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचती हैं वह भी सौभाग्य-सूचक ही होती हैं। किन्तु इस प्रकार की रेखायें इतनी उपयोगी नहीं होतीं जितनी उपयोगी अकेली शुद्ध, सुस्पष्ट तथा शुभ और आदि से अन्त तक अपने अधिकृत स्थान पर रहने वाली तथा मध्यमा अंगुली के मूल में शनी-क्षेत्र पर जाने वाली भाग्य रेखा होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-स्थान पर बहुत-सी छोटी २ रेखायें हों वह व्यक्ति चंचल मनोवृत्ति वाला होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति कभी-कभी किसी एक काम को स्थाई रूप से नहीं करता। आज यह तो कल वह। यही कारण है कि इस व्यक्ति को किसी एक कार्य में विशेष योग्यता प्राप्त नहीं होती।

किसी-किसी व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) निकम्मी और भाग्य-हीन अर्थात् अशुभ भाग्य-रेखा (Fate line) के साथ ही दृष्टिगोचर होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति चाहे उसका भाग्य कितना ही निकृष्ट क्यों न हो, उसे दुःखों की

घटायें क्यों न घेरे रहतीं हों और वह जीवन मे कितना ही निराश क्यों न हो; किन्तु सदैव प्रसन्न, विनोदी और हंस मुख रहेगा।

कभी-कभी सूर्य-रेखा (Line of Sun) के साथ-साथ उसके समानान्तर दो या इससे अधिक रेखायें दृष्टिगोचर होती हैं। इस प्रकार की रेखायें सूर्य-रेखायें ही होती हैं। इनका होना अशुभ नहीं है। इनके द्वारा सम्बन्धित व्यक्ति की विभिन्न-क्षेत्रों में सफलता का परिचय प्राप्त होता है, किन्तु इन सबसे अच्छा यही है कि एक ही शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा अधिकृत सूर्य-रेखा व्यक्ति के हाथ में रहे।

शुक्र ग्रह के क्षेत्रों की ओर से आने वाली वे सभी रेखायें जो सूर्य-रेखा को काटती हैं अशुभ सूचक हैं। इन विपरीत रेखाओं द्वारा सर्य के काटे जाने अथवा स्पर्श करने का अर्थ यह होता है कि उक्त व्यक्ति के प्रति जन-साधारण में कुछ घृणा के भाव उपस्थित हैं। हां, इतना अवश्य है कि शुक्र-ग्रह के क्षेत्र से आनेवाली ये अवरोधक रेखाये उपरोक्त घृणा-सम्बन्ध सम्बन्धित व्यक्ति के अपने निजी-वर्ग अथवा जातिवालों तक ही सीमित अवश्य रखती हैं। इसके विपरीत यदि यह रेखायें मंगल-क्षेत्र से उद्भूत हों तो इस घृणा-सम्बन्ध का विस्तार अधिक व्यापक हो जाता है और वह सार्वजनिक रूप ग्रहण कर लेता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को अपने कार्यों में शत्रुओं द्वारा हानि प्राप्त होती है। कभी-कभी इस व्यक्ति का अत्यधिक उत्साह भी इसकी सफलता में बाधक हो जाता है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के सम्बन्ध में विशेष-विचार

सूर्य-रेखा का विवेचन करते हुये हमने अब तक उसके सम्बन्ध में यथा-सम्भव सभी दृष्टिकोणों से विचार किया है। उसकी अपनी स्थिति, प्रभाव आदि का विस्तृत वर्णन करने के साथ २ उसकी शाखाओं पर भी प्रकाश डाला गया है और हस्तगत प्रमुख रेखाओं के साथ उसका फल भी सविस्तार लिखा है। इसके अतिरिक्त अन्यान्य रेखाओं का इस विलक्षण रेखा पर जो शुभाशुभ प्रभाव होता है उसका भी वर्णन किया है। किन्तु अभी भी हमें इस सम्बन्ध में सन्तोष नहीं हुआ है। यदि सच पूछा जाय तो केवल इस 'सूर्य-रेखा' के द्वारा ही मानव-जीवन का आद्योपान्त विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है। सूर्य-रेखा की गणना मानव-हस्त-गत प्रमुख रेखाओं में है। इसका एक-मात्र कारण यही है कि वास्तव में यह रेखा अत्यन्त महत्वपूर्ण है और मानव-जीवन में यह वही स्थान रखती है जो भौतिक जीवन में सूर्य रखता है। हमारे इस वक्तव्य का अर्थ यह नहीं है कि इसके अभाव में मानव जीवन सर्वथा निस्सार अथवा व्यर्थ हो जाता है। किन्तु इसके होने से उसमें सोने मे सुगन्ध अवश्य हो जाती है। इस महत्वपूर्ण रेखा के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भेदों, प्रभावों अथवा फलों पर व्यापक अध्ययन किया जाय तो एक विशाल ग्रन्थ तैयार हो जायगा। प्रस्तुत पुस्तक में इतना स्थान नहीं है और न हमारे पास इतना समय ही है कि इसका साङ्गोपाङ्ग वर्णन करते रहें। फिर भी अपने पाठकों की ज्ञान वृद्धि के हेतु हम इस रेखा पर निम्नांकित पंक्तियों में विशेष रूप से विचार करेंगे।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) अपने अधिकृत स्थान अर्थात् सूर्य-क्षेत्र को न जाकर मध्यमा अंगुली की ओर शनी-क्षेत्र को जारही हो तो उस व्यक्तिको उन्नति और सफलता प्राप्त तो अवश्य होती है, किन्तु उनके मार्ग में व्यथायें, शोक तथा बाधायें अत्यधिक उत्पन्न होती हैं। साधारणतः उनको प्रत्येक कार्य में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति धन-वैभव सम्पन्न तथा उन्नतिशील होते हुए भी आजीवन प्रायः दुःखी ही रहते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) शनी क्षेत्र को काट रही हो अथवा अपनी कोई शाखा गुरु क्षेत्र को भेज रही हो तो उस व्यक्ति की उन्नति राज्य द्वारा उच्च-पद प्राप्त करने अथवा किसी का शासनाधिकार प्राप्त करने के रूप में होगी। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिये कि यह लक्षण किसी भी दशा में उतना प्रभावपूर्ण नहीं है जितना स्वयं भाग्य-रेखा (Fate Line) के तर्जनी अंगुली की ओर जाने से प्राप्त होता है। हां, यदि भाग्य रेखा (Fate line) भी तर्जनी अंगुली की ओर जाती हो और सूर्य-रेखा शनी क्षेत्र को काटती हो अथवा इसकी कोई शाखा गुरुक्षेत्र को जाती हो तो इससे श्रेष्ठ तथा भाग्यशाली शुभ लक्षण और क्या हो सकता है ?

जिस व्यक्ति के हाथ में अनामिका अंगुली तर्जनी अंगुली से अधिक लम्बी हो अथवा मध्यमा अंगुली के बराबर लम्बी हो और सूर्य रेखा (Line of Sun) भाग्य रेखा (Fate line)

मे अधिक प्रबल हो तो इस लक्षण वाले व्यक्ति की प्रवृति द्यूत-क्रीड़ा की ओर विशेष रूप से आकर्षित होती है, किन्तु उसमें गुणों का अभाव नहीं होता और वह सम्पतिशाली भी होता है। हां, यदि मस्तक रेखा (Head line) नीचे की ओर झुकी हो तो उसका इस व्यक्ति की मनोवृति पर विशेष रूप से बुरा प्रभाव होता है। इसके प्रभाव से उसे द्यूत क्रीड़ा का व्यसन हो जाता है और वह सदैव सट्टा, लाटरी, जुआ आदि में व्यस्त रहता है। यह व्यक्ति जोखम के काम करने की ओर अधिक प्रवृत्त रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा कुछ दूर तक जाकर बाद में अत्यन्त अस्पष्ट हो गई हो अथवा लुप्त हो गई हो और थोड़ी दूर इस स्थिति में रह कर पुनः सुस्पष्ट हो गई हो तो इस लक्षण वाला व्यक्ति उसके पुनः उदय होनेसे पूर्व के जीवनमें शोक,चिन्ता आपदा तथा अन्धकार से पीड़ित रहेगा। यद्यपि उसकी बातें अत्यन्त रोचक और तथ्यपूर्ण सी होंगी किन्तु वास्तव में वह निस्सार ही होंगी। हां, सूर्य रेखा के पुनः उदय होने के समय से उसका जीवन प्रकाशयुक्त, सुखपूर्ण तथा सफल अवश्य ही हो जायगा। इसके बाद उसका भाग्य भली प्रकार से चमकेगा।

जिस व्यक्ति का करतल मध्य-भाग में अत्यधिक निम्न हो उसके हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) अपनी समस्त शक्ति को खो देती है। करतल के निम्न होने के फलस्वरूप उस व्यक्ति पर दुर्भाग्य और आपत्तियों का सदैव आक्रमण रहता है।

किन्तु इतना होने पर भी सूर्य रेखा के प्रभाव से उसकी कार्य-शक्ति में कोई अन्तर नहीं आता। उसकी साख बनी रहती है और वह सदैव आशावादी रहता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि जिस व्यक्ति का करतल निम्न होता है उसका स्वास्थ्य सदैव अत्यन्त निर्बल रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर जाने वाली शुद्ध, सरल, सुस्पष्ट तथा अक्षत सूर्य-रेखा विद्यमान हो, वह महान यशस्वी पराक्रमी तथा विभिन्न विद्याओं में पारदर्शी विद्वान होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ मे अनामिका अंगुली मध्यमा अंगुली के बराबर हो और सूर्य-रेखा (Line of Sun) अतिशय बारीक और छोटी हो (अर्थात् बलहीन हो) वह व्यक्ति व्यापार द्वारा अतुलित धन प्राप्त करता है। उसे अपने जीवन में ऐश्वर्य-सम्पन्न मलेच्छों तथा वैभवशाली यवनों के सम्पर्क से प्रभुता, धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव आदि प्राप्त होता है। यह व्यक्ति अपेक्षाकृत विद्वान भी होता है, किन्तु इसे द्यूत-सट्टा आदि का अत्यधिक व्यसन होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वभावतः ही धन-संचय की ओर विशेष-रूप से प्रवृत्त रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में अनामिका अंगुली मध्यमांगुली से छोटी हो और सूर्य-रेखा (Line of Sun) शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा शक्तिशाली हो, वह व्यक्ति शुद्ध चरित्र, धार्मिक, अनेक विद्याओं में निपुण, नीतिज्ञ, पराक्रमी और सद्विचार शील होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा से न छूने वाली क्षत-विक्षत किन्तु सीधी और सरल सूर्य-रेखा अनामिका अंगुली के मूल तक जाये वह व्यक्ति उत्तम स्वभाव का होता है। उसे राज्याश्रय प्राप्त होता है और स्वभावतः ही शास्त्रों में व्युत्पन्न बुद्धि होता है इस लक्षण वाला व्यक्ति सुलेखक, साहित्यक और दयाशील होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-नेत्र से उद्‌भूत एक वक्र सूर्य रेखा हृदय रेखा और मातृ रेखा को भेद कर जीवन रेखा (Life line) में जा मिले, वह व्यक्ति यश, प्रतिष्ठा और समुन्नति का इच्छुक होता है। किन्तु इन अभिलाषाओं के होते हुये भी वह परिस्थितियों से अधिक प्रभावित होता है और विवश होकर अपनी इन इच्छाओं के विपरीत चलता है। इनकी ओर से उदासीन रहता है अथवा इनकी उपेक्षा करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः गृह-कलह से ऊबकर गृह-त्याग कर देता है। यह व्यक्ति स्वभावतः ही एकान्त-प्रिय, विरक्त और उदासीन होते हैं। इन्हें प्रायः सन्यास आश्रम विशेष रुचिकर होता है, किन्तु इनकी इच्छाशक्ति अधिक प्रबल नहीं होती। फलतः विवश होकर माया-ममता के फन्दे में फंसे रहते हैं। किन्तु अवसर प्राप्त होने पर वे नहीं चूकते और, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, गृहस्थाश्रम को तिलांजली देकर सन्यास ग्रहण कर लेते हैं।

उपरोक्त रेखा यदि क्षत-विक्षत होगी तो कदाचित् सन्यास ग्रहण कर लेने के पश्चात् भी वह व्यक्ति निश्चित रूप से पुनः

गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर लेता है। ऐसे लक्षण वाले व्यक्ति विरक्ति की भावनाओं से पूर्ण होने पर भी स्वभावतः ही कामिनी कांचन और कीर्ति के पाश से मुक्त नहीं होते और इन्हीं के फेर में अपना औचित्य भी खो बैठते हैं।

सौभाग्यवश यदि उक्त रेखा वक्र न होकर सीधी हुई और शुद्ध, सुस्पष्ट तथा अक्षत हुई तो वह व्यक्ति अपने मनोनुकूल किसी भी कला में पूर्ण उन्नति तथा सफलता प्राप्त कर लेता है। हां, व्यवसायिक हाथ वाले व्यक्ति के लिये यह फल प्राप्त नहीं होता।

जिस व्यक्ति के हाथ में गम्भीर, सुन्दर, अक्षत, शुद्ध तथा प्रमाणिक सूर्य-रेखा विद्यमान हो, वह व्यक्ति धर्मात्मा, प्रसिद्ध, धनवान और सुखी होता है। हस्तगत उत्तम रेखाओं का आकर्षण करने वाली और सम्पूर्ण छोटी-छोटी अवरोधक रेखाओं के कुप्रभाव को नष्ट करने वाली अथवा उनको परिवर्तित करने वाली रेखा को ही भाग्य रेखा अथवा सम्पत्ति रेखा कहते हैं। यह तो निर्विवाद सर्वमान्य सिद्धान्त है कि किसी भी व्यक्ति के हाथ में भाग्य-रेखा (Fate line) न होने पर, यह सूर्य-रेखा (Sun line) ही—यदि यह हाथ में सुन्दर, अक्षत, गम्भीर शुद्ध तथा प्रमाणिक स्वरूप में विद्यमान हो तो—भाग्य-रेखा (Fate line) का फल प्रदान करती है। यह हमने कितनी ही बार अनुभव किया है कि जिस किसी व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा का एकान्त अभाव होता है वह प्रायः विचारहीन, मूर्ख,

अपयशी और भाग्यहीन होता है। हां, यदि हस्तगत अन्यान्य रेखाओं अथवा चिन्हों में कुछेक या अधिकांश अत्यन्त शुभ-फल प्रद हों तो दूसरी बात है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा अक्षत, शुद्ध, गम्भीर, प्रमाणिक तथा सुन्दर हो तो वह व्यक्ति अवश्यमेव विचारशील, दूरदर्शी, कुशाग्रबुद्धि, यशस्वी विद्वान, नीतिपरायण, नियमबद्ध, कला-कुशल, लोक-प्रिय, कुल-दीपक; प्रतिष्ठित, राज्य-सम्मानित, धन-वैभव-सम्पन्न तथा सुखी होगा। इस लक्षण वाले व्यक्ति को स्त्री-पुत्र-पौत्र, परिजन-बन्धु बान्धव, भृत्य-वाहन, इष्ट मित्र आदि सभी का पूर्ण सुख प्राप्त रहेगा।

कभी-कभी यह भी देखा गया है कि सभी प्रकार से शुद्ध एवं प्रमाणिक सूर्य-रेखा के विद्यमान होते हुये भी मनुष्य आपत्ति ग्रस्त तथा दुःखी रहता है। किन्तु इस कारण सूर्य-रेखा का दोष नहीं है। पाठको, आप लोगों ने अपने साधारण-जीवन में अनेकों बार देखा होगा कि कभी-कभी सभी बातें श्रेष्ठ होते हुये भी कोई काम आशा के विपरीत खराब हो जाता है। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो इस खराबी का कोई न कोई अत्यन्त गूढ़ रहस्य विद्यमान रहता है। यही दशा इस प्रकार के अशुभ-फल होने पर सूर्य-रेखा के सम्बन्ध में पायी जाती है। वास्तव में इस रेखा के होते हुये भी वही व्यक्ति आपत्ति ग्रस्त एवं दुःखी रहेगा जिसकी अंगुलियां—विशेषकर अनामिका अंगुली टेढ़ी होगी, करतल का मध्यभाग (अर्थात राहु-क्षेत्र) गहरा होगा अथवा

स्वयं हाथ ही अशुभ होगा। यहां यह स्मरण रखना चहिए कि इन अशुभ योगों के उपस्थित रहते सूर्य-रेखा (Line of Sun) अपना शुभ फल नहीं दे सकती। इसका शुभफल उसी समय प्राप्त होता है जबकि अन्यान्य अशुभ योग इसे निरर्थक न बनाते हों। अशुभ योगों के अभावमें अन्य कोई भी शुभयोग इसकी सहायता करें अथवा न करें यह अपना शुभफल अवश्यमेव प्रदान करेगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र उच्च हो और उस पर सूर्य-रेखा के अतिरिक्त कुछ अन्य रेखायें भी विद्यमान हों तथा अन्यान्य रेखाओं द्वारा अथवा परस्पर ही कटती हुई न हों—तो वह व्यक्ति एक से अधिक साधनों द्वारा अपने जीवन में अभ्युदय प्राप्त करता है तथा कीर्ति-लाभ करता है। किन्तु इस योग का अधिकांश शुभ-फल अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों तथा करतल-गत शुभ चिह्नों अथवा अंगुलियों के शुभ लक्षणों पर अवलम्बित है। जिस परिमाण में अन्यान्य ग्रह-क्षेत्र शुभ होंगे, करतल-गत चिह्न उत्तम होंगे अथवा अंगुलियों के लक्षण श्रेष्ठ होंगे, उसी परिमाण में मनुष्य को उपरोक्त फल प्राप्त होगा। किन्तु यदि उक्त अन्यान्य रेखाओं को अवरोधक रेखायें काट रही हों तो वह व्यक्ति उन्नति के अनेकों मार्गों की ओर झुकेगा तो अवश्य, किन्तु उसकी स्थिति, मनःस्थिति तथा स्वभाव उसके मार्ग में बाधक होगा और उसे अपने प्रयत्नों में सफलता प्राप्त नहीं ही होगी। इस लक्षण वाले व्यक्ति स्वभावतः ही अत्यन्त कृपण, उदास, स्पर्धाशील, अनुदार तथा घृणा युक्त होते हैं। वह

निर्धन भी होते हैं। यही बातें उसके मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं। हमने यह भी देखा है कि जितनी अवरोधक रेखायें उक्त रेखाओं को काटती हैं उतने ही उस व्यक्ति मे दुर्गुण होते हैं। केवल एक या दो अवरोधक रेखाओं के प्रभाव से उसके स्वभाव में दोष अवश्य आ जाते हैं किन्तु वह निर्धन नही होता। तीन या तीन से अधिक अवरोध रेखाओं के उपस्थित होने पर ही दरिद्री होने का योग उपस्थित होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने अभ्युदय के लिए साहस करके उद्योग तो करता है किन्तु अपने स्वभाव से विवश होता है। फलतः उसे सफलता प्राप्त नहीं होती। अतः इस व्यक्ति को अपना जीवन अपेक्षाकृत सुखी तथा सफल बनाने के लये अपनी समस्त शक्ति तथा विचारों को एकत्रित करके एक ही ओर लगाकर लक्ष्य सिद्धि का यत्न करना चाहिये। विभिन्न उपायों तथा प्रयत्नों मे अपनी शक्ति को व्यर्थ ही नष्ट नहीं करना चाहिये। तभी उसे सफलता प्राप्त हो सकती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) से उद्भून दो-तीन शाखायें हृदय-रेखा (Heart Line) को स्पर्श न करें, वह व्यक्ति अनेक कार्यों को सम्पादन करने का अभिलाषी होकर विद्या द्वारा जीविकार्जन के कार्य में संलग्न रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति विद्वान, उदार, मधुरभाषी, बुद्धिमान, सत्संगी तथा कला-कौशल में आत्मिक उन्नति का इच्छुक होता है उसकी आकांक्षायें उच्चस्तर की होती हैं। किन्तु इन सब श्रेष्ठ बातों के उपस्थित होते हुये भी वह किसी भी कार्य को पूर्ण रूपेण

सम्पादन करने में असमर्थ ही रहता है। इसका एक मात्र कारण उसकी मनः स्थिति है इसकी बुद्धि प्रायः सदैव भ्रमित-सी रहती है इसके प्रभाव से वह अनपेक्षित शीघ्रता करके अपना काम स्वयं ही नष्ट कर देता है और वही उसकी असफलता का कारण बनता है।

उपरोक्त शाखायें यदि क्षत-विक्षत हों तो वह व्यक्ति चंचल बुद्धि वाला होता है। फलतः वह कार्यके आरम्भ में ही निराश सा हो उठता है। यदि कोई अन्य व्यक्ति उसके साहस को दृढ़ करा कर उसके द्वारा कोई कार्य कराने का प्रयत्न करे भी तो वह अपनी स्वभाव-गत चंचलता के कारण उसे नष्ट कर देता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति इसी कारण प्रायः अपयश के भागी भी होते देखे हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः आलसी, अकर्मण्य, कार्यहीन काम चोर, अनर्गल-वाद-विवाद करने वाले, हेंकड़ तथा झगडालू होते हैं। अपने जीवन में वे कितने ही इस प्रकार के कार्य कर बैठते हैं जिनके कारण उनको चिन्तायें तथा दरिद्रता घेर लेती है और वे आजीवन दुःखी रहते हैं। किन्तु इस रेखा के प्रभाव से वे भ्रष्टाचारी और चरित्रहीन कदापि नहीं होते इन दुर्गुणों की ओर से उन्हें स्वभाविक अरुचि होती है। यह अनुभव सिद्ध बात है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) जीवन-रेखा (Life line) से उद्भूत हो वह भविष्य में उस व्यक्ति की उन्नति और यश बढ़ाने वाली होती है। उसकी यह

उन्नति उसके निजी परिश्रम और योग्यता द्वारा होती है। वह अपनी इच्छानुसार किसी कला या व्यवसाय में पूरी उन्नति करता है। यह द्रव्यग्राही होने का अचूक लक्षण है। ऐसे व्यक्ति चित्र-कला, शिल्प-कला, नाट्य-कला आदि से विशेष प्रसिद्धि और यश प्राप्त करते हैं। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश भाग सौन्दर्योपासना में ही व्यतीत करता। है ऐसे व्यक्ति को सूर्य-रेखा के जीवन रेखा पर मिलने के समय रेखामान से आयु का जो वर्ष प्राप्त होता है उसी वर्ष में अधिक उन्नति तथा धन-ऐश्वर्य का अधिक लाभ अवश्यमेव प्राप्त होता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा का व्यवसायिक हाथ में उतना शुभ प्रभाव नहीं होता जितना अन्यान्य प्रकार के हाथों में होता है।

जिस व्यक्ति का हाथ व्यवसायिक हाथ हो और उसमें सूर्य-रेखा (Line of Sun) जीवन-रेखा (Line of life) से उदय होती हो तो इस लक्षण वाला व्यक्ति सूर्य-रेखा और जीवन रेखा के मिलन स्थान पर रेखा मान से अपनी आयु में प्राप्त वर्ष में अवश्यमेव उन्नति करेगा, किन्तु जैसा कि हम उपरोक्त पंक्तियों में लिख चुके हैं उसकी यह उन्नति उसके जीवन के लिये शुभ-प्रद सिद्ध नहीं होगी। वह व्यक्ति अपनी इस उन्नति का दुरुपयोग करेगा और भविष्य में विभिन्न अशुभ परिवर्तनों के साथ ही उसका जीवन व्यतीत होगा। अपने आप को इन अशुभ घटनाओं से बचाने के लिये इस व्यक्ति को अपने इष्ट-मित्र,

परिजन, बन्धु बान्धवों आदि से सदैव सतर्क रहना चाहिये। इसके जीवन में ये ही बाधक होंगे। यह फल सूर्य-रेखा का व्यवसायिक हाथ में जीवन रेखा से उदय होने का ही है—यह स्मरण रखना चाहिये।

जिस व्यक्ति के हाथ में जीवन रेखा (Line of life) से उद्भूत सूर्य-रेखा (Line of Sun) जीवन-रेखा को पार करके शुक्र-क्षेत्र की ओर पहुंच जाय उस व्यक्ति के अभ्युदय अथवा धन लाभ का आधार प्रेम होगा। इस लक्षण वाला व्यक्ति अवश्यमेव किसी धनाढ्य व्यक्ति के द्वारा सम्पत्ति-लाभ करता है। इस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) का या तो किसी धनवान व्यक्ति (पुरुष अथवा स्त्री) से प्रेम सम्बन्ध स्थापित होता है और इसके द्वारा उसे उस धनवान व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) से धन प्राप्त होता है अथवा उसका किसी धनवान (पुरुष अथवा स्त्री) के साथ विवाह-सम्बन्ध होता है और इस प्रकार उसे धन प्राप्त होता है। किन्तु उसे सूर्य-रेखा और जीवन रेखा के संगम-स्थान पर रेखा-मान से प्राप्त आयु-वर्ष में उपरोक्त किसी एक प्रकार से धन अवश्य ही प्राप्त होगा और इस प्रकार उसकी आर्थिक स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन हो जायगा। इसके पश्चात् वह व्यक्ति अनेक उत्तमोत्तम कार्य कर विख्यात हो जायगा। सम्भव है वह किसी नवीन संस्थान (Firm) को जन्म दे। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा को कोई अन्य रेखा काटती न हो, विशेषकर शुक्र क्षेत्र

पर उसे कोई अवरोध रेखा स्पर्श तक न करती हो, तब ही यह फल प्राप्त होगा अन्यथा इसका परिणाम विपरीत होगा। जैसे उसके कार्यों में बाधायें उपस्थित होंगी और वह सदैव चिन्ता आदि से घिरा रहेगा। साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिये कि इस लक्षण वाली सूर्य रेखा जिस परिमाण मे सूर्य क्षेत्र पर अधिकार करेगी उसी परिमाण में अर्थ सिद्धि अधिक होगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में जीवन रेखा (Line of life) से उद्भूत सूर्य-रेखा (Line of Sun) जीवन रेखा को पार करके ठीक शुक्र-क्षेत्र पर पहुंच जाय अथवा अंगुष्ठ-मूल तक चली जाय वह व्यक्ति महा-पराक्रमी, शक्तिशाली, तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पन्न तथा प्रतापशाली होता है। इसका स्वभाव अत्यन्त विनम्र होता है और आबाल-वृद्ध नर-नारी सभी से प्रेममय व्यवहार करता है। यदि सौभाग्यवश अंगुष्ठ मूल पर (जहां कि सूर्य-रेखा का छोर हो) यव-चिह्न भी अंकित हो तो उस व्यक्ति को प्रतापी और गुणवान पुत्र प्राप्त होता है और उसका समस्त जीवन सुखमय व्यतीत होता है। यह स्मरण रहे कि इन दोनों प्रकार के शुभ फलों की प्राप्ती उसी दशा में होगी जब कि यह सूर्य-रेखा सुन्दर, सुस्पष्ट, अचल, शुद्ध, गम्भीर तथा प्रमाणानुसार होगी और उसे शुक्र-क्षेत्र गत अन्यान्य रेखायें अथवा अवरोधक रेखायें काटती नहीं होंगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा मंगल ग्रह के प्रथम क्षेत्र (अर्थात् बुध-क्षेत्र और चन्द्र-क्षेत्र के मध्य में स्थिति मंगल क्षेत्र)

पर पहुंचती है वह व्यक्ति अति-परिश्रमी, अनेक विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करने वाला और अनेकानेक संकट झेलने के बाद अभ्युदय प्राप्त कर भाग्यशाली बनने वाला होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति अन्य व्यक्ति से अकारण ही ईर्षा-द्वेष तथा डाह रखते हैं और इन्हीं लोगों के द्वारा उसे विविध यातनायें तथा बाधायें उत्पन्न होने की अधिक सम्भावना होती है, किन्तु इस लक्षण वाला व्यक्ति विलक्षण साहसी और उद्यमशील होता है और अपने साहस तथा श्रमशीलता के बल पर ही वह निश्चय पूर्वक उन सभी विघ्न-बाधाओं तथा विरोधियों पर अनायास ही विजय प्राप्त करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति सदाचारी, सत्य प्रिय, कार्य-कुशल तथा विचारशील होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः कुशल-व्यापारी, अथवा सफल चिकित्सक होते हैं।

जिस व्यक्ति की सूर्य-रेखा (Line of Sun) हृदय-रेखा को स्पर्श करती है वह व्यक्ति अपने जीवन के छप्पनवें वर्ष के बाद उन्नति करता है। हां, छप्पनवें वर्ष से ही उसे अपने इष्ट-मित्रों, परिजनों तथा बन्धु-बान्धवों का सुख अवश्य प्राप्त होगा। किन्तु इस फल की प्राप्ति उसी दशा मे होगी जब सूर्य रेखा हृदय-रेखा से ऊपर सुस्पष्ट, शुद्ध, अक्षत, गम्भीर तथा प्रमाणानुसार होगी। यदि यह सूर्य-रेखा क्षत-विक्षत हुई तो उस व्यक्ति का जीवन काल आजन्म चिन्ताओं, बाधाओं तथा आपत्तियों से परिपूर्ण रहेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) मस्तक रेखा (Head Line) को स्पर्श करती हो (अर्थात् मस्तक-रेखा

पर्यन्त ही हो) अथवा मस्तक रेखा से उद्भूत सूर्य रेखा सूर्य-क्षेत्र तक जाती हो और वह सुस्पष्ट, सुन्दर, अक्षत, शुद्ध तथा प्रमाण-युक्त हो, उस व्यक्ति का भाग्योदय उसकी आयु के पैंतीसवें वर्ष में होता है और उसकी उन्नति उसके मस्तिष्क की शक्ति के आधार पर होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति उत्तम कोटि का रसिक, काव्य-मर्मज्ञ, साहित्यक र, ओजस्वी वक्ता, प्रतिभाशाली कवि, प्रभावशाली सुलेखक अथवा पत्रकार होता है। वह अत्यन्त उदार, सहानुभूति पूर्ण, मधुर भाषी तथा गुणज्ञ होता है। इस व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करने की विलक्षण शक्ति होती है। यह व्यक्ति अपने जीवन मे प्रायः सुखी और यशस्वी होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में मस्तक-रेखा (Head Line) से उद्भूत सूर्य-रेखा सुन्दर, सुस्पष्ट, गम्भीर, अक्षत, शुद्ध तथा प्रमाण-परिमाण की हो और वह सूर्य-क्षेत्र पर्यन्त जाती हो तथा उसके साथ एक अन्य सुस्पष्ट, शुद्ध, गम्भीर तथा अक्षत रेखा और हो तो वह व्यक्ति धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव भृत्य वाहन, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति जिस किसी भी कार्य में हाथ डालेगा उसी मे उसे सफलता प्राप्त होगी। उसके सामने उन्नतिकारक नवीन से नवीन योजनायें उपस्थित होती रहती हैं। यह व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) की सम्मति, परामर्श, अनुमति, निर्देश अथवा अनुशासन से कार्य नहीं करता, वरन् स्वयं अपनी स्वेच्छा से

स्वतन्त्रता पूर्वक ही प्रत्येक कार्य को करता है। इसके विचार उच्च कोटि के होते हैं।

उपरोक्त योग वाले व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा के साथ वाली दूसरी रेखा यदि क्षत-विक्षत हो अथवा कोई अवरोधक रेखा इन दोनों रेखाओं (सूर्य-रेखा तथा साथ वाली दूसरी रेखा) को काट रही हों अथवा इन में से किसी एक पर या दोनों पर द्वीप (यव) चिह्न हो तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से दूसरों के बहकाने में आकर अपनी उन्नति को मिट्टी में मिला कर अपने जीवन को दुःखों का आगार बना लेगा। अतः इस प्रकार के योग वाले व्यक्ति को अपने कार्य में किसी भी व्यक्ति से परामर्श तक नहीं करना चाहिये। यहां तक कि अपनी स्त्री तक से सम्मति नहीं लेनी चाहिये। उसे तो सदैव अपनी ही इच्छा से स्वतन्त्रता पूर्वक लगनशील होकर कार्य करना चाहिये।

जिस व्यक्ति के हाथ में सीधी, सुस्पष्ट, गम्भीर, अक्षत, शुद्ध एवं सुन्दर सूर्य-रेखा (Line of Sun) सूर्य क्षेत्र से मणिबन्ध पर्यन्त प्रमाणिक-परिमाण में हो वह व्यक्ति अपने जीवन में सर्व श्रेष्ठ तथा उत्तमोत्तम सौभाग्य का उपभोग करता है। उसके जीवन में सौभाग्य तथा प्रतिभा का अपूर्व समन्वय होता है। जिसके फल-स्वरूप उसे प्रत्येक कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः राजा; राज्य मन्त्री; प्रधान सेनापति, अत्युच्च कोटि का कलाकार, व्यापारी-व्यवसायी अथवा उद्योगपति होता है। वह शीलवान, गुणवान्, बहु-सेवक

युक्त, धनाढ्य, गुरुजन भक्त, प्रियभाषी, देव-ब्राह्मण-पूजक, धर्म-कर्म-परायण, जनहितानन्दकारी, जन-संकटहारी, लज्जायुक्त, सत्य-वादी, मेधावी अनेकानेक विद्याविद्, उन्नत शरीर, गौरवर्ण, बहु-कुटुम्बी और परायी चलाचल सम्पत्ति को भोगने वाला होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति जिस किसी क्षेत्र में पदार्पण करता है उसी में सर्वोच्च कोटि का पद प्राप्त करता है। स्पष्ट है कि यह व्यक्ति आजीवन सुखी और आनन्दित रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में उपरोक्त प्रकार की सूर्य-रेखा (Sun line) टेढ़ी हो तो उसके कार्यों की सफलता में विलम्ब होता है। इसके अतिरिक्त उस व्यक्ति को अपने ही ऊपर भ्रम होता है और अपने ही गुणों में शंका होती है। वह प्रायः —'मैं सत्यवादी हूँ अथवा नहीं, दूसरे व्यक्ति मेरा सम्मान करते हैं अथवा नहीं, मैं धर्म-परायण हूँ अथवा नहीं, लोग मुझे विद्वान समझते हैं अथवा नहीं—' आदि आदि प्रकार की शंकाओं में ग्रस्त रहता है। हमारे विचार से उसकी यह मनोवृत्ति ही उसकी सफलताओं में विलम्ब का कारण होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) स्थान-स्थान पर टूटी हुई (क्षत-विक्षत) हो अथवा जिसके हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) का सर्वथा अभाव हो और दोनों दशाओं में उसके पास अथवा उस स्थान पर छोटी-छोटी दो-तीन रेखायें हों, उस व्यक्ति को आजन्म किसी कार्य में यश नहीं प्राप्त होता। यश मिलना तो दूर की बात है उसे किसी भी

काम में सफलता तक प्राप्त नहीं होती। इसका प्रमुख कारण यह है कि उसकी प्रकृति चञ्चल होती है और अपने स्वभाव की चञ्चलतावश वह व्यक्ति किसी भी काम को स्थिर होकर लगन के साथ नहीं करता। आज यह तो कल वह—इस प्रकार बराबर परिवर्तन करता रहता है। दूसरी बात यह है कि उसकी संगति प्रायः धूर्तो और दुष्टों के साथ रहती है। अतः इन दोनों कारणों से उसे न तो सफलता प्राप्त होती है और न यश ही प्राप्त होता है। हां, आर्थिक-स्थिति की विषमता वश वह कोई भयानक कार्य भी कर बैठे—इसकी पूरी सम्भावना रहती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति निरुत्साही, अकर्मण्य, चोर, व्यसनी, धूर्त, द्यूत-प्रिय, स्वार्थी और दुष्ट प्रकृति वाले होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) तथा भाग्य-रेखा (Line of Fate) को भाग्य-रेखा से उद्भूत एक छोटी सी शाखा मिलाती हो तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से साझेदारी में व्यापार व्यवसाय करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा से उद्भूत एक शाखा आड़ी होकर शुद्ध और सरल भाव से बुध-क्षेत्र पर जाय उस व्यक्ति को व्यापार-व्यवसाय सम्बन्धी अनेक कार्यों से धन प्राप्त होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य-रेखा से आने वाली एक आड़ी किन्तु शुद्ध और सरल रेखा सूर्य-रेखा (Line of Sun) को काट दे उस व्यक्ति को अपने सहकर्मियों की शत्रुता से अथवा परिजन बन्धु बान्धवों के द्वारा हानि उठानी पड़ती है।

जिस व्यक्तिके हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) भाग्य-रेखा (Line of Fate) और भाग्य-रेखा से उद्भूत एक शाखा रेखा के सम्मेलनसे छोटा-सा कोण बनता हो,उस व्यक्ति को उन्नतिके मार्ग पर आरूढ़ होनेकी प्रेरणा प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त उसे कई अच्छे-अच्छे सभ्य पुरुषों द्वारा अच्छी सम्मति और धन भी प्राप्त होता है। किन्तु वह फिर भी सन्मार्ग पर चलने नहीं पाता। इसका एकमात्र कारण उसकी मित्र मंडली होती है। उसकी मित्र-मण्डली उस व्यक्ति को प्राप्त हुई सद्-सम्मति और धन—दोनों पर पानी फेर देती है। अतः उस व्यक्ति को अपने मित्र-मण्डल की उपेक्षा करके अपने हितैषी सभ्य-पुरुषों के परामर्श से कोई उपयुक्त व्यवसाय करना चाहिये। तब ही उसका जीवन सुखमय हो सकेगा। उक्त त्रिकोण से केवल यही सूचित होता है कि वह व्यक्ति सन्मार्ग पर आरूढ़ हो सकता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र उच्च हो और भाग्य रेखा (Line of Fate) तथा सूर्य-रेखा (Line of Sun) के सम्मेलन से उपरोक्त प्रकार का त्रिकोण भी बनता हो। वह व्यक्ति अपने धन का अतिशय दुरुपयोग तथा अपव्यय करता है। वह अपने हितैषी सज्जन व्यक्तियों की सद्-सम्मति की अपने दुष्ट मित्रों की प्रेरणा से उपेक्षा करता है। अतः हस्त परीक्षक को चाहिये कि इस लक्षण वाले व्यक्ति को अपने हितैषियों के सत्परामर्श पर चलने का तथा धन के सदुपयोग करने का आदेश दे।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र निम्न हो और भाग्य-रेखा (Line of Fate) तथा सूर्य-रेखा (Line of Sun) के

सम्मेलन से उपरोक्त प्रकार का त्रिकोण बनता हो उस व्यक्ति का स्वभाव और मनोवृत्ति—दोनों दूषित होती हैं। इसके अतिरिक्त उसकी संगति भी खोटी होती है। फलतः वह अपने धन का अपव्यय करता है और उसका जीवन चिन्ताओं से ओत-प्रोत रहता है। अतः उसे सदैव अपने आचार-विचार तथा दैनिक जीवन के प्रति सतर्क रहना चाहिये तथा धन का सदुपयोग करना चाहिये। उसे अत्यन्त ध्यानपूर्वक विचार करके यह निर्णय करना चाहिये कि उसके वास्तविक हितैषी कौन हैं। हमारी समझ में उसे अपनी खोटी आदतों का त्याग करके गुरुजनों की सत्सम्मति पर चलना ही हितकर होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) से उद्भूत एक शाखा शनी-क्षेत्र पर जाती हो उसे भूमि आदि या खदानों द्वारा धन प्राप्त होता है। हमारे अनुभव में तो यहां तक आया है कि जिस व्यक्ति के हाथ में यह शाखा आड़ी होकर शनी-क्षेत्र को जाती है वह व्यक्ति रत्नादि के व्यापार-व्यवसाय द्वारा अतुलित धन प्राप्त करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में नक्षत्र का चिह्न सूर्य-रेखा पर हो वह व्यक्ति अपने इष्ट-मित्र, परिजन, बन्धु-बान्धवों द्वारा धन लाभ करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) पर गुणाक का चिन्ह हो उसे अकस्मात ही धन-प्राप्त होता है। यह धन उसे चाहे तो भूमि में से प्राप्त हो अथवा लाटरी या सट्टे से मिले।

जिस व्यक्ति की सूर्य-रेखा (Line of Sun) पर यव (द्वीप) का चिह्न हो उसके धन का नाश होकर वह दिवालिया हो जाता है। यह चिह्न इस बात की भी सूचना देता है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति को न्यायालय तक जाने की भी पूर्ण सम्भावना है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यह यव (द्वीप) चिह्न दक्षिण-हस्त मे हो तो स्वयं को हानि-कारक सिद्ध होता है तथा मान-प्रतिष्ठा आदि में बाधक होता है, किन्तु बायें हस्त मे होने पर पारिवारिक हानि का सूचक है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) प्रमाण से अधिक चौड़ी हो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) उग्र स्वभाव बदमाश, कपटी, विश्वासघाती, अपयशी, दरिद्री, स्त्री-पुत्र-मित्रादि के सुख से हीन, राज्य द्वारा क्लेशित और परित्यक्त होता है। वह स्वार्थवश विद्या और धन की चोरी भी करता है और अपना जीवन दुःखमय बना लेता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा प्रमाण से अधिक चौड़ी हो और उसके समीप अनेक आड़ी रेखायें भी हों उस (स्त्री अथवा पुरुष का धन नष्ट हो जायगा, उसकी प्रतिष्ठा नष्ट होगी और मान-हानि भी होगी, उसको न्यायालय में अभियोगों से ग्रस्त रहना पड़ेगा, उसका सर्वत्र अपयश होगा, दरिद्री रहेगा तथा उसकी मृत्यु आत्म हत्या द्वारा होने की सम्भावना रहेगी। उपरोक्त आड़ी रेखाओं के प्रभाव से उसका मनोबल तथा मानसिक शक्ति पूर्णतया नष्ट हो जायगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) को विवाह-रेखा बुध-क्षेत्र को पार करके काटती हो उस व्यक्ति (स्त्री और पुरुष) का विवाह अनमेल होता है और यही उसके अपयश का कारण बनता है। इस व्यक्ति का सदैव अपने जीवन साथी के साथ वाद-विवाद रहता है। दैवयोग से यह लक्षण यदि किसी स्त्री के हाथ में विद्यमान होता है तो उसका पति व्यसनी और दुर्गुणों से युक्त रहता है और वह स्त्री अपने पति से इन दुर्गुणों को त्यागने तथा सन्मार्ग पर आरूढ़ होने का अनुराध करती है। यही इसका पति के साथ विवाद का कारण होता है, किन्तु इस योग के प्रभाव से इस शुभ प्रयत्न का भी उसे विपरीत फल ही प्राप्त होता है और उसे अपयश ही प्राप्त होता है स्पष्ट है कि इस लक्षण वाली स्त्री का पति मूर्ख, व्यसनी, कपटी, दुराचारी, कुविचारी, विश्वासघाती, दुर्गुणी और वेश्या-गामी तक होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) को शनी-क्षेत्र से आनी वाली आड़ी रेखा काट रही-हो वह उसकी (स्त्री अथवा पुरुष) की अवनति का सूचक है। उसे अनेक कार्यों में बाधायें घेर लेती हैं। यह व्यक्ति अपनी चल और अचल सम्पत्ति तक बेच डालता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अनेक गुप्त चिन्ताओं, आर्थिक संकटों तथा गृह-कलहों से घिरा रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) पर नक्षत्र चिह्न हो और शनी-क्षेत्र से आने वाली आड़ी रेखा उस

रेखा को काटती भी हो तो नक्षत्र-चिह्न के प्रभाव से उसकी स्थिति में बहुत कुछ सुधार हो जायगा। साधारणतया वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) अपना जीवन सुख-पूवक चला सकेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) को शनी-क्षेत्र से आने वाली आड़ी रेखा काट रही हो और उक्त रेखा पर (शनी क्षेत्र से आने वाली आड़ी रेखा पर) यव (द्वीप) चिह्नों हो, तो उस व्यक्ति को अवश्यमेव कारावास का दण्ड भोगना पड़ेगा। इस यव (द्वीप) चिह्न के प्रभाव से (यदि सूर्य रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो तो भी, उस व्यक्ति को इसका अशुभ फल निश्चय ही भोगना होगा। इस योग वाले व्यक्ति विद्वान तथा सुयोग्य साहित्यक होते हैं, किन्तु इस भंयकर अशुभ फल का आखेट तो उन्हें होना ही पड़ता है। इसके अतिरिक्त उन्हें सदैव गुप्त चिन्तायें बनी रहेंगी। हां, यदि वे प्रतिदिन इस रेखा की गति-विधि पर सतर्कता से ध्यान रक्खें और अपने भरसक दुर्गुणों से अत्यन्त दूर रहते हुये शुभ कार्य करते रहें, तो कालान्तर मे इस रेखा के नष्ट होने की भी पूर्ण सम्भावना रहती है। क्योंकि प्रयत्न करनें से समय पाकर सब कुछ सुलभ हो सकता है। स्मरण रहे कि यह दुर्घटना इस व्यक्ति की आयु के ५२ वें वर्ष के पश्चात् ही घटित होगी, इससे पूर्व इसकी कोई सम्भावना नहीं है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) सूर्य-क्षत्र पर सर्प-जिह्वाकार हो जाय अथवा त्रिशूलाकार हो जाय

तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) अपने जीवन में प्रसिद्ध तो अवश्य होगा, किन्तु वास्तव में उसकी प्रसिद्धि निरर्थक ही रहेगी। इसका एकमात्र कारण यह है कि इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा (अथवा यों कहिये कि सर्प जिह्वाकार या त्रिशूलाकार चिह्न) के प्रभाव से उसका चित्त चंचल रहता है। वह एकाग्र-मन नहीं होने पाता। एक ही समय में अनेक कार्यों अथवा विषयों में उलझ जाता है। फलतः उसकी शक्ति वितरित होकर निर्बल हो जाती है और अन्त में उसे सभी कार्यों अथवा विषयों में असफलता ही हाथ लगती है। यही उसके उन्नति-मार्ग की प्रधान बाधा है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) सूर्य-क्षेत्र पर ही सर्प-जिह्वाकार अथवा त्रिशूलाकार होकर उक्त शाखाओं के मिलने पर यव (द्वीप) चिह्न बनाती हो और उस यव (द्वीप) चिह्न के मध्य में एक सीधी रेखा पड़ती हो ((।)) और यह सब कुछ हृदय-रेखा (Heart line) के ऊपरी भाग को स्पर्श करता हुआ उसके ऊपर सूर्य-क्षेत्र पर ही बनता हो, तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को अपने जीवन पर्यन्त प्रत्येक कार्य में अत्यन्त सावधानी रखनी चाहिये। इस लक्षण वाले व्यक्ति के साथ परिजन बन्धु-बान्धव, इष्ट-मित्र आदि विश्वासघात करते हैं, जिसके फल-स्वरूप वह भयानक संकटों से ग्रस्त हो जाता है। यों वह व्यक्ति धन-धान्य, ऐश्वर्य वैभव से अत्यन्त परिपूर्ण होता है किन्तु उसे अपना धन कभी भूलकर भी उधार नहीं देना चाहिये। यदि कोई ऐसा ही अवसर आ पड़े कि देना ही पड़े तो

यह निश्चय समझ कर देना चाहिये कि यह धन लौटेगा नहीं। इसी में उसकी कुशल है। परिजन, बन्धु-बान्धव अथवा इष्ट मित्र के साथ व्यापार व्यवसाय मे साझेदारी के चक्कर में तो उसे स्वप्न में भी नहीं पड़ना चाहिये। अन्यथा निश्चय ही उसे पछताना पड़ेगा। वैसे इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) स्वभाव से ही अत्यधिक शंकाशील होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) सूर्य क्षेत्र पर ही अनेक शाखाओं में विभक्त होकर विभिन्न ग्रह क्षेत्रों को जाती हो, उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को उसी ग्रह क्षेत्र के अनुरूप अभ्युदय प्राप्त होगा जिस ग्रह क्षेत्र को शाखा जाती हो। यदि ये शाखा अनेक होकर दो अथवा अधिक ग्रह क्षेत्रों को जाती हों तो उस व्यक्ति को उन सभी ग्रह क्षेत्रों के अनुरूप शुभ फल प्राप्त होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) सूर्य क्षेत्र पर अनेक शाखाओं में विभक्त होती हो और उसकी एक शाखा शनी-ग्रह के क्षेत्र पर जाती तो उस व्यक्ति की भाग्य-रेखा की शक्ति द्विगुणित हो जायगी। दुर्भाग्यवश यदि इस प्रकार की सूर्य-रेखावाले व्यक्ति के हाथ में भाग्य-रेखा (Line of Fate) का सर्वथा अभाव हो अथवा वह अत्यन्त छोटी हो तो सूर्य-रेखा की यह शाखा उसकी भाग्य रेखा की कमी को पूरा कर देगी। इस लक्षण वाला व्यक्ति भाग्य का विशेष कृपा पात्र होता है। यदि भाग्य रेखा भी हाथ में विद्यमान हो तो उसके सौभाग्य की कोई सीमा नहीं होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) सूर्य क्षेत्र पर अनेक शाखाओं में विभक्त होती हो और उसकी एक शाखा बृहस्पति-ग्रह के क्षेत्र पर जाती हो तो वह व्यक्ति दूसरों पर अधिकार और शासन करने में प्रगति प्राप्त करता है। यह शाखा उसका यश भी बढ़ाती है। इसके प्रभाव से वह व्यक्ति योग-मार्ग में भी प्रवृत होता है और उसमें धार्मिक-भावनाओं की विशेपता होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) सूर्य क्षेत्र पर अनेक शाखाओं में विभक्त होती हो और उसकी एक शाखा बुध क्षेत्र को जाती है तो वह व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय में अधिकाधिक उन्नति करता है। इस रेखा के प्रभाव से यह व्यक्ति विज्ञान, साहित्य तथा दूसरे व्यवहारिक विपयों में उन्नति करता है।

सूर्य रेखा (Line of Sun) की उपरोक्त शाखाओं का उपरोक्त प्रभाव तब ही होता है जब कि सूर्य रेखा और उसकी शाखा स्वयं शुद्ध, सुन्दर, अक्षत सुस्पष्ट तथा गम्भीर हो और इन्हें अन्यान्य अवरोधक रेखायें न काटती हों। साथ ही ये शाखाये भी ग्रह-क्षेत्र अथवा क्षेत्रों पर सरल तथा शुद्ध रूप से यथा-स्थान पहुंचती हों।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line o Sun) के पास (सूर्य क्षेत्र के नीचे किन्तु हृदय रेखा (Line of Heart) के समीप) दाग-चिह्न हो तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुप)

अवश्यमेव आंखों के रोग से ग्रस्त रहता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को अनेक प्रकार की चिन्तायें, यातनाये अथवा आपत्तियां घेरे रहेंगी। शल्य-चिकित्सा (आप्रेशन) आदि दुर्घटनायें भी उसे अपना आखेट बनायेंगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र के नीचे किन्तु हृदय-रेखा (Line of Heard) के पास सूर्य-रेखा (Line of Sun) पर दाग-चिह्न पड़ा हो उसके जीवन में उपरोक्त योग द्वारा सम्भावित आपत्ति, आप्रेशन, चिन्ता, यातना आदि के दुष्प्रभाव क्षीण हो जाते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) और हृदय-रेखा (Line ot Heart) के संगम-स्थल पर दाग-चिह्न हो उसकी आयु में उस स्थल के वर्षमान-प्रमाणानुसार प्राप्त वर्ष में मृत्यु-योग की अत्यधिक सम्भावना है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर दो सुन्दर-सुस्पष्ट तथा समानान्तर रेखायें हों वह व्यक्ति अकस्मात ही प्रसिद्धी और कीर्ति प्राप्त करता है। सौभाग्यवश यदि ये ही दोनों रेखायें सीधी और लम्बी भी हों और उन्हें कोई अवरोधक रेखा अथवा रेखायें काटती न हों अथवा ये स्वयं भी किसी भी स्थान पर कटी-फटी न हों और उनमें से कोई शाखायें भी न निकलती हों तो वह व्यक्ति धन-धान्य सम्पन्न, ऐश्वर्य-वैभवशाली, भृत्य-वाहन युक्त, प्रकाण्ड विद्वान, महान ज्ञानी, अत्यन्त दूरदर्शी, सर्वगुण सम्पन्न, मेधावी तथा प्रतिभाशाली होता है। इस व्यक्ति को अपने ही व्यक्तित्व

और प्रतिभा के प्रभाव से अनेकानेक कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। इसकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) अनामिका अंगुली के मूल-स्थान के मध्य-भाग से मणिबन्ध पर्यन्त पूर्ण-रूपेण सीधी हो (अर्थात् सूर्य-क्षेत्र किंवा अनामिका अंगुली की सीध में होकर मणिबन्ध पर्यन्त जाती हो उस व्यक्ति को आजीवन धन, विद्या, यश, बुद्धि तथा सफलता का पूर्ण सुख रहता है। स्मरण रहे कि जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा का सर्वथा अभाव हो वह व्यक्ति कितना ही चतुर, कार्य कुशल, गुणी तथा श्रमशील क्यों न हो उसे अपने जीवन मे ख्याति और कीर्ति तथा मान-सम्मान प्राप्त होने की किञ्चित् मात्र भी सम्भावना नहीं होती। इस दृष्टि से उसका जीवन साधारणतः अन्धकारमय ही रहता है। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके शव पर चाहे समस्त संसार अपने-आपको न्योछावर कर दे, किन्तु अपने जीवन में वह व्यक्ति इस सम्बन्ध में अणु-मात्र भी सफलता प्राप्त नहीं करेगा। इसके विपरीत यदि सूर्य-रेखा विद्यमान हो और साथ ही सुन्दर, सुस्पष्ट, शुद्ध, अक्षत, तथा सीधी हो और उस पर कोई अशुभ चिह्न न हो अथवा उसे कोई अवरोध रेखा काटती न हो, तो चाहे मस्तक-रेखा (Line of Head), हृदय-रेखा (Line of Heart), भाग्य-रेखा (Line of Fate) प्रभृति रेखायें किसी भी दशा में क्यों न हों—केवल सूर्य रेखा (Line of Sun) के प्रभाव से उन सब की कमी पूर्ण हो जाती है। उनके अशुभ

लक्षणों के प्रभाव नष्ट होकर सूर्य-रेखा जनित शुभ-फलों का आकर्षण कर अनेकानेक शुभ प्रभावों में परिणित हो जायेंगे। सूर्य-रेखा (Line of Sun) यदि सीधी, सुस्पष्ट, शुद्ध, अखण्ड तथा अशुभ लक्षणों एवं चिह्नों से सर्वथा रहित हो तो उसके प्रभाव से तत्सम्बन्धित व्यक्ति जीवन पर्यन्त तीव्र बुद्धि, विचारशक्ति-सम्पन्न, धनी, मानी, यशस्वी, प्रभावशाली, मेधावी, प्रतिभावान तथा विद्वान होता है। स्पष्ट है कि वह व्यक्ति स्थिरचित्त, प्रत्युत्पन्न-मति, सद्व्ययी, बुद्धिजीवी, सत्संगी और परामर्शदाता होता है। ऐसी रेखा प्रायः राजा, राज-मन्त्री, लोक-नेता तथा उच्च पदाधिकारियों के हाथ में पाई जाती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) सूर्य क्षेत्र से आरम्भ होकर तथा सीधी, सुस्पष्ट, गम्भीर तथा शुद्ध होकर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुंचती हो, उस व्यक्ति को अपने प्रयत्न किंवा परिश्रम से किसी भी कार्य में सफलता अथवा यश प्राप्त नहीं होता। इस लक्षण वाले व्यक्ति सदैव किसी अन्य व्यक्ति के प्रयत्न से सफलता प्राप्त होती है तथा अन्य व्यक्ति के द्वारा ही उसे कीर्ति, यश, सम्मान, ख्याति और प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में—यह व्यक्ति उन्नति, सफलता, प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश, सम्मान, ख्याति आदि सभी के लिए आजीवन दूसरों पर आश्रित रहता है। हां इस रेखा के प्रभाव से उसे इस प्रकार के व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) प्रचुर संख्या में अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु दूसरों पर आश्रित होने के कारण इनमें स्थायित्व नहीं होता। इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा प्रायः नाट्य-

कला निपुण अभिनेताओं, अभिनेत्रियों, संगीत-विशारदों या इस प्रकार के अन्यान्य कुशल कलाकारों के हाथ में उपलब्ध होती है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा (Line of Sun) टेढ़ी-मेढ़ी, अस्पष्ट, अशुद्ध, अवरोधक रेखाओं द्वारा कटी हुई, स्वयं ही कटी-फटी अथवा अशुभ-चिन्हों से युक्त होगी तो सम्बन्धित व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को हजार परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होगी और वह सदैव चिन्ता-ग्रस्त रहा करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) स्थान स्थान पर लुप्त हो गई हो (आदि से अन्त तक बराबर एक ही स्थिति में न हो। अथवा कितनी ही जगह पर टूटी हुई सी प्रतीत होती हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन में विचित्र उपायों से सामयिक सफलता प्राप्त करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः अवसर-वादी होते हैं। यद्यपि वह मानव-जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में कार्य करने में कुशल तथा चतुर होता है, तथा अत्यधिक भयशील भी होता है, किन्तु उसे असफलता उसी कार्य में प्राप्त होती है जिसके लिये उसे दृढ़ विश्वास और अटल निश्चय हो जाता है। जब तक वह किसी भी कार्य के सम्बन्ध में शंकालु होते हैं अथवा उसके सम्बन्ध में उन्हें विश्वास नहीं होता है तब तक उस कार्य के करने में वह सर्वथा असमर्थ-सा रहता है। इस लक्षणवाले व्यक्ति को स्थायी यश, मान और प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है और धन भी मिलता है, किन्तु समय-समय पर ही। जीवन के आदि

से अन्त पर्यन्त नहीं। इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) साधारणतः दृढ़ निश्चयी, अटल विश्वासी और अचूक प्रभावशाली होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य रेखा (Line of Sun) अनामिका अंगुली के मूल से आरम्भ होकर हृदय-रेखा (Line of Heart) पर्यन्त शुद्ध, स्पष्ट, अक्षत तथा सुन्दर हो वह सभी शास्त्रों में प्रकाण्ड पण्डित होता है। वह अपने जीवन में कोई ऐसा महान कार्य करता है। जिसके कारण उसकी महानता तथा विद्वत्ता स्पष्ट प्रकाशित होकर उसे अद्वितीय लोक-प्रतिष्ठा तथा सम्मान का पात्र बना देती है और वह लोक-प्रिय हो जाता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति गुप्त विद्याओं, यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, आदि के अपूर्व ज्ञाता होते ह। यह व्यक्ति अपना जीवन प्राय. परोपकार ही मे व्यतीत करता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा (Line of Sun) जितनी आड़ी रेखाओं द्वारा अथवा अवरोधक रेखाओं द्वारा कटी होगी उस व्यक्ति को उसके जीवन में उतनी ही वार असफलता प्राप्त होगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में अनामिका और कनिष्ठका अंगुलियों के मध्य-स्थल से उद्‌भूत सूर्य-रेखा (Line of Sun) करतल के मध्य तक पहुचती है वह व्यक्ति ज्ञानी, बुद्धिमान, तेजस्वी, पराक्रमी, सुलेखक, कवि, विद्वान, दूरदर्शी, उदार, परिश्रमी, कार्य-कुशल तथा मधुर-भाषी होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) में से अनेक छोटी-छोटी शाखायें नीचे की ओर (अधोमुखी)

लटकती हों, वह चाहे कितना ही कुशल व्यापारी, प्रकाण्ड विद्वान, प्रभावशाली तथा प्रतिभा-सम्पन्न क्यों न हो, किन्तु आजीवन दरिद्री ही बना रहेगा। इस व्यक्ति की इच्छा शक्ति और विचार शक्ति—दोनों निर्बल होती हैं। फल-स्वरूप वे जो भी कार्य करते हैं उसी में असफल होते हैं। हां, इस लक्षण वाले व्यक्ति का यदि सूर्य-क्षेत्र और बृहस्पति क्षेत्र दोनों उच्च हों तो उसे अपने परिजन, बन्धु-बान्धवों और इष्ट मित्रों से आर्थिक सहायता अवश्य प्राप्त हो जाती है और इन दोनों ग्रह-क्षेत्रों की उच्चता के प्रभाव से उसका जीवन अपेक्षा कृत अधिक सुखमय हो जाता है।

जिस व्यक्ति के हाथ की सूर्य-रेखा (Line of Sun) लाल रंग की, छिन्न-भिन्न और खराब सी हो तथा साथ ही सूर्य-क्षेत्र निम्न हो, हाथ में भाग्य-रेखा का सर्वथा अभाव हो, हृदय रेखा द्वीप-युक्त हो और शनी क्षेत्र सूर्य-क्षेत्र की ओर अवनत हो, वह व्यक्ति अंग हीन अथवा विकृतांग होता है। उसे सदैव मानसिक चिन्तायें घेरे रहती हैं। यह व्यक्ति अकारण ही विवाद शील, आत्मीयजनों से घृणा करने वाला, घमण्डी, कपटी, संग्राम में निश्चल, बहु स्त्री वाला होता है। इसके जीवन में प्रतिष्ठा यश सुख तथा धन-धान्य का सर्वथा अभाव होता है। वह अपने पिता का धन चोरी करता है तथा उसका अपव्यय करता है। वह विदेश में संकट-ग्रस्त, बन्धु बान्धवों द्वारा परित्यक्त, व्यसनी और मध्यायु पश्चात नेत्र रोगी अथवा नेत्र-हीन होता है। वह

स्त्री-समाज तथा जनता से तिरस्कृत, शील रहित, दुर्गुणी होकर जीवन को कंटकाकीर्ण बना लेता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि जीवन-रेखा (Line of life) के वयमान के आधार पर बयालीसवें वर्ष पर उसके हाथ में यव-चिह्न (द्वीप-चिह्न) अथवा नक्षत्र चिह्न अवश्यमेव होगा। इस चिह्न के प्रभाव से सम्भव है वह इसी बयालीसवें वर्ष में मृत्यु का आलिंगन भी करे। किन्तु यदि जीवन-रेखा पर से वर्षमान के आधार पर बयालीसवें वर्ष पर ही अथवा उपरोक्त यव-चिह्न (द्वीप चिह्न) या नक्षत्र चिह्न के समीप ही से एक सुस्पष्ट, शुद्ध सरल तथा गम्भीर भाग्य रेखा (Line of Fate) भी शनी क्षेत्र तक जाती हो तो इस अशुभ फल का सर्वथा नाश होकर उस व्यक्ति की उस वर्ष मृत्यु नहीं होगी। इसके विपरीत आयु के उस वर्ष में उसकी उन्नति होगी तथा यश प्राप्त होगा। इस लक्षण का यह फल अनुभूत है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) भाग्य-रेखा (Line of Fate) के साथ-साथ अर्थात् एकाकार होकर चलती हो किन्तु कुछ दूर जाकर अलग हो गई हो तो उस व्यक्ति का भाग्य निश्चय ही अद्वितीय होता है। इस लक्षण वाली सूर्य-रेखा आदि से अन्त पर्यन्त सुस्पष्ट, सरल, शुद्ध, निर्दोष अक्षत, गम्भीर तथा सुन्दर हो और उसे कोई भी अवरोधक रेखा काटती अथवा स्पर्श न करती हो तो उस व्यक्ति की उन्नति अपने ही बाहुबल के द्वारा होगी और उसके मार्ग में आजीवन कभी भी

किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आवेगी। यह रेखा जिस स्थान पर भाग्य-रेखा से अलग होगी, भाग्य-रेखा के वयमान से प्राप्त उस स्थान पर के वर्ष में उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को अनायास ही अपने कार्यों में सफलता प्राप्त होने लगेगी। यदि सच पूछा जाय तो उसी वर्ष में उसका भाग्योदय होगा और इसके उपरान्त उसका शेष जीवन सुख तथा शान्ति से परिपूर्ण रहेगा। उसे अनेकानेक, उत्तमोत्तम कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, जिसके परिणाम स्वरूप उसे धन और यश—दोनों प्रचुर-मात्रा में उपलब्ध होंगे और उसके जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) स्वतन्त्र रूप से करतल के मध्य भाग्य (अर्थात् राहु क्षेत्र) से ही आरम्भ हो और उसके साथ छोटी-छोटी अनेक रेखायें भी हों तो वे सौभाग्य सूचक होती हैं। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि एक सुस्पष्ट, अक्षत, सुन्दर, शुद्ध और गम्भीर भाग्य-रेखा (Line of Fate) यदि मणिबन्ध से आरम्भ होकर सीधी शनी-क्षेत्र पर, मध्यमा अंगुली के मूल से मध्य भाग तक पहुंची हो वह इन रेखाओं से अधिक उपयोगी शुभ-फल-प्रद तथा सौभग्यदायक होती है।

यद्यपि सूर्य रेखा के अन्तर्गत द्वीप चिन्ह (यव-चिन्ह) प्रायः अशुभ फल-प्रद ही होता है और जिस स्थान पर सूर्य रेखा में यह (द्वीप अथवा यव) चिन्ह होता है वर्षमान के अनुसार

प्राप्त उस वर्ष में सम्बन्धित व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को लोकापवाद, अपयश आदि का अवश्यमेव आखेट होना पड़ता है तथापि यह उतना हानिकारक नहीं होता जितनी हानिकारक क्षत-विक्षत (छिन्न-भिन्न) अथवा टूटी फूटी सूर्य-रेखा स्वयं होती है। क्योंकि उक्त प्रकार का द्वीप (यव) चिन्ह तो केवल अपयश का ही कारण होता है और शेष कार्यों पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, किन्तु क्षत-विक्षत सूर्य-रेखा टूटने के स्थान पर वर्षमानानुसार प्राप्त वर्ष में अकस्मात ही प्रत्येक शुभ कार्य में बाधा आ जाने या रुक जाने की सूचक है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) मंगल-क्षेत्र (बुध और चन्द्र क्षेत्र के मध्यस्थ) अथवा उसके कुछ पूर्व से आरम्भ होकर कुछ दूर आगे धुंधली हो गई हो अथवा सर्वथा लुप्त हो गई हो और कुछ दूर आगे पुनः सुस्पष्ट और शुद्ध प्रतीत होती हो तो उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) का भाग्य उसके जीवन के उत्तरार्द्ध में अपेक्षाकृत अच्छा रहेगा। वैसे इस रेखा का उसके जीवन पर कोई विशेष शुभ प्रभाव होने की कोई सम्भावना नहीं है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) जिस स्थान पर टूटती है वर्षमान से प्राप्त आयु के उस वर्ष में अवश्यमेव किसी अशुभ घटना का होना निश्चित है। यह अशुभ घटना किस प्रकार की होगी इसका निर्णय हस्तगत अन्यान्य प्रमुख-रेखाओं पर निर्भर करता है। अतः इस सम्बन्ध में हस्तगत अन्यान्य प्रमुख रेखायें

ग्रह-क्षेत्र, शुभाशुभ चिन्ह आदि का गम्भीर अध्ययन करना चाहिये कुछेक विद्वानों के मतानुसार जिस स्थान पर सूर्य-रेखा टूटती है, वहां किसी प्रकार का चिन्ह होना परमावश्यक है।

जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं सूर्य-रेखा पर द्वीप (यव) चिन्ह साधारणतः अशुभ-फल-प्रद ही होता है। यह चिह्न अपयश कारक होता है। किन्तु यदि इसके साथ उसी स्थान पर वर्ग अथवा चतुष्कोण चिन्ह भी अंकित हो तो यव (द्वीप) चिन्ह का अशुभ फल नष्ट हो जाता है। इस सम्बन्ध में हम पहले सविस्तार वर्णन कर चुके हैं।

व्यवसायिक और कलाकार हाथ में साधारणतः सूर्य-रेखा (Line of Sun) नहीं ही पाई जाती है और यदि होती भी है तो केवल अस्तित्व-मात्र के लिये ही होती है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि सूर्य-रेखा (Line of Sun) के अभाव में अथवा उसके केवल नाम-मात्र ही की होने से वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी प्रकार की उन्नति कर ही नहीं सकता। यदि हाथ में अन्यान्य रेखायें तथा चिन्ह और लक्षण शुभ होंगे तो वह व्यक्ति उन्नति अवश्यमेव करेगा, किन्तु उपरोक्त प्रकार की सूर्य-रेखा के कारण उसको अपने कार्य में प्रसिद्धि प्राप्त नहीं होगी इस लक्षण वाले व्यक्ति मरने के बाद भले ही लोक-प्रसिद्ध हो जाय, किन्तु अपने जीवन में तो उन्हें भर पेट रोटी भी कठिनता से ही मिलती है।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) पर नक्षत्र और गुणक चिन्ह अत्यन्त शुभ-फल-दायक होते हैं। इनके होने से सम्बन्धित व्यक्ति

(स्त्री अथवा पुरुष) की लोक प्रतिष्ठा, सम्मान, ख्याति आदि की अचूक सूचना प्राप्त होती है। दैवयोग से ये चिन्ह (नक्षत्र और गुणक चिन्ह) यदि सूर्य-रेखा के साथ ही हों तो सोने में सुगन्ध का काम करते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) शुभ हो और इसके साथ ही चन्द्र-क्षेत्र और शुक्र-क्षेत्र भी शुभ हों तथा उन्नत हों तो वह व्यक्ति साहित्यिक-क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अवश्यमेव उच्च कोटि का विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, सुलेखक, सुकवि आदि होता है। उसकी वक्तृताशक्ति अपूर्व तथा अत्यन्त ओजस्वी होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) शुभ हो और साथ-साथ चन्द्र क्षेत्र उच्च हो किन्तु शुभ-क्षेत्र अवनत हो तो वह व्यक्ति विलक्षण साहित्यालोचक होता है। वह साहित्य के प्रत्येक मर्म को अनायास ही जानने वाला और उसके सम्बन्ध में निर्भीक होकर अपने विचारों के अनुकूल आलोचना करने वाला होता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इस गुण वाले व्यक्ति के हाथ के नख छोटे छोटे और सुन्दर होंगे।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-रेखा (Line of Sun) हृदय रेखा (Line of Heart) से आरम्भ होती हो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) उदार, सरल स्वभाव और लोक-प्रिय होता है। उसका सरल स्वभाव और लोक-प्रियता ही उसकी भावी उन्नति के प्रमुख कारण होते हैं। किन्तु यह शुभ-फल तब ही

प्राप्त होता है जब कि सूर्य-रेखा सुस्पष्ट, सीधी, सुन्दर और अक्षत हो तथा उसे कोई अवरोधक रेखायें काटती न हों। इसके अतिरिक्त उस पर कोई अशुभ चिन्ह भी नहीं होना चाहिये।

सूर्य-रेखा (Line of Sun) के सम्बन्ध में यह कह देना असंगत न होगा कि अन्यान्य रेखाओं की भाँति इसका शुभाशुभ फल प्रकट करने से पूर्व हाथ की बनावट, गठन, आकृति आदि को, अंगुलियों की बनावट, गठन, आकृति, झुकाव, ग्रन्थि आदि को, नाखूनों को, अंगुष्ठ की बनावट, गठन, आकृति आदि को, ग्रह-क्षेत्रों को, अन्यान्य प्रमुख रेखाओं को तथा अन्य सभी महत्व-पूर्ण अंगों पर एक बार व्यापक दृष्टि डालकर अत्यन्त गम्भीरता से सब पर विचार कर लेना चाहिये। क्योंकि उपरोक्त सभी बातों का मानव-जीवन पर अत्यधिक प्रभाव होता है और कभी-कभी साधारण सी बात जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन का कारण बन जाती है। अतः इनकी अवहेलना अथवा उपेक्षा भयंकर भूल का कारण बन सकती है। यों मानव-जीवन मे सूर्य रेखा (Line of Sun) का अपना विशिष्ठ स्थान है इसमें सन्देह नहीं है।

सूर्य-क्षेत्र गत अन्यान्य चिन्हों का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य और शनी क्षेत्र के मध्य भाग में धन चिन्ह (+) हो वह व्यक्ति चिन्ता ग्रस्त रहता है। इसे सब से अधिक चिन्ता अपने-चरित्र के सम्बन्ध में रहती है। वह स्वयं तो निश्चय ही शुद्ध चरित्र होता है, किन्तु उसके मित्र

स्वभावतः ही दुष्ट प्रकृति तथा चरित्रहीन होते हैं। अतः उन्हीं के कारण उस व्यक्ति को अहर्निश यह चिन्ता व्याप्त रहती है कि इन के सहचर्य में अथवा इनके प्रभाव से कहीं मैं भी चरित्र हीन न हो जाऊं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य और शनी क्षेत्र के मध्य भाग में धन चिन्ह हो और उस पर एक टेढ़ी और छोटी रेखा भी हो तो वह व्यक्ति अवश्य ही किसी दुर्घटना का आखेट होकर राज्य-दण्ड भोगता है।

जिस व्यक्ति के सूर्य-क्षेत्र पर शुद्ध और स्पष्ट गुणक चिन्ह विद्यमान हो वह व्यक्ति स्वभावतः ही विशेषरूप से धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह व्यक्ति अनेक शास्त्रों का ज्ञाता विलक्षण विद्वान, मर्मज्ञ, कलाप्रिय, सम्मानी, जन-सेवा में निरत और सुखी होता है।

दुर्भाग्यवश यदि किसी स्त्री के हाथ में सूर्य क्षेत्र पर गुणक चिन्ह दृष्टिगोचर हो तो वह अवश्यमेव महान दुर्गुणों से युक्त होगी। इस लक्षण वाली स्त्री अत्यन्त लावण्यवती, रूपवती तथा सुन्दर अंगों वाली चित्ताकर्षक कामिनी होती है, किन्तु क्रोध के समय साक्षात् काल हो जाती है। यह स्वभावतः ही धन की अत्यधिक लालसा रखने वाली होती है और धन के लिये घृणित से घृणित कार्य करने में भी आगा पीछा नहीं करती। इस लक्षण वाली स्त्री में लज्जा तो नाम-मात्र को भी नहीं होती। यह सदैव अपने अंगों का निर्लज्जता से प्रदर्शन करती तथा भोले-भाले

पुरुषों को अपने जाल में फंसाती रहती है। चरित्र हीनता में इस लक्षण वाली स्त्री सर्वोत्कृष्ट होती हैं। ये प्रायः कुलटा, अत्याचारिणी, कुविचारिणी दुराचारिणी, अनाचारिणी, व्यभिचारिणी तथा नीचतम मनोवृत्ति वाली होती हैं। रहन-सहन, वेष भूषा तथा वार्तालाप से ये यद्यपि अत्यन्त सरल तथा सुन्दर विचारों वाली प्रतीत होती हैं और कभी-कभी तो आदर्श महिला सी लगती हैं, किन्तु अपना स्वार्थ साधने के हेतु अथवा अपनी अभिलाषा पूर्ण करने के लिये प्राण तक ले लेने में इन्हें संकोच नहीं होता। ये प्रायः कुलीन गृहस्थ की भांति रहने का स्वांग रचती हैं किन्तु सत्तर घाट को पानी पीना इनका जन्म-सिद्ध स्वभाव है। यह प्रायः सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) की आदी होती हैं। पाठको, इस लक्षण वाली नारी से सदैव दूर ही रहना हितकर है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर चतुष्कोण का चिह्न शुद्ध अंकित हो वह व्यापार-व्यवसाय की शक्ति में विशेष रूप से वृद्धि करता है। सौभाग्यवश यदि सूर्य-क्षेत्र उच्च हो और यह (चतुष्कोण) चिह्न भी शुद्ध अंकित हो तो वह व्यक्ति व्यापार व्यवसाय में आशातीत उन्नति करता है। अनेकानेक प्रकार के व्यापार में प्रवीण होने के साथ-साथ ही वह व्यक्ति अनेक शास्त्रों में भी पारंगत होता है। शास्त्रीय भावनाओं के प्रभाव से वह व्यक्ति अधिकांशतः अपना जीवन लोकोपकार में ही व्यतीत करता है। यह चिन्ह (☐) उसकी हर प्रकार की अशुभ

घटनाओं तथा आपदाओं से रक्षा करता है तथा यथेष्ट सुख-समृद्धि, धन-वैभव तथा आनन्द प्रदान करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य क्षेत्र पर सीधा द्वीप (यव) के सदृश्य चिह्न हो उस व्यक्ति का अधिकांश जीवन अपयश, हानि चिन्ता, आपदा, क्लेश, रोग आदि में ही व्यतीत होता है। यह व्यक्ति पुत्र शोक से भी त्रस्त रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर रेखा जाल का चिन्ह हो वह स्वभावत: ही कुटिल होता है। वह प्रत्येक बात में शंकायें करता है। उसका मन चंचल किन्तु उग्र होता है। वह मन्द बुद्धि, लम्पट, धूर्त, कुचाली, दुराचारी कुविचारी, विश्वासघाती, कपटी तथा ओछा होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को स्त्री, पुत्र तथा मित्र सुख प्राप्त नहीं होता। यह धन हीन होता है। तथा सदैव राज्य-भय से ग्रस्त रहता है। यह व्यक्ति अपच तथा कफ से पीडित रहता है। इसकी स्त्री का प्राय: गर्भपात होता रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य और शनी क्षेत्र के मध्य भाग में रेखा-जाल का चिन्ह अंकित हो वह व्यक्ति समस्त दुर्गुणों की खान होता है। दूसरे शब्दों में इस लक्षण वाले व्यक्ति को यदि नर-पिशाच भी कहा जाय तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी। यदि सच पूछा जाय तो ऐसे व्यक्ति मानव-समाज के कलंक-रूप ही इस धरा पर जन्म धारण करते हैं। इस स्थान पर इस चिन्ह का होना महान अशुभ है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य और बुध क्षेत्र के मध्य स्थान

पर रेखा जाल का चिन्ह अंकित हो तो दुर्भाग्य-सूचक है। इस लक्षणवाले व्यक्ति का समस्त व्यापार-व्यवसाय नष्ट हो जाता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर दाग चिन्ह हो वह व्यक्ति पराक्रम-भ्रष्ट, क्षीण काय, रोगी, प्रवासी, बन्धुहीन, सुख हीन, अपयशी और वाहन से कष्ट पाने वाला होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का पिता त्रस्त होता है और इसकी माता रुग्ण होती है। यह व्यक्ति गृह-कलह की सदैव वृद्धि करता है। यदि यह दाग का चिन्ह सूर्य-क्षेत्र से ठीक मध्यभाग में स्थित हो तो उस व्यक्ति के अग्रज और पृष्ठज दोनों की मृत्यु अवश्यम्भावी है। यह व्यक्ति अधार्मिक कार्यों में संलग्न रहता है और अपव्ययी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के हाथ तथा पैर रोगी होते हैं। किन्तु उपरोक्त सभी दुर्गुणों के होते हुए भी वह व्यक्ति राज-सम्मान प्राप्त करता है तथा पत्रादि लिखने में विशेषरूप से चतुर होता है।

जिस व्यक्ति के सूर्य-क्षेत्र पर अर्धवृत अथवा अर्ध चन्द्र का चिन्ह हो साथ ही यही चिन्ह अनामिका अंगुली के अधो-पर्व पर भी हो तो वह व्यक्ति विश्वासघाती, चुगलखोर, शत्रुओं मे अपघातिक, कलही, निष्ठुर, आलसी, अर्ध-शिक्षित, कटुभाषी और व्याधियों से पीड़ित होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति आत्मीय तथा स्वजनों से परित्यक्त होता है। तथा राज्य कोप से पीड़ित रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में अनामिका अंगुली के मूल स्थान से उद्भूत हो समानान्तर गहरी असंगत तथा टेढ़ी रेखाएँ सूर्य-क्षेत्र

के ठीक मध्य तक जाती हों तो वह व्यक्ति प्रसन्न मूर्ति, निःशंक-भाषी, नीच कर्मरत, अहंकारी, शठ, पापाचारी, किन्तु आडम्बरी धार्मिक होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की माता अनेकों रोगों से ग्रस्त रहती है। यह व्यक्ति प्रायः अपनी माता को सताया करता है। उसकी स्त्री हितैषिणी होती है। किन्तु वह सदैव स्त्री पुत्र के सुख की चिन्ता से चिन्तित रहता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति राज्य द्वारा सम्मानित होकर उच्च पद प्राप्त करते हैं। इनकी मृत्यु प्रायः तीर्थ स्थान अथवा किसी पुण्य क्षेत्र में होती है। इनको पहले दुःख अवश्य मिलता है, किन्तु बाद में सुख मिलना अनिवार्य है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर ठीक अनामिका अंगुली के मूल में शुद्ध चन्द्राकार चिह्न हो वह अनेक बाधाओं से घिरा रहता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को निरर्थक अपवादों का सामना करना पड़ता है। और वह सदैव चिन्ता ग्रस्त रहता है। उसे नेत्र-रोग से ग्रस्त रहना पड़ता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति अन्धे भी पाये जाते हैं। किन्तु यदि इस लक्षण के साथ-साथ सूर्य क्षेत्र उच्च हो तो वह अन्धा होता हुआ भी संगीत में प्रवीण होता है। इस विद्या के बल पर ही वह सर्वत्र सम्मान पाता है और इसी के आधार पर उसका जीवन सुखमय बन जाता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र उच्च हो, साथ ही अना-मिका अंगुली मध्यमा अंगुली की ओर झुकी हो, वह व्यक्ति कला-कौशल में प्रवीण, प्रतिभाशाली व्याख्याता तथा कुशल चित्र-

कार होता है। उसके द्वारा निर्मित चित्रों में विभिन्न प्रकार की भावाभिव्यक्ति अत्यन्त हृदय स्पर्शी तथा चित्त-ग्राही होती है। उसका स्वभाव तामसी होता है। फलतः वह क्रोधी होता है,किन्तु उसकी मनोभावना किसी को बाधा या कष्ट पहुंचानेकी नहीं होती। इस लक्षण वाले व्यक्ति को मित्र द्वारा विश्वासघात होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य क्षेत्र निम्न हो और अनामिका अंगुली मध्यमा अंगुली की ओर झुकी हो, वह व्यक्ति चित्र कला प्रेमी होता है। वह स्वयं भी चित्र बनाता है। उसके चित्रों में मुखरता नहीं होती। किसी भी भाव को लेकर वह चित्र अंकित करे—उसमें उदासी अवश्य होगी। चित्र कला द्वारा ही उसके रोग ग्रस्त होने की भी पूर्ण सम्भावना रहती है। यह व्यक्ति मित्रों के सम्बन्ध में अधिक धन व्यय करने के लिये विवश सा रहता है। इसके मित्र मण्डल में प्रायः असभ्य व्यक्ति रहते हैं। यह व्यक्ति व्यसनी और पर-स्त्रीगामी भी होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य क्षेत्र के उर्ध्व भाग से उद्भूत एक सीधी, सुस्पष्ट तथा अक्षत रेखा अनामिका अंगुली के उर्ध्व पर्व तक जाती हो तो वह व्यक्ति भाग्यवान,उच्चाभिलाषी, धार्मिक आदेशों का पालन करने वाला, कार्य-दक्ष, स्वाधीन चेता, दयालु, ज्ञानी, शास्त्रज्ञ, मन्त्र शास्त्र का ज्ञाता, न्याय-प्रिय होता है तथा अपनी योग्यता, कार्य शीलता, सौम्यता तथा उदार मनोवृत्ति के नाते प्रख्यात होता है। ऐसी रेखा प्रायः बहुत ही कम देखने में आती हैं। इस योग वाला व्यक्ति अवश्यमेव महान योगी तथा

अपूर्व विद्वान होगा। यह व्यक्ति अपनी योग्यता की शक्ति से लोक तथा राज्य-सम्मानित उच्चासन प्राप्त करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य भाग में ऋण चिह्न अथवा एक छोटी सी आड़ी, सीधी, सुस्पष्ट रेखा (—) हो, वह व्यक्ति स्वभावतः ही क्रोधी, निष्ठुर, अविवेकी कृपण, अदूरदर्शी, विचार हीन, मूर्ख, अभिमानी, पैतृक-सम्पत्ति नाशक तथा रोगी होता है। इस व्यक्ति की सम्पत्ति प्रायः अन्य व्यक्ति अथवा स्त्री ही भोगती है। यह व्यक्ति चटोरा होता है। इसे वाहनों द्वारा दुर्घटना की सम्भावना रहती है। उपरोक्त दुर्गुणों तथा क्रोधी होते हुये भी यह अनाथों, अपाहिजों तथा दीन-दुखियों पर सदैव दयालु रहता है।

जिस व्यक्ति के सूर्य पर (अनामिका अंगुली के मूल स्थान पर) अर्द्ध वृत का टेढ़ा चिह्न हो, वह घोर संकट में पड़ता है। स्मरण रहे कि इसी स्थान पर अर्द्ध चन्द्र के चिन्ह का फल हम उपरोक्त पंक्तियों में भी अंकित कर चुके हैं। पाठक इन दोनों फलादेशों को एक ही न मान बैठें। यहां दोनों चिन्ह के सूक्ष्म भेद पर ध्यान दें। उपरोक्त फलादेश में अर्द्ध चन्द्र का चिन्ह सरल-स्थिति में है, किन्तु यहां अर्द्ध वृत है और उसकी स्थिति वक्र (टेढ़ी) है। अवश्य ही दोनों प्रकार से स्थित अर्द्ध चन्द्र या अर्द्ध वृत इस स्थान पर अशुभ-फलप्रद ही है। किन्तु स्थिति भेद किंवा आकृति भेद के फल-स्वरूप उनकी अशुभता में भी भयानक अन्तर आ गया है। उपरोक्त अर्द्ध चन्द्र सरल स्थिति

में होने के कारण अन्धत्व, चिन्ता तथा निरर्थक अपवादों का सूचक है। किन्तु यहां अर्द्ध वृत है और वह भी वक्र-स्थिति में है। अतः इसका दुष्फल अत्यन्त भयङ्कर है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अतिशय दुराचारी तथा अवगुणों का भण्डार होता है। किसी भी प्रकार के सद्गुण तो इसके पास तक भी नहीं फटकते। यह व्यक्ति प्रत्येक सत् कार्य का विरोधी, कुकर्मी, कुचाली, कुविचारी तथा बर्बर होता है। यह अत्यन्त कामातुर और इन्द्रिय लोलुप होता है। इसकी कामान्धता इतनी भयानक होती है कि यह गम्यागम्य तक का विचार नहीं करता। अपनी काम-वासना की वेदी पर यह आवाल-वृद्ध, नर-नारी और यहां तक कि पशुओं तक को बलिदान कर देता है। अप्राकृतिक तथा अस्वाभाविक मैथुन से भी इसे इन्कार नहीं होता। यह प्रायः अनाथ बालकों बालिकाओं तथा विधवाओं का अपहरण करके उनके साथ घोर अत्याचार करता है। यह व्यक्ति अपने बन्धु-बान्धवों तथा परिजनों से त्यक्त होता है। अत्यन्त निर्दय तथा दुष्ट प्रकृति होता है। क्रोध के समय तो वह साक्षात् काल ही होता है। क्रोधावेश में यह व्यक्ति अपने कार्यों पर सतर्क दृष्टि रखने वालों की हत्या तक कर डालता है। यह किसी भी व्यक्ति से चाहे वह किसी स्वभाव, स्थिति, गुण अथवा अधिकार युक्त क्यों न हो, शत्रुता करते नहीं हिचकचा। संक्षेप में इस लक्षण वाला व्यक्ति विषादी, सर्व-निन्दक तथा जघन्य पापी होता है।

दैवयोग से यदि किसी स्त्री के हाथ में उपरोक्त लक्षण विद्यमान हो तो वह कामातुरा अवश्य होगी, किन्तु अपनी काम

लिप्सा के मद में मत्त होकर अपने चरित्र का पतन कदापि नहीं करेगी। वह अपने पति के अतिरिक्त अन्य किसी के साथ सहवास करने का स्वप्न तक नहीं देखेगी। वह अत्याचारिणी भी नहीं होगी। किन्तु उसका क्रोध अवश्य ही विकराल होगा। निःसन्देह वह भी क्रोधावेश में किसी की भी हत्या कर बैठती है अथवा स्वयं आत्महत्या कर लेती है।

जिस व्यक्ति के हाथ मे सूर्य-क्षेत्र के ऊर्ध्व भाग में अर्थात् अनामिका अंगुली के ठीक मूल के नीचे अर्द्धवृत (अर्द्ध-चन्द्र नहीं) का चिह्न सरल स्थिति में हो तो उपरोक्त फलादेश मे वैपरीत्य आकर परिणाम शुभ होगा। इस लक्षण वाला व्यक्ति सरल स्वभाव तथा साधारण मनोवृत्ति का व्यक्ति होगा। उसमें उपरोक्त दुर्गुणों का समावेश न होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में अनामिका अंगुली के मूल के ठीक नीचे अर्थात् सूर्य-क्षेत्र के ऊर्ध्व भाग मे सरल अर्द्धवृत-चिह्न को दोनों छोरों पर एक छोटी, सीधी तथा स्पष्ट रेखा मिलाती हो और इस प्रकार अंग्रेजी वर्णमाला का ऊर्ध्व-मुखी चौथा अक्षर (ᗜ) जैसा चिन्ह बन गया हो तो वह व्यक्ति अवश्य-मेव महाज्ञानी ग्रामाधिपति तथा राजा महाराजाओं के सदृश्य होता है। वह अत्यन्त ऐश्वर्य-वैभव-सम्पन्न, धन-धान्य-युक्त, भृत्य-वाहन वाला भाग्यशाली होता है। वह उच्चकोटि का मन्त्र शास्त्री होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति महामाया भगवती मां दुर्गा का अनन्य-भक्त होकर इसी इष्ट के द्वारा अलौकिक कीर्ति प्राप्त करता है।

इसकी प्रवृत्ति प्रत्येक कार्य को प्रायः रात में करने की ओर अधिक रहती है। सम्भव है वह उत्कृष्ट भविष्यवक्ता भी हो जाय। यह व्यक्ति प्रत्येक अन्य व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से अपने वश में करता है। यह महा तेजस्वी अत्यन्त प्रतिभाशाली तथा सदैव धार्मिक कृत्यों में मग्न रहने वाला होता है। यह पराक्रमी, कुल-दीपक, परोपकारी, उदार, दूरदर्शी, विद्वान, दृढ़-प्रतिज्ञ, विचारशील, तथा सर्व विधि-सम्पन्न होता है। यह उच्च-कोटि का साहित्यिक, सुकवि तथा सुलेखक होता है। सार्वजनिक क्षेत्र में विशिष्ट स्थान, प्रतिष्ठा, सम्मान आदि प्राप्त करके यह व्यक्ति उच्चकोटि का नेता होता है। दैवयोग से यदि यह व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में पदार्पण करता है तो अत्यन्त सफल तथा कुशल व्यापारी होता है। इस व्यक्ति की स्त्री अत्यन्त लावण्यवती, रूपवती, सुशीला तथा पति-परायणा होती है। यह व्यक्ति उत्तमोत्तम वस्त्र, अलंकार तथा भोजन और स्त्री-पुत्र-पौत्रादि के सुख से सम्पन्न होकर आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का भाग्योदय उसकी आयु के बत्तीसवें वर्ष में होता है। हां, इतना अवश्य है कि उपरोक्त फल तब ही प्राप्त होता है जब कि बुध-क्षेत्र और बृहस्पति क्षेत्र भी उक्त लक्षण के साथ-साथ उच्च हों। इन तीन शुभ लक्षणों के एक साथ उपस्थित होने पर चाहे सूर्य-क्षेत्र निम्न ही क्यों न हो, उपरोक्त फल अवश्यमेव प्राप्त होगा। हमारे ऋषि-महर्षि तथा हस्त-विज्ञान के उद्भट आचार्यों ने तो यहां तक लिखा है कि

उपरोक्त लक्षण वाला व्यक्ति निश्चय ही अपनी अनामिका अंगुली में सदैव स्वर्ण अथवा रत्नादि धारण करता है। वह अपनी सात पीढ़ियों को तारने वाला और महान प्रतापी होता है। वह व्यक्ति अपनी मध्यमायु प्राप्त करके वीतरागी और महान योगी बनकर गुप्त रूप से अपनी साधना में संलग्न हो जाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः अत्यन्त दुर्लभ होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर अनामिका अंगुली के मूल में दो छोटी और टेढ़ी रेखायें हों, वह धनवान, कला-कौशल में निपुण, प्रसन्नचित, तीव्र बुद्धि, परमार्थी, साहित्यिक, दूसरों की सहायता लेने में अनिच्छुक, तथा यश की इच्छा न रखने वाला होता है। हां, यदि इस लक्षण वाले व्यक्ति का सूर्य-क्षेत्र निम्न हुआ तो वह कामी और पर-स्त्री गामी अवश्य होगा। साथ ही उस व्यक्ति को सदैव कमर के रोगों का आखेट रहना होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य भाग में किन्तु अंगुली के मूल पर तीन सीधी रेखायें हों, वह कठोर स्वभाव वाला, दुष्ट, दुराचारी, निन्दक, कृपण, क्रोधी और अप-व्ययी होगा। किन्तु इन दुर्गुणों के होते हुये भी इसका समाज में यथेष्ट प्रभाव तथा यश रहेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र और शनी क्षेत्र के मध्य भाग में किन्तु अंगुली के मूल में दो सीधी रेखायें हों तो वह कठोर स्वभाव, दुराचारी, निन्दक आदि उपरोक्त दुर्गुणों से युक्त

अवश्य होगा, किन्तु इन सब के साथ ही वह बुद्धिमान, नीतिज्ञ, व्यवहार कुशल तथा चतुर भी होगा। इसका समाज में पर्याप्त प्रभाव तथा यश रहेगा। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः मानसिक चिन्ताओं तथा रोगों से ग्रस्त रहेगा, किन्तु औषधोपचार से उनसे मुक्त भी हो जाता है। इसको प्राय: पैर में गहरी चोट लगती है।

जिस व्यक्ति के सूर्य-क्षेत्र और शनी-क्षेत्र के मध्य स्थान में किन्तु अंगुली के मूल भाग में केवल एक ही शुद्ध और सरल रेखा हो तो वह उपरोक्त सभी अशुभ फलों के विपरीत शुभ-फल-प्रद होती है। इस रेखा का फल प्राय: वही होता है जो सूर्य क्षेत्र के उच्च होने का होता है। यह व्यक्ति अपना जीवन आनन्द से व्यतीत करता है। शत्रुओं तथा विरोधियों पर इसे सदैव विजय प्राप्त होती है। यह स्पष्टवादी फलत: निष्कपट तथा मनसा-वाचा-कर्मणा शुद्ध एवं पवित्र होता है। स्पष्ट है कि वह नीच कर्म से स्वभावत: ही घृणा करता है। यह धैर्यशाली तथा उदार होता है। यह प्रत्येक कार्य सत्यता तथा निपुणता से करता है। अपने गुणों तथा साहस से यह व्यक्ति अनेकों विघ्न-बाधाओं से शीघ्र ही छुटकारा प्राप्त कर लेता है। नीच कार्यों से चाहे कितना ही लाभ क्यों न होता हो यह उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता, वरन् इसके विपरीत उनसे अधिक घृणा करने लगता है। अपने कुल गौरव तथा मर्यादा के पालन में यह सदैव तत्पर रहता है तथा अपने सामर्थ्यानुसार उनकी वृद्धि के लिये अहर्निश प्राण-प्रण से सचेष्ट रहता है। इसकी रहन-सहन से

ही बड़प्पन टपकता है। किन्तु किसी भी प्रकार का अभिमान किंवा दम्भ (अहंकार) इसमें जरा भी नहीं होता। यह अपने मित्रों में अटल विश्वास रखता है, किन्तु इसकी सरलता तथा उदारता से अनुचित लाभ उठाने वाले धूर्त व्यक्ति मित्रता का स्वांग रचकर इसके साथ विश्वासघात करते हैं। यह व्यक्ति दयावान, परोपकारी तथा उदार होता है। इसकी दया, सहानुभूति तथा उदारता केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं रहती किन्तु सत्पात्रों की रक्षा में यह सदैव तन मन धन से तत्पर रहता है। यह व्यक्ति अपने शत्रुओं से कलह नहीं करता, किन्तु धैर्य से काम लेकर शान्ति के साथ उनसे सुलझता है। आलसी, निरुद्यमी, कर्त्तव्य-भ्रष्ट, दायित्व हीन, अकर्मण्य, तथा दूसरों पर भार बनकर रहने वाले व्यक्तियों के प्रति इसे स्वभावतः कुरुचि रहती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के गुणों का इसके सम्पर्क में आने-वाले प्रत्येक व्यक्ति पर विशेष प्रभाव पड़ता है, फलतः यह अन्य मनुष्यों को अपने निर्देशानुसार चलाने में कुशल तथा सफल होता है। यह प्रायः प्रवास भी करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः साहित्यकार, पत्रकार, सुलेखक, सुवक्ता, सुकवि तथा देश-सेवक ही होते हैं। इनको अपने उद्यम और परिश्रम का फल पूर्णरूप से नहीं प्राप्त होता। इस प्रकार के व्यक्ति अवसर प्राप्त होने पर साधारणतः स्वयं को प्रत्येक स्थिति तथा प्रत्येक कार्य के योग्य सिद्ध कर दिखाते हैं। वास्तव में इनकी प्रतिभा बहुमुखी होती है और प्रत्येक विषय को अनायास ही

समझ लेने की इन में विलक्षण शक्ति होती है। इन सब गुणों के अतिरिक्त इस लक्षण वाले व्यक्ति के भाग्य में यह विशेषता होती है कि यह मातामह (नाना) की सम्पत्ति का अधिकारी होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र के उर्ध्व भाग से उद्भूत दो समानान्तर टेढ़ी रेखायें शनी क्षेत्र पर पहुंचती हैं वह व्यक्ति अवश्यमेव धूर्त, पाखण्डी, लम्पट, विश्वासघाती, कपटी, छली तथा नीच विचारों का होगा। इस व्यक्ति की मुखाकृति ही इस बात को स्पष्ट कर देती है यह व्यक्ति कुविचारी तथा कुकर्मी है। किन्तु इन सब दुर्गुणों से युक्त होकर भी वह उच्च-पदाधिकारी अवश्य होगा। इस लक्षण वाला व्यक्ति सदैव रमणियों में आसक्त रहता है। दुर्भाग्यवश इसकी स्त्री कुरूपा, कुलक्षणी तथा कुलटा होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में अनामिका अंगुली तथा मध्यमा अंगुली के मध्य भाग से उद्भूत एक गहरी टेढ़ी रेखा सूर्य-क्षेत्र के मध्य तक जाती हो तो वह अभिमानी, मूर्ख, निस्तेज, दुष्ट चरित्र, निन्दक, कपटी, कुचाली, कार्य-सिद्धि-हीन शत्रुत्व-बुद्धि तथा भ्रष्ट कपाली होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर हृदय-रेखा (Heart Line) से उद्भूत एक सीधी किन्तु कहीं मोटी और कहीं पतली रेखा अनामिका तथा मध्यमा अंगुली के मध्य भाग तक पहुंचे, वह सन्तापी, चिन्ता युक्त, दुःखी, अनेक दुर्घटनाओं तथा कष्टों को

भोगने वाला होता है। किन्तु इन सब आपत्ति-विपत्तियों के रहते हुये भी वह सरल-स्वभाव, मृदुभाषी, दयावान, चरित्रवान तथा परिश्रमी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह होता है कि वह जिस किसी व्यक्ति के साथ उपकार करता है उसके प्रतिफल में वही व्यक्ति उसका अपकार करता है। किन्तु इस व्यक्ति में साहस और सद्भावना अत्यन्त प्रबल होती है और आशायें भी सफल होती हैं। अतः वह अपने प्रति किये गये अपकार की किञ्चितमात्र भी चिन्ता नहीं करता।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिन्ह अंकित हो वह व्यक्ति विद्वान, नीति परायण, दूरदर्शी, धैर्यशाली, बुद्धिमान, शिल्पकला कुशल, पशु-संग्रही, भूसम्पत्ति-सम्पन्न, विभूतियुक्त, सत्यभाषी, उच्चपदस्थ, दानी, उदार और यशस्वी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को उपरोक्त सब गुण तथा सुख-ऐश्वर्य तो प्राप्त रहते हैं किन्तु अपने औरस से इसे सन्तान-सुख प्राप्त नहीं होता। फलतः उसे दत्तक पुत्र लेना पड़ता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर स्थित त्रिकोण-चिह्न क्षत विक्षत हो वह उपरोक्त सभी सुख, सम्पति तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है किन्तु उसका दत्तक पुत्र उस सबको अर्थात् उसकी चला-चल सब सम्पत्ति वैभव आदि को कुकर्मों में नष्ट कर देगा। वह पुत्र सदैव वेश्याओं में रत रहेगा और आश्चर्य नहीं यदि वह अपने पिता की हत्या करने पर भी उतारु हो जाय।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र और बुध क्षेत्र के मध्य स्थान पर नक्षत्र-चिन्ह अंकित हो वह व्यक्ति अपने गृहस्थाश्रम

के आरम्भ में (अर्थात् विवाह होने के पश्चात्) उच्चकोटि का व्यवसाय-व्यापार और यश का कार्य सम्पादन करके अतुल सम्पत्ति और कीर्ति प्राप्त करता है। साथ ही इसी समय इस व्यक्ति को शीघ्र ही पुत्र लाभ की भी पूर्ण सम्भावना होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर नक्षत्र का चिह्न हो किन्तु सूर्य-रेखा (Line of Sun) अपना प्रभाव अच्छा न दिखा रही हो, तो वह व्यक्ति धन तथा यश तो अवश्य प्राप्त करता है, किन्तु सदैव शोक और चिन्ताओं में ग्रस्त रहता है। उसकी ये चिन्तायें तथा शोक उसके अपने कार्यों के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न नहीं होती, किन्तु उसके परिजन बन्धु-बान्धव, स्त्री तथा शत्रुओं द्वारा उत्पन्न की जाती है। इसके स्पष्टीकरण में बताया जा सकता है कि जिस व्यक्ति के उक्त लक्षण होंगे उसकी स्त्री पर-पुरुष-गामिनी होगी और वह अवश्यमेव अपने जार (उप-पति) के साथ भाग जायगी तथा उसके बन्धु-बान्धव उसकी चल-अचल सम्पत्ति पर अधिकार करने के लिए कितने ही षड़यन्त्र रचेंगे। इसी प्रकार शत्रु-बाधा भी होती रहेगी। किन्तु यदि सूर्य रेखा (Line of Sun) सुस्पष्ट, अक्षत, शुद्ध तथा बलवान हुई तो वह व्यक्ति उपरोक्त सभी दुर्घटनाओं तथा आपत्तियों का धैर्य और साहस के साथ सामना करेगा और अन्ततः उन सब पर विजय भी प्राप्त करेगा।

बुध-क्षेत्र का विवेचन

मानव-हस्त में हस्त-विज्ञान-वेत्ताओं ने सूर्य मण्डल अथवा

सौर-जगत्-स्थित नव-ग्रहों की जो कल्पना की है उसके अन्तर्गत हम पिछले पृष्ठों मे क्रमशः बृहस्पति ग्रह, शनी-ग्रह और सूर्य ग्रह के सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन लिख चुके हैं। प्रस्तुत क्रमानुसार अब हम बुध-क्षेत्र का वर्णन करेंगे। यह क्षेत्र हाथ की सबसे छोटी अंगुली अर्थात् कनिष्ठका अंगुली को बुधाङ्गुलि (अर्थात् बुध की अंगुली) भी कहते हैं।

बुध-क्षेत्र का विस्तृत परिचय

बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) का स्थान मानव-हस्त पर उत्तर में कनिष्ठका अंगुली (Fourth Finger) के मूल से दक्षिण में मंगल के प्रथम-क्षेत्र तक तथा पूर्व मे सूर्य-क्षेत्र और पश्चिम में हाथ की सीमा (क्षितिज) पर्यन्त विस्तृत स्थल है। अधिक स्पष्ट रूप से इसकी सीमाओं को इस प्रकार भी लिखा जा सकता है। कनिष्ठका अंगुली के मूल से हृदय-रेखा (Line of Heart) पर्यन्त तथा सूर्य-क्षेत्र (Mount of Sun) की सीमा को स्पर्श करने वाला सम्पूर्ण स्थल बुध-क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसे शब्दान्तर में बुध क्षेत्र के अतिरिक्त बुध-पर्वत, बुध का उभार, माउण्ट आव मरकरी, बुध-स्थल, बुध का मैदान आदि नाम से भी सम्बोधित करते हैं।

बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति का स्वरूप विचार

बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति दूर्वा के सदृश्य हरित वर्ण वाले, कृश शरीर वाले, छोटे कद वाले तथा प्रसन्न मुद्रा वाले होते हैं। इसकी ऊंचाई साधारणतः साढ़े पांच फुट के लगभग होती है, किन्तु

शारीरिक गठन ठोस होती है और देखने में साफ और पवित्र प्रतीत होता है। इसके चेष्टायें प्रभावोत्पादक होती हैं।

इस व्यक्ति की मुखाकृति अण्डाकार तथा सुन्दर होती है। देखने में इसका मुख-मण्डल लम्बा और गठन आकर्षक होती है। इसकी मुखाकृति की अभिव्यक्ति अत्यन्त शीघ्र परिवर्तन शील रहती है। वास्तव में यह इसके हृदयगत भावों के तीव्र-गति से परिवर्तित होने की सूचना देती है। इसका मस्तक उठा हुआ रहता है।

इस व्यक्ति की त्वचा मृदु अर्थात् कोमल, चिकनी, साफ तथा पारदशक होती और उसका वर्ण जैतूनी-रंग का होता है। इसकी त्वचा के नीचे की रक्त-वाहिनी शिराओं की गति विधि स्पष्ट झलकती रहती है। जब कभी यह व्यक्ति भावावेश में आकर उत्तेजित, क्रोधित भयातुर, व्याकुल, हत प्रभ आदि होता है तो इसकी त्वचा का वर्ण लाल, श्वेत आदि रंगों में परिवर्तित हो जाता है।

इस व्यक्ति का ललाट उन्नत होता है तथा केश अत्यधिक काले और अन्त में घूंघर वाले होते हैं। इसकी दाढ़ी यद्यपि छोटी होती है किन्तु उसमें बाल शीघ्र ही आने लगते हैं। दाढ़ी से इसका चेहरा ढक जाता है और दाढ़ी के बाल अन्य बालों की अपेक्षा अधिक काले होते हैं।

इस व्यक्ति की भौंहे पतली, धनुषाकार तथा प्रायः परस्पर मिली हुई होती हैं, किन्तु इनकी बनावट समान होती है तथा दर्शनीय

प्रतीत होती हैं। इसकी आँखें काली और स्थिर होती हैं। साधारणतः बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति के नेत्र गहरे, तेज, चमकीले तथा चंचल होते हैं। इस क्षेत्र वाले व्यक्ति की आंखें पीत अथवा श्वेत वर्ण की भी होती हैं। इसकी दृष्टि अत्यन्त तीक्ष्ण होती है। यह व्यक्ति प्रायः बहुत घूर २ कर देखता है। इसका इस प्रकार घूर २ कर देखना कभी-कभी बहुत ही अशिष्ट प्रतीत होता है, किन्तु यह व्यक्ति जिस किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को इस प्रकार अत्यन्त घूर-घूर कर देखता है उसके सम्बन्ध में बहुत ठीक अनुमान लगा लेता है। इसकी पलकें पतली होती हैं।

बुध क्षेत्रीय व्यक्ति की नाक लम्बी और पतली होती है किन्तु सिरे पर अपेक्षाकृत मोटी होती है। इसके ओष्ठ पतले और सुडौल होते हैं, किन्तु उनका वर्ण कुछ पीलापन लिये हुए होता है। इसी प्रकार इसकी आंखों का श्वेत भाग भी यत्किञ्चित पीत-पन लिये होता है। इसका कारण यह है कि यह व्यक्ति किंचित उत्तेजित होता है और इसकी प्रकृति में पित्त दोष अपेक्षाकृत विशेष रूप से विद्यमान रहता है। अपने इस प्राकृतिक उत्तेजित-स्वभाव के कारण ही यह व्यक्ति श्वांस-प्रश्वांस शीघ्रता से लेता है। कभी २ इसके श्वास-प्रश्वास की गती इतनी तीव्र हो जाती है कि इसे मुँह से श्वास लेने को विवश होना पड़ता है।

इस व्यक्ति की ठोड़ी लम्बी और नुकीली होती है। गर्दन मजबूत तथा स्नायु-युक्त होती है। स्कंध दर्शनीय होते हैं। वक्षस्थल प्रशस्त होता है। जिसके अन्तर-प्रदेश में विशाल फेफड़े

रहते हैं। इसकी आवाज भरी हुई होती है, तेज नहीं होती। किन्तु निर्बल, अशक्त और धीमी भी नहीं होती। हां मध्यम प्रकार की सुन्दर होती है।

इस व्यक्ति के अंग प्रत्यंग सुडौल, सुन्दर तथा क्रियाशील होते हैं। यह व्यक्ति प्रत्येक काम बड़ी स्फूर्ति के साथ करता है। यह अपनी स्फूर्ति के लिये प्रख्यात होता है। ये व्यक्ति सहिष्णु भी होता है। यह शक्ति इसे इसके सशक्त स्नायु मण्डल से प्राप्त होती है। इसके दन्त श्वेत और छोटे होते हैं जो कि मसूड़ों में सुन्दरता के साथ समान-रूप से लगे रहते हैं।

संक्षेप में बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति सब प्रकार से ठोस, सुडौल, सशक्त तथा सुन्दर होता है। यद्यपि इस क्षेत्र वाला प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर नहीं होता किन्तु आकार-प्रकार तथा गठन सभी की अपेक्षाकृत सुन्दर और सुडौल ही होती है।

बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति का स्वभाव-विचार

बुध क्षेत्रीय व्यक्ति रजोगुणी, श्रमशील, वाचाल, चंचल, विचार शील तथा आशावादी होता है। यह व्यक्ति अन्य सभी प्रकार के व्यक्तियों से विशेष चपल और स्फूर्ति-सम्पन्न होता है। उसकी यह स्फूर्ति उसकी शारीरिक-क्रियाओं तक ही सीमित नहीं होती वरन् उसकी मानसिक-शक्ति भी अत्यन्त तीव्र और प्रकाश युक्त होती है। यह व्यक्ति प्रत्येक कार्य के सम्पादन में अत्यधिक शीघ्रता करता है। इसके विचारों में भी स्थिरता नहीं होती किन्तु इसकी आन्तरिक बुद्धि प्रतिभा-युक्त होती है। यह प्रत्येक

वस्तु से, जो उसकी शारीरिक अथवा मानसिक तेजस्विता के फल-स्वरूप प्राप्त होती है, आनन्दोपभोग करता है। अपने प्रत्येक कार्य में वह अनुग्रह की मूर्ति होता है और प्रत्येक कार्य अत्यन्त कुशलता से करता है। इस व्यक्ति से किसी प्रकार का लाभ उठाना अपेक्षाकृत कठिन होता है। यह व्यक्ति सदैव चौकन्ना अथवा सतर्क रहता है।

यह व्यक्ति व्यायाम तथा प्रत्येक प्रकार की क्रीड़ाओं का प्रेमी होता है। प्रायः सभी क्रीड़ाओं में यह दक्ष होता है। यह अपने शरीर के अवयवों तथा मानसिक शक्ति—दोनों से खेलता है अर्थात् क्रीडाङ्गण में भी इसकी बुद्धि तदनुरूप ही अपने कार्य में संलग्न रहती है। जिसके फलस्वरूप—मानसिक और शारीरिक शक्ति के सहयोग से—यह सदैव विजयी होता है। यह व्यक्ति अपने खेलों को योजना-क्रम से ही खेलता है और उसका अनुक्रम अपने प्रति-स्पर्धी की योग्यता और शक्ति के अनुसार ही निश्चित कर लेता है। फलतः यह व्यक्ति उन सभी क्रीड़ाओं में, जिनमें शारीरिक-शक्ति की अपेक्षा क्रीड़ा-कौशल तथा चतुरता को विशेष स्थान प्राप्त होता है, सदैव विजेता होता है।

यह व्यक्ति वाद विवाद में भी अत्यन्त निपुण तथा चतुर होता है। इसका एक मात्र कारण यह है कि इस क्षेत्र वाला व्यक्ति अन्य सभी प्रकार के व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक बोलने में विशेष निपुण और कुशल होता है। वाद-विवाद में यह किसी भी प्राप्त अवसर का अपने समर्थन में सदुपयोग करने से नहीं

चूकता। दूसरे जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं यह व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को पहिचानने में भी अत्यन्त कुशल होता है। अतः यह अपनी तीक्ष्ण तथा अचूक दृष्टि से अपने प्रति-स्पर्धी की योग्यता तथा उसकी दुर्बलताओं को अनायास ही जान लेता है और इन सब का विवाद के समय अत्यन्त सतर्कता से उपयोग करता है। फलतः वाद-विवाद में विजयी होकर सम्मान और यश प्राप्त करता है।

यह व्यक्ति कुशल, ओजस्वी तथा प्रभावशाली वक्ता भी होता है। यद्यपि यह प्रत्येक विषय पर धारा-प्रवाह भाषण करने की योग्यता नहीं रखता, किन्तु जिस किसी विषय पर इसका अधिकार होता है उस पर व्याख्यान देते समय श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर लेता है। अपने विषय किंवा सिद्धान्त की पुष्टि में यह व्यक्ति अनेकानेक युक्ति-युक्त तथा न्याय-संगत तर्क उपस्थित करने में अत्यन्त कुशल होता है। अपने विचारों को प्रकट करने का इसमें विलक्षण चातुर्य्य होता है। मध्याह्नोत्तर इसका भाषण अधिक प्रभावशाली, ओजस्वी तथा सफल होता है।

संक्षेप में बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति वाक्-युद्ध, वाद-विवाद, तर्क तथा मनोरंजक वार्तालाप में अपने प्रति-स्पर्धी को किसी भी प्रकार विजयी नहीं होने देता।

बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति नवीन विचारों के प्रचारक तथा प्रेरक होते हैं। यह व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति

(स्त्री अथवा पुरुष) पर अपना अचूक प्रभाव स्थापित करने में अत्यन्त सिद्ध-हस्त होते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि उपस्थित व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के स्वभाव तथा चरित्र का सटीक अनुमान लगा लेने की इनमें ईश्वर-प्रदत्त शक्ति होती है। जो भी व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) इनके सम्पर्क में आता है, उसका स्वभाव, आचरण, मनोवृत्ति आदि का यह पहली ही दृष्टि में अचूक अनुमान लगा लेता है। फलतः उसकी विशेषताओं और दुर्बलताओं का उसे पूरा-पूरा ज्ञान हो जाता है। अपने इस ज्ञान का वह पूर्ण सदुपयोग करता है और उसके गुणों की प्रशंसा तथा दुर्बलताओं पर निर्मम आघात करता हुआ अनायास ही उसे अपने प्रभाव में लेकर उस पर अधिकार कर लेता है। इसके पश्चात् उससे अपना मन-चाहा काम कराने में वह अनायास ही सफल हो जाता है।

बुध क्षेत्रीय व्यक्ति स्वभावतः ही अत्यन्त चतुर, चालाक तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह व्यक्ति अपनी समस्त योग्यता, कौशल, चातुर्य्य तथा शक्ति को समन्वित करके अपने आपको संसार में आगे बढ़ाने में लगा देता है। हमारे इन शब्दों को पढ़कर सम्भव है हमारे पाठक यह कहें कि बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति बड़ा भयंकर होता है। निःसन्देह हमारे पाठकों की यह धारणा अक्षरशः सत्य है। बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति वास्तव में भयंकर ही होता है। हमने यह कितनी ही बार अनुभव किया है कि अन्य (किसी भी) क्षेत्रीय-व्यक्ति उसकी चतुरता, दक्षता, कार्य कुशलता

निपुणता, अथक परिश्रम, कूट-नीति, प्रपंच, धूर्तता आदि की अणु-मात्र भी समानता नहीं कर सकता, उसको प्रत्येक बात में, प्रत्येक गति-विधि में तथा प्रत्येक कार्य में उसका स्वार्थ गूढ़-रूप से भरा रहता है।

बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति प्रत्येक मनुष्य के चरित्र को प्रथम दृष्टि में ही जान लेने वाला, गणितज्ञ, वैद्य, गुप्त-विद्याओं का ज्ञाता, कला और साहित्य से विशेष प्रेम रखने वाला, व्यापार में सदैव धनार्जन की नवीन-नवीन युक्तियों में संलग्न रहने वाला होता है। प्रायः यह भी अनुभव में आया है कि इस प्रकार के व्यक्ति वैद्य डाक्टर, चिकित्सक, सम्पादक, पत्रकार, साहित्यकार, सुलेखक, सुकवि, कुशल व्यापारी, वकील, बैरिस्टर आदि होते हैं। न्यायालय में वाद-विवाद के समय इनमें तर्क की बहुलता पायी जाती है। यहां तक भी देखा गया है कि इस क्षेत्रीय-व्यक्ति अभिनेता, नक़ल करने वाले, प्रेमी, प्रसन्नचित्त विदूषक, यात्रा-प्रेमी और प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक होते हैं।

यह व्यक्ति कुशल व्यवस्थापक भी होता है। अपने अनुयायियों को अनुशासन तथा आज्ञानुवर्ती रखने के लिये यह व्यक्ति उन्हें आगे बढ़ाने अथवा पीछे रखने की नीति में भी पूर्ण कुशल होता है। यह व्यक्ति अपनी कुटिल नीति से आवश्यकतानुसार अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण कर लेता है। इस प्रकार बुध-क्षेत्रीय व्यक्ति साधारणतः सभी प्रकार से अच्छा होता है।

बुध-क्षेत्र की उच्चता का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र प्रशस्त, शुद्ध, सुडौल, सुन्दर, तथा उच्च हो वह स्वभावतः ही तीक्ष्ण-बुद्धि, विचारशील, साहसी, कल्पक, विनोदी, पर्यटक, सौन्दर्योपासक, पराक्रमी, कौतुक प्रिय, बाल चेष्टावाला, चंचल, वाचाल, व्यायाम-प्रिय तथा क्रीड़ा-प्रेमी होगा। यह व्यक्ति प्रायः चिकित्सक, ज्योतिर्विद्, अदृष्टवादी, योद्धा, साहित्यकार, पत्रकार, सुलेखक, सुकवि, शिल्पी, अभिनेता, व्यापारी, व्यवसायी, गुप्त-विद्याओंका ज्ञाता, मानसिक शक्तियों पर प्रभुत्व रखने वाला, मानव-परिचय का ज्ञाता, मत परिवर्तनकारी तथा अप्रतिद्वन्द्वी होता है। यह व्यक्ति उत्साही, बुद्धिमान, गर्व-रहित, धर्मज्ञानवेत्ता, शास्त्रों का ज्ञाता, आपत्तियों तथा कठिनाइयों को झेलने में समर्थ तथा उन पर विजय पाने वाला, पीड़ाओं की चिन्ता न करने वाला तथा धैर्यवान भी होता है।

यह व्यक्ति आपत्तियों, कठिनाइयों, संकटों, दुर्घटनाओं तथा पीड़ाओं की तनिक भी चिन्ता नहीं करता। वह छोटे अक्षर लिखता है। उसका विवाह प्रायः अल्पायु में ही हो जाता है। उसे सुन्दर स्त्री तथा धन प्राप्त होता है। जिस व्यक्ति का बुध क्षेत्र उच्च होता है वह साधारणतः जेष्ठ मास से आषाढ़ मास के पूर्वार्द्ध में जन्म लेता है। उच्च बुध क्षेत्र के साथ-साथ यदि जीवन-रेखा (Line of Life), मस्तक-रेखा (Line of Head) और हृदय-रेखा (Line of Heart) भी शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत तथा सुन्दर हो तो वह व्यक्ति अस्सी वर्ष पर्यन्त भौतिक कलेवर

में धरा का आनन्दोपभोग करता है। उपरोक्त तीन रेखाओं में से एक के भी विकल होनेपर आयु सम्बन्धी यह फल नष्ट होजाता है।

बुध-क्षेत्र की निम्नता का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र निम्न अथवा अनुच्च हो उस व्यक्ति को उपरोक्त उच्च-क्षेत्र के फल से सर्वथा विपरीत फल तो प्राप्त होगा ही साथ ही साथ उसे निम्नलिखित दुष्फल विशेष रूपसे प्राप्तहोगा। यह व्यक्ति सदैव खिन्न रहेगा और उसमे क्रोध की मात्रा विशेष होगी। यह व्यक्ति यदा-कदा अपने परिजन बन्धु-बान्धवों से भी विरोध कर बैठेगा। विद्यालय से उसे सन्तोष नहीं होगा, किन्तु धैर्य्यशील होकर निर्दिष्ट-पथ के अनुसार प्रयत्न करके विद्याभ्यास में सफल अवश्य हो जायगा। धनाभाव के कारण उसकी आर्थिक और सामाजिक उन्नति में अनेकानेक बाधायें उत्पन्न होती रहेंगी जिनके परिणाम-स्वरूप वह सदैव अशान्त और चिन्ता ग्रस्त रहेगा।

बुध-क्षेत्र की अत्युच्चता का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो अर्थात् आवश्यकता से अधिक ऊंचा उठा हुआ टीला जैसा हो वह मिथ्यावादी, विश्वासघाती, निर्बुद्धि तथा अनर्गल-प्रलापी होता है। इस व्यक्ति को साधारण विद्या प्राप्त होती है। वह छली, प्रपंची, ठग, असत्यभाषी, कलह-प्रिय तथा लुच्चा होता है। वह स्वभावतः ही सदैव द्यूत क्रीड़ा में व्यस्त रहता है। उसके अक्षर सर्प के सदृश्य बांके-टेढ़े होंगे और अन्त मे तलवार की धार के समान बारीक अक्षर लिखेगा।

अत्युच्च बुध-क्षेत्र वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में हमारे अनुभव में आया है कि उसके हाथ मे यदि गुणक चिह्न भी उसी अत्युच्च बुध-क्षेत्र पर ही अंकित हो तो उसका द्यूत-व्यसन इतना प्रबल होता है कि वह अपनी अचल और चल समस्त सम्पत्ति भी दाँव पर लगा देता है। हां, यदि उस स्थान पर चतुष्कोण का चिन्ह हो तो उसे यत्किञ्चित् शुभ फल प्राप्त हो जाते हैं, किन्तु इस दशा में भी उसके द्यूत-व्यसन में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वरन् बुध-क्षेत्र की अत्युच्चता के फल-स्वरूप वह व्यक्ति द्यूत-कर्म में अत्यन्त प्रवीण होता है और चल-अचल सम्पत्ति के साथ साथ अपनी अर्द्धांङ्गिनी तक को हार जाता है। हस्त-विज्ञान के एक सुयोग्य विद्वान ने हमको बताया था कि इस लक्षण वाले एक सद्गुणी तथा विद्वान महाशय जो कि तन्त्र-विद्या के स्वयं अपूर्व ज्ञाता थे दीपमालिका की रात्रि को द्यूत-क्रीड़ा में अपनी समस्त चलाचल सम्पत्ति हार जाने के पश्चात् अपनी अर्द्धांङ्गिनी और बच्चों तक को हार गये। उनके वे बच्चे अब तक उस जीतने वाले व्यक्ति की सम्पत्ति भोग रहे हैं।

हस्त विज्ञान के पाश्चात्य विद्वानों की सम्मति में अत्युच्च ग्रह-क्षेत्र पर चतुष्कोण निकृष्ट फल प्रदान करता है, किन्तु हम इस मत से सहमत नहीं हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में कितने स्थानों पर यह उल्लेख प्राप्त होता है कि अत्युच्च ग्रह क्षेत्र पर चतुष्कोण होने से उस क्षेत्र के दुष्प्रभाव मे यत्किञ्चित न्यूनता आ जाती है। वास्तव मे इस विज्ञान में पग २ पर अनेकानेक गुप्त भेद

छिपे पड़े हैं। पश्चात्य विद्वानों ने यद्यपि हमारे ग्रन्थों (जो उन्हें प्राप्त हो सके) की अत्यधिक छानबीन करके उन्हें प्रकाशित करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है, किन्तु गहरी खोज करने के पश्चात् भी कितने ही रहस्य उनके हाथ अभी तक नहीं लगे हैं। हम साहस पूर्वक कह सकते हैं कि विद्या, बुद्धि तथा मानसिक अभ्युदय के क्षेत्र में आज तक हमारी समता करने का साहस संसार में किसी भी देश को नही है। हस्त विज्ञान के सम्बन्ध में पाश्चात्य देशों के प्रख्यात विद्वान श्री कैरो ने भारतीय सामुद्रिक विज्ञान की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है और उसे संसार में सर्वोपरि स्वीकार किया है।

बुध-क्षेत्र के सूर्य-क्षेत्र की ओर झुकाव का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र सूर्य-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तो वह व्यक्ति व्यापार-कुशल, प्रतापशाली, चिकित्सक, बैरिस्टर अथवा चित्रकार होता है। प्रायः ऐसा अनुभव में आया है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति अपने मामा की सम्पत्ति का उपभोग करके सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं। इनको सुन्दर, कुलीना, विदुषी तथा सुशीला भार्या प्राप्त होती है। वह गृह-कार्य में कुशल होती है तथा अपने पति के जीवन काल ही में मृत्यु प्राप्त करती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध क्षेत्र सूर्य-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो और दैवयोग से धन-रेखा भी सुस्पष्ट, अक्षत, प्रमाणिक तथा शुद्ध हो तो वह व्यक्ति प्रभावशाली वक्ता और शस्त्र-चिकित्सा में विशेपरूप से निपुण होता है।

जिस स्त्री के हाथ में बुध-क्षेत्र सूर्य-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो वह स्त्री वैधव्य भोगती है तथा उसका पति व्यसनी, दुराचारी, अकर्मण्य, अस्वस्थ, निरुद्यमी तथा निर्धन होगा। इस लक्षण वाली स्त्री को आजन्म दुःख ही भोगना पड़ेगा।

शंका-समाधान

सूर्य-क्षेत्र की ओर बुध-क्षेत्र के झुकाव का फलादेश स्त्री और पुरुष के विषय में भिन्न-भिन्न प्रकार है। साथ ही यह भिन्नता साधारण न होकर अत्यन्त विषम है। क्योंकि जहां स्त्री के हाथ में इस का फल वैधव्य-दायक है वहां पुरुष के हाथ में इस लक्षण से उसकी स्त्री की मृत्यु उसके ही जीवन में होना प्रकट होता है। अतः यहाँ जन-साधारण को यह शंका करने का अनायास ही अवसर प्राप्त हो जाता है कि यदि दैवयोग से पति-पत्नी दोनों ही के हाथ में बुध-क्षेत्र सूर्य-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तो उपरोक्त दोनों फलादेशों में कौन-सा सच माना जाय? किन्तु वास्तव में देखा जाय तो इस प्रकार की शंकायें अज्ञानता सूचक ही हैं। यदि तनिक गम्भीरता से विचार किया जाय तो इसका समाधान अनायास ही हो जाता है।

पिछले पृष्ठों में हम अनेक बार यह लिख चुके हैं कि किसी भी प्रकार का फलादेश निश्चित करने से पूर्व हाथ के आकार-प्रकार तथा उसकी गठन पर गम्भीर विचार कर लेना चाहिये। इस सम्बन्ध में हमने प्रस्तुत पुस्तक में ही एक स्वतन्त्र प्रकरण आरम्भ में ही लिखा है। हाथों का आकार-प्रकार तथा उनकी

गठन मानव-प्रकृति की पृथकता की सटीक सूचना देते हैं। इस कसौटी पर परीक्षा करने पर प्रतीत होगा कि जिस स्त्री का हाथ चौड़ा, कठोर और अशुभ होगा उसी का बुध-क्षेत्र सूर्य क्षेत्र की ओर झुका होगा। फलतः इस प्रकार के अशुभ योग वाली पत्नी का पती शुभ-योग वाला किसी भी प्रकार से नहीं हो सकता। क्योंकि इस योग वाली स्त्री का पति तो व्यसनी, दुराचारी, अकर्मण्य, अस्वस्थ, निरुद्यमी तथा निर्धन होगा। इसके विपरीत जैसी कि शंका उपस्थित की जा सकती है उपरोक्त योग वाला पुरुष व्यापार-कुशल, प्रतापशाली, चिकित्सक, वैरिस्टर और चित्रकार होगा और उसे मामा की सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा उसका जीवन सुखमय व्यतीत होगा। ऐसी दशा में पाठक स्वय ही विचार सकते हैं कि यथार्थतः उपरोक्त शंका कितनी भ्रमात्मक तथा अर्थहीन है।

बुध-क्षेत्र के मंगल-क्षेत्र की ओर झुकाव का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र मंगल-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो वह व्यक्ति सदैव प्रसन्नचित्त रहता है। आमोद-प्रमोद इसे अत्यधिक प्रिय होते हैं। किन्तु इसे दूसरों के सुख दुःख की तनिक भी चिन्ता नहीं होती। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने अत्यन्त निकटस्थ सम्बन्धी की मृत्यु पर भी सम्वेदना का अनुभव नहीं करता। किन्तु यह उदार हृदय होता है और अपने सम्पर्क में आने वाले संकट-ग्रस्त व्यक्तियों तथा परिजन बन्धु-बान्धवों और इष्ट-मित्रों को आर्थिक सहायता अवश्य पहुंचाता है।

उच्च गुरु क्षेत्र के साथ उच्च बुध क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ मे अन्यान्य सभी गृह-क्षेत्रों में केवल गुरु-क्षेत्र और बुध-क्षेत्र ही उन्नत हों वह व्यक्ति समाज में मान-प्रतिष्ठा और यश प्राप्त करता है। जन-साधारण पर उस व्यक्ति का विशेष प्रभाव होता है और वह जनता को अपने विचारों तथा योजनाओं के अनुकूल कार्य करने को सफलता पूर्वक प्रेरित कर सकता है। वह व्यक्ति स्वयं भी स्वावलम्बी होता है तथा अपने क्रियात्मक उदाहरण उपस्थित करके जन साधारण को स्वावलम्बी बनने का सदुपदेश करने की विलक्षण शक्ति रखता है। इस व्यक्ति की सफलता का मुख्य रहस्य यह है कि वह श्रमशील, लगनशील, दृढ़-निश्चयी और अथक उद्यमी होता है। वह अपने विचारों तथा योजनाओं को अपने साधनो तथा शक्ति से अधिक नहीं होने देता तथा पहले प्रत्येक को स्वयं कार्यान्वित करता है। जिसके फल स्वरूप देखने और सुनने वालों पर उसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है और वे अनायास ही उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। यह व्यक्ति मनोरंजन, आमोद-प्रमोद तथा खेल-तमाशों का अत्यधिक प्रेमी होता है। हमारे अनुभव में ऐसा आया कि इस लक्षण वाला व्यक्ति मानव-जीवन के प्रत्येक-क्षेत्र में मनोरंजन का ही अनुभव करता है। यहां तक कि वह विद्या से भी खेला करता है। प्राय अहर्निश अविरल गति से पठन-पाठन, अध्ययन तथा लेखन में तन्मय रहता है तथा इस कार्य में उसे उतना ही आनन्द प्राप्त होता है जितना किसी अन्य

मनोरंजन क्रीड़ा में प्राप्त होता है। यह व्यक्ति सफल साहित्य-कार, पत्रकार, सुकवि तथा सुलेखक होता है। किन्तु वह प्रायः पैंतालीस वर्ष की आयु में ही वैराग्य ग्रहण कर लेता है।

उच्च मंगल-क्षेत्र (प्रथम) के साथ उच्च बुध क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल प्रथम मंगल-क्षेत्र और बुध क्षेत्र—यह दो ही ग्रह-क्षेत्र उन्नत हों वह व्यक्ति आबाल-वृद्ध नर-नारी सभी से समान-रूप से हास्य-विनोद तथा ठिठोली करता है। यह व्यक्ति जिस वय के मनुष्यों के सम्पर्क में आता है उसी वय के अनुसार आचार-विचार तथा व्यवहार करने लगता है। बच्चों में बच्चा हो जाता है, बड़ों में बड़ा, वयस्कों में वयस्क तथा वृद्धों में वृद्ध हो जाता है। अपने भ्रातृ वर्ग से उसे अत्यधिक प्रेम होता है। वह सदैव धार्मिक-कृत्यों में तल्लीन रहता है। वह व्यवहार-कुशल होता है। उसे अपने जीवन में देवस्थान तथा आश्रयगृह (धर्मशाला आदि) निर्माण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

उच्च शुक्र-क्षेत्र के साथ उच्च बुध-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल शुक्र-क्षेत्र और बुध-क्षेत्र ही उन्नत हों वह व्यक्ति गोपालन में- विशेष अभिरुचि रखता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को प्रायः अपनी मातामह (नानी) की ओर से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। इसका स्वास्थ्य उच्च-कोटि का होता है। यह व्यक्ति व्यायाम-प्रिय, औषधि-सेवन से घृणा करने वाला और मानसिक, आध्यात्मिक तथा प्राकृतिक

चिकित्सा का प्रेमी होता है। यह व्यक्ति बैठक-बाज होता है और अपना अधिकांश समय मित्र-मण्डली के साथ विनोद-वार्ता अथवा अन्य किसी प्रकार के मनोरंजन में ही व्यतीत करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के शत्रु प्रायः नहीं के बराबर होते हैं। यह व्यक्ति स्वभावतः ही विनोद-प्रिय, प्रसन्न मुख-मुद्रा वाला, आमोद प्रमोद में तन्मय रहने वाला तथा आनन्दी होता है।

उच्च मंगल-क्षेत्र (द्वितीय) के साथ उच्च बुध-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में केवल मंगल-क्षेत्र (द्वितीय) और बुध-क्षेत्र ही उन्नत हों वह अत्यन्त उदार और विशाल हृदय वाला होता है। यह व्यक्ति अपने आश्रितों का अत्यन्त प्रेम के साथ पालन करता है। अपने आश्रितों की अभिरुचि, अभिलाषा, सुख दुख, आमोद-प्रमोद, वस्त्राभूषण, भोजन-विश्राम आदि प्रत्येक विषयों का पूर्ण सावधानी और सतर्कता से निर्वाह करता है। यह व्यक्ति जलज वस्तुओं (मोती, मूंगा, तिन्नी, शंख, सीप, सिंहाड़ा, मछली आदि आदि) के क्रय-विक्रय, कृषी, मिट्टी के खिलौने, बाजा आदि विनोद-सामग्री, वस्त्र-व्यवसाय आदि से अपनी जीविकार्जन करता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति बुद्धिमान, धनवान, विचार शील, व्यवहार-कुशल, गुण-सम्पन्न, सम्मानित, यशस्वी होकर समाज में पूज्य-पद के अधिकारी होते हैं।

बुध-क्षेत्र से विचारणीय विषय

बुध-क्षेत्र से साधारणतः विद्या, बुद्धि, इच्छाशक्ति, स्मरण-शक्ति, मेधाशक्ति, व्यापार-व्यवसाय, काव्य-कला, विचारों की

चंचलता, वाक्-शक्ति, वाचालता, बन्धु, स्त्री, विवेक, मामा, इष्ट-मित्र आदि का विचार किया जाता है।

बुध-क्षेत्र के शत्रु-मित्र

बुध-ग्रह सूर्य और शुक्र ग्रहों का मित्र है। अतः सूर्य-क्षेत्र और शुक्र क्षेत्र इस क्षेत्र के मित्र हैं। चन्द्र ग्रह के साथ इसकी अत्यधिक शत्रुता है। अतः चन्द्र-क्षेत्र इस क्षेत्र का प्रबल शत्रु है। जिस किसी व्यक्ति के हाथ में केवल बुध क्षेत्र और चन्द्र क्षेत्र ही उन्नत हों, उसका केवल ईश्वर ही रक्षक होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के जीवन में इन दोनों ग्रहों (बुध और चन्द्रमा) की पारस्परिक प्रबल शत्रुता का रंग खूब डट कर जमता है। फलतः वह व्यक्ति अपने जीवन में अत्यन्त विलक्षण कार्य करता है और अन्त में अप मृत्यु प्राप्त करता है। शेष सब क्षेत्र इसके सम-क्षेत्र हैं। दैवयोग से यदि बुध क्षेत्र के साथ साथ इसका मित्र क्षेत्र ही उन्नत हो तो वह व्यक्ति अपनी आयु के बत्तीसवें वर्ष में अवश्यमेव महान परिवर्तन प्राप्त करता है। इस आयु के प्राप्त होने पर उसका भाग्योदय होना निश्चित है और अपने शेष जीवन में यह व्यक्ति अनेकानेक अपूर्व कार्यों में सफल होता है।

अशुभ हाथ में निम्न बुध-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ का आकार-प्रकार, गठन, स्वरूप आकृति तथा बनावट अशुभ हो और इसके साथ ही उसका बुध क्षेत्र भी निम्न हो तो वह व्यक्ति विचारहीन, ज्ञान-शून्य, मूर्ख

और विश्वासघाती होता है। उसका हृदय सर्वथा शक्ति हीन होता है और वह सदैव घबड़ाया हुआ रहता है। उसे अपच, मन्दाग्नि, शूल आदि उदर रोग में ग्रस्त रहना पड़ता है। उसके हाथ, भुजा, पैर आदि में भी कष्ट रहता है अथवा आघात जन्य पीड़ा रहती है। अशुभ बुध क्षेत्र का प्रभाव मानव के मस्तिष्क, हृदय, गुर्दा और उदर पर अत्यधिक खराब होता है तथा वह शरीर के इन्ही भागों से सम्बन्धित रोगों का आखेट रहता है। वह प्रायः उन्माद, मृगी, कण्ठावरोध, हृदय-रोग, उदर रोग आदि से पड़ित रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः अपने हितैषियों की हितकारी सम्मति की अवहेलना अथवा उपेक्षा करके अपने ही विकारों में मग्न रहता है और उन्हीं के अनुरूप काम भी करता है, जिसके परिमाण-स्वरूप अपने ही हाथों दुर्घटनाओं का शिकार होकर कष्ट भोगता है। इस व्यक्ति की स्वाभाविक अभिलाषा प्रायः चोरी करने की होती है। यह व्यक्ति प्रायः देश-द्रोही होकर अपने अनुगामियों अथवा उनके प्रभाव में रहने वाले जन-साधारण को अन्धकार में रखते हैं तथा मूर्खतावश अनेकानेक प्रपचों को रचने तथा उन्हें सफल बनाने में व्यस्त रहते हैं।

विशेष ज्ञातव्य

अशुभ-हस्त-गत निम्न बुध-क्षेत्र का अशुभ फल, जैसा कि हमने ऊपर लिखा है, उस हाथ में किसी भी प्रकार के अन्यान्य शुभ चिह्न अथवा शुभ-रेखा के अभाव में ही घटित होते हैं। दैव

योग से यदि कोई शुभ चिह्न अथवा शुभ रेखा भी विद्यमान हो तो उपरोक्त फल तत्काल ही नष्ट हो जायगा अथवा उक्त चिह्न या रेखा के अनुरूप न्यून हो जायगा। ऐसी दशा में अशुभ हाथ उक्त चिह्न अथवा रेखा के शुभ फल में बाधक नहीं होगा। अतः हस्त-परीक्षक को उचित है कि इस प्रकार के लक्षण उपस्थित होने पर हाथ के प्रत्येक चिह्न, लक्षण तथा रेखाओं का मननपूर्वक अध्ययन कर ले, अन्यथा फलादेश सही नहीं होगा। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि शुभयोग, शुभ चिन्ह, शुभ रेखायें आदि के उपस्थित होने पर हाथ की अशुभता-जनित अशुभ परिणामों का अशुभ प्रभाव सर्वथा नष्ट हो जाता है। यदि योग, चिन्ह अथवा रेखायें अधिक प्रबल नहीं हों तो भी अशुभ हाथ के अशुभ फल का अशुभ प्रभाव न्यून करने में तो वह सर्वथा समर्थ होती ही हैं।

अत्युच्च बुध-क्षेत्र के साथ अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों तथा हस्त-गत प्रमुख रेखाओं पर स्थिति चिन्हों से रोग-विचार

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो और वह विशृङ्खलित रेखाओं से वेष्ठित हो तो वह व्यक्ति प्लीहा अथवा वायु-रोगों से आक्रान्त रहेगा। इस लक्षण-वाले व्यक्ति को अपना जीवन इञ्जेक्शनों की शक्ति पर ही निर्भर रखना होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो और चन्द्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिन्ह हो (जैसा कि सामने चित्र संख्या १ में अंकित है) तो उस व्यक्ति को उपान्त्र-शोथ (Appendiciti-)

नामक रोग का आखेट होना पड़ता है। इस रोग में रोगी के दक्षिण श्रोणि प्रदेश में अचानक ही तीव्र पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। साधारणतः यह रोग-जनित शोथ श्लैष्मिक कला और उपान्त्र की दीवार में उत्पन्न होती है। यदि इस ओर शीघ्र ही ध्यान न दिया अथवा उपयुक्त चिकित्सा की उपेक्षा की जाय तो श्लैष्मिक कला में व्रण हो जाते हैं। पूयोत्पादक जीवाणुओं की उपस्थिति से उपान्त्र में पूय (रस्सी मवाद अथवा पीव) उत्पन्न होकर विद्रधि (फोड़ा अथवा दीर्घ व्रण) बन जाता है। इसके पश्चात् इस रोग से मुक्ति लाभ करने का केवल एक ही मार्ग शेष रह जाता है और मार्ग शस्त्र-चिकित्सा (Operation) है। दैवयोग से यदि इतने पर भी इसकी उपेक्षा की जाती है तो यह अन्दर ही अन्दर फट कर उदर-कला (Peritonitis) में शोथ उत्पन्न करके रोगी के भौतिक जीवन का अन्त कर देता है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि बुध क्षेत्र अत्युच्च न होकर उच्च हो तो उपरोक्त शस्त्र-चिकित्सा (Operation) सफल हो जाती है, किन्तु इसके विपरीत बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो और चन्द्र-क्षेत्र भी अत्युच्च हो तो यह शस्त्र-चिकित्सा (Operation) कदापि सफल नहीं होती और सम्बन्धित व्यक्ति अवश्य

मेव काल का ग्रास बन जाता है। अतः हस्त-परीक्षक का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि उपरोक्त लक्षण दृष्टिगोचर होने पर सम्बन्धित व्यक्ति को इसकी भयानक दुर्घटनाओं से पूर्ण सावधान कर दे।
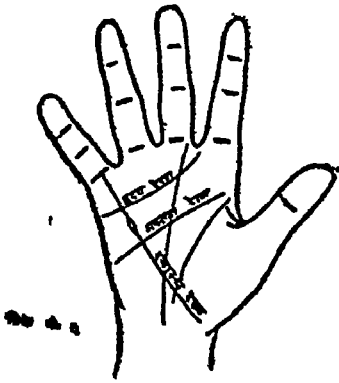
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो और साथ ही स्वास्थ-रेखा (Line of Health) जिसे बुध-रेखा भी कहते हैं, पर द्वीप (यव) चिह्न हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २ में अंकित है) [यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि यह चिह्न स्वास्थ-रेखा (Line of Health) पर हृदय-रेखा (Line of Heart) और मस्तक-रेखा (Line of Head) के मध्य में ही हो] उस व्यक्ति को अपच का रोग होता है। उसकी पाचन शक्ति अथवा जठराग्नि अत्यन्त मन्द हो जाती है। इसकी मन्दाग्नि इतनी भयङ्कर हो जाती है कि वह तौल-तौल कर भोजन करने लगता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो और साथ ही स्वास्थ रेखा (Line of Health) पर, जिसे बुध रेखा भी कहते हैं, मस्तक रेखा (Line of Head) और जीवन रेखा (Line of Life) के मध्य में द्वीप (यव) चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति वायु-गोला, ज्वर, व्रण आदि से पीड़ित रहता है। दैवयोग से इस लक्षण वाले द्वीप (यव) चिन्ह के

निकट ही काला दाग अथवा नक्षत्र का चिन्ह भी अंकित हो
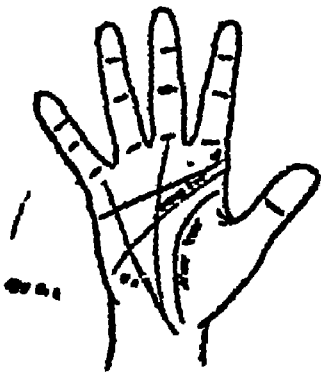
(जैसाकि साथ वाले चित्रसंख्या ३ मे अंकित है) तो वह व्यक्ति दीर्घ-काल तक उदर रोगों से पीड़ित होकर अन्त में अन्यान्य असाध्य रोगों का ग्रास बन जाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की प्रवृत्ति प्रायः कुपथ्य की ओर विशेष रूप से आकृष्ट रहती है। अतः उसे कुष्ठ, भगन्दर, बवासीर आदि रुधिर-शुक्र सम्बन्धी रोगों के आक्रमण की भी पूर्ण सम्भावना रहती है। इसका परिणाम यह होता है कि पीड़ाधिक्य के कारण उसे जीवन सर्वथा नीरस तथा भार-स्वरूप प्रतीत होता है और वह जीवन से उकताकर आत्म हत्या तक कर लेता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ रेखा (Line of Health) जिसे बुध-रेखा भी कहते हैं, और मस्तक-रेखा (Line of Head) पर द्वीप (यव) चिन्ह हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८ में अंकित है) तो उस व्यक्ति को क्षय रोग से ग्रसित रहना पड़ता है। दैवयोग से यदि उपरोक्त लक्षण के साथ २ इस व्यक्ति के नख भी टेढ़े हों तो वह अवश्यमेव अल्पायु ही होगा।

यदि उपरोक्त योग [अर्थात् स्वास्थ-रेखा और मस्तक रेखा पर द्वीप (यव) चिन्ह] किसी स्त्री के हाथ में उपस्थित हों तो उसे प्रसव काल में अत्यन्त कष्ट होता है। उसे रोग और विपत्ति में ग्रस्त होने की भी पूर्ण सम्भावना रहती है। दैवयोग से यदि जिस स्थान पर स्वास्थ-रेखा मस्तक रेखा को पार करती है वहां नक्षत्र चिन्ह भी हो तो उसकी प्रसव काल में अवश्यमेव मृत्यु हो जाती है।

बुध-ग्रह के चिन्ह का परिचय

जैसा कि हम पहले लिख आये हैं, प्रत्येक ग्रह का अपना अपना पृथक् चिन्ह है जिसके द्वारा मानव-हस्त पर ग्रह-विशेष की उपस्थिति का ज्ञान होता है। प्रायः यह देखा गया है कि ग्रह चिह्न अपने स्थान अथवा क्षेत्र पर न होकर अन्यान्य ग्रह-क्षेत्रों पर स्थित पाये जाते हैं। अतः जिस ग्रह का चिह्न जिस स्थान पर विद्यमान होता है उसका फल उस स्थान और उक्त चिह्न के पारस्परिक सम्बन्ध के अनुसार ही होता है। बुध-चिन्ह का स्थान परत्वेन शुभाशुभ फल हम आगे लिखेंगे। यहां केवल इस चिन्ह के स्वरूप का बोध-मात्र कराना है। बुध-ग्रह का चिन्ह आंगल-भाषा के 'टी' अक्षर पर हिन्दी के 'चार' के अंक को स्थापित करने से बनता है। इस चिन्ह का स्वरूप (४/T) यह है।

बुध-चिह्नित बृहस्पति-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति-ग्रह के क्षेत्र पर बुध ग्रह का चिह्न अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ५ में
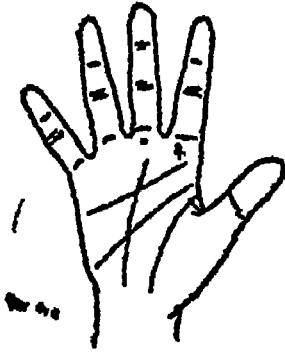
अंकित किया गया है) तो वह व्यक्ति अपने वयो-वृद्धों तथा गुरुजनों के प्रति हार्दिक श्रद्धा रखता है और उनका आज्ञाकारी भी होता है वह तत्वदर्शी होता है तथा, बाल्यावस्था में ही गृह-त्याग करके आध्यात्मिक जीवन को अपना कर मुक्ति-मार्ग का पथिक बन जाता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अनेक विद्याओं का ज्ञाता और परम विद्वान होता है। वह परोपकारी और दयालु होता है। इस प्रकार के व्यक्ति सदैव महती दिव्य-शक्ति-सम्पन्न सिद्ध महात्मा अथवा परमहंस सन्यासी होते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि साधारण मनुष्यों के हाथ में यह चिन्ह प्रायः नहीं ही होता है। यदि दैवयोग से किसी हाथ में दृष्टि-गोचर हो जाय तो वह व्यक्ति साधारण गृहस्थ होकर भी आध्यात्मिक-तत्व का ज्ञाता होता है। वह सदैव ईश्वराराधन में संलग्न रहता है। सत्संग-सेवन के हेतु वह सदैव तत्पर रहता है। साधुओं, सन्यासियों तथा महात्माओं के प्रति इसको विशेष आकर्षण रहता है। यह व्यक्ति अपना धन ईश्वराराधन, साधु-सेवा तथा परोपकार ही में व्यय करता है। यह ज्ञानी, गुण-सम्पन्न तथा विचारशील होता है। यद्यपि वह सांसारिक माया जाल में ही अपना जीवन-यापन करता है, किन्तु उसमें आबद्ध नहीं होता। इस व्यक्ति को अपनी मृत्यु का एक मास पूर्व ही ज्ञान हो जाता

है और इसका बोध होते ही वह तीर्थ-यात्रा को प्रस्थान कर जाता है तथा उत्तम तीर्थ-स्थान में ही अपनी भौतिक देह को त्यागता है। पाठकों को यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस चिन्ह वाले गृहस्थ प्रायः विरले ही दृष्टिगोचर होंगे।

विशेष-ज्ञातव्य

बृहस्पति-ग्रह के क्षेत्र पर स्थित बुध-ग्रह के चिन्ह का उपरोक्त दिव्य फल उसी दशा में प्राप्त होता है जब कि उक्त चिन्ह सुस्पष्ट तथा शुद्ध हो और उसे उक्त स्थान पर कोई रेखा काटती न हो। यहां यह अवश्य स्मरण रखना चाहिये कि इस चिन्ह के पास ही यदि दैवयोग से चतुष्कोण का चिन्ह भी उपस्थित हो तो वह उपरोक्त फलादेश में आश्चर्य-जनक वृद्धि कर देता है।

बुध-चिन्हित शनी-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी ग्रह के क्षेत्र पर बुध-ग्रह का चिह्न अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या ६ में अंकित है) वह व्यक्ति बुद्धिमान, रसिक, कवि, विद्वान, गणितज्ञ, तथा खगोल विद्या में पारदर्शी होता है। वह रूपवान, गुणवान, समाज प्रिय, भृत्य-वाहन-युक्त, राज्य-सम्मानित तथा प्रतिष्ठित होता है, किन्तु उसे स्त्री-सम्बन्धी चिन्ता अवश्य रहती है। वह अनेक भाषाओं का ज्ञाता और विभिन्न भाषाओं में ग्रन्थों का रचियता

होता है। उसका पुत्र उच्चकोटि का अधिकारी होकर कुल दीप्त करता है। वह विद्यालय-निर्माता, सत्कर्म-फल-योगी, संगीतज्ञ, राजानुग्रहीत, जनता को आकृष्ट करने की अनेक कलाओं में कुशल तथा इष्ट-मित्रों से सम्पन्न होता है। इस पुरुष की स्त्री अत्यन्त सुन्दरी, लावण्यवती, कोमलांगी तथा प्रियभाषी होती है। उसकी कमर पतली और आंखें विशाल होती हैं। उसमें सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषण धारण करने की विशेष प्रवृत्ति पायी जाती है, किन्तु दुर्भाग्य वश वह स्त्री एक पुत्र की माता होने के पश्चात् किसी यात्रा में अथवा अन्यत्र किसी दुष्ट मनुष्य द्वारा हर ली जाती है और यही इस लक्षण वाले व्यक्ति की उपरोक्त स्त्री-सम्बन्धी चिन्ता का मूल कारण होता है। इस दुर्घटना के उपरान्त इस चिन्ता की भयंकरता के कारण इस व्यक्ति की मानसिक शक्ति तथा स्मरण शक्ति—दोनों ही लुप्त हो जाती हैं और वह प्राय: विक्षिप्त-सा हो जाता है। स्मरण रहे कि यह शनी-क्षेत्र का प्रभाव है।

बुध-चिन्हित सूर्य-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-ग्रह के क्षेत्र पर बुध-ग्रह का चिह्न अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अनेकानेक उद्योगों से अर्थार्जन

करने वाला कुशल व्यापारी अथवा व्यवसायी होता है। वह कुल-पति होकर अनेक मनुष्यों पर शासन करता है। इसके वैभव तथा प्रतिभा से इसके इष्ट मित्रों को अत्यधिक लाभ होता है। वह शासन-सत्ता में उच्च-पद प्राप्त करके अपनी अभीष्ट-सिद्धि करता है तथा अपने मनोरथ-पूर्ण हो जाने पर उक्त पद का त्याग कर देता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति स्वतन्त्र कार्य करने के अभ्यस्त होते हैं। इसके माता-पिता दीर्घ-जीवी होते हैं और यह अपने माता पिता की सुख-सुविधा में सदैव सब प्रकार से तत्पर रहता है। यह व्यक्ति स्वभाव से ही उदार, दानशील तथा परोप-कारी होता है। यह महान पण्डित तथा सुयोग्य एवं कुशल कलाकार भी होता है। भिक्षा-वृत्ति से जीवन-यापन करने वाले गृहस्थियों से इसे हार्दिक घृणा होती है। इस प्रकार के हीन-मनो-वृत्ति वाले कार्यों को वह समाज का कलंक तथा पतन का कारण समझता है और इस प्रकार की वृत्ति को जड़ से समाप्त कर देने के लिये यावत् प्रयत्न अपने भरसक प्रस्तुत रहता है। इस सम्बंध में उसकी भावना इतनी प्रबल होती है कि अपने ही धन से भिक्षा-वृत्ति करने वाले लोगों को जीविकार्जन के साधन उपस्थित करता है और इसकी सुचारू व्यवस्था भी कर देता है। गृह-हीन व्यक्तियों को घर भी बनवा देता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति वास्तव में मनुष्य के रूप में देवता ही होते हैं। वे अत्यन्त भाग्य-शाली, प्रतिभा-सम्पन्न, सद्गुणागार, दृढ़ प्रतिज्ञ तथा पराक्रमी भी होते हैं। ऐसों से जो न हो जाय वही थोड़ा है।

बुध-चिन्हित बुध-क्षेत्र का फल
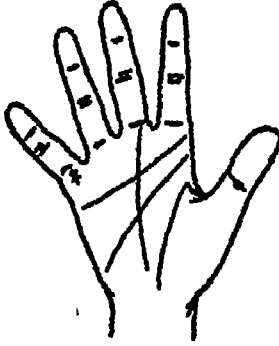
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध ग्रह का चिन्ह उसके अपने ही क्षेत्र पर अर्थात् बुध-क्षेत्र पर ही अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८ में अंकित है) तो वह व्यक्ति विचारशील, तीक्ष्ण बुद्धि, कल्पक, विनोद-प्रिय, चिकित्सक, ज्योतिविद् अदृष्टवादी, धनी, प्रबल पराक्रमी, क्षिप्रवादी, प्रवास प्रेमी, चंचल स्वभाव, तथा अत्यधिक वाचाल होता है। यह व्यक्ति दूसरों की बातों पर विश्वास करके शीघ्र ही भड़क जाता है। कान का बहुत कच्चा होता है। यह व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय में विलक्षण-रूप से कुशल होता है तथा अर्थ-संचय करने में अद्वितीय होता है। यह नित्य नूतन वस्त्र धारण करने वाला तथा आमोद-प्रमोद में मग्न रहने वाला होता है। यह अभिनय-कला में प्रवीण होता है तथा अभिनय आदि से अत्यधिक प्रेम रखता है। किसी भी व्यक्ति को देखते ही एक दृष्टि में उसके मनोगत भावों को जान लेने में यह सिद्ध-हस्त होता है। इसी प्रकार यह मनुष्य के स्वभाव, चरित्र तथा गुप्त रहस्यों को भी अनायास ही ताड़ लेने की कला में प्रवीण होता है।

यह व्यक्ति ऋणदाता, नूतन नियमों (कानूनों) का निर्माता तथा पूर्व नियमों में परिवर्तन करने वाला और नीतिज्ञ होता है।

यह किसी भी आपत्ति अथवा दुर्घटना की चिन्ता नहीं करता, किन्तु उस ओर से सावधान होकर कोई उपाय अथवा मार्ग ऐसा खोज लेता है जिसके कारण उनसे अनायास ही मुक्त हो जाता है। इसे सुन्दर, सौभाग्यशालिनी तथा पति परायणा स्त्री प्राप्त होती है। इसे स्त्री द्वारा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। दैवयोग से इस लक्षण वाले व्यक्ति का बुध-क्षेत्र उन्नत हुआ तो इसके उपरोक्त गुणों में विलक्षण वृद्धि होकर सोने में सुगन्ध हो जाती है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि बुध-क्षेत्र निम्न हुआ तो यह चिह्न (बुध-ग्रह-चिह्न) वहां होगा ही नहीं।

बुध-चिन्हित प्रथम-मंगल-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में मंगल-ग्रह के प्रथम क्षेत्र पर (अर्थात् बुध-क्षेत्र और चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग में) बुध-ग्रह का चिन्ह अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या ६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति क्रोधी, विश्वासघाती, असन्तोषी, दूसरों के कार्यों में अकारण ही बाधा अथवा विघ्न तक उत्पन्न करने वाला, क्रूर, धूर्त, लम्पट तथा व्यसनी होता है। यह व्यक्ति अपने शत्रुओं का दलन करने वाला होता है तथा उनके कुकृत्यों को जन-साधारण में प्रकाशित करके उनका मान-मर्दन करता है। इसको द्यूत-क्रीड़ा अथवा
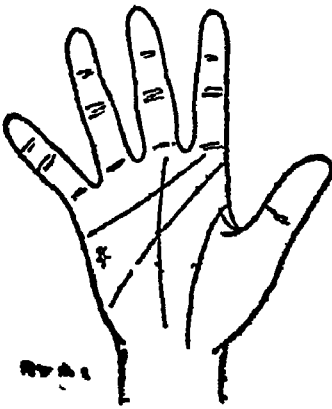
लाटरी, सट्टा आदि से विशेष प्रेम होता है और इसके द्वारा यथेष्ट धन प्राप्त करता है। उसका यह धन प्रायः मित्र-मण्डली में आमोद-प्रमोद में ही अपव्यय होता है। इसकी रुचि मादक द्रव्यों की ओर अधिक आकृष्ट रहती है और इनका एक प्रकार से व्यसन ही होता है। यह अधर्म-पथका पथिक होता है। यह प्रायः रुधिर रोगों से ग्रस्त रहता है।

बुध-चिन्हित चन्द्र-क्षेत्र का फल
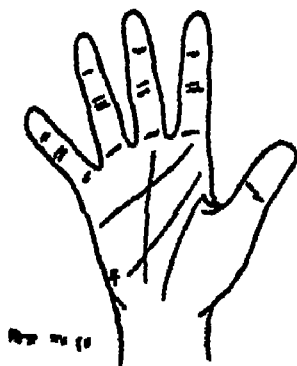
जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-ग्रह के क्षेत्र पर बुध-ग्रह का चिन्ह अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या १० में अंकित है) वह व्यक्ति यात्रा प्रेमी, चंचल-स्वभाव, धूर्त, लंपट कपटी तथा निर्बल चरित्र वाला होता है। इसका शरीर सुन्दर, सुडौल तथा लावण्य युक्त होता है। इस व्यक्ति के भाग्य में शैशवावस्था में माता का दुग्ध-पान प्राप्त नहीं होता, अतः वह धाय का दुग्ध-पान करके ही वयस्क होता है। अपनी आयु के बाइसवें वर्ष में इसे सन्तान प्राप्त होती है। व्यक्ति अपनी प्रौढावस्था में अर्थात् तीस और चालीस वर्ष की आयु के मध्य में किसी प्रेमिका के मोह-पाश में आबद्ध होता है, किन्तु प्रेमिका के मिथ्या प्रेम किंवा कपट-लीला का रहस्य प्रकट होजाने पर सेउत्याग भी देता है। अन्त में छप्पनवें वर्ष

की आयु में इसे किसी विधवा स्त्री से प्रेम करने की पुनः उमंग उठती है। अतः इस लक्षण वाले व्यक्ति को इस सम्बन्ध में पूर्ण सावधान रहना चाहिये। क्योंकि इस प्रकार की प्रेम-लीलायें उसके पतन का मार्ग प्रस्तुत करती हैं। किन्तु इन सब बातों के होते हुये भी वह स्वभावतः ही विचारशील, बुद्धिमान तथा चतुर होता है। उसमें कामाग्नि अधिक मात्रा में होती है। इसके पुत्र मूर्ख, विचारहीन, दुष्ट, अनाचारी तथा व्यभिचारी होते हैं और अपनी पैतृक सम्पत्ति को दुष्कर्मों में नष्ट करते हैं। इनमें अपने पिता से सवाई कामाग्नि होती है। ये स्वभाय से ही दुष्ट और कपटी होते हैं।

बुध-चिन्हित शुक्र-क्षेत्र का फल

चित्र नं० ११

जिस व्यक्ति के हाथ में शुक्र ग्रह के क्षेत्र पर बुध-ग्रह का चिन्ह अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ११ में अंकित है) वह व्यक्ति पराक्रमी शक्तिशाली, साहसी, धैर्य्यवान, उदार, दयाशील तथा दानी होता है। यह स्वभावतः ही शान्त एकान्त प्रिय, मननशील, विचारशील, तथा ज्ञान-सम्पन्न होता है। इसे अपने वयोवृद्धों तथा गुरुजनों के शुभाशीर्वाद से धन-धान्य ऐश्वर्य, वैभव, भृत्य-वाहन आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त रहता है। यह भाग्यशाली और परोपकारी होता है। यह व्यक्ति अपनी

मृदु-मधुर वाणी से प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को, जो भी इसके सम्पर्क में आ जाय, अपने प्रेम पाश में आबद्ध कर लेने के लोकोत्तर गुण से विभूषित होता है। इसके शत्रु नहीं होते और प्रायः मित्र भी नहीं होते। इसका व्यवहार सभी के साथ सम होता है। इसका अधिकांश समय देवार्चन और सेवाभाव ही में व्यतीत होता है। इस लक्षणवाले व्यक्ति प्रायः कुशल और परोपकारी चिकित्सक, भविष्यवक्ता, सफल वैज्ञानिक निपुण राजनीतिज्ञ आदि ही पाये जाते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि शुभ-ग्रह के क्षेत्र पर बुध-ग्रह का चिह्न साधारणः व्यक्ति की पैंतीस वर्ष की आयु से पूर्व ही दृष्टिगोचर होता है। किसी विरले व्यक्ति के हाथ में ही इस चिन्ह के इस क्षेत्र पर इस आयु के पश्चात् दृष्टिगोचर होने की सम्भावना रहती है। दैवयोग से कहीं दृष्टिगोर हुआ भी तो वह व्यक्ति असाधारण रूप से वैराग्य की ओर आकृष्ट होता है और वह अवश्यमेव संन्यास ग्रहण कर लेता है। अतः इस सम्बन्ध में हस्त-परीक्षक को उचित है कि वह इस लक्षण वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में फलादेश निश्चित करते समय उसकी आयु का पूर्ण सावधानी से विचार करे और तदनुरूप ही फल घोषित करे।

बुध-चिन्हित द्वितीय-मंगल-क्षेत्र का फल

जिस व्यक्ति के हाथ में मंगल ग्रह के द्वितीय क्षेत्र पर बुध-ग्रह का चिन्ह अंकित हो (जैसे कि साथ वाले चित्र संख्या १२ में
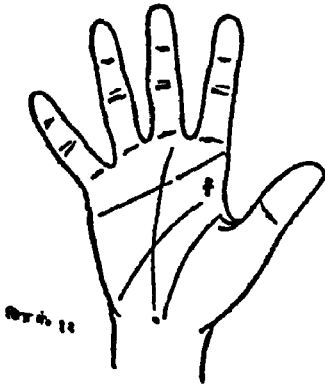
अंकित है) तो वह मंगल-ग्रह के प्रथम-क्षेत्र पर अंकित बुध-ग्रह के चिह्न की अपेक्षा शुभ-फल दायक ही होता है। इस व्यक्ति को अपनी उन्नति के कार्यों में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो जाती है। यह चिन्ह इस स्थान पर व्यापार-व्यवसाय में वृद्धि का भी सूचक है। दैवयोग से बुध-चिन्हित मंगल-ग्रह का द्वितीय क्षेत्र अत्युच्च हो तो उस व्यक्ति के व्यापार-व्यवसाय में इतनी प्रचण्ड उन्नति होती है कि वह शासन-सत्ता की आंखों में खलने लगती है और अन्त में शासन-सत्ता की ओर से उस पर चोर-बाजारी का मिथ्या-अभियोग लगाया जाकर उसके धन का क्षय होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को सदैव राज्य की ओर से भय बना रहता है। आपत्ति उपस्थित होनेपर इसके मित्रभी इसके साथ शत्रुवत्-व्यवहार करते हैं। इसका स्वभाव कोमल होता है।

बुध-क्षेत्र गत शुभाशुभ चिन्हों का फल
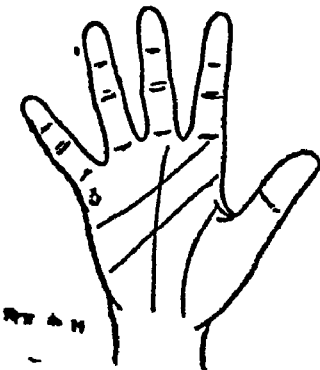
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र के उर्ध्व-भाग पर (अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल में) शुद्ध मकड़ी के आकार का चिन्ह हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या १२ में अंकित है)

तो वह व्यक्ति अनेक भाषाओं का ज्ञाता तथा अनेक भोगों का भोक्ता होता है। यह व्यक्ति संगीत (गायन-वादन-नृत्य) का प्रेमी तथा उसमें निपुण भी होता है। उसे कीर्ति की अभिलाषा होती है। वह उदारचित्त होता है तथा दानादि में भी उसकी अभिरुचि होती है। क्रय-विक्रय (व्यापार-व्यवसाय) में भी वह निपुण होता है। उसका संगीत-प्रेम इतना उत्कट होता है कि उसकी पूर्ति के हेतु वह वेश्याओं के घर भी जाता है, किन्तु वेश्याओं के साथ व्यभिचार भूलकर भी नहीं करता।

दैवयोग से मकड़ी का यह चिन्ह बुध-क्षेत्र के मध्य भाग में स्थित हो तो वह व्यक्ति जल्दबाजी मे अपने व्यापार-व्यवसाय नष्ट करके अपव्ययी भी हो जाता है। सम्भव है उसका दिवाला भी निकल जाय। इस लक्षण वाले व्यक्ति सदैव सट्टेबाजी में ही लगे रहते हैं और उन्हें किसी प्रकार का व्यसन भी होता है।
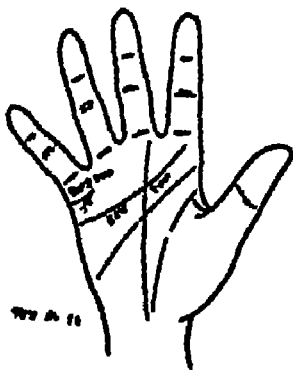
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध क्षेत्र पर, किन्तु विवाह-रेखा (Line of Marriage) और हृदय-रेखा (Line of Heart) के मध्य मे शुद्ध और स्पष्ट मकड़ी के आकार का चिन्ह अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या १४ मे अंकित है) तो वह व्यक्ति स्वभाव से ही कलह प्रिय होता है। उसका अधिकांश जीवन कलह, घृणा, द्वेष और क्रोध में ही व्यतीत

होता है। इस लक्षण वाले पुरुष की स्त्री बिना सुख भोगे ही अल्पायु में ही मृत्यु प्राप्त करती है। इसके उपरान्त वह पुरुष दुखी होकर इधर-उधर भटकता फिरता है। अपनी कन्याओं का विवाह सम्बन्ध निश्चित करते समय सुविज्ञ व्यक्तियों को वर के इस लक्षण की भूल कर भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये और भूल कर भी ऐसे पुरुष के साथ अपनी कन्या का गठ बन्धन नहीं करना चाहिये। क्योंकि इस लक्षण वाले व्यक्ति की पत्नी को स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता। ऐसे पुरुष की सभी पत्नियां बिना सुख भोगे ही मर जाती हैं।
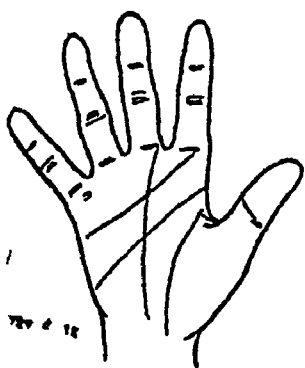
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर अर्द्ध-अंडाकार अथवा चूल्हे के आकार का चिन्ह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या १५ में अंकित है) वह व्यक्ति बुद्धिहीन, हठी, प्रमत्त-हृदय, अभिमानी, अन्य लोगों के कार्यों तथा पदार्थों का अकारण ही नाश करने वाला, पर-दुखदायी, पापी, निर्धन, चंचल, अतिबली, क्रूर, नीच विचारों वाला तथा क्रियाशील होता है।

दैवयोग से यह लक्षण यदि किसी स्त्री के हाथ में विद्यमान हो तो वह स्त्री झगड़ालू और कुलटा होती है। इसकी अनेकानेक स्त्रियों और पुरुषों के साथ शत्रुता होती है। इस लक्षण वाली

स्त्री प्रायः अपना सतीत्व नष्ट कर लेती है। इसको प्रायः इसका पति त्याग देता है, किन्तु वह इतनी निर्लज्ज होती है कि इस घटना के उपरांत अहंकार-पूर्वक पतिव्रता होने का अभिनय प्रदर्शन करती है। ऐसी स्त्रियां जहां कुलीन स्त्रियों के मध्य में सतीत्व, पतिव्रत आदि पर उपदेश बघारती रहती हैं वहां दूसरी ओर इसके विपरीत पर-पुरुष-गमन किंवा व्यभिचार कराती हैं।

विशेष ज्ञातव्य

उपरोक्त लक्षण के सम्बन्ध में यह स्मरण रखना चाहिये कि इसका उपरोक्त फल उसी दशा में प्राप्त होता है जब कि इसका मुंह करतल के बाहर की ओर जैसा कि पूर्व चित्र में अंकित है, होता है। इसके विपरीत यदि इसका मुंह अन्य दिशा की ओर हो तो उसका फल दूसरा ही होगा। जैसे यदि इसका मुंह सूर्य-क्षेत्र की ओर होगा तो इसका फल अत्यन्त शुभ-फलदायक होगा। वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) शान्त-स्वभाव, सुन्दर, लावण्य-युक्त, महागुणज्ञ, धन-धान्य-सम्पन्न, धार्मिक-भावना-शील ईश्वर-भक्त, गुरुजनों में श्रद्धा रखने वाला, प्रेममय, बुद्धिमान, विचार-शील, वाक्-पटु, राज-सम्मानित, बहु-कुटुम्बी, कुलपति, सत्य-प्रेमी, अहिंसक तथा कार्य-कुशल होगा।

दैवयोग से यदि इसका मुंह ऊर्ध्व-मुखी अर्थात् कनिष्ठका अंगुली की ओर हो तो उस व्यक्ति को समस्त कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। यह लक्षण कार्य सिद्धि का सूचक है।

इसके विपरीत यदि यह अधो-मुखी अर्थात् हृदय-रेखा की ओर मुंह किये हो तो, उस व्यक्ति को अधिक धन व्यय करना

पड़ता है। अतः हस्त परीक्षक को चाहिये कि इसकी स्थिति और दशा का समुचित अध्ययन करके ही फल के शुभाशुभ का निर्णय करे।
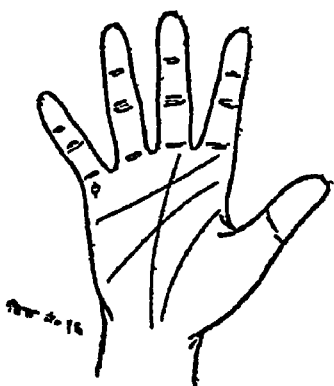
जिस व्यक्ति के बुध-क्षेत्र पर एक सरल, सीधी और सुस्पष्ट रेखा पर दोनों पार्श्वों पर दो झुके हुए सिरों वाली छोटी रेखा के एक ही स्थानों पर मिलने से दो सम-भागों में विभक्त-सा वृत चिह्न दृष्टि गोचर हो (जैसा कि चित्र संख्या १६ में अंकित हैं) वह व्यक्ति क्षीण बुद्धि, शुक्र-रोगों से ग्रस्त, इन्द्रिय-लोलुप, कामासक्त, विषयानुरागी, दुर्बल-काम, दुःखी सतत-व्याकुल होकर आजन्म चिन्ताओं का दास बना रहता है। इस व्यक्ति को सन्तान सुख प्राप्त नहीं होता। विशाल कुटुम्ब होने के कारण, परिवार के भरण-पोषणार्थ इसे विविध छल-कपट, मिथ्याचार, तथा षडयन्त्रों का आश्रय लेना पड़ता है।

इस प्रकार बने हुये वृत को सम-भागों में विभक्त करने वाली सरल, सीधी और सुस्पष्ट रेखा यदि दुर्भाग्य वश लहर खाती हुई अर्थात् सर्प-गति के समान हुई तो इस व्यक्ति को मृत्यु-दण्ड तक की सम्भावना रहती है। हां, यदि यह लक्षण बुध-ग्रह के उच्च क्षेत्र में उपस्थित हो तो उसे मृत्यु दण्ड से मुक्त होने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है और उसके स्थान पर वह 'आजन्म कारावास

का दण्ड भोगता है। इसके विपरीत यदि बुध-क्षेत्र अत्युच्च हुआ तो उसकी मृत्यु कारा की काली कोठरी में की होती है। उपरोक्त दुर्गुणों तथा अशुभ भाग्य के होते हुये भी यह व्यक्ति सरल स्वभाव और गुणी होता है। ऐसी रेखायें धनाढ्य व्यक्तियों तथा वकीलों के हाथ में प्रायः दृष्टि-गोचर होती हैं। उक्त फलादेश उन पर घटित भी होता है, किन्तु इसकी सटीक पुष्टि के हेतु हाथ के आकार-प्रकार, गठन, बनावट, आकृति अथवा स्वरूप पर गम्भीर दृष्टि से शुभाशुभ फल का विचार करके हस्त-परीक्षक को अपना निर्णय निश्चित करना चाहिये। ऐसी दशा में फलादेश में किंचित-मात्र भी बल नहीं पड़ेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर शुद्ध और सुस्पष्ट त्रिकोण-चिह्न अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या १७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अथक परिश्रमी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को राज्य द्वारा प्रतिष्ठा, सम्मान और यश प्राप्त होता है किन्तु वह अपने उपार्जित धन का स्वयं उपभोग नहीं करता, उसका वह धन उसकी सन्तान और परिजन बन्धु-बान्धव ही भोगते हैं। उसकी महत्त्वाकांक्षा अति प्रबल होती है। यह व्यक्ति उद्योगी, साहसी, दृढ़-निश्चयी, गुणी, विचारशील, बुद्धिमान, व्यवहार-कुशल, तथा सुशिक्षित होता है। किन्तु वह

सदैव शत्रुओं से पीड़ित रहता है। यह स्वभावतः ही उदार, दानशील और परोपकारी होता है। यह उग्र-प्रेमी और उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण को धारण करने वाला होता है। यह सदैव धन-संचय की धुन में व्यस्त रहता है। इस व्यक्ति को वाहनों द्वारा दुर्घटना तथा स्त्री-जन्य भय होता है। इसकी स्त्री की पुत्रोत्पत्ति के उपरांत प्रसव-काल में ही मृत्यु की अत्यधिक सम्भावना होती है। इस व्यक्ति को अकारण ही लोकापवाद का आखेट होना पड़ता है। किन्तु यह व्यक्ति स्वभाव से ही निर्भीक होता है और प्रत्येक कार्य निर्भय होकर करता है। वह मान-हानि तक की उपेक्षा करके अपने निश्चित मार्ग पर धीर-गम्भीर गति से बढ़ता चला जाता है और अपना प्रत्येक कार्य सुचारू-रूप से सम्पन्न करता है। कभी-कभी इस लक्षण वाले व्यक्ति को राज-दण्ड की सूचना का भय भी त्रस्त करता है किन्तु यह भय उसे राजनैतिक कारणों से ही प्राप्त होता है, चोरी, व्यभिचार अथवा अन्यान्य अनैतिक अपराधों के कारण नहीं। हां, इनके चिन्तित होने के कारण जेल-यात्रा में इन्हें किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त नहीं होती। इनकी चिन्ता का प्रमुख कारण इनका स्वास्थ्य होता है। यह उत्तम वक्ता होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर तीन आड़ी रेखाओं को चार तिरछी रेखाओं के काटने से जाल का जैसा चिन्ह बना हो (जैसा कि चित्र संख्या १८ में अंकित है) वह व्यक्ति कुलटा और व्यभिचारिणी स्त्रियों अथवा पिशाचिनियों

द्वारा छला जाता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपना धन अकारण ही नष्ट करके अन्तत. धनाभाव के कारण सर्वत्र तिरस्कृत होता है। इस प्रकार सब ओर से घृणा का पात्र, उपेक्षित अथवा तिरस्कृत होने से उसे इतना क्षोभ और ग्लानि होती है कि वह अपना धर्म परिवर्तन करने के लिये भी प्रस्तुत हो जाता है। वह प्रत्येक कार्य करने में आकुल-चित्त रहता है। वह दुर्बुद्धि होता है और सदैव नीच कर्मों में रत रहता है। वह सदा सज्जनों की निन्दा करता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः अपने कुल को कलंकित ही करता है।

इस व्यक्ति का परिवार साधारण-सा अर्थात् बहुत छोटा होता है। यह बात, क्षय या मल-मूत्रादि से सम्बद्ध रोगों का विशेष रूप से आखेट रहता है। वह किसी भी कार्य को आरम्भ करके उसे पूर्ण नहीं करता। एक काम को अधूरा छोड़ कर दूसरे को आरम्भ कर देता है, किन्तु उसे भी पूरा नहीं करता अधूरा ही छोड़ देता है और तीसरे में पिल जाता है। इसी प्रकार वह अनेक काम करता है किन्तु पूरा किसी को भी नहीं करता, सब को अधूरा ही छोड़ देता है। इसके अतिरिक्त यह व्यक्ति परिजन, बन्धु-बान्धवों का विरोधी, इष्ट-मित्रों का द्रोही, राज्य-द्रोही और अपव्ययी होता है। वह विविध दुर्व्यसनों में लिप्त होकर समाज

का महान् दूषित अंग बन जाता है, फलतः समाज-च्युत भी हो जाता है।

इस लक्षण वाला व्यक्ति पाखण्डी और विश्वासघाती होता है। इनके विवाहिता स्त्री नहीं होती। ये प्रायः इधर-उधर टट्टी की ओट में शिकार करते हैं। इसकी आयु प्रायः पच्चीस तीस वर्ष तक ही होती है। दैवयोग से इस लक्षण वाले व्यक्ति का बुध-क्षेत्र उच्च हुआ तो यह चालीस वर्ष के लगभग आयु भोगता है, किन्तु फिर भी उपरोक्त फल ही भोगता है और अन्त में किसी कुलटा द्वारा या शस्त्र द्वारा मृत्यु प्राप्त करता है।
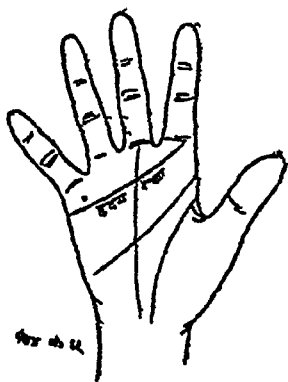
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर हृदय-रेखा (Line of Heart) समीप काला दाग का चिन्ह अंकित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या १६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति निर्दयी, नीच, व्यभिचारी, हत्यारा तथा महाक्रोधी होता है। स्पष्ट है कि इस लक्षण वाला व्यक्ति महा-भयंकर किंवा नर-पिशाच ही होता है। दैवयोग से यदि यह दाग हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करता हो तो वह व्यक्ति उपरोक्त दुर्गुणों के साथ साथ हृदय-रोग से पीड़ित होना पड़ता है। इस व्यक्ति को अपने शत्रुओं तथा परिजन बन्धु-बान्धवों और सम्बन्धियों से सदैव भय बना रहता है। इसका धन अकस्मात ही नष्ट होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र और सूर्य-क्षेत्र के मध्य स्थल पर त्रिभुज का चिन्ह दृष्टिगोचर हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २० में अंकित है) तो वह व्यक्ति कुशल वैज्ञानिक और सफल व्यापारी-व्यवसायी होता है। इस व्यक्ति को रत्नादि के व्यापार में अतुल धन प्राप्त होता है। उसकी प्रवृति सेवा परायण और दानशील होती है। वह प्रशंसनीय विद्वान होता है। किन्तु यदि यह त्रिभुज सूर्य-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तो उस व्यक्ति के कार्यों में बाधायें अथवा अवरोध उत्पन्न होते रहने से उसे सदैव चिन्ता बनी रहती है। हाँ, यदि बुध-क्षेत्र और सूर्य-क्षेत्र दोनों ही उच्च हों और यह त्रिभुज भी शुद्ध और स्पष्ट हो, कोई रेखा इसे काटती न हो तो यह विशेष शुभ फल-प्रद होता है, किन्तु उक्त दोनों क्षेत्रों के अत्युच्च होने पर अशुभ फल ही सूचित करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र उच्च हो, किन्तु सूर्य-क्षेत्र निम्न हो और उपरोक्त स्थान पर उक्त त्रिभुज हो तो उसे वही फल भोगना पड़ता है (देखो चित्र संख्या १७ का फलादेश) अर्थात् धन-धान्य, मान-प्रतिष्ठा आदि सभी सुखों और अन्यान्य शुभ फलों के प्राप्त होते हुए भी उसे राजनैतिक कारणों से जेल-यात्रा तथा अन्यान्य असह्य दुःखों का आखेट होना पड़ता है उसे अनेक प्रकार की गुप्त-चिन्तायें भी होती हैं। इसके विपरीत यदि

बुध-क्षेत्र निम्न और सूर्य-क्षेत्र उच्च हुआ तो उसे व्यापार-व्यवसाय में धन हानि होने से निराशा उत्पन्न हो जाती है और वह दुःख भोगता है। किन्तु उसका साहस और धैर्य प्रबल होता है। फलतः पुनः उन्नति करने का अवसर प्राप्त करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र उच्च हो और उस पर नक्षत्र अथवा तारे का चिन्ह दृष्टिगोचर होता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २१ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अकस्मात ही साहित्यिक उन्नति करने का स्वर्ण अवसर प्राप्त करता है। वह उच्चकोटि का साहित्यकार, प्रभावशाली पत्रकार, ओजस्वी कवि तथा प्रतिभाशाली सुलेखक होता है। उसकी ज्ञान शक्ति और क्रिया-शक्ति इतनी प्रबल होती है कि उनका जन-साधारण पर अत्यन्त सुन्दर प्रभाव होता है। उसकी लेखन शैली सर्वथा मौलिक और अपूर्व शक्ति सम्पन्न होती है। इसके द्वारा जनता हठात् ही उसकी ओर आकर्षित होती है किन्तु उसमें गर्व की मात्रा अत्यधिक होती है। नीति कुशल होता हुआ भी वह व्यभिचारी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की मनोवृति इतनी दूषित होती है कि चौर्य-कर्म में भी प्रवृत हो जाता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर वृत के सदृश्य शुद्ध चिन्ह हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २२ में
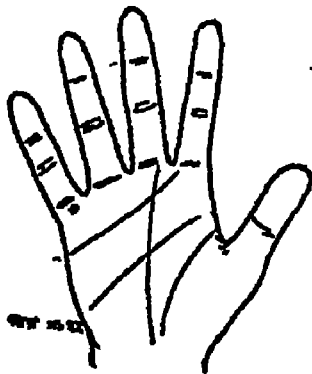
अंकित है) तो उस व्यक्ति की मृत्यु विष-पान द्वारा होती है। दैवयोग से यही चिह्न हृदय-रेखा (Line of Heart) के समीप हो अथवा उसे स्पर्श करता हो तो सम्भव है विष-पान के स्थान पर उसकी मृत्यु अकस्मात ही हृदय की गति बन्द हो जाने से हो जाय। हां, उक्त मृत-चिन्ह के हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करने पर अधिक सम्भावना हृदय की गति अकस्मात बन्द हो जाने के फल स्वरूप ही मृत्यु होने की रहती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर (×) हो चिन्ह (जैसा कि साथवाले चित्र संख्या२३ में अंकित है) वह अविश्वासी अन्ध विश्वासी, शठ, प्रथम श्रेणी का विश्वास-घाती, झूंठी शफथ खाने में प्रवीण, धूर्त, कपटी और प्रपंची होता है। यह व्यक्ति इतना मक्कार होता है कि न्यायालय को ठगने में भी आगा-पीछा नही करता अर्थात् न्यायालय को भी धोखा दे देता है। यह अत्यन्त वाचाल, अकारण ही हर किसी से झगड़ने वाला, व्यर्थ ही वाद-विवाद करने वाला तथा अनर्गल प्रलाप करने वाला होता है। अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने के हेतु यह चोरी

भी कर बैठता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) का समस्त जीवन ही छल-कपट और धूर्तता में बीतता है।

चित्र सं० २४
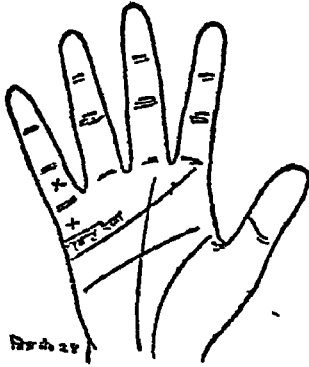
उपरोक्त गुणक चिन्ह यदि स्त्री-रेखा किंवा विवाह रेखा पर स्थित हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २४ में अंकित है) तो परस्पर स्त्री पुरुष की अकस्मात् मृत्यु का सूचक है। दैवयोग से यदि यही चिन्ह कनिष्ठका अंगुली (बुधांगुली) के अधोपर्व पर स्थित हो तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) आजीवन अविवाहित ही रहते हैं। इसके साथ ही यदि यह अंगुली छोटी और टेढ़ी भी हो तो वह व्यक्ति महा दरिद्री, कुटिल-स्वभाव और चोरी करके पेट भरने वाला होता है। यदि बुध-क्षेत्र पर अनेक छोटे २ गुणक चिन्ह हों तो वे अस्वाभाविक बुराई के द्योतक हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति का जीवन संकटापन्न रहता है। उसे आजीवन सुख का अनुभव तक नहीं होता।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि बुध-क्षेत्र उच्च हो और हाथ शुभ हो और इसके साथ ही साथ बुध-क्षेत्र पर शुद्ध तथा सुस्पष्ट गुणक-चिन्ह दृष्टिगोचर होता होतो वह व्यक्ति अत्यधिक हास्य विनोदी, आमोद-प्रमोद प्रिय, व्यवहार कुशल, समाज में चतुरता से कार्य करने वाला, विचारशील, परिश्रमशील, कूटनीतिज्ञ, दूरदर्शी, बुद्धिमान, व्यापार व्यवसाय, में कूटनीति का

उपयोग करने वाला तथा सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। इस व्यक्ति को समाज में समादर और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, किन्तु यह द्वैत भावापन्न होता है।

जिस व्यक्ति के बुध-क्षेत्र द्वीप अथवा यव चिह्न दृष्टिगोचर होता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २५ में अंकित है) तो वह व्यक्ति धूर्त, अभिमानी और ठग होता है। उक्त द्वीप अथवा यव चिह्न के उक्त स्थान पर विद्यमान होने से यह भी सम्भावना रहती है कि वह व्यक्ति अपने निजी एवं निकटस्थ सम्बन्धियों में ही विवाह कर ले और अन्ततः दुःखी जीवन व्यतीत करे। इस लक्षण वाले व्यक्ति की मनोवृति सदैव पाखण्ड-प्रपञ्च की ओर ही विशेष रूप से आकृष्ट रहती है। इस व्यक्ति को अपने अनुचित, अनैतिक तथा अशुभ कार्यों पर तनिक भी पश्चाताप नहीं होता। यह अत्यधिक अहंकारी होता है। यह व्यक्ति सदैव सब ओर से उपेक्षित तथा तिरस्कृत होता है तथा सब कोई इसको घृणा की दृष्टि से देखता और धिक्कारता है। इसे राज्य-दण्ड भी भोगना पड़ता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में विवाह-रेखा (*Line of Marrige*) पर द्वीप अथवा यव चिन्ह दृष्टि-गोचर हो (जैसा कि चित्र संख्या २६ में अंकित है) तो वह पति-पत्नी के परस्पर
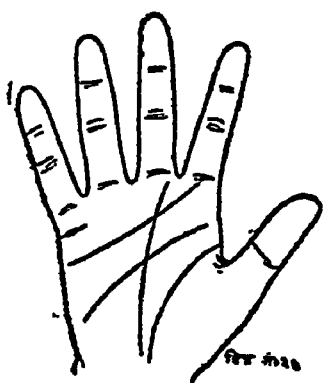
वियोग की अचूक सूचना प्रदान करता है। सम्भव है पति-पत्नी में किसी भी कारण-वश परस्पर विरोध उत्पन्न हो जाय और वह विरोध अत्यन्त उग्र होकर उनके पृथक् पृथक् रहने का कारण बने। इस वियोग के कारण पत्नी की मृत्यु हो जाने की भी पूर्ण सम्भावना होती है।
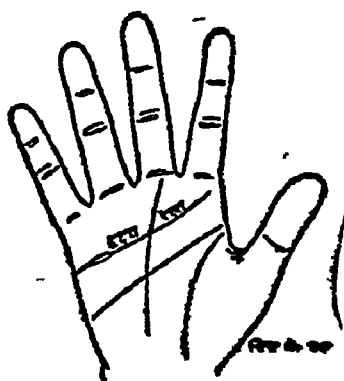
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा (Line of Heart) पर द्वीप अथवा यव चिह्न दृष्टिगोचर हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २७ में अंकित है) तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) किसी दुर्भाग्य पूर्ण प्रेम सम्बन्ध का आखेट होता है, अर्थात् कुछ दिन उत्कट प्रेम रहकर किसी कारण वश वह प्रेम सम्बन्ध सदैव के लिये टूट जाता है और वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) अपने प्रेमी अथवा प्रेमिका के लिये आजन्म निराश हो जाता है। यह प्रेम-सम्बन्ध निश्चय ही अस्थायी होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर चार आड़ी रेखाओं को तीन खड़ी रेखाओं के काटने से निर्मित रेखा जाल का चिह्न
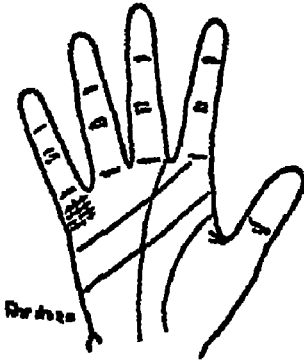
दृष्टिगोचर हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या २८ में अंकित है) तो वह व्यक्ति लम्पट और प्रायः चोरी करने का अभ्यस्त होता है। गबन अथवा अन्य अनेक अनैतिक अभियोगों में आ बद्ध होकर उसकी मृत्यु तक हो जाती है। इसी प्रकार प्रायः देखा गया है कि ये अनेक छोटी-छोटी रेखायें परस्पर एक दूसरी को काटकर हाथ में—विशेष कर ग्रह क्षेत्रों पर—जाल-सा निर्मित कर देती हैं। उक्त प्रकार की रेखाओं द्वारा निर्मित ये जाल जिस ग्रह-क्षेत्र पर अवस्थित रहते हैं उसी पर उनका प्रभाव पड़ता है। अर्थात् उसके गुणों को रोक कर ये रेखा जाल मानव-स्वभाव में एक विलक्षणता उत्पन्नकर देते हैं ये प्रायः अशुभ प्रभाव ही उत्पन्न करती हैं। यदि किसी व्यक्ति की इच्छा शक्ति प्रबल हो और वह विचार-शक्ति का समयानुकूल उपयुक्त उपभोग करने में अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग कर सके तो रेखाओं द्वारा निर्मित इन जालों से हाथों के ग्रह-क्षेत्र स्थित विभिन्न अशुभ-सूचक चिन्हों का कुप्रभाव अनायास ही रोका जा सकता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में चार आड़ी रेखाओं को तीन सीधी रेखाओं के काटने से निर्मित रेखा-जाल का चिन्ह विवाह रेखा (Line of Marriage) और हृदय रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या
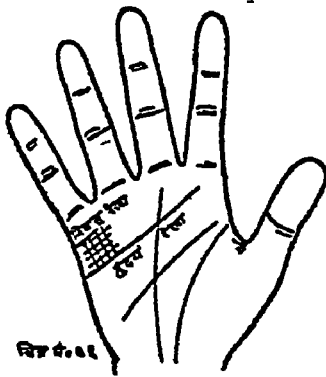
२९ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अवश्यमेव आजीवन अविवाहित ही रहेगा। दुर्भाग्य-वश यदि यह चिह्न किसी स्त्री के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो वह भी आजीवन अविवाहित ही रहेगी और पर-पुरुषगामिनी अथवा व्यभिचारिणी हो जायगी। यह चिन्ह प्रायः वेश्याओं और पिशाचिनी स्त्रियों के हाथ में देखा गया है।
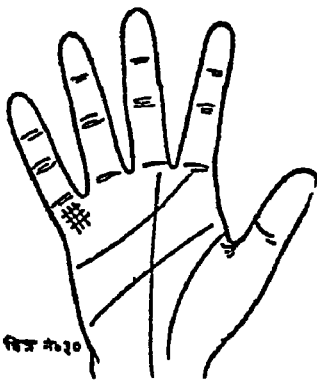
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर सरल और स्पष्ट तीन खड़ी रेखाओं को तीन आड़ी रेखायें काट कर रेखा-जाल निर्मित करती हैं (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ३० मे अंकित है) तो वह व्यक्ति अशुभ फल पाता हुआ विशेष रूप में अभिमानी, भोगी, दृढ़ प्रतिज्ञ, हिंसक, धूर्त, बेईमान, उग्र तथा दुष्ट कर्मों में निरत होता है। इसको स्त्री-सुख अपेक्षा कृत कम ही प्राप्त होता है। यह व्यक्ति कुसंग-प्रिय, स्त्री-भक्त और कृश-काय होता है। किन्तु उपरोक्त सभी दुर्गुणों के साथ वह विविध दस्तकारियों और कारीगरियों से प्रेम रखने वाला होता है और उसकी जीविका छोटे-छोटे व्यवसायों से ही उपार्जित होती है।

यदि उक्त रेखा जाल की रेखायें आड़ी-टेढ़ी अथवा छिन्न-भिन्न (असंगत) हों तो उसे अपने जीवन का अधिकांश भाग चौर्य-कर्म, मानसिक चिन्ताओं, दुर्घटनाओं और परस्पर विरोधी बातों मे ही बिताना पड़ता है। शस्त्र-आघात, राजदण्ड, मानहानि आदि का आखेट होकर वह व्यक्ति बवासीर प्रभृति अनेक महा भयङ्कर रोगों से पीड़ित होता है। इसका जीवन अनेक प्रकार से जर्जर हो जाता है। यह अपने जीवन में इतना पीड़ित तथा दुःखी होता है कि अन्त में पूर्ण निराश होकर आत्म-हत्या पर भी उतारु हो जाता है। यह भी अनुभव किया गया है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री-पुरुष) का विवाह न्यायालय में (Civil Marriage) में होने की ही अधिक सम्भावना होती है।

विशेष-ज्ञातव्य

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इस प्रकार के महा भयङ्कर चिन्हों का रक्षक भी प्रायः उन्हीं के साथ, उनसे सम्बद्ध रखाओं अथवा ग्रह-क्षेत्रों पर अवश्य ही रहता है। यह रक्षक-चिन्ह 'चतुष्कोण' है। अतः हस्त परीक्षक को उचित है कि वह किसी भी भयंकर चिन्ह अथवा लक्षण को देखकर तत्सम्बन्धित रेखा, ग्रह-क्षेत्र, अथवा हाथ के अन्यान्य नैसर्गिक विभाग पर इस 'रक्षा-चिन्ह' को अच्छी प्रकार खोजले। यह 'रक्षा चिन्ह' अस्पष्ट होने पर भी अपना शुभ प्रभाव दिखाये बिना नहीं रहता, अतः अच्छा हो यदि अशुभ चिन्हों का फलादेश निश्चित करके घोषित

करने से पूर्व इसको अणु-वीक्षण यन्त्र की सहायता से खोज कर इसकी उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति का निश्चय करलें। अन्यथा फलादेश में भयानक वैपरीत्य होने की सम्भावना रहती है।

बुध-क्षेत्रगत रेखाओं का शुभाशुभ फल

चित्र नं० ३१
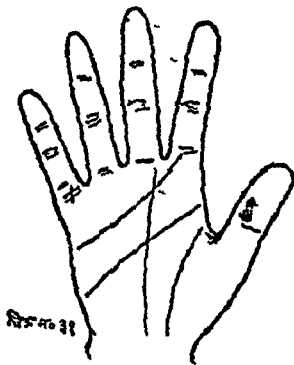
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र के उर्ध्व भाग में अथवा कनिष्टका अंगुलि (बुधांगुलि) के मूल में स्थित एक सीधी और सुस्पष्ट छोटी रेखा को दो सामानान्तर रेखायें काटती हों (जैसा कि ऊपर वाले चित्र-संख्या ३१ में अंकित है) तो वह व्यक्ति चरित्र-हीन, इन्द्रिय लोलुप, कामान्ध, तथा व्यभिचारी होता है। इसे सन्तान सुख अपेक्षाकृत न्यून मात्रा में ही प्राप्त होता है। इस व्यक्ति को परिजन, बन्धु बान्धव, इष्ट मित्र, सगे सम्बन्धी आदि स्वजनों से विरोध, पदच्युति, तिरस्कार, अपवाद, विदेश-यात्रा में कष्ट और बनवास दुःख भोगना पड़ता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति पर-स्त्रीगामी और विज्ञान-विहीन होते हैं।

दैवयोग से उपरोक्त लक्षण यदि किसी स्त्री के हाथ में दृष्टि-गोचर हो तो उसके लिए अत्यन्त अशुभ होता है। यह स्त्री अपने भरण-पोषण के लिये निश्चित-रूप से वेश्या-वृत्ति ग्रहण करती है। वह महा विश्वासघातिनी, धूर्त, दुष्ट और कुलटा होती है। वह अपमृत्यु पाती है।

यदि उपरोक्त रेखा को काटने वाली दो रेखायें समानान्तर न होकर लहरदार हों तो वह व्यक्ति स्त्री और पुत्र के सुख से वंचित रहता है। वह विद्याहीन, विवेक शून्य, विचार-हीन असन्तोषी और दम्भी होता है। वह अपने जीवन-पर्यन्त भूलकर भी किसी का हित साधन नहीं करता है। हां, अपने स्वार्थ-साधन के हित कितने ही घरों को नष्ट अवश्य कर देता है। इसकी संगति प्रायः धूर्त और दुष्ट पुरुषों के साथ होती है और उन्हीं के फेर में पड़कर यह व्यक्ति अपना सर्वस्व खो बैठता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति समाज के लिए विपवत् होते हैं। उन्हें जीवन में कभी भी सुख और सन्तोष प्राप्त नहीं होता।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र के ऊर्ध्व भाग में अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल में दो सीधी और सामान्तर रेखाओं को एक रेखा काटे (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ३२ में अंकित है) तो वह व्यक्ति आजीवन जननेन्द्रिय तथा शुक्र-सम्बन्धित रोगों का आखेट बना रहता है। उसे प्रायः प्रमेह, मूत्र कृच्छ, सुजाक, आतशक आदि भयानक रोग घेरे रहते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री भी प्रायः रोगिणी ही होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र के ऊर्ध्व भाग में अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल में सीधी और छोटी २ अनेक रेखाये हों
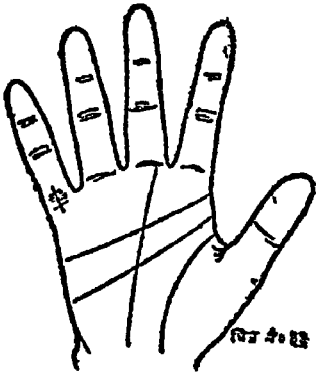
और उनको एक खड़ी रेखा काटती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ३३ में अंकित है) तो वह व्यक्ति जननेन्द्रिय तथा शुक्र सम्बन्धी रोगों से आक्रान्त रहता है। इसके अतिरिक्त उसे अन्यान्य भयंकर रोगों का भी आखेट होना पड़ता है। उसे साधारणतः प्रमेह, मधुमेह, मूत्र-कृच्छ्र, सुजाक, आतशक, बवासीर, भगन्दर प्रभृति रोगों से ग्रस्त रहना पड़ता है। इन सब के साथ साथ उसे अपनी पत्नी द्वारा भी अपार कष्टों का सामना करना पड़ता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को स्वभावतः ही कलह-प्रिय और कर्कशा स्त्री प्राप्त होती है। वह वन्ध्या होकर भी सन्तानार्थ पर-पुरुष-पर्यङ्क-शायिनी हो—इसकी पूरी सम्भावना रहती है। यह व्यक्ति विश्वासहीन, चौर्य-कर्म में चतुर, कपटी, धूर्त, नीच तथा अत्युग्र स्वभाव का होता है। यह प्रायः दरिद्री भी होता है।

उपरोक्त छोटी-छोटी रेखायें यदि सीधी न होकर टेढ़ी-मेढ़ी हों और उन्हें एक टेढी रेखा ही काटती हो तो वह व्यक्ति अविवाहित अथवा विधुर जीवन व्यतीत करता है। इन रेखाओं के कुप्रभाव से वह निकृष्ट श्रेणी का चरित्र-हीन तथा इन्द्रिय लोलुप होता है। पर-स्त्री-गामी तथा वेश्यागमी तो होता ही है साथ ही रोगिणी, कुष्ठी, अनापा, शूद्रा और यहां तक कि चाण्डालिनी स्त्री

सक के साथ रमण करने से नहीं चूकता। किन्तु इसे धन-धान्य की कमी नहीं रहती है। लोह धातु के व्यापार-व्यवसाय में वह अपार धन प्राप्त करता है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि किसी व्यक्ति का सूर्य-क्षेत्र उच्च होकर बुध-क्षेत्र की ओर झुका हो और साथ ही उपरोक्त लक्षण भी हाथ में विद्यमान हो और इनके अतिरिक्त जीवन-रेखा (Line of Life) भी शुद्ध हो तो उस व्यक्ति के जीवन में उपरोक्त लक्षण का परिणाम इतना अशुभ नहीं रहता जितना ऊपर लिख गया है। इस दशा में वह व्यक्ति केवल मात्र पर-स्त्री-गामी ही रहता है। इसके अतिरिक्त उसे व्यापार-व्यवसाय से धन, मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को मध्यमायु में सट्टा, लाटरी आदि से अपार धन प्राप्त होने की पूर्ण सम्भावना रहती है।
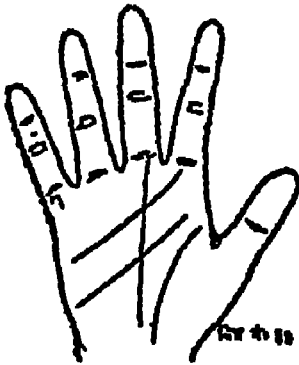
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र के उर्ध्व भाग में अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल में सीधी और स्पष्ट तीन खड़ी रेखायें हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ३४ में अंकित है) तो वह व्यक्ति राज्य द्वारा सम्मानित तथा उच्चपद के लिये मनोनीत होकर पर्याप्त धन प्राप्त करता है। वह सभा सोसायटी में भली-भांति वाद विवाद करने में कुशल होता है। वह परोपकार-निरत

सुखी और विजयी होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को अपने बन्धु-बान्धुवों अथवा किसी स्त्री द्वारा भूमि प्राप्त होती है। यह व्यक्ति बुद्धिमान और उपकारी होकर अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों से विभूषित रहता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति चतुष्पाद, यान्त्रिक, मनुष्य चालित तथा पशु चालित—सभी प्रकार के वाहनों का उपयोग करता है।

हस्त-विज्ञान के पश्चात् विद्वानों के मतानुसार उपरोक्त लक्षण वाला व्यक्ति उपरोक्त शुभ फल तो भोगता ही है साथ ही यदि उक्त तीनों रेखायें शुद्ध और सुस्पष्ट हुईं तो उसे पुत्र लाभ भी अवश्य होता है। हमारे यहां भी 'शैव-सामुद्रिक' मे इस सम्बन्ध में कुछ विवेचन प्राप्त होता है। वहां भी यह फलादेश सत्य प्रमाणित हुआ है। इसके अतिरिक्त इस लक्षण वाला व्यक्ति मन्त्र-शास्त्र का कुशल ज्ञाता होता है। वह सदैव लोक-कल्याण की भावना से किसी न किसी प्रकार का यज्ञ-अनुष्ठान आदि करता ही रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्भूत दो सीधी, शुद्ध और स्पष्ट रेखाये कनिष्ठका अंगुली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य तक जाती हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ३५ मे अंकित है) तो वह व्यक्ति स्वच्छ वस्त्र तथा आभूषण धारण करने का प्रेमी

होता है। वह सुन्दर, सुडौल तथा पुष्ट शरीर वाला होता है। वह तीक्ष्ण बुद्धि, विचारशील, विद्वान, व्यवहार कुशल, नीति-निपुण, आमोद-प्रमोद-प्रिय तथा विनोदी स्वभाव का होता है। इस व्यक्ति को धन-धान्य, ऐश्वर्य वैभव, भृत्य-वाहन, स्त्री पुत्र, परिजन-बन्धु बान्धव, इष्ट-मित्र आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। वह हास्य-क्रीड़ा में कुशल होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति प्रायः उच्चाधिकारी चिकित्सक अथवा शस्त्र चिकित्सा विशेषज्ञ होते हैं।
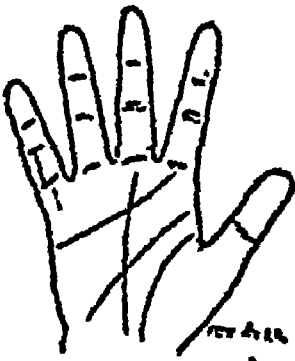
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र में उद्भूत दो सीधी, शुद्ध और सुस्पष्ट रेखाओं में से एक बढ़कर कनिष्ठिका अंगुली के अधोपर्व को पार करके द्वितीय पर्व के मूल को स्पर्श करती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ३६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति राज्य प्राप्त करता है। वह कई देशों पर अधिकार करके अपने परिजन, बन्धु-बान्धव, सगे-सम्बन्धी, इष्ट-मित्र, गुरुजन, आचार्य, ब्राह्मण आदि से सम्मान प्राप्त करता है तथा उनका समुचित सम्मान और आदर करता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इस फल की प्राप्ति के होने के लिये इन दोनों रेखाओं का शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत, गम्भीर तथा सुन्दर होना नितान्त अनिवार्य है और यह भी परमावश्यक है कि इन्हें अन्य कोई रेखा काटती अथवा स्पर्श न करती हो। अन्यथा फलादेश में न्यूनाधिकता आ जायगी।

दैवयोग से यदि उपरोक्त लक्षण किसी स्त्री के हाथ में दृष्टि गोचर हो तो वह सत्य-वादिनी, गृह-कार्य में कुशल तथा सास ससुर की सेवा में निरत होती है। ऐसी स्त्री प्रायः सुशीला, सुन्दरी मृदु-भाषिणी और सुखकारिणी होती हैं। इनको अर्थ-संचय से साधारणतः विशेष प्रेम होता है।
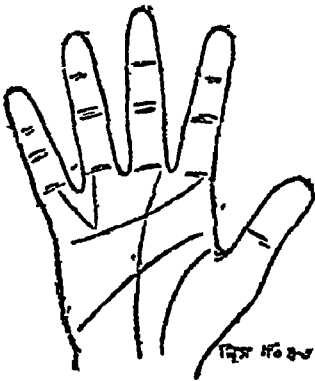
चित्र नं० ३७

जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर अथवा बुध-क्षेत्र के समीप सीधी, शुद्ध और सुस्पष्ट (किन्तु छोटी-सी) सूर्य रेखा हो और कनिष्ठका अंगुली के अधोपर्व से उद्भूत एक सीधी, शुद्ध और सुस्पष्ट रेखा बुध क्षेत्र को पार करके उपरोक्त सूर्य-रेखा से मिलती हो तथा इन दोनों रेखाओं के मिलने से शुद्ध और सुस्पष्ट कोण (Angle) बनता हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ३७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति राजाओं, सद्-पुरुषों, विद्वानों और महात्माओं का प्रिय-पात्र तथा उनके प्रति प्रेम और श्रद्धा रखने वाला होता है। यह व्यक्ति धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव भृत्य-वाहन आदि के सुख से पूर्ण होकर यज्ञादि का आयोजन करके यश प्राप्त करता है। उसे जीव-मात्र से प्रेम होता है। वह यथा-शक्ति सब की इच्छाओं का सम्मान करता है और यावत्-प्रयत्न सबके मनोरथ पूर्ण भी करता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति से किसी का भी दुःख सहा नहीं जाता। किसी को भी दुःखी,

पीड़ित अथवा आपत्ति-ग्रस्त देख कर वह उस समय तक विश्राम नहीं लेता जब तक कि उसे सुखी और आपत्ति-मुक्त न कर दे। वह सब किसी के दुःखों के शमन करने अथवा नाश करने के लिये मन-वचन-कर्म से तथा तन-मन-धन से तत्पर रहता है, भले ही वह आपत्ति अथवा दुःख कैसा ही क्यों न हो। यहां तक कि परोपकार करते-करते कभी-कभी वह स्वयं भी आपत्ति अथवा दुर्घटना का आखेट हो जाता है। वह विद्वान, काव्य-कुशल तथा साहित्य-मनीषी होता है। वेद-शास्त्रों में उसकी प्रबल रुचि होती है तथा पुण्य कार्यों में सदैव प्रवृत्त रहता है।
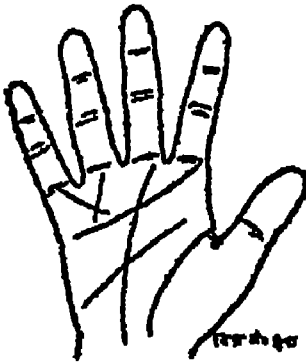
जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर अथवा बुध-क्षेत्र के समीप सीधी, शुद्ध और सुस्पष्ट (किन्तु छोटी-सी) सूर्य रेखा हो और कनिष्ठका अंगुली के अधोपर्व से उद्भूत एक सीधी, शुद्ध और सुस्पष्ट रेखा बुध क्षेत्र को पार करके उपरोक्त सूर्य रेखा को काटती हो तथा इस प्रकार उनके द्वारा गुणक सदृश्य चिह्न बनता हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ३८ में अंकित है) तो इसका फल महा अशुभ होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति बुद्धिहीन, कठोर और चिन्ताओं का दास बना रहता है। वह स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव एवं भृत्यों से सदैव दुःखी रहता है। उसे भूमि सम्बन्धी अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। इसे अत्यन्त

विद्या प्राप्त होती है। हां, सूर्य-रेखा के उत्तम प्रभाव से उसे किसी पहुंचे हुये महात्मा अथवा सज्जन महा-पुरुष का सत्संग अवश्य प्राप्त होता है और उस सत्संग के प्रभाव से उसकी मनोवृति में शनैः शनैः परिवर्तन होता है तथा कालान्तर में वह अपना गृहस्थ जीवन सुखमय बना लेता है।
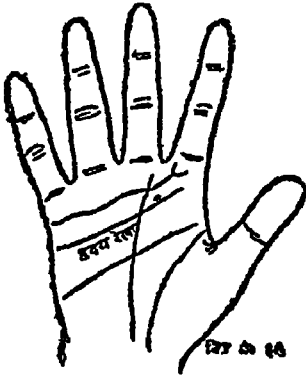
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्भूत एक लहरदार रेखा वृहस्पति-क्षेत्र पर जाती हो (जैसे कि साथ वाले चित्र-संख्या ३६ में अंकित है) तो उस व्यक्ति की धर्म मे तनिक भी श्रद्धा नहीं होती और वह विकल-चित्त होकर गृह विमुक्त होता है। उसका जीवन प्रायः सहायता और याचनाओं से ओत प्रोत होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति बहुत बडा ऋणी होकर अन्ततः अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति तक वेच डालता है और अपना शेप जीवन दूसरों की सहायता और आश्रय पर व्यतीत करता है। किन्तु यह व्यक्ति अपने दुर्भाग्य-जनित आपत्तियों और कष्टों को अत्यन्त गम्भीरता के साथ भोगते हैं, यहां तक कि इनकी वास्तविक-स्थिति का रहस्य किसी को भी ज्ञात नहीं होता। कोई भी यह नहीं जान पाता कि यह कष्ट में ग्रसित है। यही कारण है कि यह व्यक्ति प्रत्यक्षतः और बहुत कुछ अन्तःकरण में भी प्रसन्न, सन्तोषी और भाग्यवादी ही होते हैं। यह अपने जीवन के सभी उतार चढ़ावों को धैर्य के साथ भोगते हैं।

दैवयोग से यदि यह रेखा बृहस्पति-क्षेत्र पर द्विभुज हो गई हो और इसकी ये दोनों भुजायें शुद्ध और स्पष्ट समकोण (Right Angle) बनाती हों तो वह व्यक्ति हठी, स्वार्थी, अभिमानी और निर्लज्ज होता है। इसकी मृत्यु भी हठ-वश ही होती है। विद्यार्थियों के हाथ में इस प्रकार की रेखा प्रायः दृष्टिगोचर होती है, किन्तु अध्ययन की वृद्धि के साथ साथ शनैः शनैः इसका लोप होता जाता है। इतने पर भी यदि कोण शेष रह जाता है तो वह विद्यार्थी अध्ययन-सम्बन्धी असफलता (अर्थात् परीक्षा में असफल होने) के कारण आत्म हत्या कर लेता है अथवा किसी प्रेम लीला का आखेट होकर मृत्यु प्राप्त करता है या आत्म हत्या कर लेता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यह रेखा हृदय-रेखा (Line of Heart) से ऊपर ही होगी, नीचे कभी भूल कर भी नहीं होगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्मूल एक सीधी रेखा बृहस्पति-क्षेत्र तक जाती हो और वहां जाकर द्वि-भुज हो गई हो तथा उक्त दोनों भुजाओं से सम-कोण (Rght Angle) बनता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ४० में अंकित है) तो वह व्यक्ति प्रत्येक कार्य को पहले सम्यक् रूप से सोच-विचार तथा अपने वयो-वृद्धों और गुरुजनों से परामर्श करके करता है।

यदि उक्त कोण बृहस्पति-क्षेत्र पर सुस्पष्ट और शुद्ध हो तो वह मन्त्री पद प्राप्त करने का अभिलाषी होता है। उसे धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव, वाहन-भृत्य, स्त्री-पुत्र, कृषी-पशु, परिजन, बन्धु-बान्धव, इष्ट-मित्र, सगे सम्बन्धी आदि सभी प्रकार का सुख प्राप्त होता है। क्रय-विक्रय में उसे यथेष्ट लाभ होता है। उसके यहां चतुष्पाद-वृद्धि खूब होती है और अन्त में तीर्थ-यात्रा करते हुये किसी पुण्य-स्थान में उसका शरीर-पात होता है।

चित्र सं० ४१

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्भूत एक टेढ़ी रेखा शनी-क्षेत्र तक जाती हो (जैसे कि साथ वाले चित्र-संख्या ४१ में अंकित है) तो वह व्यक्ति स्वभाव से मन्द, घृणित, पाप परायण, तथा निन्दित होता है। ऐसे प्राणी निर्दय, निर्धन, निर्बुद्धि, सबसे विरोध करने वाले, कटु भाषी, अपव्ययी, व्यभिचारी, क्रोधी और अर्द्ध-शिक्षित होते हैं, किन्तु उन्हें व्यापार-व्यवसाय द्वारा धन लाभ अवश्य होता है। इनके व्यापार की प्रधान वस्तु लोहा, लोहे से निर्मित अनान्य पदार्थ तथा कोयला ही होता है। यह व्यक्ति सदैव गृह-कलह से दुःखी और स्त्री-बन्धु-जनों से शंकित रहता है। यह निन्द्य पदार्थों का खान-पान तथा सेवन करने वाला और व्यसनी होता है। द्यूत-क्रीड़ा में इसे विशेष रुचि होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः वायु-रोगों का आखेट रहता है और अन्ततः वायु रोग से ही इसकी मृत्यु भी होती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध क्षेत्र से उद्भूत एक सीधी और सुस्पष्ट रेखा शनी क्षेत्र को जाती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ४२ में अंकित है) तो वह व्यक्ति लोहे, लोहे से निर्मित वस्तुओं तथा कोयले के व्यापार व्यवसाय में अतुल धन प्राप्त करता है। यह विदेश में रहकर मान और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। इस प्रकार की उपरोक्त सीधी और सुस्पष्ट रेखा वाला व्यक्ति प्रायः उद्योगपति (किसी कल कारखाने का स्वामी) होता है। वह नवीन शस्त्रास्त्रों का निर्माता होकर ख्याति लाभ करता है। हाँ, यह सम्भव है कि वह अपने जन्म स्थानको त्यागने के पश्चात् ही उन्नति करेगा। जन्म स्थान में रहने पर उसे कितनी ही आपत्तियों तथा बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह भी सम्भव है कि जन्म स्थान में रहने पर उसे मान हानि उठानी पड़े अथवा कारा की काली कोठरी मे भी दिन काटने पड़ें। अतः हस्त परीक्षक को उचित है कि जिस किसी व्यक्ति के हाथ में यह लक्षण देखे उसे अविलम्ब जन्म स्थान त्याग देने का आदेश करे। क्योंकि ऐसा करने में ही उसका कल्याण और उन्नति निहित होती है।

दैवयोग से उपरोक्त रेखा छिन्न भिन्न हो तो वह व्यक्ति व्यापार व्यवसाय में कठिनाइयों का सामना और जीवन में उतार

चढ़ाव का अनुभव करता है। उसका चित्त अस्थिर रहता है। वह कभी कोई व्यापार करता है, कभी नौकरी करता है, तो कभी मजदूरी से ही जीविका चलाता है। इस प्रकार के व्यक्ति का परिवार अत्यन्त संकुचित होता है, यहां तक कि कभी-कभी तो केवल स्त्री और पुरुष—दो ही होते हैं। ऐसे व्यक्ति के सन्तान बहुत ही कम देखने में आती हैं। भाग्यवश यदि उसके हाथ में सन्तान रेखायें शुद्ध और सुस्पष्ट हों तो वे सन्तानें उसके उसकी परिणीता पत्नी से न होकर अन्य स्त्रियों से होंगी। क्योंकि सन्तान-रेखाओं का प्रभाव उक्त छिन्न-भिन्न रेखा सर्वथा नष्ट कर देती है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि अशुभ रेखाओं के सम्बन्ध से शुभ-रेखाओं और शुभ क्षेत्रों तक का शुभ फल नष्ट प्रायः हो जाता है, क्योंकि रेखा का स्पष्टतः प्रादुर्भाव ग्रह-क्षेत्र पर ही निर्भर है। यदि दूसरे पर्वत को लांघ कर अन्य पर्वत पर रेखा पहुंचे तो उसका महत्व बढ़ जाता है।
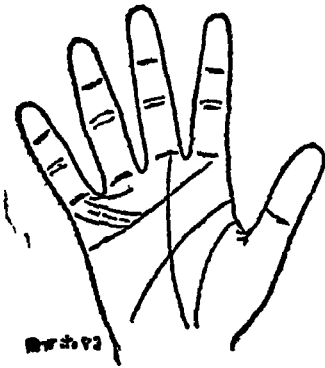
जिस व्यक्ति के हाथ में कनिष्ठका अंगुली के अधोपर्व से उद्भूत एक गहरी और सीधी रेखा बुध-क्षेत्र को पार करके सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचे (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या ४२ में अंकित है) तो वह व्यक्ति सभ्य समाज में अप्रतिष्ठित होकर सदैव बुराई करने में तत्पर रहता है। ऐसे व्यक्तियों से सज्जनों

सद्गुणियों और सत्यवादियों को कष्ट प्राप्त होता है। इस व्यक्ति में चोरी करने की प्रवृत्ति अत्यधिक पाई जाती है। दैवयोग से यदि यह व्यक्ति व्यापारी हुआ तो कमर-कसकर चोर-बाजारी करता है। यह व्यक्ति अत्यधिक शंका-शील होता है और जिस किसी पर इसे शंका हो जाती है उसे तुरन्त ही अपने से दूर कर देता है। यहां तक कि शंका होने पर अपनी पत्नी तक को घर से निकाल बाहर कर देता है।

दुर्भाग्यवश यदि उपरोक्त रेखा छिन्न-भिन्न हो जाय तो वह उपर्युक्त फलों में और भी वृद्धि कर देती है, यहां तक कि उस व्यक्ति का समस्त जीवन ही क्लेश-युक्त हो जाता है। यदि उक्त रेखा सीधी न होकर आड़ी-टेढ़ी हो तो उसके जीवन में उपरोक्त घटनायें घटित अवश्य होती हैं किन्तु प्रकाश मे नहीं आती। जन-साधारण को यह ज्ञात नहीं होता कि वह चोर और चुगलखोर है। वह यह सब काम इस सफाई से करता है कि किसी को पता नहीं चलता और उसका काम तो हो ही जाता है।

दैवयोग से यदि उक्त रेखा अविच्छिन्न होकर बढ़ती जाय और जाकर हृदय-रेखा (Line of Heart) का स्पर्श करे तो उपरोक्त अशुभ फल सर्वथा नष्ट होकर अत्यन्त शुभ फल प्राप्त होता है। वह व्यक्ति कुशल-कलाकार और अनुभवी व्यापारी होता है। वह विद्वान, विचारशील, उदार, दूरदर्शी, मेधावी और बुद्धिमान होता है। उसे अपने जीवन में प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। वह धन-धान्य सम्पन्न होकर सुखी जीवन व्यतीत

करता है। उसे मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। ऐसा लक्षण प्रायः लेखक, चित्रकार, धनाढ्य और उदार-चेता व्यक्तियों के हाथ में दृष्टिगोचर होता है।

चित्र सं० ४४
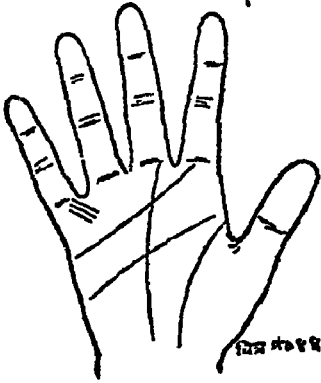
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल में छोटी और टेढ़ी तीन रेखायें हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ४४ में अंकित है) तो वह व्यक्ति के कुसमय में जन्म होने की सूचक हैं। यह व्यक्ति सदैव स्त्री के लिये उत्कण्ठित (उत्सुक) रहता है। यह विचक्षण, सुखहीन, दीर्घसूत्री और सन्तान हीन होता है। इन तीन रेखाओं में कोई रेखा सीधी और शुद्ध हुई तो सम्भव है उसके सन्तान हों, किन्तु वह सन्तान उसकी विरोधी ही होगी। हमारे अनुभव में यह आया है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति की स्त्री दुष्ट-प्रकृति, सुख-हीन, बुद्धि-हीन और कर्कशा होती है। उसे अत्यधिक अभिमान होता है और मदमत्त होकर अपने पति की अवज्ञा तथा उपेक्षा करने का उसका स्वभाव होता है। वह पति के वचनों का उलंघन करने वाली होती है। इस व्यक्ति का धन उसकी स्त्री के ही हाथ में रहता है और वह उस धन को पर-पुरुष की प्राप्ति में ही व्यय कर देती है। किन्तु यह फल तभी प्राप्त होगा जब ये तीनों रेखाये टेढ़ी और लहरदार हों। यदि ये रेखायें सीधी होंगी तो उसकी

स्त्री पर-पुरुष गामिनी नहीं होगी। हां, इन रेखाओं के सीधी होने पर वह व्यक्ति स्वयं अनेक नव यौवनाओं के साथ समागम करेगा। वह व्यक्ति क्रोधी, कार्य के समय विवेक बुद्धिहीन और अल्प सन्तान वाला होगा।

भाग्यवश यदि उपरोक्त स्थान पर तीन रेखायें न होकर एक ही शुद्ध,सुस्पष्ट और सीधी रेखा हो तो वह अत्यन्त शुभ होती है। वह व्यक्ति कार्य-कुशल, विद्या के प्रताप से प्रसिद्ध, पुत्रवान, धन-धान्य सम्पन्न, ऐश्वर्य-वैभवशाली, भृत्य वाहन युक्त, भूषण प्रभृति मे द्रव्यवान तथा सुखी होता है। ऐसे व्यक्तिका पिता दीर्घायु होता है। इसे सुशीला,सुन्दर, लावण्यवती, रूपवती,धर्म-भीरु, गृह-कार्य मे कुशल, तथा पति परायणा पत्नी प्राप्त होती है वह व्यक्ति राज्या-नुग्रहीत, स्वस्थ, कार्यारूढ़, श्रेष्ठबुद्धि, साधु-जनों से प्रीति रखने वाला, माननीय, धनोपार्जन मे चतुर, अति साहसी और शक्ति-उपासक होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति सदैव कुछ न कुछ करता ही रहता है। निरर्थक बैठना वह जानता ही नहीं।

उपरोक्त रेखा यदि किसी के हाथ मे शुद्ध, सीधी एवं छोटी ही दृष्टिगोचर हो तो तत्काल निःसन्देह कह देना चाहिए कि आपको बत्तीसवें वर्ष में इस रेखा का शुभ फल प्राप्त होगा। कनिष्ठका अंगुली के मध्य में (बुध-क्षेत्र) पर हो तो बयालीसवें वर्ष में और कनिष्ठका तथा अनामिका के मध्य भाग में अथवा कनिष्ठका के मूल अन्त भाग पर हो तो पचपनवें वर्ष में इस रेखा का फल प्राप्त होता है। कितने हाथों पर दृष्टि डालने से उक्त

रेखा और वर्ष सुगमता से प्राप्त किये जा सकते हैं। यह भी अनुभव में आया है अनेक रेखायें उत्पन्न हो जायं तो उसका फल नष्ट हो जाता है। अतः स्मरण रहे कि उक्त रेखा अकेली सीधी और सुस्पष्ट होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त वह शुद्ध भी हो तथा उसे अन्य कोई रेखा काटती न हो।
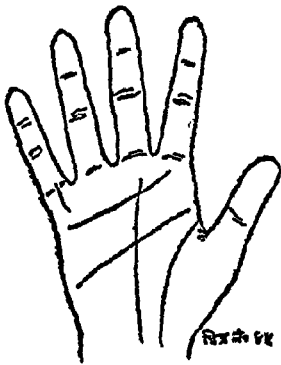
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर एक सरल, शुद्ध, सुस्पष्ट और स्वच्छ खड़ी रेखा हो (जैसी कि साथ वाले चित्र संख्या ४५ में अंकित है) तो वह व्यक्ति विज्ञान की ओर अधिक रुचि रखने वाला, परोपकारी, कीर्तिमान, कुशाग्र-बुद्धि, अच्छे-अच्छे नियमों तथा सुलेखों का निर्माता, सदा प्रसन्नचित्त, निर्द्वन्द्व, सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूपणों का प्रेमी, किसी से परास्त न होने वाला, तथा पूर्वजों के मार्ग का अनुसरण करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति समाज के जीवन का स्तर उन्नत करने के हेतु अनेक कार्य करते हैं। शासन-सत्ता से धन प्राप्त करके उसे जन-साधारण के कल्याण-कार्यों में व्यय करना इनका स्वाभाविक कर्तव्य होता है अपने गुणों, विचार शक्ति, कार्य प्रणाली तथा साहस के बल पर ये अनेक विघ्न-बाधाओं तथा आपत्तियों को शीघ्र एवं अनायास ही शमन करने में सफल होते हैं। दुःख में फंस जाने पर ये अपनी दूरदर्शिता से उससे मुक्त होने में समर्थ

होते हैं। यद्यपि शत्रुपक्ष की ओर से उन पर आघात करने के अनेक प्रयत्न होते हैं, किन्तु वे उससे विचलित नहीं होते और न अपने शत्रुओं से किसी प्रकार का विवाद अथवा झगड़ा ही करते हैं, वरन धैर्य, साहस और शान्ति के साथ यत्न पूर्वक उनका मूलोच्छेदन करके उन पर अपूर्व विजय प्राप्त करते हैं। इस लक्षण वाले व्यक्ति विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, अपूर्व प्रतापशाली, तेजस्वी, कीर्तिमान तथा यशस्वी पुत्र-रत्न प्राप्त होता है। इस लक्षण में विशेषता यह है कि यदि उक्त रेखा कनिष्ठका अंगुली के अधो-पर्व के मूल स्थान अर्थात् स्वयं कनिष्ठका अंगुली के ही मूल स्थान का स्पर्श करे तो उस व्यक्ति को उपरोक्त अपूर्व गुण-सम्पन्न केवल एक ही पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। शेष सभी (उपरोक्त) फल तो प्राप्त होंगे ही।
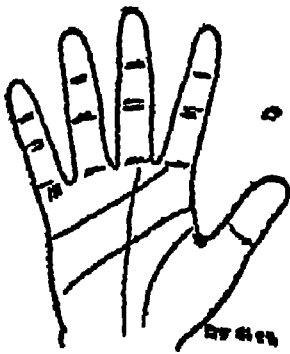
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर तीन सरल, शुद्ध, सुस्पष्ट स्वच्छ छोटी और खड़ी रेखायें परस्पर मिल गई हों अथवा पृथक्-पृथक् भी हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ४९ में अंकित है) तो वह व्यक्ति चंचल-प्रकृति किन्तु बुद्धिमान होता है। गृहस्थी चलाने की उसमें सुचारु योग्यता होती है। यह व्यक्ति साधारणतः चिकित्सक होकर भी व्यापार-व्यवसाय में कुशल होता है और सदैव धनोपार्जन में प्रयत्नशील रहता है।

दैवयोग से उक्त रेखायें यदि टेढ़ी अथवा सर्प-गति सदृश्य (लहरदार) हुईं तो उसे अपने जीवन में अनेकों बार अनेकानेक कष्टों, आपत्तियों तथा बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उसे रुधिर-विकार तथा जीर्ण-ज्वर से ग्रस्त रहने की भी सम्भावना रहेगी। दुर्भाग्यवश उक्त रेखाओं के लहरदार होकर परस्पर मिल जाने से कोई द्वीप (यव) चिन्ह निर्मित हो जाय तो वह अकाल-मृत्यु की ओर संकेत करता है। सम्भव है इस लक्षण के प्रभाव से उसकी मृत्यु जल में हो।

उपरोक्त तीन रेखायें सीधी, शुद्ध तथा पृथक् पृथक् होकर किसी स्त्री के हाथ में दृष्टिगोचर हों तो वह उपचारिका (नर्स) का काम करती है। इस लक्षण वाली स्त्री का अपने पति से सदैव विरोध ही रहता है। यहां तक देखा गया है कि यह स्त्री कानीन सन्तान (अर्थात् विवाह होने से पूर्व कन्यावस्था में ही सन्तान) प्रसव करती है। वह स्वभावतः ही चरित्रहीन होकर व्यभिचार की ओर विशेष रूप से आकृष्ट रहती है। इस लक्षण वाली स्त्री के हृदय में दया, ममता, करुणा तथा सहृदयता लेशमात्र भी नहीं होती। हां, धनोपार्जन में यह अवश्य ही परम दक्ष होती है।
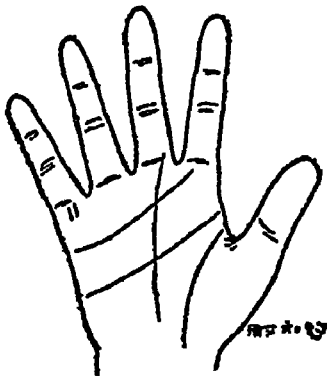
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर दो सरल, शुद्ध, सुस्पष्ट, स्वच्छ, गम्भीर, छोटी तथा खड़ी रेखायें हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ४७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति विद्वान, विवेकी,

ज्ञानी और जन-समाज में अधिक प्रसिद्ध तथा कीर्तिमान होता है। वह अपने परिवार के अधिकांश सदस्यों को स्वअर्जित धन से पृथक्-पृथक व्यापार-व्यवसाय में लगा देता है। कुल और समाज में उसकी प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रहती है। यह व्यक्ति विचार-शील बुद्धिमान, दूरदर्शी, दृढ़-निश्चयी, उदार, दानशील, प्रतिभा-सम्पन्न, प्रभावशाली और सज्जन होता है। इसे अपने जीवन में सर्व-सुख प्राप्त होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर दो सरल, शुद्ध, सुस्पष्ट, स्वच्छ, गम्भीर, छोटी तथा खड़ी रेखायें हों और उनमें से एक कनिष्ठका अंगुली के मूल-स्थान का स्पर्श करती हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ४८ में अंकित है) तो यह व्यक्ति एक पुत्र और एक कन्या प्राप्त करता है। इन दोनों रेखाओं में से कनिष्ठका अंगुली के मूल स्थान का स्पर्श करने वाली रेखा पुत्र-सूचक और दूसरी छोटी रेखा कन्या-सूचक है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को एक महान गुणी, सुन्दर, प्रतिभाशाली, विद्वान, मेधावी तथा माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र प्राप्त होता है और इसके अतिरिक्त एक सुन्दर, रूपवती, लावण्यवती, सुशीला, दयालु, धर्म-भीरू, गृह-कार्य में प्रवीण, बुद्धिमती, विदुषी तथा पति-परायण कन्या भी प्राप्त होती है। इन दो सन्तान-रत्नों के पश्चात्

उसके कोई सन्तान ठहर न सकेगी। दैवयोग से यदि ठहर भी गई तो अल्पायु, रोग-ग्रस्त, और चिन्तातुर ही होगी।

उपरोक्त पुत्र-सूचक रेखा यदि विवाह-रेखा (Marriage Line) को स्पर्श करके स्पर्श-स्थान पर समकोण (Right Angle) बनाये और उक्त कन्या-सूचक रेखा उक्त कोण के भीतर हो तो निश्चय ही वह व्यक्ति अपने विवाह से पूर्व ही कोई न कोई मांगलीक कार्य सम्पन्न करता है अथवा वह अपनी कन्या के विवाह से पूर्व ही अपने पुत्र का विवाह कर देता है। इस योग के प्रभाव से यह भी सम्भव है कि वह अपनी आयु के चालीसवें वर्ष से पचासवे वर्ष पर्यन्त वीतरागी होकर गृहस्थ जीवन का त्याग कर दे और अपना शेष जीवन मानव-कल्याण के मार्ग में व्यतीत करे। ऐसा अवसर उपस्थित होने पर वह व्यक्ति निर्द्वन्द्व होकर तपोवनों, सुन्दर-सुन्दर उपवनों तथा प्राचीन धर्म-स्थली (जिनका वर्णन हमारे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है) तथा तीर्थ-स्थानों में जीवन-पर्यन्त विचरण करता है। उस व्यक्ति में अल्पाहार, कल्पादि करने की अपूर्व शक्ति रहती है। वह कार्य में दृढ़-सकल्प होता है तथा उसकी इच्छा शक्ति प्रबल होती है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि उपरोक्त शुभफल उसी दशा में प्राप्त होता है जब कि उक्त रेखायें शुद्ध-स्पष्ट और सीधी होकर ही विवाह-रेखा से अपना सम्पर्क स्थापित करती हैं। इसके विपरीत यदि उक्त दोनों रेखायें लहरदार होकर विवाह-रेखा को

स्पर्श करती हैं तथा इस प्रकार उसके साथ कोण बनाती हैं तो फलादेश सर्वथा विपरीत हो जायगा। इस प्रकार के योग के परिणाम-स्वरूप वह व्यक्ति अपनी आयु के चालीस पचास वर्ष पश्चात् गृह-त्याग तो अवश्य करेगा किन्तु उसकी समस्त क्रियायें निष्फल ही रहेंगी। फलतः इस अवस्था में भी उसे अनेक सांसारिक चिन्ताओं का दास रहना होगा और अन्ततः पुनः गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करना होगा। फिर गृहस्थाश्रम में रहकर भी वह राजर्षि जनक के समान जीवन व्यतीत करने के लिये प्रयत्नशील रहेगा।

दैवयोग से यदि उपरोक्त दोनों रेखाये शुद्ध, सुस्पष्ट, गम्भीर तथा स्वस्थ हों और साथ ही बुध-क्षेत्र उच्च हो तो वह व्यक्ति कुशल चिकित्सक (Dootor) अथवा कुशल यान्त्रिक (Engineer) होगा। इस व्यक्ति को अपनी ही विद्या तथा योग्यता से लोक-सम्मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति तथा ख्याति प्राप्त होगी।
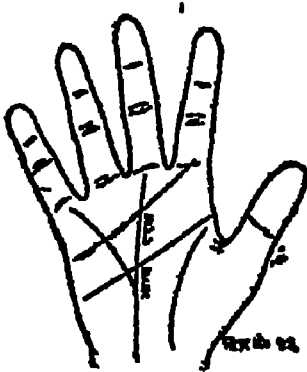
जिस व्यक्ति के हाथ में शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत, गम्भीर तथा स्वस्थ भाग्य रेखा की एक शुद्ध तथा गम्भीर शाखा बुध-क्षेत्र पर आती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ४६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति विदेश में उत्तम कार्य करके सम्मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति तथा यश प्राप्त करता है। यह व्यक्ति यदि अपने जन्म-

स्थान पर रहता है तो सदैव चिन्तातुर ही बना रहता है। इस व्यक्ति को परदेश ही लाभकारी, सुखकारी तथा उन्नतिकारक होता है। वहां उसे इष्ट मित्रों तथा उदार चेता सज्जनों के द्वारा विद्याध्ययन अथवा धनार्जन में यथेष्ट और आवश्यक सहयोग प्राप्त हो जाता है। यह व्यक्ति वाहनों का अत्यधिक प्रेमी होगा। परदेश में रह कर ही यह सुख ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करेगा।

भाग्य-रेखा की उपरोक्त शाखा यदि बुध क्षेत्र के मध्य तक जाती हो और उसे कोई अन्य रेखा न काटती हो तो वह व्यक्ति कोई बड़ा व्यापार-व्यवसाय करके अतुल धन-ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अनेकानेक उद्योग-धन्धों (कल-कारखाने और मिलों) का स्वामी होते हुये भी वह व्यक्ति धनार्जन के लिए अन्यान्य व्यापार व्यवसाय भी करता है।

दैवयोग से भाग्य रेखा की उक्त शाखा बीच में से कट गई हो अथवा टूट गई हो तो उसे राज्य से भय होता है और उसका धन तथा ऐश्वर्य शासन-सत्ता अथवा चोर-डाकुओं द्वारा नष्ट कर दिया जाता है।

उपरोक्त भाग्य-रेखा की शाखा पर यदि द्वीप (यव) चिह्न हो तो वह व्यक्ति अपने परिजन, बन्धु-बान्धवों अथवा सगे-सम्बन्धियों द्वारा पीड़ित होता है तथा उसका धन इन लोगों के द्वारा उत्पन्न मुकद्दमेबाजी में समाप्त हो जाता है।

सौभाग्यवश भाग्य रेखा की उक्त शाखा पर चतुष्कोण चिह्न हो तो वह व्यक्ति नि:सन्देह अपना समस्त कार्य सुचारु रूप से

सफलता पूर्वक सम्पादन करता है। उसका जीवन अत्यन्त सुख मय तथा ऐश्वर्य सम्पन्न व्यतीत होता है। धार्मिक तत्वों किंवा आध्यात्मिक जीवन की ओर वह स्वभाव से ही विशेष रूप से आकृष्ट रहता है। वह लोक-सेवा और परोपकार को अपने जीवन का प्रधान ध्येय समझता है। उसे जीवन के मध्य में अतुल सम्पत्ति प्राप्त होने का सौभाग्य भी प्राप्त होता है। वह अतिशय उदार, दयावान, करुणामय तथा दान वीर होता है। वह विचार शील, दूरदर्शी, न्याय परायण, प्रबुद्ध चेता, प्रतिभाशाली, प्रभाव-शाली, विद्वान तथा सद्-विचारों का प्रेरक होता है। वह अपने जीवन में अनेक लोक-कल्याणकारी कार्यों का श्री गणेश करके उन्हें उन्नति के शिखर पर पहुंचाता है।
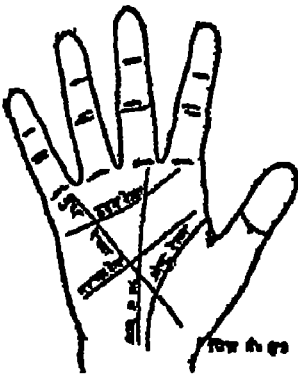
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से निकलने वाली—बुध रेखा आयु रेखा में जाकर मिले (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ५० में अंकित है) अथवा इसकी कई शाखायें आयु रेखा में जाकर मिलें तो वह व्यक्ति आजीवन रोग ग्रस्त रहता है। अधिक परिश्रम करने पर इस व्यक्ति को ज्वर, मन्दाग्नि, और शूल आदि रोग हो जाते हैं। अस्वस्थ रहने के कारण वह अत्यन्त चिन्तित रहता है और औषधोपचार में अत्यधिक व्यय होने के कारण उसे सदैव ऋण से दबा रहना

पड़ता है। वह अपनी गृहस्थी की भी सुचारु व्यवस्था नहीं करने पाता।

दैवयोग से यदि यह रेखा आयु रेखा को पार कर जाय तो उस व्यक्ति का हृदय निर्बल होता है। यह उसके आकस्मिक हृदय की गति बन्द हो जाने की भी सूचना देती है। स्मरण रहे कि हृदय की गति बन्द होने की घटना उसकी आयु के उसी वर्ष में होगी जो इसके आयु रेखा को पार करने के स्थान पर वर्षमान के अनुसार प्राप्त होता है। इससे पूर्व इसका कोई भय नहीं होगा।

उपरोक्त बुध-रेखा यदि अनेक स्थानों पर कटी-फटी अथवा टूटी हुई हो तो उस व्यक्ति को कारा की काली कोठरी की यातनायें भोगनी पड़ती हैं। यह व्यक्ति आजीवन कष्टों और दुर्घटनाओं का सामना करता है।

यदि उपरोक्त बुध-रेखा शुद्ध, सरल और सीधी होकर मस्तक रेखा (Head Line) और भाग्य-रेखा (Fate Line) को काट कर आयु रेखा (Life Line) में जाकर मिलती हो, साथ ही मस्तक रेखा (Line of Head) और आयु रेखा (Line of Life) के मध्य में आने वाली अन्यान्य छोटी-छोटी रेखायें इस रेखा को काटती हों, तो इस लक्षण वाला व्यक्ति देश-सेवा किंवा राष्ट्र हितार्थ अनेक बार जेल-यात्रा करता है अथवा नजरबन्द होता है। इस सम्बन्ध में हस्त-विज्ञान के पाश्चात् विद्वानों का मत है कि इस व्यक्ति की मृत्यु भी कारागार में ही होती है।

और उसे अनेकानेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। जो हो, इस बात को वे भी स्वीकार करते हैं कि यह व्यक्ति उत्कृष्ट देश भक्त तथा राष्ट्र-भक्त होता है और देश सेवा किंवा राष्ट्र-हितार्थ ही वह अनेक बार जेल-यात्रा अवश्य ही करता है।
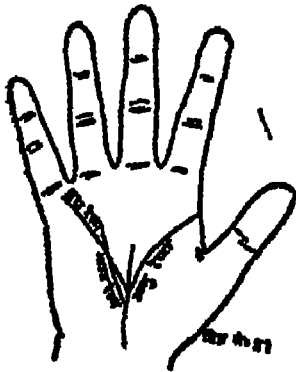
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्‌भूत बुध रेखा आयु-रेखा पर जाकर मिलती हो और उक्त संगम-स्थल पर ही से अंगुलियों की ओर ऊपर को उठती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ५१ में अंकित है) तो बुध रेखा और आयु रेखा के संगम-स्थल से उद्‌भूत यह भाग्य-रखा चित्र संख्या ५० के फला देश में कथित मृत्यु-फल से मानव की रक्षा करती है। रेखामान से इस स्थल पर जो वर्ष प्राप्त होता है उसी वर्ष में इस लक्षण वाले व्यक्ति की उन्नति किंवा भाग्योदय होना भी अनिवार्य है। यदि उक्त भाग्य रेखा बुध-रेखा और जीवन रेखा के सगम स्थल से उद्‌भूत न होकर उससे नीचे जीवन रेखा से उठे और इस प्रकार आयु रेखा (Line of Life) बुध रेखा (Line of Murcnry) और भाग्य-रेखा (Line of Fate) के द्वारा त्रिकोण के सदृश्य चिन्ह बन जाय तो इसके प्रभाव से उक्त व्यक्ति को किसी गम्भीर दुर्घटना का सामना करना पड़ेगा।

कभी-कभी यह भाग्य रेखा जीवन-रेखा अथवा जीवन-रेखा और बुध रेखा के संगम-स्थल से न उठकर बुध रेखा पर से ही उठती है। ऐसी दशा में इस लक्षण वाला व्यक्ति शुभ फल प्राप्त करता है। उसका चित्र संख्या ५० के फलादेश में वर्णित मृत्यु फल नष्ट हो जाता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति प्रायः कुशल व्यापारी-व्यवसायी होकर अनेक व्यापारिक संस्थाओं का स्वामी होता है। यह व्यक्ति स्वावलम्बी, दृढ़-प्रतिज्ञ, कार्य कुशल और शुद्ध चित्त होता है।
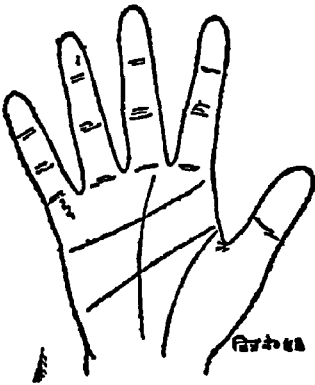
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर सर्पाकार ऊंची-नीची और टेढ़ी-मेढ़ी रेखा दृष्टिगोचर हो (जैसी कि साथ वाले चित्र संख्या ५२ में अंकित है) तो वह व्यक्ति यकृत और पित्त सम्बन्धी रोगों का आखेट रहता है। वह कृतघ्न, धूर्त एवं दुष्ट-प्रकृति होता है। वह देवताओं और पितरों का अपमान करने वाला, अभिमानी, बन्धु-बान्धवों का द्वेषी, माता-पिता का विरोधी, हरेक से इधर उधर की बातें करके परस्पर विरोध कराने वाला, चौर्य-कर्म में निरत, व्यभिचारी और सदा क्रोधी होता है। उसे आजीवन राज्य दण्ड का भय लगा रहता है, यहां तक कि वारण्ट के भय से उसे वर्षों तक अज्ञातवास भी करना पड़ता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने जीवन काल में कभी भी कोई

स्थिर व्यापार व्यवसाय नहीं कर पाता, सदैव छल कपट से ही उसकी जीविका चलती है। ऐसे व्यक्ति को सन्तान सुख अत्यल्प होता है।

दैवयोग से उक्त रेखा टेढ़ी न होकर सीधी हो किन्तु सर्पाकार अवश्य हो तो वह चौर्य कर्म नहीं करता, माता-पिता का प्रेमी होता है और देवताओं तथा पितरों में श्रद्धा रखता है किन्तु उसके सर्पाकार होने से व्यभिचारी, छली, धूर्त, कपटी, विश्वासघाती तथा अतिशय क्रोधी अवश्य होता है। उसकी स्त्री रोगिणी और कृशकाय होती है। वह नपुंसक पुत्र उत्पन्न करके प्रायः मर जाती है।
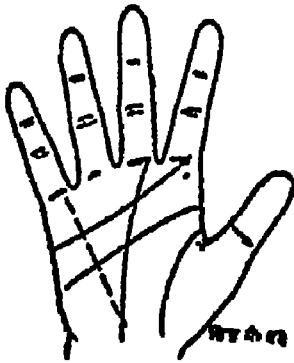
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्भूत एक असंलग्न (क्षत-विक्षत) रेखा बीच-बीच में लुप्त होकर कहीं कहीं स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ५२ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अपव्ययी, रोगी, शोक-संतप्त, मानसिक तथा शारीरिक व्यथाओं से युक्त, सम्मानजनक कार्यों को नष्ट करने वाला, कुत्सितभोजी, व्यसनी, अविचारी, अनाचारी, दुष्ट, मूर्ख तथा नीच होता है। इसको यात्रा में अनेक प्रकार की असुविधायें प्राप्त होती हैं। दैवयोग से इसका शनी-क्षेत्र उन्नत हो तो निश्चय ही उसके दांत समय से पूर्व ही गिर जाते हैं अथवा

उसे पायरिया प्रभृति दन्त रोग उत्पन्न हो जाते हैं तथा इस रोग से इसकी मृत्यु भी हो जाती है।

सौभाग्यवश उपरोक्त रेखा असंलग्न न होकर शुद्ध सुस्पष्ट तथा बारीक हो तो वह अनेकानेक वाहनों का सुख देने वाली तथा भोजन,वस्त्र और आभूषणों से परिपूर्ण करने वाली होती है। इस प्रकार की रखा मांगलीक कार्यो के सम्पादन में अधिक सहायक होती है। इसके प्रभाव से वह व्यक्ति यज्ञादि शुभ कार्यों की ओर अधिक प्रवृत रहता है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिये कि जब यह रेखा बुध क्षेत्र से नीचे की ओर आ रही हो तो मस्तक-रेखा (Line of Head) द्वारा कटनी नहीं चाहिये, वरन् मस्तक-रेखा (*Line of Head*) इसके मार्ग में आने से पूर्व रुक जानी चाहिए। इस प्रकार का शुद्ध योग उपस्थित होने पर ही यह शुभ फल प्राप्त होता है। इसके विपरीत यह रेखा मस्तक रेखा को काट कर नीचे की ओर आती है तो वह व्यक्ति चिकित्सक बन कितने ही प्राणियों को मृत्यु का आखेट बना देता है। यह व्यक्ति यश का भागी नहीं होता।

दैवयोग से यह रेखा छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा विभक्त होती हो अथवा काटी जाती हो तो वह व्यक्ति उदर, कमर तथा शिर के रोग से पीड़ित रहता है। उसे सदैव वायु सम्बन्धी रोग हुआ करते हैं। बिना किसी रेचक औषधि अथवा वस्ति कर्म के उसे विरेचन नहीं होता। वह व्यसनी होकर आजीवन संतप्त रहता है।

यदि उक्त असंलग्न रेखाओं द्वारा बुध रेखा मस्तक रेखा पर ही रुक जाय तो उस व्यक्ति के सिर में खाज, व्रणादि रोग होते हैं।

यदि उक्त बुध रेखा भाग्य रेखा (Line of Fate) पर रुके तो वह व्यक्ति जिस कार्य को आरम्भ करता है, उसे पूरा न करके दूसरे को आरम्भ कर देता है। इसी प्रकार वह किसी भी कार्य का पूरा नहीं करता। जिस व्यक्ति के हाथ में छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा यह रेखा बनी हो वह स्वभाव से ही क्रोधी होता है। वह परिजन बन्धु-बान्धव द्वारा परित्यक्त होकर उनका विरोधी भी होता है।

यह बुध-रेखा असंलग्न रेखाओं द्वारा न बन कर एक सरल शुद्ध रेखा के रूप में भाग्य-रेखा (Linh of Fate) का स्पर्श करे और इसका रंग गुलाबी हो तो वह व्यक्ति दीर्घजीवी,सुस्वस्थ, सदा व्यायाम और आमोद-प्रमोद-प्रिय, अपने पराक्रम द्वारा शत्रु-विजयी और सौभाग्यशाली होता है। प्रायः यह भी देखा गया है कि ऐसी रेखा वाले व्यक्ति को लाटरी, सट्टा एवं भूमि से या पिता की मृत्यु के पश्चात बैंक से अकस्मात धन प्राप्त होता है। इस धन प्राप्ति का वर्ष निकालने के लिये तथोक्त (भाग्य-रेखा को स्पर्श करने वाली) बुध रेखा को माप—उससे प्राप्त वर्षों में से, भाग्य रेखा को भी माप कर प्राप्त वर्षों को घटा दे। इसी प्रकार यदि बुध रेखा आयु रेखा (Line of Life) का भी स्पर्श करे तो उक्त रीति से जो वर्ष प्राप्त हो उसी वर्ष वह निश्चय ही इस असार संसार का त्याग करके परलोक गमन करेगा।

असंलग्न रेखाओं वाली बुध-रेखा का उच्च-ग्रहों के साथ फल

जिस व्यक्ति के हाथ में शनी क्षेत्र उच्च हो और छोटी-छोटी असंलग्न रेखाओं द्वारा बुध-रेखा बनी हो तो वह यह सूचित करती है कि इस लक्षण वाला व्यक्ति पायरिया अथवा मुंह में दुर्गन्ध उत्पन्न करने वाले अन्यान्य रोगों से ग्रस्त होकर शीघ्र ही दाँतों को निकलवा देगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में वृहस्पति क्षेत्र उच्च हो और छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा बुध-रेखा बनी हो तो वह यह सूचित करती है कि इस लक्षण वाला व्यक्ति भयानक सिर रोग से पीड़ित होगा, जिसके फल-स्वरूप उसके सिर की शस्त्र चिकित्सा (आप्रेशन) होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा असंलग्न छोटी २ रेखाओं द्वारा बनी हो और मंगल-क्षेत्र उच्च हो तो वह यह सूचित करती है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति पर गुप्तेन्द्रिय सम्बन्धी भयानक रोगों का आक्रमण होगा और उनसे मुक्ति प्राप्त करने के हेतु उसकी शल्य-क्रिया होगी।

जिस व्यक्ति का बुध-क्षेत्र उच्च हो और बुध रेखा छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा बनी हो तो वह यह सूचित करती है कि इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने जीवन में व्यापार-व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों में सर्वथा असफल होगा।

जिस व्यक्ति का शुक्र-क्षेत्र उच्च हो और बुध-रेखा छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा बनी हो तो वह यह सूचित करती है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति के पैर में कोई भयंकर रोग होगा अथवा किसी भीषण दुर्घटना में इसके पैर में घातक आघात लगेगा। जिसके फल स्वरूप इसके पैर की शस्त्र-चिकित्सा (आप्रेशन) होगी।

जिस व्यक्ति का सूर्य-क्षेत्र उच्च हो और बुध रेखा छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा बनी हो तो वह यह सूचित करती है कि इस व्यक्ति को भयानक कण्ठ रोग होगा और उससे मुक्ति पाने के लिये इसे शस्त्र चिकित्सा (आप्रेशन) का आश्रय लेना पड़ेगा।

जिस व्यक्ति का चन्द्र क्षेत्र उच्च हो और बुध रेखा छोटी-छोटी असंलग्न रेखाओं द्वारा बनी हो तो वह यह सूचित करता है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति नेत्रों के रोग से मुक्ति प्राप्त करने के हेतु शस्त्र-चिकित्सा (आप्रेशन) का आश्रय ग्रहण करना अनिवार्य होगा।

इस प्रकार ध्यान पूर्वक देखा जाय तो स्पष्ट हो जायेगा कि बुध रेखा का असंलग्न रेखाओं द्वारा बनना प्रत्येक दशा में हानिकर है। प्रायः प्रत्येक उच्च ग्रह क्षेत्र के साथ शरीर के किसी न किसी भाग का आप्रेशन होना अनिवार्य है। इससे अधिक अशुभ और क्या होगा। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि उपरोक्त रोगकारक तथा शस्त्र-चिकित्सा का कुफल उसी दशा में प्राप्त होगा जबकि कोई न कोई ग्रह क्षेत्र उच्च हो और बुध-रेखा प्रत्येक दशा में छोटी २ असंलग्न रेखाओं द्वारा बनी हो।
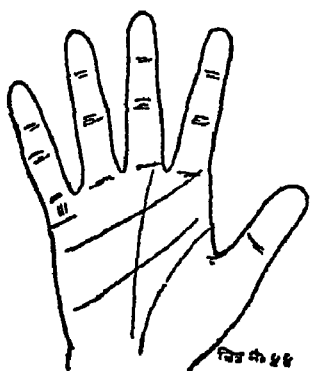
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर, किन्तु विवाह-रेखा (Line of Marriage) अथवा स्त्री-रेखा के ऊपर तीन सरल शुद्ध, सुस्पष्ट, स्वस्थ, गम्भीर तथा छोटी खड़ी रेखायें हों और उनको कोई अन्य रेखा अथवा रेखायें काटती न हों तथा वे बुधांगुली अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल का स्पर्श कर रहीं हों—इसके साथ ही विवाह-रेखा किंवा स्त्री-रेखा भी सरल, शुद्ध, सुस्पष्ट, स्वस्थ तथा गम्भीर हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ५४ में अंकित है) तो वह व्यक्ति सुरति-सम्पन्न, पौरुष-युक्त, सदाचारी, रति-क्रीड़ा-कुशल, सुन्दर तथा लावण्यवान होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को गुणवान, शीलवान, प्रतिभा-सम्पन्न, विद्वान, सदाचारी, बुद्धिमान, विचारशील, मेधावी, दृढ़ निश्चयी, मातृ-पितृ-भक्त, दूरदर्शी, प्रतापशाली, सम्मानित, उदार, यशस्वी, परोपकारी, ईश्वर-भक्त, धर्माचारी, धन-धान्य-सम्पन्न तथा पदाधिकारी पुत्र प्राप्त होते हैं।

दुर्भाग्यवश यदि उपरोक्त तीन रेखाओं में से कोई एक रेखा भी सर्प-गति-दृश्य-लहरदार हुई और उन पर दाग, चिह्न हुआ अथवा वे स्वयं छिन्न-भिन्न हुईं तो वह व्यक्ति चौर्य-कर्म में दत्त-चित्त, झूठा और कामातुर होता है। उसे अपनी शक्ति का अतिशय गर्व होता है। दैवयोग से ये छिन्न-भिन्न रेखा यदि

विवाह-रेखा (Line of Marriage) किंवा स्त्री-रेखा को स्पर्श करती हों तो उसे निश्चय ही जन्मान्ध पुत्र प्राप्त है। यदि किसी कारण वश वह पुत्र जन्मान्ध न हुआ तो इस योग के प्रभाव से उसके नेत्र चेचक मे अवश्य-मेव नष्ट हो जायेंगे। इस सम्बन्ध में यहां तक अनुभव किया जा चुका है कि यदि विवाह-रेखा (Line of Marriage) किंवा स्त्री-रेखा पर, जिस स्थान पर उपरोक्त सर्प-गति-सदृश्य रेखा स्पर्श कर रही हो, वहां ही दाग-चिन्ह हो तो उसकी पत्नी निश्चित-रूप से कर्महीन तथा बलहीन पुत्र उत्पन्न करके परलोक गमन करती है। साथ ही वह पुत्र भी कुछ वर्ष पश्चात्—दुःख और मानहानि प्राप्त करके—इहलोक त्याग पशु योनि में जाता है। शास्त्रकारों ने तो इस योग के सम्बन्ध में यहां तक लिखा है उसकी पत्नी दूसरे जन्म में पुनः स्त्री-योनि में आकर पशु-योनि प्राप्त अपने पुत्र का उद्धार करती है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इस योग का उपरोक्त महा अशुभ फल उसी दशा में प्राप्त होता है जब कि यह दक्षिण और वाम दोनों ही हाथों में उपस्थित हो। यदि यह योग केवल दक्षिण-हस्त मे ही दृष्टि-गोचर होता है तो उपरोक्त अशुभ फल में अपेक्षाकृत न्यूनता अवश्य ही आ जायगी।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्‌भूत दो शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत, स्वस्थ, गम्भीर तथा समानान्तर आड़ी रेखा में सूर्य-क्षेत्र पर अनामिका अंगुली के मूल तक जाती हों (जैसा कि अगले वाले चित्र संख्या ५५ में अंकित है) तो वह व्यक्ति महाज्ञानी, अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न, आध्यात्मिक, विचारशील, विद्वान, क्रियाशील,

व्यवहार कुशल, प्रतापी तथा नीति निपुण होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को अनेक प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं, किन्तु

चित्र नं० ५५
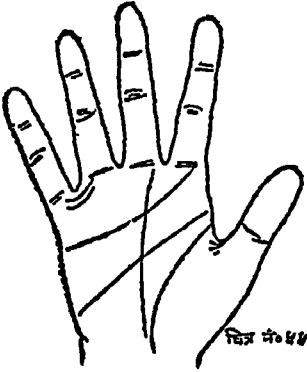
वह सदैव गुप्त रहता है। ऐसे व्यक्ति जन-साधारण के सम्पर्क में प्रायः बहुत ही कम आते हैं। उनका अधिकांश समय तपोवनों गुहाओं, कन्दराओं तथा वन-विहार में ही व्यतीत होता है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि बुध-क्षेत्र से उद्‌भूत उक्त दोनों रेखायें बुध-क्षेत्र के मध्य भाग से न निकलती हों। उपरोक्त शुभ योग तब ही प्राप्त होता है जब ये रेखायें बुध-क्षेत्र पर कनिष्ठका अंगुली के मूल-स्थान से उद्‌भूत हों। यदि ये रेखायें गहरी और मोटी होंगी तो उनके प्रभाव से कमर में आघात पहुंचता है। अतः ये रेखायें जितनी बारीक और लम्बी होंगी उतनी ही अधिक शुभ-फल-दायक होंगी। बारीक होने से यह अर्थ नहीं है कि दृष्टिगोचर ही कठिनता से हों, किन्तु बारीक होने से हमारा तात्पर्य केवल यही है कि बारीक, किन्तु शुद्ध और सुस्पष्ट हों। दूसरी बात जो हमने लिखी है वह इनके लम्बी होने की। सो ये रेखायें लम्बी उसी दशा में हो सकती हैं जब कि अनामिका अंगुली और कनिष्ठका अंगुली के मूल-स्थानों में पर्याप्त अन्तर हो। इस अन्तर की वास्तविकता तब ही ज्ञात होगी जब कि हाथ को स्वभाविक रूप में अंगुलियां फैलाकर खोल दिया जाय।

अतः इस सम्बन्ध मे हस्त-परीक्षक को पूर्ण-रूपेण अपने आपको सन्तुष्ट करके ही फलादेश घोषित करना चाहिये।

यहां यह विशेषरूप से ज्ञातव्य है कि अनामिका और कनिष्ठका अंगुलियों के मूल-स्थानों मे जो अन्तर-स्थल है, वह यदि पर्याप्त चौड़ा हो तो उस पर चाहे कोई रेखा अथवा चिह्न न हों तो भी वह पुरुष, जिसके हाथ मे यह अन्तर-स्थल पर्याप्त चौड़ा अथवा विस्तृत होगा, सदाचारी, गुणवान, और नीतिज्ञ होता है। वह अपने वयोवृद्धों और गुरुजनों का स्नेह भाजन और आज्ञाकारी होता है। दैवयोग से इस अन्तर-स्थल पर चतु-ष्कोण, त्रिकोण अथवा गुणक चिन्ह हो तो उसका अपने परिवार वालों—बन्धु-बान्धवों पर अच्छा प्रभाव होता है वह अपने माता पिता का अतिप्रिय होकर उनके सुखमय जीवन के लिये घोर परिश्रम करता है, यहां तक कि इस प्रयत्न में वह अपने स्वास्थ्य को भी नष्ट-प्रायः कर देता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति सतत उद्योगशील और कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार आदि होते हैं।
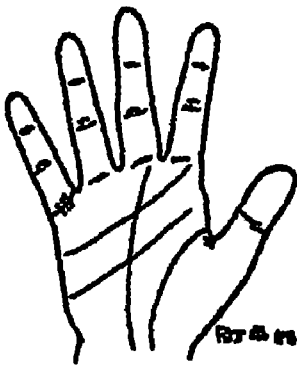
जिस व्यक्ति के हाथ में कनिष्ठका अंगुली के मूल में स्थित पर्व-मूल की आड़ी रेखा अथवा रेखाओं को बुध क्षेत्र से उद्भूत तीन छोटी, शुद्ध, सुस्पष्ट तथा सरल रेखायें काटती हों

(जैसा कि चित्र संख्या ५६ में अंकित हैं) तो वह व्यक्ति गुणवान होकर भी म्लेच्छों से प्रीति करने वाला होता है। यह व्यसनी और अभक्ष्याभक्षी अर्थात् मदिरा-मांस आदि का सेवन करता है। दैवयोग से ये रेखायें तीन के स्थान पर चार हों तो वह व्यक्ति सम्मान, प्रतिष्ठा और यश प्राप्त करता है। किन्तु दुर्भाग्यवश ये रेखायें केवल दो हों तो वह महान् लम्पट और धूर्त होता है। इन सबके विपरीत यदि उक्त प्रकार की केवल एक ही रेखा हो तो वह व्यक्ति मृदुभाषी, प्रसन्नचित्त, शीलवान, परोपकारी, दयालु और दैवज्ञ होता है। इस अकेली रेखा का टेढ़ा और मोटा होना भी शुभप्रद होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को व्यापार-व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों में कुशलता और ख्याति प्राप्त होती है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि उपरोक्त योग में कथित चार-रेखायें यदि चारों ही टेढ़ी या एक साथ मिलकर मोटी हों (यह केवल अणु-वीक्षण-यन्त्र द्वारा ही दृष्टिगोचर हो सकता है) तो वह व्यक्ति महा भयानक अनेक दुर्घटनाओं का सामना करता है। किन्तु ये दुर्घटनायें उसकी आयु में आरम्भकाल में ही घटित होती हैं। इनकी अवधि पच्चीस वर्ष की आयु तक ही सीमित है। इसके पश्चात् उसे किसी भी प्रकार की दुर्घटना का (जो इस योग के प्रभाव से घटित हो) भय नहीं रहता। इनका स्वरूप ऊंचे से गिरना, जल में डूबना, शस्त्राघात आदि हैं। अतः पच्चीस वर्ष की आयु तक इसे सावधान रहना चाहिये।
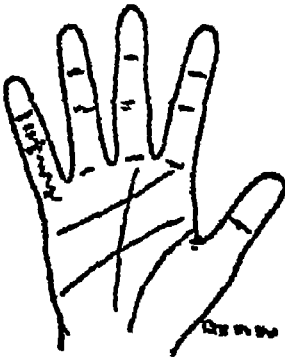
जिस व्यक्ति के हाथ मे बुध-क्षेत्र से उद्भूत एक सर्प-गति सदृश्य रेखा कनिष्ठका अंगुली के द्वितीय पर्व पर स्थित तीन आडी रेखाओं से मिले (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ५७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति आजन्म स्त्री-पुत्रादि के सुख से सर्वथा वंचित रहता है। वह पर-नारी के सहवास से ही अपने वैषयिक और सांसारिक सुख भोगता है। सहिष्णुता अथवा दया का भाव उसमें लेश-मात्र को भी नहीं होता। अपनी वृद्धा-वस्था के आरम्भ में उसे पर-नारी-संग तथा अन्यान्य स्वअर्जित पापों का ज्ञान होता है तथा उनसे हार्दिक-घृणा भी हो जाती है। फलतः वह अपने सभी पापो का प्रायश्चित करता है तथा प्राय-श्चित स्वरूप अपना शेष जीवन तीर्थ-यात्रा, भजन-पूजन, यज्ञ-दान आदि में ही व्यतीत करता है। इस लक्षणवाले व्यक्ति का देहाव-सान भी किसी उत्तम तीर्थ-स्थान अथवा पुण्य-भूमि मेंही होता है।
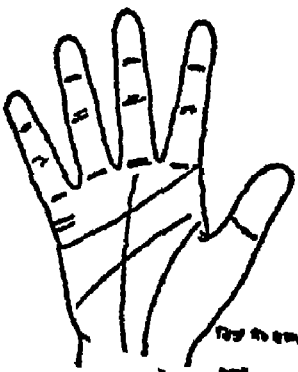
पुरुष के हाथ में करतल के बाहर से बुध-क्षेत्र पर आने वाली आड़ी रेखायें स्त्री-सूचक तथा ये ही रेखायें स्त्री के हाथ में पुरुष-सूचक होती हैं। इन रेखाओं को विवाह-रेखा (Line

of Marriage) कहते हैं। पुरुष के हाथ में इनको स्त्री-रेखा किंवा पत्नी-रेखा भी कहते हैं और स्त्री के हाथ में इनको पुरुष रेखा किंवा पति-रेखा भी कहते हैं। (देखो चित्र संख्या ५८)

जिस पुरुष की स्त्री रेखा किंवा विवाह रेखा (Linh of Marriage) छोटी हो (अर्थात् करतल के खुले रहने पर अस्पष्ट दृष्टिगोचर हो फलतः–उसे देखने के लिये मुट्ठी बन्द करने की आवश्यकता हो) और उसका बुध-क्षेत्र-स्थ छोर कनिष्ठा अंगुली की ओर मुड़ा हुआ हो (अर्थात् वह उर्ध्व मुखी हो) इन दोनों अवगुणों के साथ साथ उस पर दाग-चिह्न अथवा छिद्र दृष्टिगोचर होता हो, तो उस पुरुष का आजीवन विवाह संस्कार नहीं होता। वह पर-स्त्री गामी होकर ही अपनी कामाग्नि को शान्त करता है। किन्तु पर स्त्री-गमन में भी काम-वासना की अपेक्षा उसकी धन की लालसा ही विशेष प्रेरक तथा बलवान होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति वास्तव में धन के लोभ से ही किसी स्त्री को अपने प्रेम-जाल में फंसाता है और जब वह स्त्री इस पर पूर्ण विश्वास कर लेती है तथा अपना सर्वस्व समर्पण करके उसके हाथ की कठपुतली बन जाती है तो वह अपनी उस प्रेयसी के साथ विश्वासघात करके छल-कपट तथा प्रपञ्च से उसका धन हथिया लेता है। फिर इस धन के द्वारा वह यशार्जन भी करता है। किन्तु वह आजीवन मानसिक चिन्ताओं से व्यथित किंवा दुःखी रहता है।
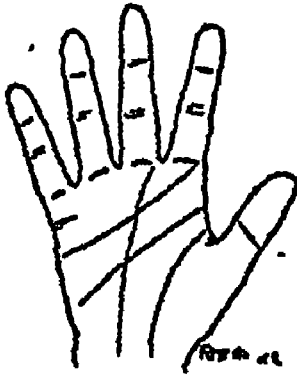
जिस व्यक्तिके हाथमें स्त्री रेखा किंवा विवाह रेखा (Line of Marriage) उद्गम-स्थान पर द्विभुज हो और साथ ही छोटी भी हो (जैसा कि साथवाले चित्र संख्या ५६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति कुशाग्र-बुद्धि, उदारमना, साहसी, आत्म-सम्मानी, विचारशील, बुद्धिमान, व्यवहार कुशल तथा नीतिज्ञ होता है। किन्तु इन गुणों के साथ-साथ वह निर्दयी, ममत्व हीन, कठोर, क्रोधी तथा सनकी भी होता है। वह वात-पित्त के प्रकोप से पीड़ित होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के सिर में आघात लगने की अत्यधिक सम्भाव रहती है। इस व्यक्ति को बाल्यावस्था में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसका विवाह-संस्कार बाल्या-वस्था मे ही हो जाता है, किन्तु उसकी युवावस्था मे जो स्त्री उसकी सह धर्मिणी होकर उसके साथ गृहस्थी चलाती है उसके सम्बन्ध में रहस्यमय गुप्त भेद छिपा रहता है, जिसका उसे स्वयं ज्ञान नहीं होता; किन्तु जब भी यह रहस्य उसके सामने स्पष्ट होता है(जिसका स्पष्ट होना नितान्त अनिवार्य भी है) तब ही वह उस सह धर्मिणी का त्याग कर देता है। क्योंकि अपने साथ हुये विश्वासघात (और वह भी सामाजिक बन्धन के रूप में आ-जीवन के लिये) का भण्डाफोड़ होने पर उसे उस सम्बन्ध में हार्दिक ग्लानि हो जाती है। जिसका प्रतिशोध वह उस स्त्री को

त्याग कर लेता है। युवावस्था की सह-धार्मिणी के इस गुप्त रहस्य की पृष्ठ-भूमि वास्तव में पाणि-ग्रहण संस्कार होने से अज्ञानवश वह अपनी सह धार्मिणी को उचित रूप से पहिचानता नहीं और उसकी इस अज्ञानता का उसके श्वसुराल वाले अनुचित लाभ उठाकर किसी अन्य स्त्री को (जो उसकी परिणीता के सम-वयस्क ही होती है) उसके साथ कर देते हैं। स्पष्ट है कि इस प्रकार का विश्वासघात कोई भी आत्माभिमानी पुरुष नहीं सह सकता। किन्तु सामाजिक बन्धन के कारण वह अन्य किसी मार्ग का अवलम्बन करता है तो उसकी निन्दा का भय रहता है। अतः वह उस स्त्री का त्याग करके ही अपने प्रतिशोध पर सन्तोष कर लेता है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेकानेक प्रकार की गुप्त, रहस्यमय तथा घृणित चालें भी इस लक्षण वाले व्यक्ति की युवावस्था वाली सह-धर्मिणी में निहित होती हैं, जिसके फल स्वरूप उसका जीवन दुःखमय हो जाता है और उससे मुक्त होने के लिए उसे उस स्त्री का त्याग करना अनिवार्य हो जाता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में स्त्री-रेखा किंवा विवाह-रेखा (Line of Marriage) उद्गम-स्थान पर द्विभुज होकर सम्पूर्ण बुध-क्षेत्र को पार करके सूर्य-क्षेत्र पर जाती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६० में अंकित है) तो वह व्यक्ति अपने जीवन के

आरम्भ काल में ऐसे काम करेगा जिनमे उसे ख्याति और प्रतिष्ठा का लाभ होगा। यह व्यक्ति विद्याध्ययन के निमित्त अपने पाणि-ग्रहण संस्कार को टालता रहेगा। इस लक्षण वाले व्यक्ति का विवाह उसकी आयु के सत्ताइसवें वर्ष में या इसी के लगभग अवस्था में होता है। विवाह से पूर्व यह व्यक्ति अनेक विद्याओं में पारंगत हो जाता है। इसकी प्रकृति उदार और दयाशील होती है।

चित्र संख्या ६० वाले व्यक्ति के हाथ में दैवयोग से यदि बुध-क्षेत्र उच्च और सूर्य-क्षेत्र निम्न हुआ तो वह अपने अध्ययन काल के उत्तरार्द्ध (अर्थात् वर्तमान-युग में कालेज जीवन) में अवश्यमेव किसी नवयौवना समवयस्य कुमारी के प्रेम-पाश में आबद्ध होगा और अन्त में उसे अपनी अर्धांगिनी बना लेगा। कदाचित उसका कालेज जीवन नहीं हुआ तो पास-पड़ोस टोले-मोहल्ले आदि की किसी नवयौवना मृगनयनी कुमारी के कटाक्षों का आखेट बनकर उसे ही अपनी परिणीता जीवन सहचरी बना लेगा।

यदि किसी व्यक्ति के हाथ में विवाह-रेखा (Line of Marriage) बीच में से कट गई हो अथवा हृदय-रेखा (Line of Heart) पर झुकती हो तो वह उसके जीवन साथी की पूर्व मृत्यु की सूचक है। अर्थात् यदि पुरुष के हाथ में विवाह रेखा बीच में से कटी हो अथवा हृदय-रेखा पर झुक रही हो तो उससे पूर्व उसकी पत्नी का देहावसान होगा और यदि किसी स्त्री के

हाथ में यह लक्षण हो तो उसके पति का उससे पूर्व देहावसान होगा। अधिक स्पष्ट करने के लिये इसे विधुर अथवा विधवा होने का लक्षण समझना चाहिये।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि विवाह-रेखा पर आड़ी, टेढ़ी रेखायें अथवा अशुभ चिन्ह पति-पत्नी के प्रेम-मय जीवन में बाधा अथवा उनके विचारों में विरोध अथवा परस्पर शंका अथवा मनोमालिन्य की सूचना देते हैं। अतः पूर्ण रूपेण शुभ फल प्राप्त करने के हेतु इस रेखा का पूर्ण स्वतन्त्र, शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत, सरल, सीधा, स्वस्थ, गम्भीर तथा चिकना, गुलाबी और कम चौडा होना अनिवार्य है। इस प्रकार का न होना अथवा अन्यान्य रेखाओं से सम्बद्ध होना उसके शुभ फल में न्यूनता अथवा परिस्थिति अनुसार वैपरीत्य का सूचक है।
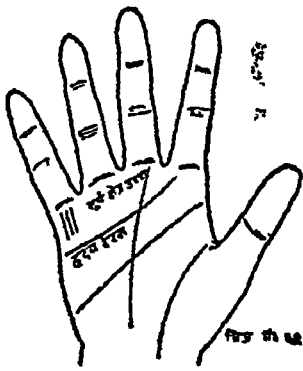
जिस व्यक्ति के बुध क्षेत्र को तीन सीधी, सुस्पष्ट, सरल, शुद्ध गम्भीर तथा खड़ी रेखायें समानान्तर होकर घेर रही हों और साथ ही सूर्य-क्षेत्र उच्च हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६१ में अंकित है) तो वह व्यक्ति पराक्रमी, शक्तिशाली, प्रियभाषी, स्वच्छ-चित्त, धन-धान्य सम्पन्न, ऐश्वर्य-वैभवशाली भृत्य-वाहन युक्त, तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पन्न, प्रतापी एवं नैतिक-साहस युक्त होता है। इस व्यक्ति के सहोदर भाई कम होते हैं। वह

धनवान होकर सुखी जीवन व्यतीत करता है व्यापार-व्यवसाय में उसे अतुल धन प्राप्त होता है। उसे अपने साथ भद्रों को आश्रय देना पड़ता है।

सौभाग्यवश ये रेखायें कनिष्ठका अंगुली के मूल को स्पर्श करती हों तो उपरोक्त शुभफल में विशेष वृद्धि करती हैं, किन्तु यदि मूल-स्थान को काटती हों और काट कर पार करती हों तो अवश्य ही उपरोक्त शुभफल मे न्यूनता आ जायगी। इसके साथ ही इन रखाओं को हृदय-रेखा के निकट तो अवश्य पहुंचना चाहिये, किन्तु हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श नहीं करना चाहिये। कदाचित् ये हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करती हों तो वह व्यक्ति अल्प सन्तान वाला, उद्भ्रान्त-चित्त तथा अति आलसी होता है, किन्तु फिर भी वह श्रेष्ठ कार्यों के सम्पादन में संलग्न रहता है। इसे वायु रोगों तथा शासन-सत्ता का भय बना रहता है।

इसके विपरीत यदि ये रेखायें कनिष्ठका अंगुली के मूल को स्पर्श न करें किन्तु हृदय-रेखा (Line of Heart) को पार करके मंगल-ग्रह के प्रथम क्षेत्र के दशांश पर जाकर रुक जायं (आगे न बढ़ें) तो फल शुभ होकर अति उत्तम होता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि हृदय-रेखा (Line of Heart) को पार करने में ये रेखायें मंगल के प्रथम क्षेत्र दशांश तक जाकर ही अवश्यमेव रुक जानी चाहिए,तब ही फलशुभ होकर उत्तम होगा इसके विपरीत यदि ये रेखायें हृदय-रेखा (Line of Heart)

को पार करके मंगल के प्रथम क्षेत्र के दशांश से आगे न बढ़ गईं तो वह रुधिर-विकार की सूचक हो जायेंगी। फलतः वह व्यक्ति रुधिर-विकार से पीड़ित रहेगा और उसे आजीवन मानसिक चिन्ताओं का आखेट रहना पड़ेगा।

दैवयोग से यदि ये तीनों रेखायें एक ओर तो कनिष्ठका अंगुली के मूल को स्पर्श करती हों और दूसरी ओर मंगल के प्रथम क्षेत्र के दशांश तक पहुंचती हों तो वह अशुभ सूचक होंगी। इस लक्षण के प्रभाव से उस व्यक्ति को स्त्री के कारण अथवा उसके द्वारा किसी षडयन्त्र के द्वारा अथवा किसी भयंकर रोग के दुष्परिणाम स्वरूप अकाल-मृत्यु की सम्भावना रहती है। किन्तु कदाचित् ये रेखाये एक ओर कनिष्ठका अंगुली के मूल-स्थान को पार करके कनिष्ठका अंगुली के अधोपर्व तक पहुंचती हों और दूसरी ओर हृदय-रेखा को पार करके मंगल के प्रथम-क्षेत्र के दशांश तक पहुंचती हों तो उसका फल शुभ हो जाता है। इस लक्षण के उपस्थित होने पर उसे उपरोक्त भयंकर रोग अथवा स्त्री द्वारा अथवा स्त्री के कारण मृत्यु की सम्भावना नहीं रहती। इसके विपरीत पति-परायणा स्त्री, स्वामि-भक्त भृत्य तथा वाहन आदि का सुख प्राप्त होता है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि उपरोक्त रेखायें टेढ़ी अथवा सर्प-गति-सदृश्य (लहरदार) होंगी तो वह व्यक्ति अधार्मिक, लम्पट, धूर्त, विश्वासघाती, कपटी तथा छली होगा। हां, उपरोक्त गुण-दोष भी उसमें अवश्य विद्यमान होंगे।
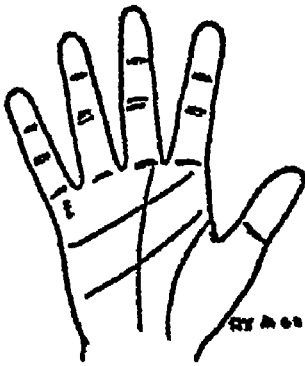
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर एक छोटी एवं मोटी रेखा हो (जैसा की साथ वाले चित्र संख्या ६२ मे अंकित है) तो वह व्यक्ति प्रभावशाली, चंचल-प्रकृति, अनर्गल-विवाद-कारी, आत्मीयजनों से घृणा करने वाला, संग्राम में निश्चल, पितृ धन का अपव्यय करने वाला तथा भ्रमण शील होता है।

कदाचित् यह रेखा किसी स्त्री के हाथ में हो तो वह प्रथम सन्तान पुत्र को उत्पन्न कर प्रसूत-रोग का आखेट हो जाती है, किन्तु इस पर भी वह द्वितीय सन्तान को जन्म देकर ही मृत्यु प्राप्त करती है। इस लक्षण वाली स्त्री की सन्तान भी जीवित नहीं रहती और पति भी रोग-ग्रस्त ही रहता है। पति-पत्नी दोनों की मृत्यु मे केवल तीन चार वर्ष के लगभग समय का अन्तर पड़ता है, किन्तु यह अनिवार्य है कि पहले स्त्री की ही मृत्यु होगी। पति की पत्नी के पश्चात् ही मृत्यु होगी।
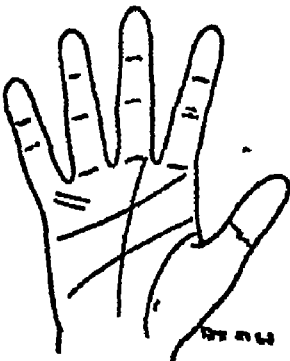
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध क्षेत्र पर कनिष्ठका अंगुली के मूल-स्थान से उद्भूत दो तिरछी रेखायें सूर्य-क्षेत्र पर पहुचती हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६३ में अंकित है) उस

पुरुष को धर्म-पत्नी-वियोग से दुःखी होना पड़ता है। यह व्यक्ति यद्यपि नीति-निपुण और विद्वान होता है तथापि चौर्य कर्म में भी प्रवृत होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति तो अवश्य करते हैं, किंतु बड़ी चोरी ही (अपनी हैसियत के अनुसार) करते हैं। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति राजा का मन्त्री भी होता है। उसके अधिकार हस्ताक्षर करने तक ही सीमित नहीं होते, वरन् वह दण्ड भी दे सकता है। अपने पद के उसे प्रायः सभी अधिकार सर्वांश में प्राप्त रहते हैं और वह अपने कार्यकाल में उन सब अधिकारों का आवश्यकतानुसार पूर्ण उपयोग करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में उपरोक्त तिरछी रेखायें सर्प-गति-सदृश्य (लहरदार) अथवा छिन्न भिन्न हुईं तो वह आजीवन घोर चिन्ता में ग्रस्त रहता है तथा उसे विरक्ति हो जाती है। यह लक्षण पिता के लिये नेष्ट है।

कदाचित ये रेखायें शुद्ध, सुस्पष्ट, सरल, स्वस्थ और गम्भीर तथा सीधी होकर सूर्य-क्षेत्र के अन्त तक पहुंचें तो इनके प्रभाव से वह व्यक्ति कार्यारूढ़, श्रेष्ठ-बुद्धि, राज्यानुगृहीत, साधुजनों से प्रीत रखने वाला, धनोपार्जन में चतुर, अतिसाहसी, पराक्रमी, संगीत (नृत्य-वाद्य-गान) शास्त्र में पूर्ण-ज्ञाता तथा स्वार्जित धन को धार्मिक कृत्यों में व्यय करने वाला होता है। यह व्यक्ति धन-धान्य सम्पन्न, ऐश्वर्य-वैभवशाली, भृत्य-वाहन-युक्त, विद्वान, नीति-निपुण, दूरदर्शी, मेधावी, विचारशील, प्रतिभा-सम्पन्न, प्रलापवान उदार, दानी, देवार्चन, धार्मिक तथा धर्मार्थ-स्थलों के निर्माण, यज्ञ आदि में ही व्यय होता है।

उपरोक्त रेखायें यदि शुद्ध, सुस्पष्ट, सरल, स्वस्थ, गम्भीर, समानान्तर तथा सीधी होकर सूर्य-क्षेत्र के ठीक नीचे हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करें तो अत्यन्त शुभ फलदायक होती हैं। इसके विपरीत यदि ये रेखायें सर्प-गति-सदृश्य अर्थात् लहरदार और समानान्तर होकर सूर्य-क्षेत्र के ठीक नीचे हृदय-रेखा को स्पर्श करें तो सारा गुड़ गोबर हो जाता है। इनके दुष्प्रभाव से उपरोक्त समस्त शुभफल पूर्ण रूपेण नष्ट हो जाते हैं। उस व्यक्ति के समस्त कार्य-क्षेत्र भ्रष्ट हो जाते हैं। उसे धर्म, सत्य, नीति, सदाचार, शिष्टाचार आदि का तो नाम तक नहीं सुहाता। वह परले सिरे का धूर्त, चालाक, दुष्ट और नीच प्रकृति का होता है। वह व्यसनी, आचार-विचार हीन, अभक्ष्याभक्षी, दुराचारी, अनाचारी, अत्याचारी, व्यभिचारी तथा लुच्चा होता है। वह अपने जीवन में असफल होकर निन्दा और तिरस्कार ही पाता है।
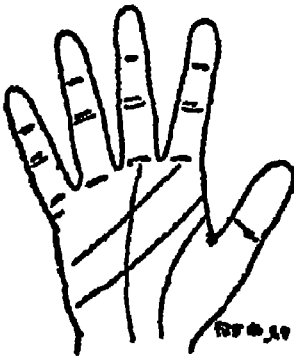
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर ऊर्ध्व भाग में एक सरल सुस्पष्ट, शुद्ध तथा छोटी-सी आड़ी रेखा हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६४ में अंकित है) तो वह व्यक्ति धर्म-कर्म में निरत श्रेष्ठ-बुद्धि, कन्याओं का पिता, मित्रों से सुखी, देवार्चन में संलग्न, धार्मिक, उत्कृष्ट-विषयी, खगोल-विद्या का पारदर्शी विद्वान,

विचारशील तथा बुद्धिमान होता है, किन्तु यह व्यक्ति मातृकुल का विरोधी होता है। वह उदार और अच्छी सूझ-बूझ से काम करने वाला तथा कृषी-विद्या में कुशल होता है। व्यापार-व्यसाय सम्बन्धी विषयों में वह पूर्णरूपेण अनभिज्ञ होता है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यह रेखा पूर्ण स्वतन्त्र ही हो। विवाह-रेखा (Line of Marriage) अथवा कनिष्ठका अंगुली के मूल स्थान से सम्बद्ध न हो। यदि इनमें से किसी भी एक से सम्बद्ध हुई तो इसके उपरोक्त शुभ में वैपरीत्य आ जायगा। हां, यदि यह रेखा पूर्ण स्वतन्त्र हो कनिष्ठका अंगुली के मूल-स्थान से कुछ नीचे बुध-क्षेत्र के उर्ध्व भाग पर हो तो सर्व श्रेष्ठ फल प्रदान करती है।

यदि यह रेखा विवाह-रेखा (Line of Marriage) और कनिष्ठका अंगुली के मूल स्थान के बिल्कुल मध्य भाग में हो तो वह व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय में अपनी निजी बुद्धि से धनोपार्जन करके परिवार को सुखी बनाता है। किन्तु यदि बुधक्षेत्र अत्युच्च हुआ तो दिवालीया होता है और उसकी प्रवृति चौर्य-कर्म में होती है। हां, यदि बुध-क्षेत्र अत्युच्च न होकर उच्च हुआ तो अवश्य ही शुभ-फल प्राप्त होता है।

उपरोक्त रेखा यदि बुध-क्षेत्र के अधोभाग में, किन्तु हृदय-रेखा (Line of Heart) के कुछ ऊपर तथा उसके समानान्तर हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन के पच्चीसवें वर्ष में उन्नति करता है, ऐसा यह सूचित करती है। इस आयु के उपरान्त वह व्यक्ति

अपने जीवन के अनेक महत्वपूर्ण स्थलों को अच्छी योग्यता के साथ पार करता है, उनमें आशातीत सफलता प्राप्त करता है तथा धन-धान्य और ऐश्वर्य-वैभव से सम्पन्न होता है। इसके जीवन में यद्यपि अनेकों बार विषम परिस्थितियां उत्पन्न होकर भयानक-स्थिति उत्पन्न कर देती हैं, किन्तु वह इनसे चिंतित होकर निरुत्साह या अकर्मण्य नहीं हो जाता, वरन् अपनी पूर्ण शक्ति और योग्यता से उनका सामना करता रहता है, तथा अन्ततः उन पर विजय प्राप्त कर सफल होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति सदैव निर्भीक होकर शासन-सत्ता को उत्तमोत्तम नवीन मार्ग प्रदर्शित करने के हेतु योग्य पद ग्रहण करते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यह रेखा हृदय रेखा (Line of Heart) के समान्तर तो अवश्य हो, किन्तु उसे स्पर्श न करे। साथ ही उससे बहुत ऊंची भी न हो। कदाचित् यह हृदय-रेखा को स्पर्श करेगी तो उपरोक्त शुभ-फल में वैपरीत्य आ जायगा। यदि यह रेखा चन्द्राकार हो जाय और उसके दोनों (मुड़े हुये) छोर हृदय रेखा को स्पर्श करें तो हृदय-रेखा पर स्पष्ट द्वीप (यव) चिह्न निर्मित हो जायगा। प्रायः देखा गया है कि बहुत से हस्त-परीक्षक अपने अल्प-ज्ञान तथा अनुभव हीनता के कारण इस द्वीप (यव) चिन्ह को ही उपरोक्त रेखा के अनुरूप शुभ-फल-प्रद घोषित कर उसका फल उपरोक्त प्रकार से बताते हैं, जो कि सर्वथा असम्भव है। परिणाम यह होता है कि इस प्रकार के विपरीत फलादेश जनता पर विपरीत प्रभाव डालते हैं

और इस वैज्ञानिक शास्त्र पर से जन-साधारण का विश्वास उठ जाता है। इस द्वीप (यव) चिह्न का सर्वथा विपरीत परिणाम होता है। (इसका विस्तृत वर्णन हृदय रेखा के फलादेश के अन्तर्गत देखिये।) अतः हस्त-परीक्षक अथवा जिज्ञासु पाठक को उचित है कि वह इस रेखा और यव (द्वीप) चिह्न का भेद अणु-वीक्षण यन्त्र द्वारा, इस लक्षण की गम्भीर परीक्षा करके, पूर्ण-निश्चित करले। हम डण्के की चोट घोषित करते हैं कि हस्तगत रेखाओं तथा अन्यान्य चिह्नों की स्थिति का वास्तविक ज्ञान हो जाने पर तत्सम्बन्धी फलादेश में बालभर अन्तर नहीं होगा।

चित्र नं० ६५
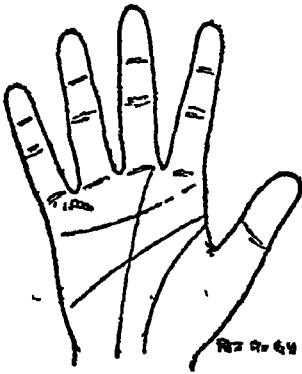
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्भूत एक शृंखलाकार टेढ़ी रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जा रही हो (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या ६५ में अंकित है) तो वह व्यक्ति चपल-स्वभाव, स्त्री के कष्टों अथवा स्त्री-वियोग से दुःखी, सन्तान पीड़ा से पीड़ित, व्यापार-व्यवसाय में हानि से चिंतित तथा अपने शारीरिक स्वास्थ्य की हानि से दुःखी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वभावतः ही चौर्य-कर्म में प्रवृत्त होता है। यह अत्यन्त दुष्ट और नीच कर्मों का करने वाला होता है।

दैवयोग से उपरोक्त लक्षण वाले व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र उच्च हो और हृदय-रेखा (Line of Heart) सुस्पष्ट, शुद्ध,

गम्भीर तथा स्वस्थ हो, तो उसके उपरोक्त स्वभाव में अन्तर आ जाता है। इनके प्रभाव से वह अपनी दुष्टता और नीच कर्मों से घृणा करने लगता है और उन्हें त्याग देता है। इसके अतिरिक्त उच्च बुध-क्षेत्र और शुद्ध हृदय-रेखा के प्रभाव से वह व्यक्ति अपने बिगड़ते हुये कार्यों को भी भली भांति सुधार लेता है। किन्तु इतना शुभ प्रभाव होने पर भी वह स्वयं शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से रुग्ण ही रहता है। अपने स्वास्थ्य की रक्षा के हेतु उसे अपना अधिकांश धन व्यय करना पड़ता है। हां, स्त्री सन्तान आदि की दृष्टि से उसका जीवन सुखमय ही होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र गत एक तिरछी रेखा को एक सरल और छोटी रेखा काटे (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति द्यूत-क्रीड़ा का व्यसनी होकर अपना समस्त धन नष्ट कर डालता है। वह सदैव राज्य-सत्ता से भयभीत रहता है। उसे अधिकांशतः प्रवास जीवन व्यतीत करना पड़ता है। उसे अपने जीवन-यापन के लिये नौकरी का ही आश्रय लेना पड़ता है। वह कहीं भी नौकरी करे, प्रायः सर्वत्र उसे आपत्तियों, बाधाओं, दुःखों, कष्टों और व्यथाओं का ही सामना करना पड़ता है, यहाँ तक कि क्रोधावेश के कारण उसे स्थान-च्युत भी होना पड़ता है। इसका स्वभाव, रहन-सहन,

आचार-विचार आदि प्रायः निम्न श्रेणी के लोगों जैसा ही होता है। अपने वंश-परम्परागत नियमों और आदर्शों का इसे तनिक भी ध्यान नहीं रहता। यह व्यक्ति अन्तर-जातीय विवाह भी कर लेता है अथवा अपनी जाति से भिन्न जाति की स्त्री का हरण भी कर बैठता है। इसी प्रकार के कुकृत्यों के कारण वह जाति-च्युत अथवा जाति-भ्रष्ट भी हो जाता है। इसका हृदय सदैव कलुषित रहता है और मन अशुद्ध रहता है। यही कारण है कि इस लक्षण वाले व्यक्ति को सभी शंका की दृष्टि से देखते हैं और इससे सदैव बचते रहते हैं। इस व्यक्ति के सन्तान नहीं होती। यह व्यक्ति अन्न को कुअन्न करके खाते हैं। इन्हें अन्न की मात्रा अथवा खान-पान का तनिक भी ध्यान नहीं रहता। यह दैत्य के समान सर्व-भक्षी होते हैं। इनके स्वभाव की दुष्टतावश इन्हें राज्य-दण्ड की भी सम्भावना रहती है। इनके शत्रु बहुत होते हैं और उन्हीं से ये दुःखी भी रहते हैं।

उपरोक्त लक्षण का फलादेश घोषित करने से पूर्व यह स्मरण रखना चाहिये कि तिरछी रेखा केवल; बुध-क्षेत्र तक ही सीमित रहे। इससे आगे बढ़ कर सूर्य-क्षेत्र पर न पहुंचने पावे और इसको काटने वाली सीधी रेखा भी छोटी ही हो। काटने वाली यह रेखा हृदय-रेखा की ओर बढ़ने न पावे। कदाचित् टेढ़ी रेखा सूर्य-क्षेत्र तक बढ़ गई और काटने वाली रेखा हृदय-रेखा की ओर बढ़ गई तो उपरोक्त फलादेश में अन्तर अवश्य आ जायगा। यद्यपि इतना होने पर भी (यह लक्षण भी) अशुभ ही रहेगा,

किन्तु इन दोनों रेखाओं के सूर्य-क्षेत्र पर और हृदय-रेखा की ओर बढ़ जाने के फल स्वरूप उस व्यक्ति को धन-धान्य की कमी नहीं रहेगी और परिजन बन्धु-बान्धवों से भी उसे सुख ही प्राप्त होगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से उद्भूत एक शृंखला-कार रेखा मस्तक रेखा (Line of Head), हृदय-रेखा (Line of Heart) और जीवन-रेखा (Line of Life) को काट कर शुक्र-क्षेत्र पर जाती हो (जैसा कि नीचे वाले चित्र संख्या ६७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति कठोर-हृदय, माता का अप्रिय और उस से वैर करने वाला, चपल स्वभाव और खल
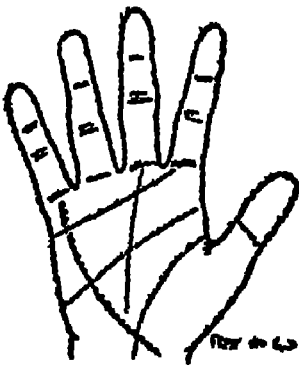
होता है। इसकी स्त्री अति विरोधिनी, कलह-प्रिया, क्रोधिनी, तापकारी, कामातुर किंतु सुन्दरी होती है। यह पुरुष सन्तान सुख से वञ्चित रहता है। उसका पिता से भी सदा विरोध रहता है और उसका पिता रोगी होता है। उसे पितृ धन की हानि अथवा तत्सम्बन्धी विषाद भोगना पड़ता है। वह क्रोधी, पिशुन, स्वजनों और ग्रामवासियों को कष्ट देने वाला तथा पितृ-धन-विलासी होता है।

इस लक्षण वाले व्यक्ति का बुध-क्षेत्र कदाचित् निम्न हुआ हो (इस शृंखला युक्त रेखा के हृदय रेखा को काटने के परिणाम

स्वरूप) वह व्यक्ति निश्चय ही पितृ-घाती, जीव-हिंसक, पर-स्त्री गामी, रोगी, दुष्ट, नीच कर्म-रत तथा लम्पट होता है। धन-धान्य के लिए यह सतत प्रयत्नशील रहता है और लक्ष्मी के मद से मदान्ध रहता है।

उपरोक्त लक्षण वाले व्यक्ति के हाथ में दैवयोग से यदि बुध-क्षेत्र और शुक्र-क्षेत्र उच्च हुआ तो वह रसादि द्रव्यों के व्यापार से लाभ उठाता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः मदिरा, इत्र, सुगन्धित तेल आदि के व्यापार व्यवसाय में प्रवीण होते हैं। रंग साजी क व्यापार में भी उन्हें पर्याप्त धन-लाभ होता है। उपरोक्त कथित विविध व्यापार-व्यवसाय द्वारा वे पर्याप्त धन-संचय करते हैं। यह व्यक्ति स्त्री-पुत्र-पौत्रादि तथा परिजन, बन्धु-बान्धवों से सुखी होता है तथा इनको सुखी रखने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। इस योग में बुध-क्षेत्र और शुक्र क्षेत्र क उच्च होने से उपरोक्त शृंखलाकार रेखा-कृत अनिष्ट फलों का सर्वथा शमन होकर शुभ फल प्राप्त होते हैं। इस परिवर्तन के फल-स्वरूप वह व्यक्ति विचारशील, बुद्धिमान, उदार, माता-पिता का प्रिय तथा उनका भक्त, धार्मिक विचार वाला तथा सज्जन होता है। वह अपना जीवन प्रायः सुख और शान्ति पूर्वक व्यतीत करता है।

बुध-क्षेत्र गत रेखाओं, चिन्हों तथा लक्षणों का विशेष फल

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र और चन्द्र क्षेत्र—दोनों उच्च हों और बुध-क्षेत्र पर रेखा जाल का चिन्ह हो अथवा चन्द्र-क्षेत्र पर गुणक का चिन्ह हो और मस्तक रेखा (Line
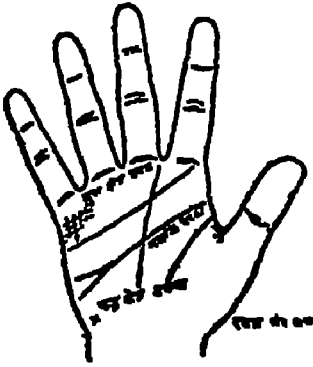
of Head) द्विमुज हो गई हो (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या ६८ में अंकित है) तो वह व्यक्ति विलक्षण आध्यात्मिक, भगवतानुसार तथा वीतरागी होता है । यह सदैव ईश्वराराधन में रत होता है और महान वेदान्ती होकर इह-लोक और परलोक में सुखी होता है । इस लक्षण वाले व्यक्ति लोक कल्याणार्थ दीर्घ आयु होते हैं, किन्तु ये सदैव गुप्त ही रहते हैं और परोक्ष में रहकर ही अपनी दिव्य शक्ति से लोक कल्याण करते रहते हैं ।

कदाचित् इस लक्षण वाला व्यक्ति किसी के सम्पर्क में अनायास ही (विना किसी प्रकार के परिचय के) आ जाय तो उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुप) के स्वभाव में अपूर्व विलक्षणता का अनुभव होगा और सम्पर्क मे आने वाला उससे अवश्यमेव अत्यधिक प्रभावित होगा ।

पाठको यदि यह लक्षण किसी बालक अथवा बालिका के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो उसे उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहिये और उसके माता-पिता, परिजन बन्धु-बान्धव आदि से अनुरोध करना चाहिये कि उसके साथ कठोर व्यवहार न करें । क्योंकि इस लक्षण वाला व्यक्ति अपने आरम्भिक जीवन में (बाल्यावस्था तथा कुमारावस्था में) अपेक्षाकृत क्रोधी होता है । अतः यदि इसके क्रोध अथवा हठ से खीज कर उसके साथ कठोर व्यवहार

किया गया तो सम्भव है वह बाल्यावस्था में ही गृह-त्याग दे। इसका परिणाम यह होगा कि उसके माता-पिता को उसके वियोग का कष्ट होगा, क्योंकि एक बार गृह-त्याग करने के पश्चात वह किसी भी दशा में लौट कर नही आवेगा। हां, उसके लोक-कल्याण के कार्य में तो किसी भी अवस्था में किसी भी प्रकार की बाधा उपस्थित नही हो सकती। इस लक्षण वाले व्यक्ति आरम्भ में मण्डलेश्वर, महा मंण्डलेश्वर, महायोगी, महात्मा तथा उच्च कोटि के आदर्शवादी होते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि उक्त लक्षण वाला व्यक्ति अदृश्य होकर उसी दशा में रहेगा जब कि उक्त चित्र संख्या ६८ में अंकित समस्त चिन्ह उसके हाथ में विद्यमान हों। इनमें से प्रायः रेखा जाल चिन्ह अथवा गुणक-चिन्ह कभी कभी विद्यमान नहीं होता। ऐसी दशा में वह लोक कल्याणकारी महात्मा तो अवश्य होता है, किन्तु अदृश्य होने का पूर्ण निश्चय नहीं होता। वह ससार में विचरण करता हुआ ही लोक-कल्याण के कार्य को पूर्ण करता है। इसके साथ-साथ यहां यह विशेष ज्ञातव्य है कि यदि उक्त महा पुरुष के हाथ में उच्च चन्द्र-क्षेत्र-गत गुणक चिन्ह विद्यमान हो तो वह गुणक-चिन्ह उस महा पुरुष की अकाल मृत्यु का सूचक है। फलतः वह किसी दुष्टात्मा, पापात्मा के हाथों मृत्यु पायेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध क्षेत्र पर एक छोटी, आड़ी, सुस्पष्ट, शुद्ध तथा स्वस्थ रेखा के एक सिरे पर, इसी लक्षण वाली एक

छोटी सीधी रेखा खड़ी हो और खड़ी रेखा के ऊपरी सिरे तथा आड़ी रेखा के दूसरे छोर को भी इसी लक्षण वाली एक रेखा मिलाती हो और इस प्रकार इन तीनों रेखाओं के योगसे बुध-क्षेत्र पर एक समकोण त्रिभुज (Right angled Triangle) निर्मित होता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र सख्या ६९ में अंकित है) और साथ ही कनिष्ठका अगुली भी अनामिका अंगुली के बराबर ही लम्बी हो और इन दोनों अंगुलियों के छोर समान दृष्टिगोचर होते हों तो वह व्यक्ति अपूर्व वक्ता होता है। उपदेश देने में वह अत्यन्त प्रवीण होता है। वह ज्योतिप शास्त्र का प्रेमी और धन-धान्य-सम्पन्न होता है। वह धार्मिक सिद्धान्तों का उत्कृष्ट ज्ञाता, व्याख्याता, गणितज्ञ, तर्क शास्त्री, न्याय-मीमांसा का अपूर्व पण्डित तथा महा विद्वान होता है। इस व्यक्ति के शरीर की कान्ति स्वर्ण जैसी होती है।

कदाचित् उपरोक्त लक्षण वाले व्यक्ति का उक्त त्रिकोण खण्डित भी हो और बुध-क्षेत्र' निम्न हो—तो भी उसमें साहस तो प्रबल रहेगा ही, अपनी मान मर्यादा के अनुरूप कार्य करने का उसे पूर्व ज्ञान हो जायगा। अतः वह वही कार्य सम्पादन करेगा जिससे उसकी मान-मर्यादा अक्षुण्ण बनी रहे। जिस किसी कार्य के सम्बन्ध में उसे सन्देह होगा उसे वह अवश्य ही त्याग देगा।

उसके त्यागने से उसे कोई हानि (मान-मर्यादा को छोड़ कर) भी होती होगी तो वह इसकी चिन्ता नहीं करेगा। इस लक्षण वाले व्यक्ति दृढ़-संकल्प होते हैं। किन्तु स्मरण रहे कि इसके लिए कनिष्ठका अंगुली का अनामिका अंगुली के बराबर होना नितान्त अनिवार्य है।

चित्र ७०
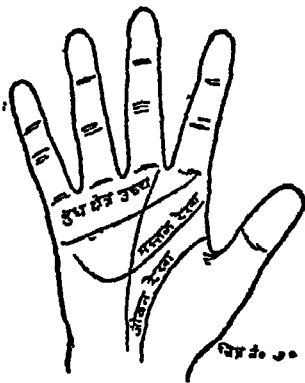
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र उन्नत हो, कनिष्ठका अंगुली का नख छोटा हो, मस्तक-रेखा (Line of Head) जीवन रेखा (Line of life) से पृथक हो, साथ ही मस्तक-रेखा (Line of Head) बुध क्षेत्र पर भी पहुंचती हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ७० में अंकित है) तो वह व्यक्ति संगीत (नृत्य-वाद्य गान)-प्रिय, अभिनय में सुखान्त भूमि का अभिनेता, तथा सहनशील, दयालु और साहित्यिक होता है। ऐसी रेखा तथा अन्यान्य लक्षण प्रायः अध्यापकों अथवा शिक्षकों के हाथ में दृष्टि-गोचर होती हैं। (किन्तु हमारा तात्पर्य उन्हीं शिक्षकों अथवा अध्यापकों से है जो स्वेच्छा से स्वतन्त्र रूप से स्वतन्त्र पाठशाला अथवा विद्यालयों का संचालन करते हैं अथवा उनमें अध्यापन करते हैं अथवा जो अपने घर पर ही शिक्षार्थियों को अध्यापन कराते हैं। उन शिक्षकों अथवा अध्यापकों से इस लक्षण का कोई सम्बन्ध नहीं है जो किसी धनाध्यक्ष द्वारा संचालित अथवा राज-

कीय पाठशाला, विद्यालय आदि में अध्यापन का कार्य करते हैं। यों सम्भव है उनमें भी कोई अथवा अधिक लक्षण वाले मिल जायं।) इस लक्षण वाले सन्तोषी किन्तु स्वाभिमानी, अपने विचारों के दृढ़, आदर्शवादी, स्वतन्त्र विचार वाले, निष्पक्ष, उदार तथा विद्या-व्यसनी होते हैं। यद्यपि इन्हें सदैव मानसिक चिन्ता घेरे रहती है, किन्तु फिरभी ये अपने मार्ग मे कोई परिवर्तन करना स्वीकार नहीं करते। किसी का अनुचित दवाव अथवा प्रभुत्व यह व्यक्ति स्वप्न मे भी स्वीकार नहीं करता।
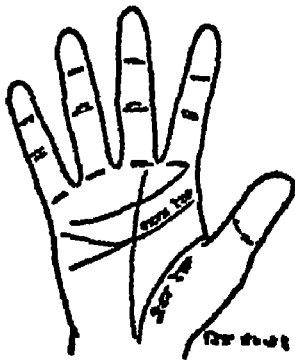
जिस व्यक्ति के हाथ में मस्तक रेखा (Line of Head) की शाखा निश्चल रूप से बुध-क्षेत्र पर जाती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ७१ में अंकित है) तो वह व्यक्ति दीर्घ-सूत्री, सुख हीन, वेश्यागामी, परधन भोगी, सन्तान रहित और शत्रुओं के भय से युक्त होता है। इसको अपने शत्रुओं से मृत्यु तक का भय होता है। वह दुष्टों की संगति में बैठ कर अपना जीवन नष्ट कर लेता है। व्यापार-व्यवसाय में इसे कभी हानि, तो कभी लाभ होता रहता है। यह व्यक्ति पुत्र सुख से हीन होता है। यह वात रोग से पीड़ित होता है। कदाचित इस व्यक्ति का बुध-क्षेत्र अत्युच्च हो तो वह अभिनय में दुखान्त भूमिका अभिनीत करता है और प्रायः अभिनय में ही उसकी मृत्यु भी होती है।
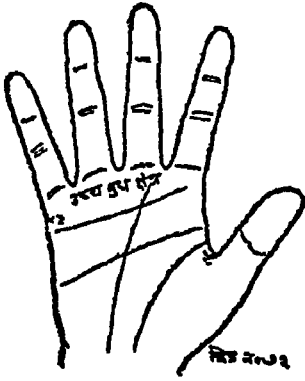
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र उच्च हो, उस पर नक्षत्र का चिह्न हो, कनिष्ठका अंगुली अनामिका अंगुली के बराबर लम्बी हो और नुकीली भी हो तथा नख चमकीले हों (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ७२ में अंकित) तो वह व्यक्ति निश्चितरूप से मन्त्री पद प्राप्त करता है अथवा विदेशों में राजदूत के पद पर आसीन होकर स्वदेश की उन्नति, प्रतिष्ठा तथा ख्याति के लिए प्रयत्नशील रहता है। दूसरे व्यक्तियों अथवा सम्पर्क आने वालों के मनोभाव जान लेने की उसमें अपूर्व शक्ति होती है। यह व्यक्ति सरल, दयालु, मधुरभाषी, सुन्दर वस्त्रालंकार से युक्त, परोपकार, दीर्घायु, विचारशील, प्रतिभा सम्पन्न, प्रतापी तथा नीति-निपुण होता है।

कदाचित इस लक्षण वाले व्यक्ति के हाथ में उक्त नक्षत्र चिन्ह न हो किन्तु शेष सभी लक्षण उपरोक्त प्रकार ही हों तो सम्भव है वह ससुराल की सम्पत्ति का स्वामी बन बैठे अथवा घर जवांई होकर ससुराल में ही रहे। किन्तु बुध-क्षेत्र का होना नितान्त अनिवार्य है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र पर द्वीप (यव) चिह्न हो साथ ही शृंखलाकार बुध-रेखा हृदय-रेखा (Line of Heart) मस्तक-रेखा (Line of Head) और जीवन-रेखा (Line of
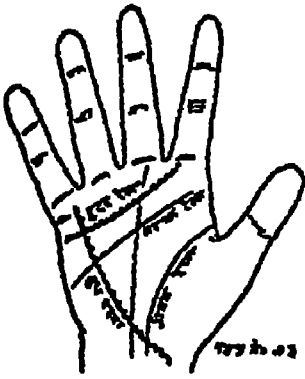
Life) को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र तक जातीहो और हृदय-रेखा (Line of Heart) भी शृंखलाकार ही हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ७३ में अंकित है) तो वह व्यक्ति आजीवन अजीर्ण और उदर-विकार से ग्रस्त रहता है। मानव-जीवन में जितने भी अशुभ फल होने की संभावना हो सकती है, वे सभी इस लक्षण वाले व्यक्ति को प्राप्त हो सकते हैं। यहां तक कि उसकी मृत्यु कब हो जाय इसका भी कोई ठिकाना नहीं होता। एक प्रकार से वह जीवित-शव ही होता है। अतः शव के सम्बन्ध मे शुभाशुभ फल का विचार करना ही मूर्खता है। यह व्यक्ति प्रायः लघु-अवस्था में ही इस संसार से विदा हो जाते हैं।

बुध-रेखा (Line of Mercury) का परिचय

बुध रेखा (Line of Mercury) मानव-हस्त-गत वह रेखा है जो बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) के अधो-भाग (Base) अथवा बुध-क्षेत्र के मध्य से आरम्भ होकर मणि-बन्ध तक जाती है। साधारणतः यह रेखा मणिबन्ध पर जीवन-रेखा (Line of Life) के आस-पास दृष्टि-गोचर होती है।

कभी-कभी यह रेखा जीवन-रेखा (Line of Life) को स्पर्श करती है अथवा इसे काट कर शुक्र क्षेत्र पर भी चली जाती है। (देखो चित्र-संख्या ७४)

बुध-रेखा से विचारणीय विषय

मानव-हस्त गत अन्यान्य रेखाओं के अनुसार बुध रेखा से भी मनुष्य के जीवन सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर पर्याप्त प्रकाश प्राप्त होता है, किन्तु इस रेखा से सबसे अधिक महत्व पूर्ण विषय जो विचारा जाता है वह मानव स्वास्थ्य है। अतः इसे स्वास्थ्य रेखा (Line of Health) भी कहते हैं। यह जितनी शुद्ध एवं शुभ होगी मानव का स्वास्थ्य भी उतना ही अच्छा होगा।

बुध-रेखा का सामान्य फल

चित्र सं० ७५
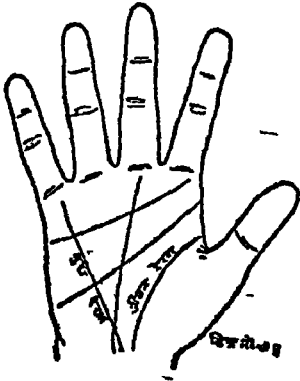
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा (Line of mercury) बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) तक सुविस्तीर्ण हो तथा शुद्ध, सुस्पष्ट, अक्षत, सुन्दर एवं गम्भीर हो और इसे कोई अन्यान्य रेखायें काटती न हों, साथ ही यह स्वयं भी जीवन रेखा को स्पर्श न करके उसके निकट स्थान से ही, मणिबन्ध के कुछ ऊपर से आरम्भ होती हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ७५ में अंकित है) तो वह व्यक्ति दैवज्ञ, भविष्यवक्ता, गुप्त-विद्या-विशेषज्ञ, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-विद्या में निपुण, स्वावलम्बी, कुशल

चिकित्सक, सम्मानित, प्रतिष्ठित, ख्याति-प्राप्त, यशस्वी, धन-धान्य-सम्पन्न, ऐश्वर्य-वैभव-शाली, वाहन-भृत्यु-युक्त, सफलव्यापारी, व्यमायी, पुत्र-पुत्रादिकों से सुखी तथा बुद्धिमान होता है। इस व्यक्ति को भवन-निर्माण का विशेष उत्साह होता है। फलतः इसके अपने कितने ही भवन होते हैं, जिन्हें किराये पर उठाकर यह पर्याप्त धन प्राप्त करता है। यद्यपि यह व्यक्ति स्वयं भी कुशल व्यापारी होता है किन्तु अपना स्वतन्त्र-व्यापार अथवा व्यवसाय कभी नहीं करता। सदैव किसी अन्य व्यक्ति के साझे में ही यह अपना व्यापार-व्यवसाय करके यथेष्ट लाभ पाता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि उपरोक्त शुभफल प्राप्त करने के हेतु इस रेखा का शुद्ध, सरल तथा सीधा होना अनिवार्य है।

दैवयोग से यह रेखा अत्यन्त पतली हो अथवा कटी-फटी हो तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति आजीवन दुर्बल और रोग-ग्रस्त रहता है। स्मरण रहे कि सीधी, लम्बी और अखण्ड बुध-रेखा (Line of Mercury) उत्तम स्वास्थ्य की द्योतक होती है। ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो वह अपने ही बल पर उन्नति करता है और सर्व-साधारण का प्रीतिपात्र होता है। उसे असत्यवादियों, धूर्तों, छलियों, प्रपंचियों, कपटियों, विश्वासघातियों तथा लम्पटों से अत्यधिक एवं हार्दिक घृणा होती है। वह स्वयं प्रबल आशावादी होता है।

स्मरण रहे कि बुध-रेखा (Line of Mercury) सदैव परिवर्तित होती रहती है। अनेक व्यक्तियों के हाथ में यह रेखा

सर्वथा ही दृष्टि-गोचर नही होती। यह भी देखने में आया है कि यह रेखा प्राय: बाल्यावस्था में तो हाथ पर दृष्टि-गोचर होती है किन्तु मनुष्य की आयु की वृद्धि के साथ-साथ शनै: २ लोप होती जाती है और युवावस्था के द्वार पर पहुंचते २ मानव-हस्त पर इसका सर्वथा अभाव हो जाता है। इसके विपरीत यदि यह रेखा वयस्क हो जाने पर भी, अर्थात् पचीस वर्ष की आयु के पश्चात भी मानव-हस्त पर दृष्टिगोचर हो तो निस्सन्देह यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बन जाती है।

बुध-रेखा (Line of Mercury) गत अन्यान्य चिन्हों का फल
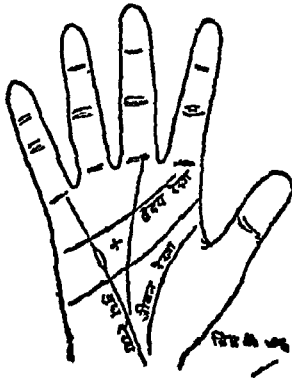
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा पर यव (द्वीप) चिन्ह दृष्टिगोचर हो और उसके पास ही धन (+) चिह्न भी स्पष्ट ही दृष्टिगोचर होता हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ७६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अनेकानेक विचित्र स्वप्न देखता है। कभी-कभी तो इस लक्षण वाला व्यक्ति स्वप्नावस्था में ही भयानक दुर्घटना पूर्ण कार्य भी कर बैठता है। फलत: उसे अपने जीवन में महान-क्षति उठानी पड़ती है। यह क्षति कभी कभी शारीरिक और कभी-कभी आर्थिक, प्रतिष्ठा-सम्मान सम्बन्धी अथवा मर्यादा सम्बन्धी भी हो जाती है।
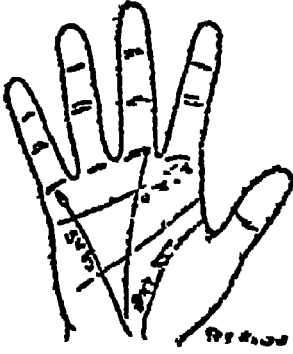
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध रेखा (Line of Mercury) पर हृदय-रेखा (Line of Heart) के ऊपर बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) पर ही यव (द्वीप) चिह्न हो और इसी यव (द्वीप) चिह्न से बुध रेखा आरम्भ होती हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ७७ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अपनी मान-प्रतिष्ठा, सम्मान-ख्याति से हाथ धो बैठता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के दिवालिये होने की भी पूर्ण सम्भावना रहती है। अतः इस व्यक्ति को उचित है कि वह प्रत्येक प्रकार से अपने मान तथा प्रतिष्ठा की रक्षा के हेतु सावधान होकर प्रयत्नशील रहे।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा (Line of Mercury) हृदय-रेखा (Line of Heart) में दृष्टि गोचर हो अर्थात् हृदय रेखा (Line of Heart) में से आरम्भ हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ७८ में अंकित है) तो वह व्यक्ति कायर, भयातुर तथा हृदय-रोगी होता है। इस लक्षण वाला व्यक्ति जीवन के वास्तविक सुख से प्रायः अनभिज्ञ ही रहता है। उसे अपने व्यक्ति गत कार्यों के सम्पादन में भी अत्यन्त कष्ट होता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा (Line of Mercury) मस्तक-रेखा (Line of Head) में सम्मिलित होकर कुछ दूर तक उसी में जाती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ७९ में अंकित है) तो वह व्यक्ति मस्तिष्क-सम्बन्धी रोगों का आखेट रहता है। कोई-कोई व्यक्ति इस लक्षण के प्रभाव से अर्द्ध-विक्षिप्त सा भी रहता है। यह भी अनुभव किया गया है कि इस व्यक्ति को किसी शस्त्र द्वारा मस्तक में आघात पहुंचे।
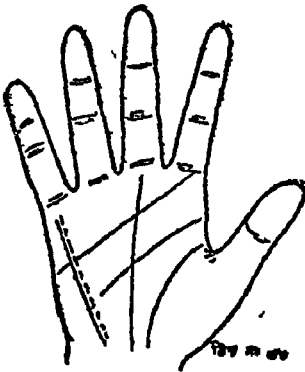
जिस व्यक्ति के हाथ में छोटी-छोटी असम्बद्ध रेखाओं से बनी एक बुध-रेखा के समानान्तर दूसरी बुध रेखा बुध क्षेत्र से आरम्भ होकर पहली बुध-रेखा के अन्त-पर्यन्त जाती हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ८० में अंकित है) तो इस दूसरी बुध रेखा के प्रभाव से उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति सुवक्ता, यशवा और सुखी होता है। इस व्यक्ति में एक विलक्षण विशेषता होती है वह यह कि इसकी प्रत्युत्पन्न मति अति विलक्षण और रामबाण होती है। सामयिक सूझ बड़े मार्के की

होती है। इस लक्षण वाला व्यक्ति आजीवन धन सम्पन्न कृपालु, नीतिमान, और विविध व्यापार-व्यवसाय में कुशल होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः कान्तिमान और अनेक विद्याओं में निपुण होते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि उपरोक्त फल उसी दशा में प्राप्त होगा जब कि उक्त समानान्तर रेखा प्रथम बुध रेखा के अति-समीप न हो तथा वह शुद्ध, सीधी, गहरी और लाल रंग की हो। इसके अतिरिक्त यह रेखा भाग्य-रेखा को स्पर्श तक न करती हो और अन्यान्य कोई भी रेखा इसको स्पर्श न करती हों अथवा काटती न हों। कदाचित इससे विपरीत होगा तो फल निम्नलिखित होगा—

यदि उक्त समानान्तर बुध-रेखा साधारण लहरदार हुई तो उसका केवल स्वास्थ्य ही ठीक न रहेगा, इसके अतिरिक्त शेष सभी फल अधिकांशतः शुद्ध, गहरी और लाल रंग की रेखा के समान ही होंगे। हां, एक विशेष फल यह भी होगा कि वह व्यक्ति अनेकानेक शास्त्रों का अनुभवी होते हुये भी अभिमानी अत्यधिक होगा और परले सिरे का नास्तिक होगा।
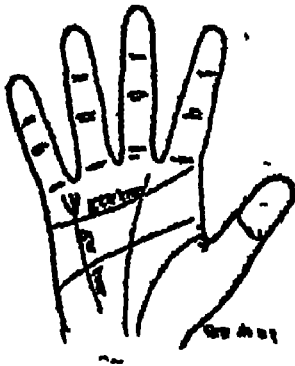
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा (Line of Meroury) के ऊर्ध्व-छोर पर (अर्थात् जो छोर बुध-क्षेत्र की ओर हो उस पर) दोनों पार्श्वों पर दो छोटी रेखाओं के मिलने से त्रिशूल-

चिह्न के सदृश्य चिह्न का निर्माण होता हो (जैसा कि पृष्ठ ६०३ वाले चित्र संख्या ८१ में अंकित है) तो वह व्यक्ति आध्यात्मवाद का अपूर्व एवं विलक्षण विद्वान होता है। इस लक्षण-वाले व्यक्ति सदैव देश-देशान्तरों में पूजनीय होकर प्रख्यात होते हैं। इन पर महालक्ष्मी का सदैव वरद्-हस्त होता है अर्थात् इनको आजीवन धन-धान्य, ऐश्वर्य-वैभव की किञ्चित भी कमी नहीं होती। इनकी स्त्री और बाल-बच्चे सुशील और सद्गुणी होते हैं। इनके आश्रय में अनेक व्यक्ति रहते हैं। यह व्यक्ति राजा के समान धनी, वैभवशाली तथा भृत्य वाहन युक्त होता है। यह काव्य-प्रेमी, अति बुद्धिमान, और सर्व हितैषी होता है। यह राजनीति का महान पण्डित; धर्म परायण, ज्योतिर्वेत्ता, तान्त्रिक, मन्त्रशास्त्र का मर्मज्ञ तथा प्रतिभाशाली होता है। ऐसे व्यक्ति अपने परिवार के प्रभाकर होते हैं।

यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि उक्त त्रिशूल का आधार विन्दु (अर्थात् जिस स्थान पर पार्श्व-रेखायें मिलती हैं वह स्थान) हृदय-रेखा (Line of Heart) पर नहीं होना चाहिये और यदि कदाचित् यह विन्दु हृदय-रेखा के मार्ग पर ही पड़ जाय तो उस स्थान पर हृदय-रेखा का लोप होना अथवा उसका अस्पष्ट होना अथवा अत्यन्त पतला होना अनिवार्य है। इस प्रकार का लक्षण उपस्थित होने पर ही उपरोक्त शुभ फल घटित होगा, अन्यथा ऐसा नहीं ही होगा। इसके विपरीत यदि उक्त विन्दु हृदय-रेखा (Line of Heart) पर ही हो और उसी स्थल पर

हृदय-रेखा पर यव (द्वीप) चिह्न भी हो और उस यव चिन्ह के मध्य में यह बिन्दु हो तो वह लक्षण भाग्योन्नति कर न होकर सर्वदा अवनति सूचित करता है। हां, इतना अवश्य है कि यह अवनति स्थाई नहीं होगी—क्षणिक ही होगी।
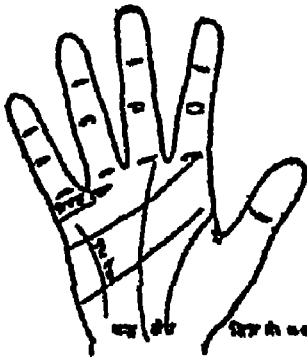
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा (Line of Mercury) वक्र होकर चन्द्र-क्षेत्र (Mount of Moon) पर पहुंचे (जैसा कि साथ वाले चित्र-संख्या ८२ में अंकित है) तो वह व्यक्ति अव्यवस्थित चित्त होता है। उसकी अवस्था में अनेकानेक परिवर्तन हुआ करते हैं। ऐसे व्यक्ति दान-धर्म आदि के निमित्त व्यय करके अपने ही मुंह से उसका प्रचार अथवा विज्ञापन करते रहते हैं।

कदाचित यह रेखा सर्प-गति-सदृश्य हो तो उस व्यक्ति को लाटरी, सट्टा आदि में अकस्मात ही धन प्राप्त होता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि इस लक्षण का यह फल उसी दशा में प्राप्त होगा जब कि यह बुध-रेखा (Line of Mercury) स्पष्टतः विवाह-रेखा (Line of Marriage) के नीचे से ही आरम्भ होती हो।

दैवयोग से यह बुध-रेखा (Line of Mercury) विवाह-रेखा (Line of Marriage) को स्पर्श करती हो और हृदय

रेखा को भी काट रही हो तथा वक्र-गति से मगल के प्रथम-क्षेत्र की ओर जाती हो, तो वह व्यक्ति अपने पारिवारिक जीवन में सदैव कलह या कष्ट-भोगता है। उसकी प्रवृत्ति बदला लेने की होती है। वह मिथ्यावादी, पर स्त्रीगामी, पेटू और सज्जनों से द्वेष करने वाला होता है। इस व्यक्ति की स्त्री भी उसकी अनुकूल गुणों वाली अर्थात् कर्कशा कलह-प्रिया, पर पुरुष गामिनी तथा पेटू होती है।

सौभाग्यवश यह रेखा सीधी-सुस्पष्ट-सरल और शुद्ध हो तो वह व्यक्ति हृदय-रोग से पीड़ित रहता है. किन्तु निष्कपट, सरल-स्वभाव तथा, शुद्ध-चित्त होता है। अपने गुणों को वह व्यक्ति अनेक प्रकार से जनता में प्रदर्शित करता रहता है। इस लक्षण वाली रेखा यदि किसी स्त्री के हाथ में विद्यमान हो तो वह अपने पति को सदाचारी बनाने के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील रहती है। वह उसे बलात् व्यभिचार की ओर से खींच कर शुद्ध चरित्र बनाती है। जब तक उसका पति व्यभिचार में-रत रहता है तब तक उसे अनेक यातनाओं का आखेट रहना पड़ता है। साधारणतः व्यभिचारी व्यक्ति की पत्नि को जो-जो यातनायें भोगनी पड़ती है (जैसे मारखाना, भूखों मरना आदि) वह सब उसे भी भोगनी पड़ती हैं। इस सबका कारण उसका पति को सदाचारी बनाने का प्रयत्न होता है। किन्तु यह स्त्री पति का हित साधन करने में इतनी दृढ़ निश्चयी होती है कि इन सब अपराधों की तनिक भी चिन्ता नहीं करती और अन्ततः अपने पति को व्यभि-

चार के पापमय नरक से मुक्त करके शेष जीवन सानन्द व्यतीत करती है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि उपरोक्त फल प्राप्त करने के हेतु स्त्री के हाथ में उक्त रेखा शुद्ध, सरल और सीधी तो होगी ही, किन्तु उपरोक्त शुभफल तभी घटित होगा जब कि उसकी हृदय-रेखा (Line of Heart) भी अपने स्थान पर, शुद्ध, अक्षत, तथा गम्भीर होगी। दुर्भाग्यवश यदि हृदय-रेखा (Line of Heart) लहरदार, छिन्न-भिन्न अथवा द्वीप (यव) चिन्ह युक्त हुई तो उपरोक्त फल में भी तदनुकूल न्यूनता आ जायगी। यव (द्वीप) चिह्न होने से, जिस स्थान पर यह यव (द्वीप) चिह्न होगा उस वर्ष में गहरा हृदयाघात लगने से उस स्त्री की मृत्यु की पूर्ण सम्भावना है।

इसी प्रकार यदि उक्त बुध-रेखा (Line of Mercu y) मंगल के प्रथम-क्षेत्र से आगे पुनः चन्द्र-क्षेत्र को जा रही हो और इसका स्वरूप आगे सर्पाकार ही हो, साथ ही लाल-रंग की अन्य रेखायें भी दृष्टिगोचर होती हों तो वह (स्त्री अथवा पुरुष) अहंकार पशु-प्रवृत्तिवाला, निष्ठुर, द्यूत-क्रीड़ा में पटु और सिर की पीड़ा से पीड़ित होता है और यदि ये अन्य रेखायें कृष्णवर्ण हों तो वह व्यक्ति वृद्धावस्था में अनेकानेक कष्ट और रोगों से पीड़ित होता है। यहां तक अनुभव में आया है कि यदि रेखा में यव (द्वीप) चिन्ह अथवा नक्षत्र-चिन्ह हुआ तो वह व्यक्ति उद्वेग से पागल भी हो जाता है।

यदि उक्त रेखा छिन्न-भिन्न और दागयुक्त हो तो वह व्यक्ति सदैव ज्वरग्रस्त होता है। उसे सदा जीर्ण-ज्वर, अपच और मस्तिष्क पीड़ा से पीड़ित रहना पड़ता है। ऐसे चिह्नों से वह अपनी क्रियाशक्ति से हीन और निर्बुद्ध होता है। वह जड़ता, द्यूत या कलह द्वारा प्रभूत सम्पत्ति भी अल्पकाल में ही नष्ट कर चिन्ता युक्त हो पागल का जैसा उद्वेग-पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र से चली यह सरल और सीधी रेखा सूर्य रेखा में मिलकर कोण बनाती हो तो वह व्यक्ति धन धान्यों से परिपूर्ण होता है। वह निर्मल, गुण सम्पन्न, विद्युत वाहनों से युक्त, जीव वाहनों से युक्त, नवीन ग्रहों का स्वामी, भूषणादि से विभूषित और तीर्थ-परायण होता है। ऐसे व्यक्ति स्वयं दिगंतकीर्ति विद्वान और विद्वानों से घिरे रहते हैं। यह काव्य-संगीत आदि विद्याओं मे कुशल, वाचाल, राजाओं और उच्च नेताओं से सम्मानित एवं पूजित होते हैं। इसके अतिरिक्त उनकी गणना भी राजाओं और उच्चकोटि के लोक-नेताओं में होती है।

यदि बुध रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो वह व्यक्ति राजाओं अथवा उच्च कोटि के नेताओं के समान मानी, धनी तथा यशस्वी होता है। वह कामकला कुशल और वारांगनाओं के साथ रति क्रीड़ा में चतुर होता है। किन्तु इसी विलासी प्रकृति के कारण वह अन्ततः पराक्रम भ्रष्ट होकर पराभव को प्राप्त होता है। अपनी परम्पराओं को ध्यान में न रखने के कारण उसकी समाज में निन्दा भी होने लगती है।

यदि बुध-रेखा सूर्य-रेखा को काटती हुई सीधी शनी-क्षेत्र पर पहुंचे तो वह शत्रु से भूमि हरण करने में सफल और पुत्रोन्नति से आनन्दित होता है। वह राज-सभा में चतुरशिरोमणि होकर आसीन होता है। ऐसी रेखा वाले प्रायः प्रधान जज, प्रधान वक्ता, प्रधान मन्त्री अथवा सुविख्यात एवं उच्चकोटि के पत्रकार होते हैं। इनकी लेखन शैली उच्चकोटि की होती है। इन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान होता है।
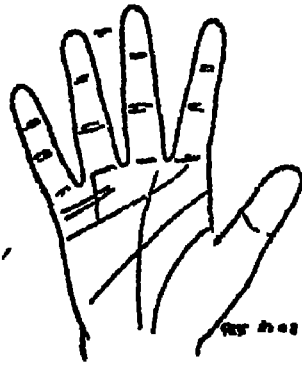
यदि बुध रेखायें समानान्तर होकर सूय-रेखा को काट रही हों (जैसे कि साथ वाले चित्र संख्या ८३ मे अंकित है) तो वह व्यक्ति परिश्रमी बलवान, सुखी, राजयोग की प्रबलता से अभिमान-यु क्त, विवेकशील, तथा परोपकारी होता है। उदारमना, निरन्तर भ्रमणशील, धन-रत्नादि से सम्पन्न, बहुगुणी, भूमि मकान आदि का स्वामी, उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण धारण करने वाला, नवीन वाहनो से युक्त तथा कृपाशील होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति के मित्रों की संख्या अधिक होती है और इन्हें नित्य नये मित्र प्राप्त होते रहते हैं।

ये ही समानान्तर रेखायें यदि टेढ़ी, लहरदार अथवा छिन्न-भिन्न हुईं तो इसके शत्रुओं की संख्या अधिक होगी। वह सदैव शत्रुओं से कम्पित रहेगा। वह कुटिल बुद्धि, चचल, कर्म से रहित,

शरीर से दुर्बल और आत्मश्लाघी होगा। ऐसे व्यक्ति पराक्रम हीन, बड़ों की आज्ञा का उलंघन करने वाले तथा अपनी कूटनीति के स्वयं ही आखेट होते हैं। यह अपनी महत्ता भी खोते हैं और समाज का भी अहित करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को प्रायः राजदण्ड भी भोगना पड़ता है, किन्तु अधिकांशतः यह छल-कपट अथवा रिश्वत देकर अपने आपको बचा लेते हैं। इसके पश्चात् ये गुप्त रहने लगते हैं और अपना गुप्त दल निर्माण करके घृणित प्रचार करते हैं।

यदि इन दोनों समानान्तर रेखाओं का सम्बन्ध विवाह-रेखा से हो तो निश्चय ही उस व्यक्ति को स्त्री पुत्रादि का सुख नहीं मिलता। वह व्यक्ति अकेला ही रह कर उपरोक्त दुष्कृत्य किया करता है। ऐसे व्यक्ति की गृहस्थी न होने पर भी वह छल-कपट से अपनी गृहस्थी बना लेता है।

यदि इन समानान्तर बुध-रेखाओं को दो छोटी-छोटी रेखायें काटें और एक रेखा हृदय-रेखा पर शनी क्षेत्र पर जाय तो वह व्यक्ति सर्वदा क्षुधातुर होकर लोभी और धूर्त होता है। वह कुकर्मी, देश-देशान्तरों में दुःख पाने वाला, गृहस्थाश्रम के सुख से वंचित और काम विकार से व्यग्र हो अपना अंग भंग कर बैठता है। उसे सर्प भय और अग्नि भय होता है। उसे शत्रुओं द्वारा पीड़ित होकर जन-धन की हानि उठानी पड़ती है। इस व्यक्ति को चौंतीस वर्ष की अवस्था के पश्चात् स्त्री कलह, पुत्र शोक तथा अन्यान्य अनेक रोगों से ग्रस्त रहना पड़ता है।

यदि उक्त सूर्य-रेखा हृदय-रेखा को स्पर्श करती हो और बुध-रेखाओं को काटने वाली दोनों रेखायें भी हृदय-रेखा पर रुक जायें तो सम्भवतः चतुष्कोण बन जाता है। यह चतुष्कोण उस व्यक्ति पर आयी हुई विपत्तियों, दुर्घटनाओं, दुष्ट प्रवृत्ति आदि पर अपना शुभ प्रवाह डाल कर उस व्यक्ति की अनेक प्रकार से रक्षा करता है। इसके अतिरिक्त चौंतीसवें वर्ष में ही इस व्यक्ति की उन्नति होती है। इसे व्यापार में लाभ होता है, पराक्रम में वृद्धि होती है, सद्गुणी और सन्तों का संग प्राप्त होता है, नये-नये व्यापार-व्यवसायों में प्रवृत्ति होती है तथा सफलता प्राप्त होती है। इस वर्ष के पश्चात् उसे नूतन विद्याओं की प्राप्ति होती है। इस चतुष्कोण के प्रभाव से उसके गृहस्थ जीवन में अनेकानेक मंगलीक कार्य होते हैं।

चि० ८४
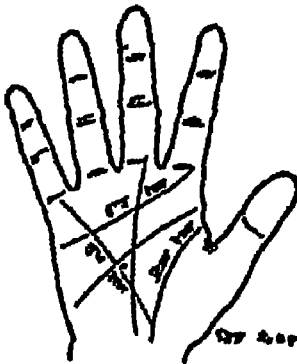
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा, हृदय-रेखा और जीवन रेखा के मध्य गहरी और नक्षत्र चिन्ह से युक्त होकर मस्तक रेखा को काटती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८४ में अंकित है) तो वह व्यक्ति पाण्डुरोग, कण्डु रोग, मस्तक पीड़ा, कान की पीड़ा आदि से ग्रस्त रहता है। ऐसे व्यक्ति खिन्न प्रकृति, स्वार्थी, क्रोधी तथा कृश गात होते हैं। ये जीवन में कोई भी उन्नति अथवा यश लाभकारी कार्य नहीं कर पाते। यदि

इस ओर साहस भी किया तो इनके घनिष्ट सम्बन्धी अथवा मित्र ही उस साहस को नष्ट कर देते हैं। ऐसे व्यक्ति का धन मित्रों और औषधियों में ही व्यय होता है। यदि सीधी रेखा के प्रभाव से इन्हें अतुल सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो तो नक्षत्र के प्रभाव से वह सम्पत्ति चोर, अग्नि, अथवा भ्रष्टाचार में ही नष्ट होजाती है। यह व्यक्ति प्रायः वेश्यागमन में अपना जीवन नष्ट कर लेता है।

दवयोग से नक्षत्र चिन्ह उक्त योग में न हो और बुध रेखा सरल, शुद्ध, सुस्पष्ट हो और वह मस्तक रेखा को न काटे तो यह व्यक्ति अशुभ घटनाओं से प्रायः बच जाता है। किन्तु पग-पग भय तो बना ही रहता है। ऐसे व्यक्ति शंकालु होते हैं और शंका वश होकर अपने जीवन की बाजी तक लगा बैठते हैं, किन्तु अन्त में इन्हें निराश होना पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों को साहस न बधाया जाय और धैर्य न दिया जाय तो वे अपने प्राण तक गंवा देते हैं।

ऐसे व्यक्तियों को चाहिये कि किसी अयोग्य चिकित्सक से अपने रोग का निदान न करायें, सदैव किसी अनुभवी तथा सत्य परायण चिकित्सक का ही आश्रय लें। क्योंकि निदान में भूल हो जाने पर भी उन्हें शंका हो जायगी और इसके परिणाम स्वरूप उनकी मृत्यु तक की सम्भावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त उसके मित्रादि उसके परिवार के किसी सदस्य के प्रति कोई शंका उपस्थित करें तो उस पर ध्यान न दें। अन्यथा व्यर्थ ही उसका पारिवारिक जीवन दुःखमय हो जायगा।
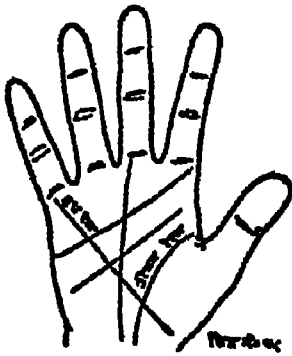
जिस व्यक्तिके हाथमें बुध-रेखा (Line of Mercury) शुक्र क्षेत्र पर पहुच कर अन्त में यव (द्वीप) चिन्ह पर समाप्त होती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८५ में अंकित है) तो वह व्यक्ति हृदय और श्वास-नली मे व्रण, फुफ्फुस और स्नायु-सम्बन्धी अथवा पक्षाघात, कारबंकल आदि रोगों का आखेट होता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति को उपरोक्त रोगों से किस आयु मे पीडित होना होगा इसका निर्णय करने के हेतु निम्न-लिखित प्रयोग द्वारा आयु का वर्ष निकालना चाहिए।

यह बुध-रेखा (Line of Mercury) जिस स्थान पर आयु रेखा अथवा जीवन रेखा को काटे वहां से आरम्भ करके इसके अन्तिम छोर तक, जो कि शुक्र-क्षेत्र पर यव (द्वीप) चिह्न बनाकर समाप्त होता है, माप लें। इस दूरी को पन्द्रह वर्ष प्रति इंच के परिमाण से गणित करके वर्ष प्राप्त कर लें। इसके पश्चात जितने वर्ष आयु-रेखा पर बुध-रेखा के काटने से प्राप्त हों उनमें उक्त प्राप्त वर्षों को ऋण कर दें। जो शेष बचें वही उपर्युक्त रोगों से ग्रस्त होने का समय है। उसी वर्ष से रोगों का आक्रमण आरम्भ होगा और जिस वर्ष आयु रेखा को बुध-रेखा काटे उस वर्ष वह व्यक्ति निश्चित रूप से अपना पंच भौतिक कलेवर त्याग कर परलोक गमन करेगा।
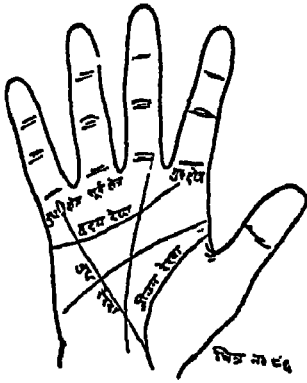
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-रेखा (Line of Mercury) के आरम्भ में यव (द्वीप) चिन्ह हो और साथ ही बुध-क्षेत्र, सूर्य-क्षेत्र और बृहस्पति क्षेत्र, निम्न हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८६ में अंकित है) तो वह व्यक्ति पैतृक अथवा वंश परम्परागत रोगों का आखेट रहता है। उसके मूत्राशय में पीड़ा होती है। कदाचित् इस योग के साथ-साथ शनी-क्षेत्र भी निम्न हुआ तो निश्चय ही वह व्यक्ति दिवालिया निकलता है।

इसके विपरीत यदि उपरोक्त यव (द्वीप) चिह्न युक्त बुध रेखा के साथ- बृहस्पति-क्षेत्र, चन्द्र-क्षेत्र और शुक्र-क्षेत्र उच्च हो तो वह व्यक्ति गुप्त-विद्याओं में पार-दर्शी होता है। उसे अनेक प्रकार के स्वप्न आते हैं और वह सदैव उन में भ्रमण करता रहता है। यहां तक देखा गया है कि उस व्यक्ति को स्वप्न द्वारा शुभाशुभ घटनाओं का भी भली-भांति बोध हो जाता है। इस लक्षण वाले व्यक्ति की मानसिक शक्ति उच्च कोटि की होती है। इसका स्वभाव सरल तथा धार्मिक होता है। उसके सिर में सदैव पीड़ा बनी रहती है, किन्तु वह अपनी विद्याओं द्वारा उसका शमन करने में सफल होता है।

विवाह-रेखा (Line of Marriage) का परिचय

मनुष्य के हाथ में कनिष्ठका अंगुली से नीचे करतल के बाहर की ओर से बुध क्षेत्र (Mount of Mercury) पर आने वाली

रेखा अथवा रेखायें विवाह-रेखा कहलाती हैं। कभी-कभी यह रेखा अथवा रेखायें बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) पर ही दृष्टिगोचर होती हैं। यह रेखा सीधी और सरल भी होती है और कनिष्ठका अंगुली की ओर अथवा हृदय-रेखा (Line of Heart) की ओर मुड़ी हुई भी होती है अतः इसकी आकृति, स्वरूप, गठन तथा स्थिति के अनुसार यह भिन्न-भिन्न फल का बोध कराती है। हां, यदि यह रेखा सुस्पष्ट, शुद्ध, गम्भीर तथा लम्बी हो तो निश्चित रूप से विवाह की घोषणा करती है। इसके विपरीत अस्पष्ट तथा छोटी रेखा केवल यही सूचित करती है कि इस व्यक्ति को किसी गहरे प्रेम अथवा विवाह की चिन्ता भर होगी इसके अतिरिक्त अन्य कोई परिणाम नहीं होगा।

विवाह-रेखा के सामान्य फल

जिस व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा (Line of Marriage) सुन्दर, सुस्पष्ट, गम्भीर तथा लम्बी हो और उसमें से बारीक बारीक शाखाये निकल कर हृदय रेखा ((Line of Heart) की ओर गिर रही हों—किन्तु वे हृदय-रेखा को स्पर्श न करती हों जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ८७ में अंकित है) तो वे परस्पर अपने जीवन साथी के रोग की सूचना देती हैं—अर्थात् पुरुष के हाथ में यह उसकी अर्द्धांगिनी के रोगों की सूचना देता है और

स्त्री के हाथ में उसके पति के रोगों की सूचक हैं। इन रेखाओं किंवा शाखाओं के प्रभाव से परस्पर पति-पत्नि अवश्य ही रोगी होते हैं।
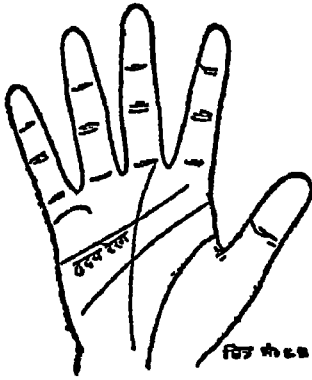
जिस व्यक्ति के हाथ में विवाह-रेखा (Line of Marriage) स्वयं ही हृदय-रेखा की ओर गिर रही हो किंवा झुक रही हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८८ में अंकित है) तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के वैवाहिक जीवन साथी की प्रथम मृत्यु होने की निश्चित सूचना देती है। अर्थात् यदि यह लक्षण स्त्री के हाथ में होगा तो उसका पति पहले मरेगा और पुरुष के हाथ में होगा तो उसकी स्त्री पहले मरेगी।
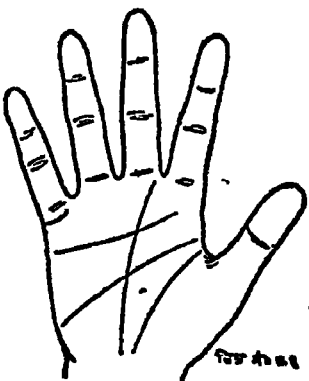
जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में विवाह-रेखा (Line of Marriage) कनिष्ठका अंगुली की ओर मुड़ गई हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ८९ में अंकित है) तो उस व्यक्ति का विवाह-योग अनिश्चित होता है। हो सकता है कि उसका विवाह हो जाय और यह भी पूर्ण सम्भव है कि उसका विवाह आजीवन न हो।
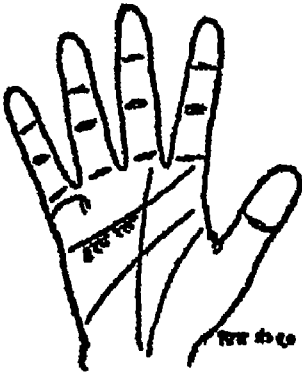
जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में विवाह-रेखा (Line of Marriage) सर्प जिह्वाकार होकर हृदय-रेखा (Line of Heart) पर झुक रही हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६० मे अंकित है) तो वह उक्त व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के विवाह-विच्छेद की सूचना देती है। कदाचित् यदि विवाह-रेखा की उक्त दोनों (सर्प जिह्वाकार) शाखाओं के मध्य से उद्भूत कोई रेखा करतल को पार करती हो तो ऐसी दशा मे तो उक्त व्यक्ति के विवाह-विच्छेद में किसी भी प्रकार की शंका नहीं रहती।

जिस व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा (Line of Marriage) के मध्य में अथवा उसके समीप (ऊपर या नीचे द्वीप (यव) चिह्न विद्यमान हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६१ मे अंकित है) तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के विवाहित जीवन में किसी महान आपत्ति की सूचना देती है। सम्भव है इसके प्रभाव से पति-पत्नी में परस्पर वियोग हो जाय (अथवा सम्बन्ध विच्छेद हो जाय)। इसके अतिरिक्त यह भी पूर्ण संभव

है कि लोक-मर्यादा की रक्षा के हेतु वे गृहस्थी की गाड़ी को खींचते रहें, किन्तु हृदय से एक दूसरे का परित्याग कर दें।

चित्र सं० ९२

जिस व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा (Line of Marriage) की कोई शाखा सूर्य-क्षेत्र (Mount of Sun) पर निश्चय रूप से जाती हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ९२ में अंकित है) तो उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) का विवाह किसी ऐसे अधिकारी व्यक्ति (पुरुष अथवा स्त्री) से होने की सूचना प्राप्त होती है जिसका जन-साधारण में सम्मान और प्रतिष्ठा हो और जो इसके साथ-साथ सुसम्पन्न भी हो।

चित्र सं० ९३
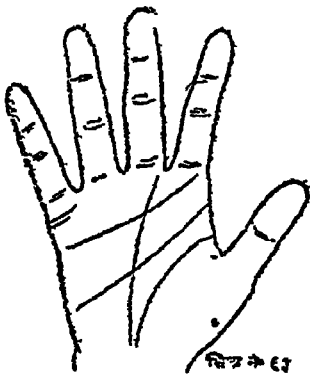
जिस व्यक्ति के हाथ में विवाह-रेखा (Line of Marriage) के समानान्तर अथवा उससे लगभग स्पर्श करती हुई दूसरी रेखा भी जा रही हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ९३ में अंकित है) तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) विवाह के पश्चात् अधिकारी वर्ग की ओर से किसी गंभीर प्रेम में फंसता है।

जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में बुध क्षेत्र (Mount of Mercury) स्थित विवाह-रेखा (Line of
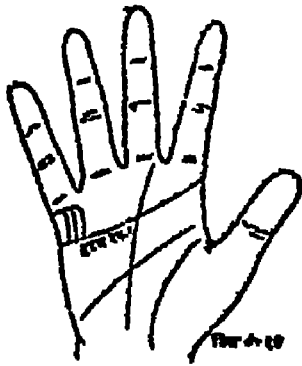
Marriage) की जितनी शाखायें हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करती हों (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६४ में अंकित है) तो उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) का यौन-सम्बन्ध उतने ही व्यक्तियों (पुरुषों अथवा स्त्रियों) के साथ होकर और वे प्रत्येक नये साथी के साथ पति-पत्नि के रूप में ही रहेंगे तथा उनके जीवन मे इन रेखाओं किंवा शाखाओं की संख्या के बराबर ही उनके साथियों की मृत्यु होगी। अधिक स्पष्ट करने के हेतु कहा जा सकता है कि यदि पुरुष के हाथ में उक्त लक्षण होगा तो उसकी उतनी स्त्रियों की उससे पूर्व मृत्यु होगी और यदि स्त्री के हाथ में उक्त लक्षण होगा तो उसके उतने ही पतियों की मृत्यु होगी।
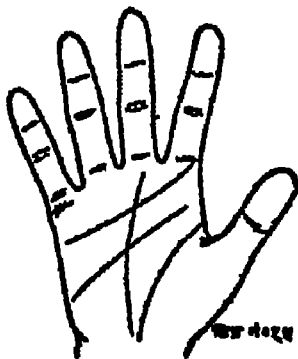
जिस व्यक्ति के हाथ में बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) स्थित विवाह-रेखा (Line of Marriage) पर नक्षत्र-चिन्ह दृष्टिगोचर हो (जैसा कि साथ वाले चित्र संख्या ६५ में अंकित है) तो उसका पुरुष और स्त्री के हाथ में निम्न प्रकार से फल प्राप्त होता है।

उक्त प्रकार की विवाह रेखा यदि पुरुष के हाथ में हो तो उसके अशुभ प्रभाव से रेखामान से प्राप्त आयु के वर्ष में उसकी स्त्री को प्रसव काल में अत्यधिक कष्ट होगा और उसी के द्वारा उसकी स्त्री की मृत्यु होगी।

कदाचित् उक्त प्रकार की विवाह-रेखा किसी स्त्री के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो उसके अशुभ प्रभाव से उसके पति की अकस्मात् मृत्यु होगी और वह विधवा-जीवन व्यतीत करेगी।

यदि नक्षत्र युक्त यह विवाह-रेखा सम्पूर्ण बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) को पार करके कनिष्ठका और अनामिका अंगुलियों के मध्य से हृदय-रेखा (Line of Heart) की ओर आने वाली सीधी रेखा से जा मिले तो उपरोक्त मृत्यु-योग नष्ट होजाता है। किंतु इतना होने पर भी नक्षत्र-चिह्न का अशुभ प्रभाव समूल नष्ट नहीं होगा। इसके दुष्परिणाम स्वरूप (इस स्थिति में) उक्त दम्पति को रेखा मानानुसार प्राप्त वर्ष में पुत्रशोक और मानसिक व्याधियों का आखेट होना पड़ेगा। हाँ, उनका पारस्परिक प्रेम प्रगाढ़ ही बना रहेगा और उनका जीवन के प्रति उत्साह तथा साहस भी अविचल ही रहेगा। इस प्रकार की विवाह रेखा उक्त दम्पति के व्यक्तिगत पराक्रम, शौर्य, साहस, धैर्य, सहिष्णुता, मान, सम्मान, कीर्ति, ख्याति तथा यश की भी सूचक है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि उक्त रेखा को यदि अन्यान्य रेखायें काट रही हों तो उसके फल में अवश्य ही न्यूनता आ जायगी। अतः विवाह-रेखायें अन्य रेखाओं द्वारा काटनी नहीं चाहिये—तब ही अधिक शुभफल प्रदान करती हैं।
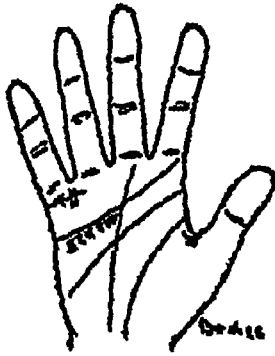
जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में विवाह-रेखा (Line of Marriage) पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा वह बुध क्षेत्र (Mount of Mercury) को पार करके कनिष्ठका अंगुली (Fourth Finger) और अनामिका अंगुली (Third Finer) के मध्य से आने वाली तथा हृदय-रेखा (Line of Heart) की ओर जाने वाली सरल और सीधी रेखा को स्पर्श करती हो—साथ ही इस विवाह रेखा (Line of Marriage) को कोई अन्य रेखा भी काटती हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ६६ में अंकित है) तो इस लक्षण वाला पुरुष निश्चित रूप से तथोक्त चिह्नित किसी अन्य पुरुष की विवाहिता पत्नी की सुन्दरता पर आसक्त होकर उसे प्रेम करने लगता है। इसी प्रकार इस लक्षण वाली स्त्री हो तो वह अपने पति से अन्य तथोक्त चिन्हित स्त्री के विवाहित पति की सुन्दरता पर आसक्त होकर उसे प्रेम करने लगती है। किन्तु इस लक्षण वाले स्त्री-पुरुषों की यह प्रेम-क्रीड़ा प्रायः मानसिक ही होती है। उनको अपनी कुल-मर्यादा का अत्यधिक विचार रहता है फलतः वह उसे व्यवहारिक रूप नहीं देते हैं। प्रायः अन्ततः उससे बचते भी हैं।

दैवयोग से उक्त लक्षणस्थ नक्षत्र-चिन्ह और अन्य खड़ी रेखा द्वारा विवाह-रेखा (Line of Marriage) कट जावे तो तत्स-

सम्बन्धित व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) तथोक्त प्रेम बन्धन को दृढ़ करने के हेतु अचानक ही किसी अन्य स्थान को चले जाते हैं। किन्तु इनकी यह प्रेम-क्रीड़ा आजीवन नहीं चल पाती। कुछ ही वर्षों में विषयाक्त प्रेम की उमंग शिथिल हो जाती है और अन्त में गन्तव्य स्थान पर उक्त व्यक्तियों (स्त्री अथवा पुरुष) को कुछ ही वर्षों पश्चात् क्रय-विक्रय अथवा हत्या का कलंक सिर पर उठाना पड़ता है—अर्थात् यदि यह लक्षण किसी पुरुष के हाथ में दृष्टिगोचर होता है तो वह अपनी तथोक्त प्रेमिका को कुछ ही वर्षों बाद उक्त गन्तव्य स्थान में किसी के हाथ बेच आता है अथवा उसे यों ही त्याग कर अपने घर लौट आता है और यदि यह लक्षण-किसी स्त्री के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो वह प्रेमी को कुछ ही वर्षों बाद उक्त गन्तव्य स्थान में किसी अन्य व्यक्ति द्वारा मृत्यु के घाट उतरवा देती है। इसके पश्चात् वह स्त्री उसी व्यक्ति के साथ—जिसके सहयोग से उस पर अपने प्रेमी की हत्या का कलंक लगता है—उसकी अर्धाङ्गिनी बनने के निमित्त कहीं दूर चली जाती है। किन्तु कुछ काल पश्चात् उसे भी विष दे यमलोक भेज देती है। इसके बाद -स्वयं अपना कुत्सित मार्ग त्याग कर अपना शेष जीवन अध्यात्मिक भावनाओं तथा सद्विचारों में लगा देती है।

जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) पर स्थित विवाह-रेखा (Line of Marriage) का स्वरूप यदि खजूर के पत्ते के सदृश्य

दृष्टि-गोचर हो, अर्थात सीधी विवाह-रेखा (Line of Marriage) में से अनेक छोटी-छोटी तथा बारीक शाखायें हृदय-रेखा (Line of Heart) की ओर जाती (किन्तु उसे स्पर्श न करती) दृष्टिगोचर हों (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या १७ में अंकित है) तो उसका फल स्त्री तथा पुरुष के हाथ में निम्न प्रकार उपस्थित होता है—

उपरोक्त लक्षण वाले पुरुष की पत्नी सदैव रोगिणी रहती है। उसे स्वतः प्रसव नहीं होता। सदैव शल्य-क्रिया से ही सन्तान होती हैं। उसकी स्त्री का जीवन इसी प्रकार से चलता है। कदाचित् इन छोटी छोटी शाखाओं मे से एक शाखा घूम कर हृदय-रेखा (Line of Heart) में आकर सम्मिलित हो जाय तो वह पुरुष विवाह के पश्चात् अपनी परिणीता का त्याग करके अथवा उसकी मृत्यु के उपरान्त किसी अन्य स्त्री से वासना-जन्य प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करता है और इस प्रेम-सम्बन्ध ही में उसकी मृत्यु भी होती है।

दैवयोग से उक्त लक्षण यदि किसी स्त्री के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो वह स्त्री वेश्यावृत्ति अपनाती है इस कलुषितवृत्ति में ही किसी दुष्ट के हाथों अपनी जीवन लीला समाप्त कर नारकीय जीवन से मुक्ति प्राप्त करती है। इस दुष्टा के गर्भ से एक कन्या-

रत्न का जन्म होता है। यह कन्या सुशीला, धर्म-भीरु तथा पति-परायणा होती है। यह किसी सम्पतिशाली कुलीन परिवार की कुल-वधू होकर सुखमय दाम्पत्य जीवन व्यतीत करती है।

स्मरण रहे कि यदि किसी स्त्री के हाथ में उपरोक्त प्रकार की विवाह रेखा दृष्टिगोचर हो और उसकी एक शाखा घूम कर हृदय-रेखा (Line of Heart) को स्पर्श करती हो (जैसा कि गत चित्र संख्या ६७ में अंकित है) तो उसका फल वही होगा जो पुरुष के हाथ में होने वाली तथोक्त रेखा का हमने ऊपर लिखा है। वहां सर्वत्र स्त्री के स्थान पर पुरुष समझ लेना चाहिये। इस लक्षण के उपस्थित होने पर इस वेश्या की कन्या में उपरोक्त शुभ गुण उसी दशा में घटित होंगे जब उनमें की एक शाखा नीचे आकार ऊपर की ओर उठे। यदि दोनों प्रकार की शाखायें हुइ—अर्थात् एक शाखा तो हृदय-रेखा का स्पर्श करे और दूसरी ऊपर उठ कर कनिष्ठका अंगुली के मूल तक जाय तो उस वेश्या की मृत्यु की तो सम्भावना है ही, इसके साथ ही साथ उसके सभी सम्बन्धियों को कठिन कारावास अथवा मृत्यु-दण्ड की पूर्ण सम्भावना रहती है। किन्तु इस लक्षण के उपस्थित होने पर उपरोक्त कन्या रत्न के जीवन पर किसी भी प्रकार का अशुभ प्रभाव नहीं होता। उसका जीवन सर्वथा निरापद, सुखमय, धार्मिक, पति-परायणा तथा आनन्द युक्त ही रहता है।

जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) स्थित विवाह-रेखा (Life of Marriage) यव (द्वीप) चिह्न पर समाप्त होती हो अर्थात्
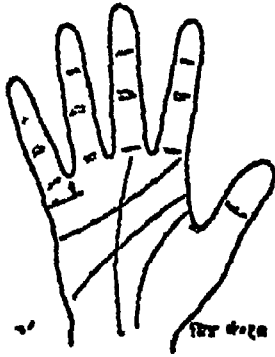
विवाह-रेखा (Line of Marriage) के अन्त में यव (द्वीप) चिह्न हो और इस यव (द्वीप) चिह्न के उपरान्त विवाह-रेखा (Line of Marriage) आगे न बढ़ती हो—इसके साथ उक्त यव (द्वीप) चिह्न पर ही इस विवाह-रेखा (Line of Marriage) को एक खड़ी रेखा काटती भी हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ६८ में अंकित है) तो उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष के मन में सदैव बुरे तथा घृणित विचार उठते हैं और इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर रेखा मान से प्राप्त वर्ष में वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष अकस्मात् ही अपने जीवन-साथी (अर्थात् पुरुष के हाथ में यह लक्षण हो तो वह अपनी धर्म पत्नी की और यदि स्त्री के हाथ मे यह लक्षण हो तो वह अपने पति-देव) की हत्या करने को प्रस्तुत हो जाता है। किन्तु सहसा ही उसके विचारों में पुनः परिवर्तन होता है और वह मानव-हत्या के जघन्य पाप से बच जाता है। किन्तु जिस व्यक्ति की प्रेरणा से उस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के विचार दूषित हुये और वह हत्या को प्रस्तुत हुआ, उस व्यक्ति की हत्या की निश्चित सम्भावना उपस्थित हो जाती है।

कदाचित इस लक्षण वाले व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ मे बुध-क्षेत्र (Mount of Mercury) निम्न हुआ और साथ ही मंगल-ग्रह का द्वितीय-क्षेत्र (2nd Mount of Mars)

उच्च हुआ तो उक्त व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) को मृत्यु-दण्ड अथवा आजीवन-कारावास-दण्ड अनिवार्य रूप से भोगना पड़ता है। हां, यदि सौभाग्य से बुध क्षेत्र (Mount of Mercury) उच्च हुआ तो वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) मृत्यु-दण्ड अथवा आजन्म कारावास दण्ड—दोनों ही अशुभ फलों से निश्चित रूप से बच जायगा। किन्तु इस लक्षण वाले स्त्री-पुरुष भयंकर क्रोधी होंगे, फलतः उपरोक्त घटनाओं के आखेट अनायास ही हो जाते हैं। प्राय. यह भी अनुभव में आया है कि इस लक्षण वाले स्त्री पुरुष के विवाह में अनेक बाधायें उपस्थित होती हैं।
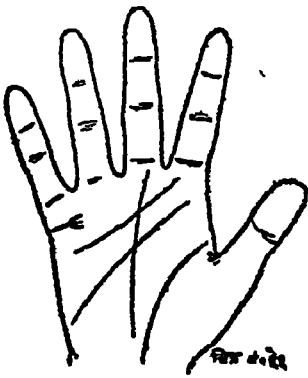
जिस व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) के हाथ में बुध क्षेत्र (Mount of Mercury) स्थित विवाह-रेखा (Line of Marriage) सुन्दर, सुस्पष्ट, अक्षत, शुद्ध तथा गम्भीर हो, किन्तु उसके अन्त में त्रिशूल-सदृश्य चिह्न हो (जैसा कि ऊपर वाले चित्र संख्या ६६ में अंकित है) तो उसका शुभाशुभ फल स्त्री और पुरुष के जीवन में निम्नांकित रूप से घटित होता है।

उपरोक्त लक्षण यदि पुरुष के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो वह आजीवन अस्वस्थ रहता है। उसे मानसिक व्यथायें किंवा चिन्तायें विशेष रूप से घेरे रहती हैं। वह नीच कर्म-रत, अहंकारी और शठ होता है। वह सदैव साझे में व्यापार-व्यवसाय करता है।

वह आडम्बरी, कामातुर स्त्रियों का प्रेमी, काम कला-कुशल, पर-स्त्री गामी तथा वेश्यागामी होता है। इन सब दुष्फलों के घटित होने पर भी उसको अति सरल स्वभाव वाली, सुशीला, धर्म भीरु, गृह-कार्य में कुशल, स्वच्छ, नि.शंक, साहसी, धैर्यशाली, पति-परायणा, सच्चरित्र तथा रूप-लावण्यवती धर्मपत्नी प्राप्त होती है। अपनी धर्मपत्नी के अथक परिश्रम और अटूट लगनशील प्रयत्नों से ही वह पुरुष अपने दुष्कर्म तथा दुराचरणों को त्याग कर सन्मार्ग का पथिक बनकर अपना शेष जीवन सुखमय व्ययतीत करता है। उसके सन्मार्गी होने का समय विवाह-रेखा (Line of Marriage) के उस स्थान पर होगा जहां से त्रिशूल की तीन शाखायें उद्भूत होती हैं।

कदाचित् यह लक्षण किसी स्त्री के हाथ में दृष्टिगोचर हो तो वह व्यभिचारिणी होकर आजीवन सन्तान की चिन्ता में ग्रस्त रहती है। सन्तान की अभिलाषा लेकर यह स्त्री अपने भृत्यों अथवा निम्न-श्रेणी के पुरुषों से भी रति-क्रीड़ा करती है। वर्ष-मान द्वारा उक्त बिन्दु पर प्राप्त वर्ष मे इस व्यभिचार-लीला के फल स्वरूप उसके एक वर्ण-संकर पुत्र उत्पन्न होता है, जो वस्तुतः उसके पति का नहीं होने पर भी उसी का घोषित किया जाता है। स्पष्ट है कि ऐसी स्त्री का पति मूर्ख, नपुंसक, अकर्मण्य तथा दीर्घसूत्री ही होता है।

रेखाओं के सम्बन्ध में विशेष-नियम

मानव-हस्त-गत रेखाओं के सम्यक् एवं व्यापक अध्ययन के संबंध में कुछ विशेष नियम हैं जिनके अनुकूल अध्ययन करने पर इन

रेखाओं—विशेषतः जीवन रेखा (Life Line), हृदय-रेखा (Heart Line), मस्तक रेखा (Head Line), भाग्य-रेखा (Fate Line), सूर्य-रेखा (Sun Line) आदि प्रमुख रेखाओं के अत्यन्त गूढ़ तथा रहस्यमय भेदों पर अनायास ही प्रकाश प्राप्त होता है। अतः इन नियमों को अवश्य ही ध्यान में रखना चाहिये।

१—किसी भी रेखा के शुभ होने के लिए उसमें निम्नलिखित विशेषतायें अवश्यमेव होनी चाहियें—

(क) वह अपने अधिकृत स्थान पर हों अर्थात् जिस स्थान पर से उन्हें आरम्भ होना चाहिये उसी स्थान से आरम्भ होती हों और जिस स्थान पर उन्हें जाना चाहिये उसी स्थान पर जाती हों। बीच ही से आरम्भ न होती हों अथवा बीच ही में रुकती न हों।

(ख) स्थान-भ्रष्ट न हो—कभी २ कोई रेखा अपने अधिकृत-स्थान पर न होकर आस-पास के किसी स्थान पर स्थित होती है अथवा अधिकृत-स्थान से आरम्भ न होकर आसपास वाले स्थान से आरम्भ होती है अथवा अधिकृत स्थान पर न जाकर आस पास वाले स्थान पर चली जाती है या किसी अन्य स्थान को चली जाती है। इस लक्षण वाली रेखा स्थान-भ्रष्ट होती हैं।

(ग) अस्पष्ट न हो-किसी भी रेखा का धुंधली होना अथवा साफ-साफ दृष्टिगोर न होना उसके अस्पष्ट होने का लक्षण है। उत्तम रेखा वही होती है जो इस प्रकार की न हो।

(घ) अक्षत हो—किसी भी रेखा का स्थान-स्थान पर अथवा किसी एक दो या अधिक स्थान पर टूटी होना उसके गुणों में अत्य-

धिक न्यूनता का प्रतीक है। इस लक्षण वाली रेखा कभी-कभी अत्यन्त अशुभ फल-प्रद भी हो जाती है। अतः उत्तम रेखा का अक्षत होना भी परमावश्यक है।

(ङ) अधिक मोटी न हो--कभी-कभी कोई-कोई रेखा अत्यन्त मोटी अथवा चौड़ी होती है। यह अशुभ लक्षण है। उत्तम रेखा को मोटी नहीं होना चाहिये।

(च) अधिक गहरी न हो—कभी-कभी कोई-कोई रेखा अत्यन्त गहरी—गड्ढे के आकार जैसी होती है। यह भी अशुभ लक्षण ही है। उत्तम रेखा वही होती जो अधिक गहरी न हो।

(छ) खुरदरी न हो—कभी-कभी कोई २ रेखा का ऊबड़-खाबड़ अथवा खुरदरी होना एक अशुभ लक्षण ही है। शुभ रेखा को खुरदरी नहीं होना चाहिये।

(ज) सीधी हो—बहुत सी रेखायें टेढ़ी-मेढ़ी अथवा सर्प-गति के समान होती हैं। ऐसी रेखायें शुभ नहीं होती। उत्तम रेखायें वही होती हैं जो अपने निर्धारित मार्ग पर सीधी जाती हों। यदि कहीं मुड़ना ही हो तो सुन्दर ढंग से मुड़ती हों।

(झ) चमकीली हों—प्रत्येक शुभ रेखा का चमकीली होना उसका स्वभाव सिद्ध गुण है।

(ञ) शाखायें न निकलती हों—प्रायः देखा जाता है कि बहुत सी रेखाओं में से ऊपर नीचे अथवा दायें बायें छोटी-छोटी (कभी-कभी बड़ी,बड़ी) शाखायें निकलती रहती हैं। यह अशुभ लक्षण है। उत्तम रेखा को शाखा हीन-होना आवश्यक है।

(ट) दूसरी रेखाओं से मिलकर न चलती हों—कभी-कभी बहुत-सी रेखायें परस्पर मिलकर अथवा एकाकार होकर चलती हैं। इससे उनके गुणों में न्यूनता आ जाती है। अतः उत्तम रेखाओं को पृथक-पृथक् ही चलना चाहिये।

(ठ) दूसरी (अवरोधक) रेखाओं से कटती न हों—किसी किसी हाथ में एक अथवा अनेक अवरोधक रेखायें प्रमुख अथवा विशिष्ट रेखाओं को काटती हैं। यह अत्यन्त अशुभ लक्षण है। इसके प्रभाव से उस रेखा के गुणों का सर्वथा नाश हो जाता है। अतः उत्तम रेखा को दूसरी रेखाओं से कटना अशुभ है।

(ड) अवरोधक रेखायें स्पर्श न करती हों—कभी-कभी अवरोधक रेखायें किसी रेखा को काटती तो नहीं हैं किन्तु उनका स्पर्श अवश्य करती हैं। यह लक्षण भी अशुभ है। उत्तम रेखाओं को अवरोधक रेखाओं द्वारा स्पर्श नहीं होना चाहिये।

(ढ) गुलाबी रंग की हों—शुभ रेखाओं का रंग अवश्य ही गुलाबी होना चाहिये। पीले रंग वाली अथवा काले-नीले आदि रंगों वाली रेखायें महान अनिष्टकारक होती हैं। उत्तम रेखा वही है जिसका रंग गुलाबी हो।

(ण) कम्पित न हो—कभी-कभी कोई रेखा ऐसी प्रतीत होती है मानों कांप रही हो। इस प्रकार की रेखा अशुभ-सूचक है। उत्तम रेखा को कम्पायमान नहीं होना चाहिये।

(त) अशुभ चिन्ह न हो—बहुत सी रेखाओं के कलेवर में अथवा उनसे स्पर्श करते हुये द्वीप आदि के अशुभ चिह्न होते हैं,

यह रेखाओं के अनिष्टकारक फल के द्योतक हैं। अतः शुभ तथा उत्तम रेखाओं को अशुभ चिह्नों से सर्वथा रहित होना चाहिये।

(थ) दर्शनीय हों—उपरोक्त सभी शुभ लक्षणों के साथ-साथ प्रत्येक रेखा का सुन्दर एवं चित्ताकर्षक होना अत्यावश्यक है। कहावत भी है—"होनहार विरवान के होत चीकने पात।" उत्तम रेखा का दर्शनीय होना जरूरी है।

रेखाओं के सम्बन्ध में उपरोक्त बातों के अतिरिक्त यह भी ज्ञात रहना चाहिये कि मानव-हस्त-गत रेखायें प्रायः बनती और नष्ट होती रहती हैं। केवल कुछेक प्रमुख रेखाओं को छोड़कर अन्य रेखाओं के साथ यही क्रम चलता रहता है। हमने देखा है कि कितनी रेखायें हाथ पर उत्पन्न होती हैं और कुछ ही दिनों के बाद वे धुंधली हो जाती हैं अथवा पूर्णतया लोप हो जाती हैं। अध्ययन के आधार पर हमें ज्ञात हुआ है कि रेखाओं के इस उत्पन्न होने और लोप होने का क्रम मानव-जीवन के व्यवहारिक आधार पर आश्रित होता है। दूसरे शब्दों में रेखाओं की इस आंख-मिचौनी को मनुष्य के भाग्य की क्रीड़ा कह सकते हैं। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि रेखाओं के उत्पन्न होने और उनके लोप होने का अधिकांश दायित्व स्वयं मनुष्य पर ही होता है। हमने देखा है कि हाथ की रेखाये हमारे दैनिक जीवन की गति के अनुसार ही बनती बिगड़ती हैं।

"मनुष्य स्वयं ही अपने भाग्य का निर्माता है"—यह लोकोक्ति हमारे पाठकों को स्मरण होगी। हमारे अनुभव में यह लोकोक्ति

अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है। यदि स्थिर चित्त से विचार किया जाय तो इसकी सत्यता स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जायेगी। देखिये हमारे विचार हमारे स्वभाव के अनुसार ही होते हैं। यदि हमारा स्वभाव उदार होगा तो हम अच्छे विचारों को ही स्थान देंगे, इसके विपरीत यदि हमारा स्वभाव कठोर होगा तो हमारे विचार भी उग्र होंगे। हम अपने जीवन में प्रत्येक कार्य अपने विचारों के अनुकूल ही करते हैं। दूसरे शब्दों में हमारे कार्य हमारे विचारों के स्पष्टीकरण ही तो हैं। यदि हमारे विचार अच्छे होंगे तो हमारे कार्य भी अच्छे होंगे और हमारे विचार क्रूर होंगे तो हमारे कार्य भी क्रूर होंगे।

यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि जो भी काम हम करते हैं उसका अच्छा या बुरा फल हमें भोगना ही होता है। यदि हम अच्छे काम करेंगे तो हमें अच्छा फल मिलेगा और हम बुरा काम करेंगे तो हमें बुरा फल मिलेगा। पाठको यही हमारा भाग्य कहलाता है। प्रारब्ध भी इसी को कहते हैं और इसको मिटाना हमारी शक्ति से प्रायः परे ही होता है। अन्ततो-गत्वा हमें अपने कर्मों का फल भोगना ही होता है। अब आप ही सोचिये कि क्या हम स्वयं ही अपने भाग्य के निर्माता नहीं हैं? इसी सिद्धान्त के अनुसार हमारे कर्मों के अनुरूप रेखायें हमारे हाथ पर बनती और बिगड़ती रहती हैं।

अभी एक वर्ष पहले की बात है, हमारे यहां एक लड़का नौकर था। उस समय हमने उसका हाथ देखा था तो उस पर

एक भी चिन्ह अथवा रेखा ऐसी नहीं थी जिससे उसके भविष्य की उज्ज्वलता पर प्रकाश पड़ता हो। वैसे वह लड़का एक प्रकार से निरा बुद्धू था। उसे अपनी गांठ की बुद्धि नाम को भी न थी। हमारे घर में ईश्वर की अनुकम्पा से पठन-पाठन तथा अध्ययन का कार्य चलता ही रहता है। इसके अतिरिक्त आने जाने वाले भी प्रायः साहित्यिक ही होते हैं। जन-सेवा के कार्यों में भी हमारी विशेष रुचि है। अतः प्रायः लोकोपकारी विषयों पर चर्चा चलती रहती है। संक्षेप में हमारे घर का वातावरण शुद्ध, स्वस्थ और उन्नतिशील ही रहता है। किसी भी प्रकार के बुरे विचारों को वहां स्थान नहीं मिलता। इस वातावरण का उस लड़के पर अत्यन्त शुभ प्रभाव पड़ा और शनैः शनैः उसकी बुद्धि में सुधार होने लगा। थोड़े दिनों बाद उसे नौकरी से घृणा हो गई और एक दिन अचानक ही काम छोड़कर बैठ गया। आज वही लड़का एक छोटी सी दुकान हमारे घर के पास ही लगाता है और अनायास ही अपनी जीविका कमा लेता है। अभी चार छः दिन पूर्व ही उसने अपना हाथ हमको दिखाया था। वास्तव में हमें उसका हाथ देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उसमें अनेकों शुभ रेखायें बन रही हैं। क्या यह हमारे उपरोक्त कथन की पुष्टि नहीं करता ?

पाठको ! हमारे हाथ में कितने ही लक्षण, चिन्ह अथवा रेखायें ऐसी होती हैं जो परम्परागत अथवा पैतृक कर्मों की ओर संकेत करती हैं। हो सकता है हमारे कुछ पाठक इसको असत्य

समझें, किन्तु इसमें असत्य अणु-मात्र भी नहीं है। आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने माता-पिता के गुण-दोषों का विलक्षण समावेश होता है। प्रजनन-विज्ञान के मूल-भूत तत्वों का गम्भीर अध्ययन करने से यह और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। यह अनेक बार देखा जा चुका है कि माता-पिता के घातक रोगों का प्रभाव बच्चों पर ही पड़ता रहता है। यही सिद्धान्त किसी भी व्यक्ति के मूल-भूत विचारों के सम्बन्ध में भी लागू होता है और इसी के अनुकूल मनुष्य के हाथों में वंश परम्परागत लक्षण, चिन्ह अथवा रेखायें प्राप्त होती हैं।

यद्यपि इन वंश परम्परागत रेखाओं के शुभा शुभ फल को हम सर्वथा नष्ट नहीं कर सकते और उनके प्रभाव से बचना हमारे लिये प्रायः असम्भव ही होता है, किन्तु हम अपने अच्छे कार्यों के द्वारा उनके दुष्फलों की भयानकता को न्यून अवश्य कर सकते हैं। हमने तो यहां तक देखा है कि सद्विचार और सत्कर्मों द्वारा उन वंशानुगत अशुभ रेखाओं के कुप्रभावों को सर्वथा नष्ट किया जा सकता है। इसी प्रकार वंश परम्परागत शुभ रेखओं के शुभ परिणामों को भी अपने कुकर्मों और कुविचारों के द्वारा नष्ट करके हम अपने भाग्य अथवा भविष्य को अन्धकारमय बना सकते हैं।

रेखाओं के सम्बन्ध में एक बात और स्मरण रखनी चाहिये, वह यह है कि जीवन-रेखा (Life Line), हृदय-रेखा (Hear

Line), मस्तक-रेखा (Head Line), प्रभृति मुख्य-मुख्य रेखायें प्रायः बहुत ही कम परिवर्तित होती हैं और कभी-कभी अथवा किसी-किसी हाथ में तो ये यत्-किंचित भी नही बदलतीं। यदि दोनों हाथों में इन रेखाओं का स्वरूप एक-सा हो तो भविष्य में उनमे किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावना बहुत ही कम रह जाती है। हां, मनुष्य की आयु यदि पच्चीस वर्ष की नहीं हुई है तो सम्भव है कुछ परिवर्तन हो भी जाय, किन्तु आयु पच्चीस वर्ष से अधिक हो चुकी हो तो बदलने की कोई भी आशा नहीं रहती।

मानव हस्त-गत किसी भी एक अशुभ चिह्न, लक्षण अथवा रेखा को उसके जीवन के सम्बन्ध में निर्णायक नही समझ लेना चाहिये। किसी भी हाथ में एकाध अशुभ लक्षण, चिन्ह अथवा रेखा मिल जाना साधारण-सी बात है। हां, यदि हाथ के अत्यधिक लक्षण अथवा चिन्ह अशुभ होंगे तो उनका प्रभाव हाथ की सभी रेखाओं पर परिलक्षित होगा। अतः किसी भी रेखा अथवा चिन्ह अथवा अन्यान्य लक्षण का निर्णय करने से पूर्व दोनों हाथों में उसकी स्थिति का पूर्णतया अध्ययन कर लेना चाहिये। हस्त-गत सभी प्रमुख एवं प्रभावशाली रेखाओं पर यही सिद्धान्त लागू होता है। क्यों कि वाम हस्त में रेखाओं की प्रवृत्ति और दक्षिण हस्त में उनका पूर्ण-रूप दृष्टिगोचर होता है।

हस्त-रेखाओं के सम्बन्ध में यह भी स्मरण रखना चाहिये कि प्रमुख रेखाओं के पार्श्व में कोई सहायक रेखा तो नहीं है।

सहायक रेखायें प्रमुख रेखाओं को विलक्षण शक्ति प्रदान करती हैं और उसके अशुभ फलों को भी नष्ट कर देती हैं। यदि कोई भी प्रमुख रेखा किसी भी रूप में अशुभ हो और उसके पार्श्व में कोई सहायक रेखा अपने शुद्ध स्वरूप में विद्यमान हो तो उक्त प्रमुख रेखा के अशुभ फल का भय नष्ट हो जाता है। अतः रेखाओं का फल घोषित करने से पूर्व उनके सम्बन्ध में उपरोक्त सभी विषयों का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन कर लेना चाहिये।

* समाप्तम् *

मुद्रकः—यादव प्रिंटिङ्ग प्रेस, बाजार सीताराम, देहली।

पुस्तकों का संक्षिप्त सूचीपत्र

- वैदिक मनुस्मृति (हिन्दी टीका सहित) ४।।)
- श्री राधेश्याम रामायण ४।।)
- वाल्मीकी रामायण (भाषा) १२)
- बड़ा महाभारत भाषा (सचित्र) तृतीय संस्करण १२)
- चाणक्य नीति–अनुवादक–श्री विष्णुदत्त 'श्रीश' १।।)
- विदुर नीति (हिन्दी टीका सहित) १।।)
- भर्तृहरि शतक १)
- मारकतावली ।।।)
- असली प्रेमसागर सम्पूर्ण ६० अध्याय ४।।)
- श्री मद्भगवद्गीता भाषा (सचित्र) तथा अर्जुन-गीता १८ अध्याय माहात्म्य सहित सम्पूर्ण २।।)
- सुखसागर श्रीमद्भगवद् गीता के सम्पूर्ण १२ स्कन्ध १३)
- श्रीमद्भगवद्-गीता भाषा २।।)
- श्रीमद्भगवद्गीता (गांधी गीता तत्वबोध) ३)
- सम्पूर्ण योग-वशिष्ठ भाषा १८)
- सावित्री सत्यवान ।।)
- नल-दमयन्ती ।।।)
- बड़ा भक्ति सागर (सम्पादक मोहन लाल) ३)
- सहजोबाई के पद ।।)
- लावनी ब्रह्मज्ञान ।।।)
- वीर अभिमन्यु ।।।)
- भक्त बिल्वमंगल सूरदास ।।।)
- वृहद् भक्तमाल भाषा वार्तिक ४)
- गुटका कबीर भजनमाला १।।)
- ब्रह्मज्ञान भक्ति प्रकाश २।।)
- रहदास रामायण २।।)
- भक्त-वाणी २।।)
- दृष्टान्त महा सागर २।।)
- हितोपदेश भाषा २।।)
- एकादशी माहात्म्य भाषा १)
- पंचतन्त्र भाषा ३।।)
- भजन कीर्तन संग्रह ३)
- रंग रंगीले भजन ३)
- कबीर दोहावली १)
- तुलसी दोहावली १)
- मेवाड़ गौरव गाथा २।।)
- वीर तृपल ५)
- वीर पंचरत्न ३।।)
- विश्वासघात २)
- नव युवकों से दो बातें १)

नोट:—सब पुस्तकों का डाक खर्च ग्राहक को देना होगा।

पता:—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली।

अंग्रेजी राज्य में भारत	१।)	फिल्मी संगीत बहार (फिल्मी महफिल)	१।।=)
हमारा प्रातः स्मरण	।=)	बड़ा मुकलावा बहार (अर्थात् ससुराल आनन्द)	४।।)
हमारे गुरु जी (R. S. S.)	१)	फिल्मी हारमोनियम गाईड	१।)
राष्ट्र पुरुष का जीवन झांकी	१।।)	पहली सुहागरात	१।।)
नन्दकुमार को फांसी	४।।)	लवलैटर्स (प्रेम के पत्र)	१।)
गुरु गोविन्दसिंह	।।=)	फिल्मी गायन सचित्र	।।)
हरिसिंह नलुवा	।।=)	फ़िल्मी बेन्जो गाइड	१।)
वीर बन्दा बैरागी	।।=)	चित्रपट के सितारे	१)
रणभेरी	।।)	फिल्मी परियां	२।।)
प्लासी का युद्ध	५)	प्रेम भरे पत्र आशकाना पत्र	५)
सन ५७ का विप्लव	५)	काम कला रति रहस्य (अथवा स्त्री और पुरुष	४)
राणा राजसिंह	।।=)	फ़िल्म संगीत कला	१=)
वीर तानाजी सिंहगढ़ विजय	।।)	सुरैय्या की तान	१।)
महाराणा सांगा	१=)	सिनेमा के पूरे ड्रामे की	।=)
वीर शिरोमणि-हम्मीर देव	।।।)	फिल्मी बहार	।।।)
महर्षिदयानन्द (सचित्र)	२।।)	फ़िल्मी महफिल	।।।)
वैदिक संध्या	४) सैंकड़ा	फिल्मी तराने	।।।)
हवन मन्त्र	≡)	लता मंगेशकर की तान	१)
सत्संग गुटका	।=	गृहस्थ कला	२)
हिन्दी संस्कृत शिक्षा	२)	मुकेश की तान	।।।)
कथा पच्चीसी	।।।)	सहगल की तान	।।)
स्वामी रामतीर्थ	१।।)	फिल्मी संसार	२)
सूखा भारत	।।।=)	कैमरा फोटो अलबम	२।)
अमर गांधी	७)	फिल्मी संगीत	१।।)
लाजपत राय	२)		
रुक्मणी मंगल	२।।)		
बृहद् कामशास्त्र सचित्र	२=)		

नोटः—सब पुस्तकों का डाक व्यय अलग होगा

असली कलीद सट्टा ५)
भाभी का प्यार १)
सिनेमा संगीत २।)
फिल्म एक्टिंग गाइड ५।)
गर्भनिरोध (बर्थ कन्ट्रोल) ३)
मेस्मरेजम विद्या के चमत्कार १०)
कौतुकरत्न भांडागार ४।।)
चीन-बंगाल का जादू १।।)
दक्षिण जादू १।।)
चौदह विद्या चौंसठ कला ३)
जादूगरी शिक्षा ५।)
ताश का जादू अथवा खेल १)
काला जादू ।।।)
सांवरी तंत्र सेवड़े का जादू ३)
सचित्र करामात १।।)
तोता मैना सोलह भाग ४)
रामायण गुटका मूल २।)
दुर्गा सप्तशती भाषा २।।)
हस्तरेखा ।।।=)
ज्योतिष विज्ञान ६)
व्यापार रत्न ७)
हस्त सामुद्रिक शास्त्र २।।)
मुहूर्त चिन्तामणि भाषा टीका ३)
विवाह-पद्धति १।।)
कर्मविपाक भाषा टीका ५)
बृहद् ज्योतिषसार भाषा-टीका ४।।)
ताजिक नीलकंठी ५)

त्रिकालज्ञ ज्योतिषी ५)
नये वर्ष की जंत्री ।।।)
जादूगरों का बादशाह २।।)
राष्ट्रीय कानूनी डायरी १।।)
बड़ी राशिमाला ।।)
श्री सत्यनारायण व्रत कथा ।।)
रंगीन जन्म पत्री फार्म -)
दसवर्षीय श्री सरस्वती पंचांग ६)
भृगु-संहिता महाशास्त्र ५०)
श्री दुर्गा सप्तशती भाषा २।)
जर्राही प्रकाश चारों भाग ३।।)
पशु चिकित्सा ३।।)
इल्माजुलगुर्बा भाषा ५)
ब्रह्मचर्य साधन १)
लाठी शिक्षा १)
मल्ल युद्ध अर्थात् अखाड़ा ज्ञान १।)
स्वास्थ्य शिक्षा (सचित्र) ४)
खजाना मुनीमी गुरु १=)
बाल रामायण १।।)
बाल महाभारत १।)
हिन्दी इंगलिश बोल चाल १=)
" " लैटर राईटिंग १=)
" " प्राईमर १=)
उर्दू रोमन टीचर १)
हिन्दी " " १)
उर्दू गुरमुखी टीचर १)

जरूरी नोट:—सब पुस्तकों का डाक खर्च ग्राहक को देना होगा